इरफ़ान द मैन,

द ड्रीमर, द स्टार खान

एक काबिल एक्टर, सबसे बड़े स्टार्स में से एक।
-एंग ली, लाइफ ऑफ पाई के डायरेक्टर

असीम छाबड़ा

इरफान

ख़ान

Table of Contents
रूहदार—बॉलीवुड का जादूगर : एक परिचय
1. उड़ने के लिए जन्म : प्रारंभिक वर्ष
2. बड़े और छोटे पर्दे के सितारे
3. मूक तारे का निर्माण
4. हॉलीवुड कॉलिंग : दो दुनियाओं को जोड़ने वाला एक कसौटी
5. हॉलीवुड की शीर्ष परियोजनाओं का एक संक्षिप्त विवरण

6. [illegible]: [illegible]
7. [illegible]
[illegible]

इरफ़ान द
मैन, द ड्रीमर, द स्टार
खान

Aseem Chhabra

रूपा

द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2020 7/16, Ansari Road, Daryaganj
नई दिल्ली 110002

Copyright © Aseem Chhabra 2020

इस पुस्तक में व्यक्त विचार और मत लेखक के अपने हैं और तथ्य यथावत हैं।
इन जानकारियों की यथासंभव पुष्टि कर ली गई है, और प्रकाशक किसी भी प्रकार से इनके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।
वही। सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में पुनरुत्पादित, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में प्रकाशक की अनुमति के बिना
किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी माध्यम से, संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।।

ISBN: 978-93-5333-813-8 पहली छाप 2020
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1
लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से
प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, किराए पर देना या अन्यथा प्रसारित करना, किसी भी प्रकार के बंधन या आवरण में, उधार नहीं दिया जाएगा, न ही पुनर्विक्रय किया जाएगा ।
उस सामग्री के अलावा जिसमें यह प्रकाशित होता है।

To Nikhil Lakshman,

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□, □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ '□□□□□' □□□□□
□□ □□ □□□

अंतर्वस्तु

रूहदार—बॉलीवुड का जादूगर: एक परिचय

1. उड़ने के लिए जन्म: प्रारंभिक वर्ष

2. बड़े और छोटे पर्दे के सितारे

3. मूक तारे का निर्माण

4. हॉलीवुड कॉलिंग: दो दुनियाओं को जोड़ने वाला एक कसौटी

5. हॉलीवुड की शीर्ष परियोजनाओं का एक संक्षिप्त विवरण

6. नई क्लासिक फिल्में: सीमाओं और श्रेणियों को चुनौती देना

7. एक अभिनेता स्वयं को नए सिरे से गढ़ता है

कहने को कहानियों का सागर: एक उपसंहार

स्वीकृतियाँ
रूहदार—बॉलीवुड का जादूगार

□□□□□□□□□□

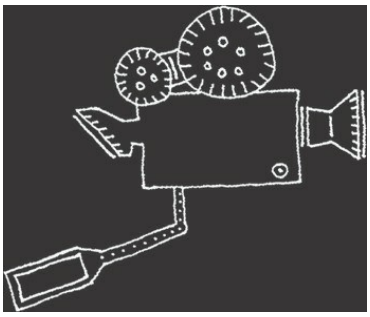

Ek aisa kalakaar jiski aankhein afsaane kehti hain.1

2006 □□ □□□ □□□ □□□, □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□

□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□

□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□

‘□□□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□?’ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□

‘□□□,’ □□□□□ □□□□

‘Sir, main Irrfan Khan bol rahan hoon, Mumbai se (Sir, I am Irrfan Khan

□□□□□ □□ □□□ □ □□□ □□□

□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□? □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□

जी हां, इरफान खान ने मुझे फोन किया था।
इससे पहले, सितंबर 2006 में, मैंने इरफ़ान को मीरा नायर की फिल्म 'द' में देखा था।
टेलुराइड फिल्म महोत्सव में इसी नाम से एक फिल्म का आयोजन किया गया, जो एक विशिष्ट स्की शहर में आयोजित किया गया था।
दक्षिण-पश्चिम कोलोराडो। इसके तुरंत बाद, मैंने एक लंबा प्रोफाइल लिखा था।
मुंबई मिरर द्वारा प्रकाशित होने वाली रविवार की पत्रिका मिरर बज़ के लिए फिल्म निर्माता।
प्रकाशित करें। स्वाभाविक रूप से, समाचार का आधार 'द नेम्सके' का विश्व प्रीमियर था।
इरफ़ान ने मेरी कहानी पढ़ी थी, किसी तरह मेरा नंबर हासिल किया और मुझे न्यू जर्सी में फोन किया।
यॉर्क।
‘Kaisi hai film (How is the film)?’ I heard Irrfan ask. ‘Maine dekhi nahi अभी (मैंने इसे अभी तक नहीं देखा है)।
जो सुबह सामान्य सी लग रही थी, अचानक ही सब कुछ बदल गया।
आशा के साथ।
मैंने जवाब दिया, 'इरफान साहब, कमाल की फिल्म है (यह एक असाधारण फिल्म है)।
इरफ़ान साहब। आपका अभिनय दिल को छू लेने वाला था। आपने मुझे रुला दिया।
और मैंने हर शब्द दिल से कहा। झुम्पा लाहिड़ी की ईमानदार, सशक्त लेखन शैली,
मीरा नायर द्वारा अभिनीत इस कहानी ने एक मार्मिक, सच्ची और कोमल कहानी को जन्म दिया था।
अशोक और आशिमा गांगुली। इसने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला था। पहली बार

अमेरिका में पीढ़ी दर पीढ़ी आप्रवासी होने के नाते, मैं उनके संघर्षों को समझ सकता था।
उनकी आशाएँ, आकांक्षाएँ और निराशाएँ। मेरा सफर और मेरी कहानी... इमिग्रेशन का मामला कुछ अलग था, लेकिन इरफान और तब्बू के भावपूर्ण अभिनय ने मुझे झकझोर दिया। इरफान के अशोक के किरदार को बेताब कोशिश करते हुए देखकर आज भी मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं।
अपने बेटे गोगोल (कल पेन) से जुड़ने की कोशिश में असफल होने के बाद, वह स्वीकार कर लेता है।
उसका जीवन, जिस तरह से वह उसके लिए आकार लिया था, वही उसका भाग्य था। नामधारी ने बनाया
मुझे गर्व और सुकून महसूस हो रहा है। आखिरकार किसी ने मेरी जिंदगी को समझा।
मुझे तभी पता चल गया था। वह अभिनेता एक दुर्लभ चमकता सितारा था जो रोशनी बिखेर सकता था।
अपनी शांत लेकिन प्रभावशाली उपस्थिति से पर्दे को मंत्रमुग्ध करने वाले इरफान खान, बॉलीवुड के
रूहदार 2 3 4 . यह अशोक, मकबूल और राणा हैं।
Ek aisa kalakaar jiski aankhein afsaane kehti hain. (An actor whose eyes
कहानियों का सागर सुनाना।

इस किताब के लिए शोध करते समय ही मुझे एहसास हुआ कि पहली बार जब मैंने इरफ़ान को सिल्वर स्क्रीन पर गोविंद निहलानी की 1990 की फिल्म में देखा था।

दृष्टि (मैंने फिल्म की एक पायरेटेड वीडियो होम सिस्टम टेप न्यू में देखी थी)
यॉर्क)। फिल्म में इरफान एक युवा संगीतकार की सहायक भूमिका निभाते हैं जो
उसका एक विवाहित महिला के साथ संक्षिप्त प्रेम प्रसंग होता है, जिसका किरदार डिंपल कपाडिया ने निभाया है।
दिल्ली के नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) से स्नातक इरफान का सपना था कि...
नसीरुद्दीन शाह और ओम पुरी की तरह एक फिल्मी अभिनय करियर। दोनों
ये अभिनेता 1973 में एनएसडी से स्नातक हुए थे और इरफान से 14 साल बड़े थे।
एनएसडी से स्नातक होने के बाद, इरफान को अभिनय के कई अवसर मिले, लेकिन यह लगभग असंभव था।
पूरी तरह से टेलीविजन में ही काम किया, और पेशेवर तौर पर असंतुष्ट ही रहे। जैसा कि मैं था
उस दशक में अमेरिका में रहने के कारण, मैं इरफान के अधिकांश टेलीविजन कार्यों को देखने से चूक गया।
दरअसल, मैं विक्रम भट्ट की फिल्म में अभियोक्ता के रूप में उनकी सहायक भूमिका को भूल ही गया था।
सैप्पी मेलोड्रामा, कसूर (2001)।
हासिल (2003) ही वह फिल्म थी जिसने उन्हें एक महत्वपूर्ण भूमिका दिलाई (इस बारे में आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी)।
मकबूल (2003), विशाल भारद्वाज द्वारा विलियम का शानदार रूपांतरण शेक्सपियर का मैकबेथ। एक परेशान किरदार का दमदार प्रदर्शन। मैकबेथ (या मकबूल, जैसा कि पटकथा लेखकों विशाल भारद्वाज और द्वारा नाम दिया गया)
अब्बास टायरवाला) बॉम्बे में एक अंडरवर्ल्ड लीडर के लिए काम करता है और उससे प्यार करता है।

अपने बॉस की मोहक प्रेमिका निम्मी के साथ।
2000 के दशक की शुरुआत में सोशल मीडिया का कोई अस्तित्व नहीं था, फिर भी, भले ही हम वहां रहते थे
न्यूयॉर्क में, मैं इरफ़ान के काम से परिचित हो रहा था। उन्होंने मुझे कुछ झलकियाँ दिखाईं।
एक ऐसे दुर्लभ चमकते सितारे की कहानी, जो किसी भी भूमिका में पर्दे को रोशन कर सकता था।
खेल रहा था।

जुलाई 2005 में, मैंने इरफ़ान को उनकी पहली मुख्य भूमिका में देखा— ब्रिटिश फिल्म में।
भारतीय फिल्म निर्माता आसिफ कपाडिया की फिल्म द वॉरियर (2001)।
हालांकि इरफान ने एक
फिल्म 'द वॉरियर' में अपने भावपूर्ण अभिनय के लिए उन्हें मुख्य रूप से याद किया जाता है।
29 वर्षीय आसिफ की दूरदर्शी पटकथा और निर्देशन ने इस फिल्म को दो पुरस्कार दिलाए।
बाफ्टा पुरस्कार जीतने के साथ-साथ उन्हें ब्रिटिश फिल्म उद्योग में भी प्रशंसक मिले, जिनमें शामिल हैं...
दिवंगत फिल्म निर्माता एंथोनी मिंगेला ने फिल्म को प्रस्तुत करने का जिम्मा संभाला था।
अमेरिका स्थित स्वतंत्र वितरण कंपनी मिरामैक्स ने इसके अधिकार खरीद लिए।
फिल्म को अमेरिका के सिनेमाघरों में रिलीज करें।
हालांकि, द वॉरियर कुछ समय तक मिरामैक्स की सूची में पड़ी रही।
उत्पादन और वितरण कंपनी के प्रमुख प्रमुख - भाई हार्वे और

बॉब वेनस्टीन को हिंदी भाषा की फिल्म को रिलीज करने का तरीका नहीं पता था।
अमेरिका में 2005 की गर्मियों तक, जब उन्होंने अंग्रेजी उपशीर्षक वाली फिल्म को हटा दिया।
कुछ सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने के बाद, उन्होंने एक समय के बेहद लोकप्रिय थिएटर से अचानक विदाई ले ली।
सफल कंपनी। इरफान को फिल्म के प्रचार के लिए अमेरिका नहीं भेजा गया था।
इसके प्रीमियर में शामिल हों। द वॉरियर बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो गई, और किसी ने इसके बारे में बात नहीं की।
उस समय इरफान खान के बारे में बहुत कुछ।
2005 में, इरफ़ान आदित्य भट्टाचार्य की एक हास्यप्रद कॉमेडी फिल्म में भी नज़र आए थे।
दुबई रिटर्न नाम की एक अप्रकाशित फिल्म भी कभी दर्शकों तक नहीं पहुंच पाई।
भारत। मैंने इसे न्यूयॉर्क में देखा था, और कुछ साल बाद मैंने उसे एक और फिल्म में देखा।
एक मनमोहक फिल्म—लाइफ इन अ… मेट्रो (2007), एक सामूहिक प्रस्तुति जिसका निर्देशन किया गया है
अनुराग बसु, इरफान और कोंकणा सेन के बीच एक शानदार हास्य दृश्य के साथ।
शर्मा।

मेरी पहली मुलाकात इरफान से 2007 की गर्मियों में हुई थी जब वह न्यूयॉर्क आए थे।

माइकल विंटरबॉटम की फिल्म 'ए माइटी हार्ट' के प्रचार के लिए आयोजित यात्रा कार्यक्रम, जो इस पर आधारित है...
वॉल स्ट्रीट जर्नल के पत्रकार डैनियल की विधवा मारियान पर्ल का संस्मरण
मोती। जैसा कि मैंने बाद में अपने साप्ताहिक मुंबई मिरर कॉलम में लिखा था, रिलीज के साथ।
'ए माइटी हार्ट' के संदर्भ में, इरफान खान दो पुरस्कार जीतने वाले भारत के पहले अभिनेता बने।
उसी समय अमेरिका में चल रही फिल्में। उनकी मीरा नायर अभिनीत फिल्म, द 'नेम्सेक' अपने अंतिम चरण में है—अभी भी सिनेमाघरों में चल रही है और 13 मिलियन डॉलर से अधिक की कमाई कर चुकी है। और अब खान 'ए माइटी हार्ट' में एक महत्वपूर्ण सहायक भूमिका में हैं।
(जो) पूरे अमेरिका में 1,355 स्क्रीनों पर चल रही है।
उस सम्मेलन में साक्षात्कार लेने के इच्छुक पत्रकारों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी।
एंजेलीना जोली, जिन्होंने फिल्म में मारियान पर्ल का किरदार निभाया था। कुछ पत्रकार
उन्होंने इरफान को पहचान लिया, क्योंकि उन्होंने हाल ही में उन्हें फिल्म 'द नेम्सके' में देखा था।
न्यूयॉर्क शहर के वाल्डोर्फ एस्टोरिया होटल में गोल मेज पर बैठे हुए, मैंने पूछा
इरफ़ान ने बताया कि पत्रकारों द्वारा पहचाने जाने पर उन्हें कैसा लगा, जबकि आम तौर पर उन्हें पहचानना मुश्किल होता है।
मुझे केवल एंजेलीना जोली जैसी हस्तियों में ही दिलचस्पी रही है। इरफ़ान एक पल के लिए हिचकिचाया और फिर मुस्कुराते हुए तुरंत बोला, 'मैं'
मुझे लगता है कि मुझे और फिल्में चाहिए। काश मुझे इस तरह की और फिल्में देखने को मिलतीं और लोग भी।

जब तक हर कोई मुझे जान नहीं लेता, तब तक लोग मुझ पर ध्यान नहीं देंगे।' दूसरे रिपोर्टर
इरफ़ान के स्पष्ट जवाब को देखकर मैं भी उनके साथ हंसने लगा, क्योंकि उनका जवाब उनके स्वभाव को दर्शाता था।
विनम्रता।
साक्षात्कार के अंत में, जहाँ मैं एकमात्र भारतीय पत्रकार था
मूल स्थान के बारे में बात करते हुए, इरफान और मेरी थोड़ी देर बातचीत हुई। अचानक, उन्होंने मुझसे हिंदी में पूछा,
‘Kuch ho raha hai yahan (Is something happening here)?’ What he meant
सवाल यह था कि क्या अमेरिका में कोई वास्तव में उसे नोटिस कर रहा था और क्या उसके पास कोई
अधिक काम मिलने की संभावना।
हां, बिल्कुल कुछ तो हो रहा है (हां, निश्चित रूप से कुछ तो हो रहा है) ऐसा हो रहा है),’ मैंने जवाब दिया। ‘ऐसा हर दिन नहीं होता कि कोई अभिनेता—यहां तक कि एक
हॉलीवुड अभिनेता—जिनकी दो फिल्में न्यूयॉर्क शहर में चल रही हैं। मेरी बात सुनकर इरफान को कुछ हद तक तसल्ली मिली, लेकिन अभिनेता
वह व्यक्ति, जो जीवन में हमेशा और अधिक चाहता था, अब भी इस बात को लेकर बहुत उत्सुक था कि कैसे
हॉलीवुड में व्याप्त लैंगिक भेदभाव की बाधाओं को सचमुच तोड़ देना। वह अवसर आखिरकार एक साल बाद आया। सितंबर 2008 की शुरुआत में, मैं डैनी बॉयल की फिल्म 'स्लमडॉग मिलियनेयर' के विश्व प्रीमियर में भाग लिया।
टेलुराइड फिल्म महोत्सव। फिल्म दर्शकों के बीच बहुत सफल रही। मुझे मुझे लगा कि यह फिल्म सफल हो सकती है। और फिर, दो हफ्ते बाद, इसने पुरस्कार जीत लिया।

टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (टीआईएफएफ) में प्रतिष्ठित दर्शक पुरस्कार।
फरवरी 2009 में, स्लमडॉग मिलियनेयर ने ऑस्कर में धूम मचा दी। जब फिल्म के निर्माता ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए अकादमी पुरस्कार की घोषणा की।
क्रिश्चियन कोल्सन ने पुरस्कार स्वीकार किया। इरफान अपने सह-कलाकारों के साथ मंच पर मौजूद थे।
— अनिल कपूर, फ्रीडा पिंटो, देव पटेल, फिल्म के बच्चे और अन्य सहयोगी ए.आर. रहमान, रसूल पूकुट्टी और निर्देशक डैनी बॉयल। यदि
अगर आप YouTube पर क्रिश्चियन कोल्सन का स्वीकृति भाषण देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि...
ध्यान दीजिए कि इरफान अनिल कपूर और लवलीन टंडन के बीच खड़े हैं— फिल्म के सह-निर्देशक अनिल मुस्कुराते हुए नज़र आ रहे हैं, जबकि इरफ़ान मानो पल को समझने की कोशिश कर रहे हैं। वे मुस्कुरा रहे हैं, लेकिन कुछ हद तक हैरान भी हैं और स्थिति को समझने का प्रयास कर रहे हैं।
अभी-अभी जो कुछ हुआ था, उसकी भयावहता।
कुछ साल बाद, जब जीक्यू इंडिया पत्रिका ने उनसे पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे
जब अनिल कपूर जैसे उनके सह-कलाकार खुशी से झूम रहे थे, तब वह मंच पर शांत थे।
इरफ़ान ने यही कहा था: ‘मेरे ऐसा होने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि मैं फिल्म का इतना बड़ा हिस्सा नहीं हूं। अगर मैं देव पटेल की भूमिका निभा रहा होता, तो शायद मैं...
मैं तो खुशी से झूम रहा होता। लेकिन मेरे लिए तो ऐसा था, जैसे, आप जानते हैं,
किसी और की शादी हो रही है और नाच-गाना सिर्फ आप ही कर रहे हैं।

और वैसे भी, स्वभाव से मैं ऐसा नहीं कर सकता। पता नहीं क्यों, लेकिन मैं एक शर्मीला इंसान हूँ।
शायद मैंने उस भावना से निपटने के लिए अभिनेता बनने का फैसला किया।
शर्मीले स्वभाव के बावजूद, तब से इरफान (और उनके अन्य स्लमडॉग) करोड़पति सह-कलाकारों को पश्चिम में ध्यान आकर्षित करने की चिंता नहीं करनी पड़ती थी।
फिल्म की सफलता के चलते इरफान को अपना मैनेजर और एजेंट मिल गए। अमेरिका। हॉलीवुड में उनके प्रवेश की प्रक्रिया शुरू होने ही वाली थी, जबकि
वह भारतीय सिनेमा में एक अभिनेता और स्टार के रूप में भी लगातार आगे बढ़ते रहे।
इसी दौरान मैंने भारत, विशेषकर बंबई की यात्राएं कीं।
यह सिलसिला और भी नियमित हो गया। और हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अक्सर मेरी मुलाकात इरफान से होने लगी।
मुंबई फिल्म महोत्सव में आयोजित पार्टियां, जिसका आयोजन मुंबई अकादमी द्वारा किया गया था।
मूविंग इमेज (MAMI) में और एक बार जुहू स्थित JW मैरियट में भी, जहाँ उन्होंने
मैं दोस्तों के एक बड़े समूह के साथ था।
जैसे-जैसे ट्विटर हमारे जीवन का नियमित हिस्सा बनता गया, मैं अक्सर लोगों से बातचीत करने लगा।
इरफ़ान ने कई फिल्मों में, खासकर पान सिंह में उनके काम की सराहना की।
तोमर (2012), जिसने अभिनेता को उनका पहला और एकमात्र राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाया।
उन्होंने अपने एनएसडी के दिनों के दोस्त तिग्मांशु द्वारा निर्देशित फिल्म की समीक्षा की।

धुलिया। समीक्षा में मैंने उल्लेख किया था कि इरफान ने बेहतरीन प्रदर्शनों में से एक दिया था।
उनके करियर के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों में से एक, 'द' में उनकी दिल दहला देने वाली भूमिकाओं के तुलनीय है।
नाम और एचबीओ सीरीज़ 'इन ट्रीटमेंट'। मैंने यह भी लिखा, 'खान एक राष्ट्रीय धरोहर, एक अद्वितीय प्रतिभावान भारतीय अभिनेता जो अपनी आंखों, आवाज और
अपने पात्रों में हास्य और फिर करुणा को प्रदर्शित करने के लिए वह चेहरे की अन्य विशेषताओं का उपयोग करता है।
जब मैंने ट्विटर पर अपनी समीक्षा पोस्ट की, तो इरफ़ान ने जवाब दिया, 'धन्यवाद। इसमें समय लगा।'
इस तरह का रोल पाने के लिए मुझे एक दशक से भी ज्यादा समय लगा। वह मेरी अंतरात्मा की आवाज है।'
इरफ़ान की आँखें उनकी सबसे आकर्षक विशेषताओं में से एक हैं और उन्होंने यह सीख लिया है कि
इनका उपयोग करके विभिन्न प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करें। मीरा नायर ने मुझे बताया कि वह सबसे पहले इनकी ओर आकर्षित हुईं।
इरफान की झुकी हुई आंखों की ओर।
2016 में टॉम हैंक्स मैक्सिको के कैनकन में रॉन हॉवर्ड की फिल्म का प्रचार कर रहे थे।
फिल्म 'इन्फर्नो' के बारे में पूछे जाने पर, उन्होंने कहा, 'मैं...' मैं उसकी जादुई आँखों से पूरी तरह मोहित हो गई थी। उसका शारीरिक रूप-रंग इतना विशिष्ट और मनमोहक है।

सभी दृष्टियों से, इरफान खान की फिल्मोग्राफी असामान्य और आकर्षक है।
मुझे लाइफ ऑफ पाई (2012) और द लंचबॉक्स (2013) में उनका अभिनय बहुत पसंद आया। दोनों फिल्मों में,
इरफ़ान के पात्र इतने दर्द, पछतावे और गहरे दुख के साथ जीते हैं कि उनके साथ रोए बिना रहना नामुमकिन है। मैं फिल्म 'द' के कुछ दृश्य देख सकता हूँ।
इरफ़ान के शांत, ध्यानमग्न अभिनय की प्रशंसा करने के लिए लंचबॉक्स ले जाना—
दिल तोड़ने वाला—जब तक कि उसे प्यार में पड़ने की खुशी का एहसास नहीं होने लगता।
मई 2013 में कान फिल्म फेस्टिवल में प्रीमियर के बाद, द लंचबॉक्स का प्रीमियर भी हुआ।
टेलुराइड फिल्म फेस्टिवल में, और एक सप्ताह बाद, टीआईएफएफ में। पहला टोरंटो के रॉय थॉमसन हॉल में स्क्रीनिंग के दौरान तकनीकी समस्याएं आ गईं।
दर्शकों को लुभाने के लिए, फिल्म के मुख्य अभिनेता इरफान मंच पर खड़े हो गए।
अपने निर्देशक रितेश बत्रा के साथ लगभग 40 मिनट तक एक तात्कालिक प्रस्तुति देते हुए।
प्रश्नोत्तर सत्र। 'कोई भी निर्माता या निर्देशक मुझे प्रेम कहानियों में कास्ट नहीं करना चाहता,'
इरफ़ान ने उस व्यक्ति के सवाल का जवाब देते हुए कहा, जिसने उनसे पूछा था कि उन्हें कैसा महसूस हो रहा है।
एक रोमांटिक किरदार निभा रही हूँ। 'वे मुझमें प्यार नहीं देखते। पहली बार जब मैंने
टीआईएफएफ में पहले मकबूल के साथ और अब द लंचबॉक्स के साथ आए थे।
दोनों

फ़िल्में प्रेम कहानियाँ होती हैं। शायद TIFF की वजह से मुझे और भी प्रेम कहानियों में काम करने का मौका मिलेगा।'
सभागार खचाखच भरा हुआ था, जिसमें 2,500 से अधिक लोग मौजूद थे—जिनमें से अधिकांश दक्षिण एशियाई थे।
शहर और उसके उपनगरों के लोग—जिन्होंने अभी तक फिल्म नहीं देखी थी, फिर भी वे इंतजार कर रहे थे।
धैर्यपूर्वक, उस अतिरिक्त समय के हर पल का आनंद लेते हुए जिसमें उन्हें सुनने का मौका मिला।
उनके पसंदीदा अभिनेता बोल रहे थे। किसी ने भी स्क्रीनिंग को लेकर शिकायत नहीं की।
काफी विलंब हुआ।
भारत में इंडी और आर्ट हाउस सिनेमा में इरफान ने अपनी पहचान बनाई थी, यह बात अब स्पष्ट हो गई है।
यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है जब उसी वर्ष टीआईएफएफ ने एक दूसरी फिल्म का भी प्रीमियर किया।
उनकी फिल्म 'किस्सा: द टेल ऑफ अ लोनली घोस्ट' के निर्देशक अनुप सिंह की पंजाबी फिल्म है।
विभाजन, विस्थापन और पश्चाताप के बारे में एक भाषाई, लिंग-परिवर्तनकारी लोककथा।
द लंचबॉक्स की आफ्टर-पार्टी में, मैंने इरफ़ान को दो फिल्मों के लिए बधाई दी।
वह इस महोत्सव को लेकर थोड़ा चिंतित लग रहा था। भारत में दर्शकों की प्रतिक्रिया को लेकर भी उसकी चिंता बढ़ गई थी।
किस्सा: द टेल ऑफ़ अ लोनली घोस्ट पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी? लेकिन वह खुद भी इसका आनंद ले रहे थे।
जैसे-जैसे अधिक से अधिक लोग उनके पास आने लगे, उनकी प्रसिद्धि और पहचान बढ़ती गई।

पार्टी में लोग हाथ मिलाने, सेल्फी लेने या बस वहां खड़े होकर स्टार को देखने के लिए आते हैं।
मई 2015 में, मैंने शूजीत सरकार की फिल्म 'पिकू' में इरफान को देखा, जिसमें वह दक्षिण दिल्ली में एक टैक्सी सेवा के मालिक की भूमिका निभाते हैं, जो बड़ी अनिच्छा से एक यात्री को काम पर रख लेता है। एक सनकी बूढ़ा व्यक्ति जिसे पेट की समस्या है (अमिताभ बच्चन) और उनकी बेहद स्वतंत्र और गुस्सैल बेटी (दीपिका पादुकोण) एक
कोलकाता की रोड ट्रिप। इरफान का किरदार राणा एक अजीब पिता-बेटी के रिश्ते में फंसा हुआ है।
एक जोड़ी। वे एक दूसरे से प्यार करते हैं, फिर भी छोटी-छोटी बातों पर लगातार झगड़ते रहते हैं।
यह पहली बार था जब मैंने इरफान की आंखों में हास्य की चमक देखी, जैसा कि वह अक्सर करते थे।
पिता और बेटी को देखकर मैं पूरी तरह अविश्वास से भर गया। मैंने इसके बारे में ट्वीट किया और इरफान ने भी ट्वीट किया।
उन्होंने मुझे धन्यवाद देते हुए जवाब दिया। उन्होंने लिखा, 'यह फिल्म मेरे लिए भी खास है।'
पिकू देखते समय मुझे इरफान के बारे में कुछ नया भी पता चला।
दरअसल, उसमें काफी कामुकता थी। तब तक मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था।
इरफ़ान एक सेक्स सिंबल के रूप में जाने जाते थे और किसी अन्य फिल्म निर्माता ने उनके इस पहलू को नहीं दिखाया था।
व्यक्तित्व। उन्होंने अपनी पिछली फिल्मों में रोमांस की झलकियाँ दिखाई थीं, जिनमें शामिल हैं
अन्यथा बेहद दुखद फिल्म में तब्बू के साथ कुछ सुखद क्षण।
हमनाम। फिल्म 'मकबूल' में उनके और तब्बू के बीच कुछ मोहक दृश्य थे।
इरफान

आमतौर पर वह एक गंभीर अभिनेता के रूप में सामने आते हैं, बहुत ही मिलनसार, लेकिन मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वह
वह अपने अभिनय से हमें आश्चर्यचकित कर देते हैं। लेकिन पीकू में मैंने इरफान के राणा को धीरे-धीरे बदलते देखा।
दीपिका की पीकू से प्यार हो जाता है, खासकर जब दोनों चुपचाप एक-दूसरे से बातें करती हैं।
सड़क यात्रा के दौरान उनकी नज़रें एक-दूसरे पर पड़ती हैं। हिंदी भाषा की फिल्म के हिसाब से, उनका रोमांस एक अलग ही मोड़ लेता है। खिलने में बहुत लंबा समय लगता है, लेकिन यह वास्तविक है, और बहुत विश्वसनीय है।
एनएसडी में उनके दोस्त अभिनेता-निर्देशक तिग्मांशु धूलिया का भी कुछ ऐसा ही था
इरफ़ान के कामुक आकर्षण पर विचार। 'इरफ़ान में जबरदस्त सेक्स अपील है और वह
वह बौद्धिक तरीके से महिलाओं की संवेदनशील भावनाओं को जगाता है। वह इसके लिए उपयुक्त नहीं है।
उन महिलाओं के लिए नहीं जो सतही हैं, बल्कि उन महिलाओं के लिए जिनमें कुछ सार है। कोई भी महिला जिसमें कुछ है
बुद्धिजीवी वर्ग को इरफान बेहद आकर्षक लगेगा।
मुझे पता है कि मैं 'बुद्धिमान महिला' की श्रेणी में नहीं आती, लेकिन मुझे लगता है, पीकू के साथ, मुझे भी इरफान पर क्रश हो गया था। मेरे लिए, वह एक
हिंदी सिनेमा में काम करने वाले सबसे सेक्सी और कूल अभिनेताओं में से एक।

कई बार ऐसा हुआ है कि कोई फिल्म कुछ हद तक त्रुटिपूर्ण रही हो, लेकिन इरफान की फिल्म में ऐसा नहीं था।
प्रदर्शन में यह सुनिश्चित करने की क्षमता थी कि यह देखने लायक था। मुझे ऐसा लगा कि
डी-डे (2013) के बारे में। यह फिल्म गहन, सटीक संपादन और रोमांचकारी दृश्यों से भरपूर थी।
शुरुआती दृश्य अच्छा था, लेकिन कथानक थोड़ा उलझ गया, फिर भी इरफान ने इसमें उनका प्रदर्शन असाधारण था। मुझे बहुत पसंद आया कि उन्होंने मेघना गुलज़ार की तलवार (2015) को अपने कंधों पर किस तरह संभाला—एक सशक्त सामूहिक प्रस्तुति—जिससे एक बहुत ही सूक्ष्म प्रभाव पैदा हुआ।
प्रदर्शन। और फिर, आंशिक रूप से पिक्कू की सफलता के कारण, वह दिखाई दिया।
कुछ और मीठी, मध्यम-श्रेणी की रोमांटिक कॉमेडी फिल्मों में, जैसे कि हिंदी में।
मीडियम, ऑलमोस्ट ऑलमोस्ट सिंगल (दोनों 2017 से), ब्लैकमेल, कारवां और एक
एक छोटी अमेरिकी इंडी फिल्म, पज़ल (सभी 2018 में रिलीज़ हुईं)। बेशक, इरफ़ान ने और भी कई फिल्मों में अभिनय किया है—शायद उनमें से कुछ उतनी प्रसिद्ध नहीं हैं।
ये बेहतरीन करियर विकल्प हैं, लेकिन हर अभिनेता को पैसा कमाने के लिए समझौता करना पड़ता है।
वेतन। हर ज़ोरदार धन्यवाद के लिए (2011 की अनीस बज़मी कॉमेडी) और ओवर-द-टॉप जज्बा (संजय गुप्ता की 2015 की फिल्म, जिसे दोबारा बनाया जाना था)
ऐश्वर्या राय के करियर की शुरुआत करने वाली (दोनों ही) फिल्मों की आलोचकों ने जमकर आलोचना की थी और
इसे ज्यादा दर्शक नहीं मिले—द सॉन्ग ऑफ जैसी फिल्म भी थी।

स्कॉर्पियन्स (2017), जिसका प्रीमियर लोकार्नो फिल्म फेस्टिवल में हुआ था या नो बेड ऑफ
रोजेस (2017), विदेशी भाषा ऑस्कर के लिए बांग्लादेश की आधिकारिक प्रविष्टि।
उन्होंने द अमेजिंग सहित कुछ ए-लिस्ट हॉलीवुड फिल्मों में भी अभिनय किया है।
स्पाइडर-मैन (2012), जुरासिक वर्ल्ड (2015) और इन्फर्नो (2016)।
इसी दौरान उन्होंने फिल्मों का निर्माण भी शुरू कर दिया। अब तक उन्होंने एक फिल्म का निर्माण किया है।
उनकी पत्नी के साथ कुछ प्रोजेक्ट्स—मदारी (2016) और करीब करीब सिंगल— दोनों में उन्होंने काम किया है।
सुतापा सिकदर और शैलजा केजरीवाल, इरफ़ान के दिनों की दोस्त टेलीविजन में काम करते हुए। और उन्हें निर्माता का पद भी दिया गया था।
बांग्लादेशी फिल्म 'नो बेड ऑफ रोजेज'।
2015 और 2018 की शुरुआत के बीच, इरफान खान ने सोलह परियोजनाओं में अभिनय किया।
इसमें एक मिनी-सीरीज़, टोक्यो ट्रायल (2016) भी शामिल है, जिसमें उन्होंने भूमिका निभाई थी।
राधा बिनोद पाल, उन तीन एशियाई न्यायाधीशों में से एक थीं जिन्हें एक न्यायाधिकरण में नियुक्त किया गया था ताकि मुकदमे की सुनवाई की जा सके।
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापानी युद्ध अपराधी। वे तीन वर्ष थे इरफ़ान के युवा अभिनेता करियर का सबसे व्यस्त दौर। और ऐसा लग रहा था कि कोई भी चीज़ उन्हें रोक नहीं सकती।
उसे।

मैंने इस पुस्तक पर काम करना 2018 के वसंत के अंत में शुरू किया था।
उस समय तक इरफ़ान
वह कैंसर के एक दुर्लभ रूप का इलाज कराने के लिए देश से बाहर थे।
न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर। उनके शुरुआती संदेशों ने हम सभी को चौंका दिया, लेकिन मुझे विश्वास था।
मुझे उम्मीद थी कि वह वापस आ जाएगा। मैंने उन लोगों से बात करना शुरू किया जिनके साथ उसने काम किया था।
तिग्मांशु धूलिया से शुरुआत करते हुए, फिर मेघना गुलजार।
मुझे लगा कि मुझे इरफ़ान से बात करनी चाहिए, कम से कम उन्हें यह बताने के लिए कि मैं इस किताब पर काम कर रही हूँ। मैंने उनके मैनेजर को लिखा और उन्होंने मुझे बताया कि अतीत में इरफ़ान
प्रकाशन गृहों ने उनसे आत्मकथा लिखने के लिए संपर्क किया था और यहां तक कि
अन्य लेखकों द्वारा भी, जो उनकी जीवन कहानी पर काम करना चाहते थे। लेकिन हर समय वह
उन्होंने कहा, 'मैं इसके बिल्कुल खिलाफ हूं।' लेकिन शायद वह किसी और ही स्थिति में थे, उन्होंने आगे कहा।
और शायद उन पर लिखी गई किताब पढ़ने के लिए तैयार हों।
मैंने पुस्तक के लिए अपने प्रस्ताव का विस्तृत विवरण देते हुए एक लंबा ईमेल भेजा और मुझे बताया गया कि
इरफ़ान लंदन से फोन करते थे, जहाँ उनका इलाज चल रहा था। वह फोन
कुछ हफ़्ते बाद ऐसा हुआ। मैंने उससे पूछा कि वह कैसा है और उसने जवाब दिया।
that he was better. ‘Mujhe pata nahi yeh kaisi kitab hogi (I do not know what
(यह एक तरह की किताब होगी),’ उन्होंने मुझसे कहा, उनकी आवाज़ काफी खुशमिजाज लग रही थी। उनकी आवाज़

वह मजबूत था, और उसकी बातें सुनकर मुझे पता चल रहा था कि उसकी हालत में सुधार हो रहा है।
यह कॉल लगभग दस मिनट तक चली। इरफान ने इंटरव्यू देने से इनकार कर दिया।
किताब के बारे में। उन्होंने कहा, 'मैं अभी उस स्थिति में नहीं हूं,' और मैंने इस पर जोर नहीं दिया।
और फिर उन्होंने मुझे कुछ ऐसे लोगों के बारे में भी बताया जिनसे मुझे बात करनी चाहिए, साथ ही एक और व्यक्ति के बारे में भी बताया।
उनके कुछ ऑनलाइन और प्रिंट इंटरव्यू थे जो उन्हें बहुत पसंद आए थे।
2018 की शरद ऋतु के दौरान हमने कुछ और संदेशों का आदान-प्रदान किया।
वह ऐसा प्रतीत हुआ
हमेशा हंसमुख। मैंने कई फिल्मी हस्तियों से बात की और उनका साक्षात्कार लिया।
this book—Mira Nair, Tigmanshu Dhulia, Shailja Kejriwal, Vipin Sharma,
बांग्लादेशी फिल्म निर्माता मुस्तोफा सरवर फारूकी और सतीश कौशिक-सभी ने मुझे बताया कि वे उनसे लंदन में मिले थे और वह निश्चित रूप से इलाज का असर दिख रहा था। मीरा उससे एक कैफे में मिली और उसने उसे कुछ देर के लिए अपने साथ रखा।
मैंने अपने दोस्त की साइकिल ली और उसे लेकर मोहल्ले में चक्कर लगाया। शैलजा ने मुझे बताया कि इरफान और
सुतापा अक्सर लंदन में खाना खाने या नाटक देखने जाया करती थी।
यह सब उत्साहवर्धक था और इससे उनके शुभचिंतकों को काफी उम्मीद मिली। उनके साथ व्हाट्सएप पर हुई बातचीत के दौरान मैंने यह कहकर बात खत्म की, 'मुझे उम्मीद है'
आप बेहतर कर रहे हैं।
उनका जवाब मधुर और भावपूर्ण था। 'मैं इसके बारे में बिल्कुल नहीं सोच रहा हूँ।'

जो भी होगा, अच्छे के लिए ही होगा।
मुझे पता था कि वह मुश्किल दौर से गुजर रहा है, और मैं उसकी भावनाओं का सम्मान करना चाहता था।
गोपनीयता।
इसलिए मैंने साक्षात्कार की संभावना पर विचार नहीं किया।

यह पुस्तक हमारे समय के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में से एक, सामान्य कलाकारों के बीच एक राजकुमार के प्रति प्रशंसा और सम्मान व्यक्त करने का एक प्रयास है। यह पाठकों को एक अलग ही दुनिया में ले जाएगी। इरफान के जीवन और करियर की यात्रा पर, मुख्य रूप से उनकी प्रमुख फिल्मों पर ध्यान केंद्रित करते हुए।
IMDb.com के अनुसार, इरफ़ान ने 155 परियोजनाओं में अभिनय किया है, जिनमें से अधिकांश
इसमें फिल्में और कुछ टेलीविजन कार्यक्रम शामिल हैं। जाहिर है, इन सभी को कवर करना संभव नहीं है।
हर फिल्म में, और यहां तक कि शीर्ष अभिनेता भी कभी-कभी ऐसी परियोजनाओं पर काम करते हैं जो सबसे अच्छी होती हैं
भुला दिया गया। लेकिन इरफ़ान के मामले में, ऐसी कई उल्लेखनीय फिल्में हैं जिनमें उन्होंने अभिनय किया है।
उन्हें लगातार अपनी प्रतिभा दिखाने, अभिनय कौशल का प्रदर्शन करने और साझा करने का अवसर मिलता रहा।
उनका वह कमजोर पक्ष जिसे हिंदी फिल्म अभिनेताओं को निभाने का मौका बहुत कम मिलता है।
इनमें से अधिकतर फिल्में ऑनलाइन या डीवीडी पर उपलब्ध हैं। कुछ फिल्में दुर्लभ भी हैं।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. '[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible]', [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
2. [illegible] (2014) [illegible]
3. [illegible] (2006) [illegible]
4. [illegible] (2015) [illegible]
5. '[illegible]: [illegible]', [illegible], 3 [illegible] 2012, https://www.gqindia.com/content/cover-story-[illegible]

[illegible]

[illegible]

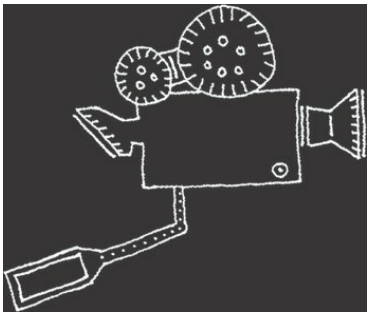

Umango bhari umar hai. Saare aalam ko fateh karne ka khwaab dekhne ki umar hai.1

□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□

□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□

□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□□□ 'r' □□□□ □□□□□

(□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□)

7 □□□□□ 1967 □□, □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□—□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□

मैं अक्सर छोटे इरफान को अपने साथ ले जाता था। 'मुझे बंदूक चलाने में दिलचस्पी थी, लेकिन मैं
'मुझे जानवरों को मारने का विचार पसंद नहीं था,' इरफान ने बाद में अभिनेता विनय को बताया।
पाठक टेलीविजन शो 'द हाउस दैट मेड मी' (शो का प्रसारण होता है) पर। (नेटफ्लिक्स पर)। उन्हें मांस खाना भी पसंद नहीं था क्योंकि उन्हें मांस का स्वाद पसंद नहीं आया था।
बचपन में ही। इसी वजह से उनके पिता अक्सर कहते थे कि इरफान एक
पठान परिवार में जन्मे ब्राह्मण। बाद में, वयस्क होने पर बंबई में रहते हुए,
इरफान अपने दोस्तों के बीच साफ-सुथरा यखनी पुलाव बनाने के लिए मशहूर हो गए थे।
उसके माता-पिता के बीच भी लगातार झगड़े होते रहते थे। उसकी माँ कभी नहीं
उसे शिकार करना या अपने छोटे बेटों को जंगल में भेजना पसंद था। 'वह कोमल और नरम स्वभाव की थी।'
इरफान ने अनुपम को बताया, 'वह दार्शनिक स्वभाव की थीं और उन्हें शिकार करना कभी पसंद नहीं था।'
Kher on his television show Kuch Bhi Ho Sakta Hai. ‘Their chemistry didn’t
मैच.’2
इरफ़ान को पतंग उड़ाना बहुत पसंद था, लेकिन इस शौक की कीमत उसे चुकानी पड़ी। वह सात साल का था।
जब वह अपने परिवार के किराए के घर की छत से गिर गया, एक गेंद पकड़ने की कोशिश करते हुए।
बिजली के तार से लटकती पतंग की डोरी से टकराने के कारण उसकी बाईं कोहनी टूट गई।

और कलाई में चोट लगी। उनके पिता शिकार पर गए हुए थे और परिवार को इस बारे में पता नहीं था।
चोट का इलाज कैसे करें। एक मालिश करने वाला आया, उसने कोहनी को खींचा और मालिश की और
उसने इसे सीधा कर दिया। उसे इस सदमे से उबरने में दो साल लग गए। पहले से ही फ्रैक्चर और चोट का दर्द था, और उसके ऊपर बच्चे भी होते। स्कूल में उसका मजाक उड़ाओ।
उन्होंने फिल्म पत्रकार अनुपमा चोपड़ा को बताया, 'मैं धीरे-धीरे अपने आप में सिमटने लगा था।'
3 एफसी अनफिल्टर्ड शो पर एक इंटरव्यू के दौरान। वह हमेशा से शर्मीला रहा था, लेकिन
इस दुर्घटना के कारण उनका सारा आत्मविश्वास खत्म हो गया। बिस्तर पर लेटे हुए एक
दिन में, उसने अपना मनोरंजन करने के लिए एक खेल विकसित किया। वह अपना हाथ उठाता था।
कलाई पर निशाना साधें और फिर अनुमान लगाएं कि यह हाथ के आगे की ओर गिरेगा या पीछे की ओर।
अब इरफान उस घटना को लेकर मजाक करते हैं, लेकिन उस चोट का दर्द आज भी उनके मन पर बना हुआ है।
जब वह पहली बार एनएसडी की कक्षाओं में भाग लेने के लिए दिल्ली गए थे, और बाद में भी, तब भी उन्होंने उनका साथ दिया था।
जब वह टेलीविजन में काम करने के लिए बॉम्बे चले गए।
उनकी मां उनके जीवन की सबसे मजबूत शख्सियत थीं, लेकिन इरफान को संघर्ष करना पड़ा।
उससे जुड़ना चाहता था। वह उसके करीब रहना चाहता था, लेकिन अंत में वे...
बहस करते हुए। वह हमेशा उसे खुश करने और उसका दिल जीतने के मौके तलाशता रहता था।

स्वीकृति। बचपन में, उन्हें अपनी नानी (मातृ पक्ष) की संगति में सुकून मिलता था।
दादी) की जगह। उनके बचपन की यादें उन पलों से भरपूर हैं जब वह
टोंक में अपनी नानी के साथ बिताया गया समय, उनकी गोद में सिर रखकर और, ज़ाहिर है, हवाई यात्रा करते हुए।
पतंग उड़ाना। ऐसा लगता है कि उसकी नानी ने उसे पजामा बांधना भी सिखाया था।
डोरी वाली डोरी। वह एक हकीम (जड़ी-बूटियों और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करने वाली चिकित्सक) थी।
(इलाज के लिए दवा)। उसके हाथों से अक्सर उन जड़ी-बूटियों की गंध आती थी जिनका वह इस्तेमाल करती थी।
उन्होंने 4 ओपन पत्रिका को दिए एक साक्षात्कार में कहा, 'मरीजों का इलाज करने के लिए, मैं महीनों बिताता था।'
उसके साथ रहकर, वह लोगों को कैसे ठीक करती थी, यह सीख रही थी।' चूंकि उसके पिता ज्यादातर
शिकार पर अनुपस्थित रहने के कारण, इरफान का बचपन सशक्त महिलाओं से प्रेरित था।
उनकी मां, बहन और चाची सहित, लेकिन विशेष रूप से उनकी नानी। 'मेरी नानी थीं
सकारात्मकता की साक्षात मूर्ति। उसने मुझे इतनी श्रद्धा से देखा और उसने बिना शब्दों के ही मुझे छू लिया। मेरे लिए इतना ही काफी था। मैं उस पर पूरी तरह फिदा हो गया था।
प्यार।'
2006 की शुरुआत में, इरफ़ान मीरा नायर की फिल्म 'द नेम्सके' की शूटिंग कर रहे थे।
यह दृश्य अमेरिका के न्यू जर्सी के एक उपनगरीय इलाके में स्थित एक घर में फिल्माया गया था।

डिजाइन टीम ने इरफान और तब्बू के परिवारों की असली तस्वीरें लगाई थीं।
घर के शयनकक्ष की दीवारों को इस तरह रंगा गया है कि उसमें प्रामाणिकता का आभास हो। वहाँ से गुजरते हुए
तस्वीरों को देखते हुए, इरफान को अचानक अपनी नानी के साथ एक तस्वीर दिखी। यह एक अवास्तविक क्षण था।
वह क्षण। उन्होंने मन ही मन कहा, 'मेरी नानी इतनी दूर न्यू जर्सी तक आई हैं।'
अनुपम खेर को बताया, ‘मैं रोने लगी।’5
बचपन में इरफान भगवान में विश्वास करते थे। एबीपी के शो '6 सेल्फी' के एक एपिसोड में,
उन्हें याद आया कि जब भी वे भगवान के बारे में सोचते थे तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ जाते थे।
प्रार्थना के समय का इंतज़ार करो ताकि परमेश्वर से संवाद कर सको। परमेश्वर के साथ उनका संबंध।
यह उनके बचपन की मासूमियत को दर्शाता है। 'लेकिन ईश्वर के प्रति उस आकर्षण ने उन्हें थका दिया।'
उन्होंने शो में कहा, 'बंद करो।' उन्होंने यह सवाल करना शुरू कर दिया कि उन्हें क्या बताया जाएगा।
उसे यह एहसास हुआ कि वयस्कों को ईश्वर के करीब रहने के लिए समझौते करने पड़ते थे। वह अपने पूरे वयस्क जीवन में नास्तिक ही रहेगा। उन्होंने वयस्क होने पर नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया और रमज़ान का पालन नहीं करते। वरुण
गौतम, जो जयपुर में उनके थिएटर के दिनों के दोस्त हैं, याद करते हुए कहते हैं, 'एक बार मैंने कामना की थी कि...'
him Eid Mubarak and he responded by saying, “Arre yaar aaj Eid hai kya (Is
“आज ईद है, मेरे दोस्त?” लेकिन वह अपने तरीके से आध्यात्मिक बने रहे।

इरफ़ान के माता-पिता ने उन्हें सेंट पॉल्स नामक एक अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजा।
माँ को उम्मीद थी कि मजबूत बुनियादी शिक्षा अंततः उसे एक अच्छा भविष्य दिलाएगी।
उनके पिता अपने बेटों को किसी और तरह की नौकरी दिलाने के लिए ज्यादा उत्सुक थे। उनके पिता चाहते थे कि उनके बेटे पढ़ाई करें।
व्यापार। शिक्षा उनकी प्राथमिकताओं की सूची में बहुत ऊपर नहीं थी। इरफ़ान लगभग 18 वर्ष का था जब उसने अपने पिता को खो दिया। उसके चाचा ने उसे बताया।
बाथरूम में उसके पिता के साथ कुछ हुआ था। उसी क्षण, वह
felt like he experienced the Hindi idiom pairon tale zameen khisak jaana (felt
जैसे उसके पैरों तले ज़मीन खिसक रही हो। वह पूरी रफ्तार से भागा। डॉक्टर की तलाश में। जब तक वह डॉक्टर को लेकर घर लौटा, उसके पिता उनका निधन हो गया था।
‘मुझे याद है वो किस तरह मेरे माथे पर हाथ रखते थे,’ इरफान ने कहा। उन्होंने अपने पिता के बारे में कहा, ‘मुझे नहीं पता कि यह किस बारे में था। मैं हमेशा से बहुत
वह अलग-थलग रहता था, इसलिए मेरा उससे ज्यादा मेलजोल नहीं था।7 लेकिन आखिरी वर्षों में
यासीन खान के जीवन में, जब इरफान के माता-पिता का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण होता जा रहा था, तब
पिता का ध्यान अपने बड़े बेटे पर अधिक केंद्रित हो गया।

एक युवा कलाकार का चित्र

इरफ़ान और उनके भाई-बहनों को उनके माता-पिता ने फिल्में देखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। उनके चाचा
जो व्यक्ति टोंक में रहता था, वह जयपुर आने पर बच्चों को फिल्म दिखाने ले जाता था।
उन्होंने रेखा और नविन अभिनीत 1973 की फिल्म 'धर्मा' देखने की बात याद की।
अपने चाचा के साथ (निश्चोल) इरफ़ान ने स्कूल के दिनों में नया देखा था।
दौर (1957), जिसमें दिलीप कुमार ने अभिनय किया था। 'इसमें कुछ रहस्यमय था और
सेल्फी में उन्होंने कहा, 'इन अभिनेताओं का अभिनय बेहद दिलचस्प था। मैं चाहता था कि...'
यह जानो और इसे करो।’ लेकिन वह अपना सपना किसी के साथ साझा नहीं कर सका। वैसे भी,
उन्हें लगता था कि शारीरिक रूप से उनमें अभिनेता बनने के गुण नहीं हैं, संगीत कार्यक्रम में शामिल होने की क्षमता तो दूर की बात है। सितारा। वह जानता था कि उसकी त्वचा का रंग गहरा है, उसकी झुकी हुई आंखें अक्सर लाल रहती थीं।
धूप में पतंग उड़ाने में बिताए समय के कारण उसका रंग बदल गया था और वह काफी शर्मीला था। लेकिन अभिनेता बनने की इच्छा उसके भीतर बचपन से ही पनप रही थी।
कम उम्र।
अपने किशोरावस्था के दौरान, इरफान ने जयपुर में दो फिल्मों की शूटिंग देखी - गंगा की
सौगंध (1978), जिसमें अमिताभ बच्चन और रेखा ने अभिनय किया था, और कुछ अन्य

years later, Jalmahal (1980), starring Jeetendra and Rekha again. During the
जलमहल की शूटिंग के दौरान, इरफान ने देखा कि निर्देशक जीतेंद्र को भूमिका के बारे में समझा रहे थे।
और मैंने मन ही मन सोचा, अगर वह समझा सकता है, तो वह यह भूमिका क्यों नहीं निभा सकता?
'खुद से?' इरफान ने विनय पाठक के शो में हंसते हुए कहा।
इरफ़ान अपनी शक्ल-सूरत को लेकर चिंतित रहते थे और अक्सर सोचते थे कि क्या वह
वह अभिनेता बन सकता था। और फिर उसने मृणाल सेन की फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती को देखा।
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता मृगया (1977)। 'अगर वह बन सकता तो...'
उन्होंने कहा, 'अगर मैं अभिनेता हूं, तो शायद मैं भी कोशिश कर सकता हूं।'8
कॉलेज के बाद, इरफ़ान ने नाट्यकला में दो वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम में दाखिला लिया।
उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय में कला की पढ़ाई शुरू की। उन्होंने एक सर्टिफिकेट कोर्स से शुरुआत की और
मैंने शाम की कक्षाओं में भाग लिया। अगले वर्ष, यह पूर्णकालिक डिप्लोमा बन गया।
कार्यक्रम में उनकी मुलाकात साथी छात्र वरुण गौतम से हुई और उनके बीच गहरी दोस्ती हो गई।
दोनों के बीच दोस्ती पनपी। 'जिस दिन मैं उनसे मिला, मैंने उन्हें गौर से देखा।'
वरुण याद करते हुए बताते हैं, 'और मैंने उनसे कहा—तुम एक स्टार बनोगे,' और आगे बताते हैं कि कैसे वह ऐसा कर सकते हैं।

लोगों के व्यक्तित्व का आकलन करके और उनके चेहरों को पढ़कर उनका भविष्य जान सकते थे।
उनकी आँखों में एक खास गहराई थी। उनकी आँखें सचमुच भेदक थीं। और वह बहुत ही
विनम्र, सरल स्वभाव के। स्टार बनने के बाद भी वे विनम्र बने रहे। वरुण आगे कहते हैं, ‘मुझे किसी न किसी तरह यह आभास हो गया था कि वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति बनेगा।’
told him that. He started laughing. “Kya baat kar rahe ho (What are you
उन्होंने पूछा, "कहते हैं)?" यही हमारी पहली बातचीत थी।
‘Kuch logon se mil ke aapko achha lagta hai—warmth hoti hai (Some वरुण कहते हैं, 'लोगों में एक खास तरह की गर्मजोशी होती है और उनसे मिलकर अच्छा लगता है।'
युवा अक्सर जिन चीजों के बारे में बात करते हैं, उनके बजाय इरफान और वरुण
जीवन के बारे में दार्शनिक बातचीत करते थे। 'वह हमेशा से ही रहे हैं।' जीवन और उससे परे के बारे में जानने की उत्सुकता थी। और चूंकि मुझे ज्योतिष और उससे जुड़ी चीजों में रुचि थी।
इस तरह हमारे बीच एक खास रिश्ता बन गया।
वे दोनों अपने नाटक कार्यक्रम में जाने के लिए एक साथ साइकिल चलाते थे।
हालांकि वे जयपुर के अलग-अलग हिस्सों में रहते थे—वरुण वहीं रुका रहा
इरफान विश्वविद्यालय परिसर में रहते थे, जबकि इरफान और उनका परिवार शहर के पुराने हिस्से में रहता था।
वरुण को वे दो नाटक याद हैं जिनमें उन्होंने साथ काम किया था—बकरी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, और होरी, प्रेमचंद के क्लासिक उपन्यास पर आधारित है।

गोदान। उन्होंने रवींद्र मंच नामक स्थान पर पूर्वाभ्यास किया।
उन दिनों उनके मार्गदर्शक रवि चतुर्वेदी थे, जो एनएसडी (1981 बैच) के स्नातक थे। इरफान ने जी.पी. देशपांडे की फिल्म 'उध्वस्त धर्मशाला' में उनके साथ अभिनय किया था।
चतुर्वेदी। ‘उध्वस्त धर्मशाला में इरफान का अभिनय बहुत ही शानदार था।
वरुण कहते हैं, 'अच्छा था। उसकी मौजूदगी दमदार थी। ऐसा लग रहा था मानो वह सारा भार संभाल रहा हो।
खेलना।'
इसी बीच, इरफान ने कुछ ऐसे नाटकों में भी अभिनय किया जो मात्र थे। लोकप्रिय हिंदी फिल्मों की नकलें। उन दिनों की कई कहानियां हैं; ऐसी ही एक घटना तब की है जब मंच पर प्रस्तुति देते समय इरफान को अपने साथ चलना पड़ा था।
शॉल ओढ़े और हाथ में पेय लिए, राजेश खन्ना और उनकी हिट फिल्म की याद दिलाता है।
फ़िल्में। कोने में रखा एक रेडियो हिंदी फ़िल्म का गाना बजा रहा था, और जैसे
राजेश खन्ना और इरफान खान को संगीत रोकने के लिए गिलास फेंकना था। खेल रहा था। उसने रेडियो पर गिलास फेंका, लेकिन उसे संभालने वाले व्यक्ति ने...
बैकस्टेज में संगीत को संकेत नहीं मिला और गाना बजता रहा। अब सब कुछ सुनने में तो मज़ेदार लगता है, लेकिन एक ऐसे नौजवान के लिए जो बस अपनी किस्मत आज़मा रहा था...
अभिनेता बनने के दौरान, वह क्षण अवश्य ही शर्मनाक रहा होगा।
अभिनय का चस्का लगने के बाद, इरफान ने खुद को साबित करने की कोशिश में जुट गए।
एनएसडी में प्रवेश, एकमात्र ऐसा राष्ट्रीय संस्थान जो अभिनय प्रशिक्षण प्रदान करता था।

युवा छात्रों के लिए। उन्होंने सुना था कि ओम पुरी और नसीरुद्दीन शाह दोनों
उन्होंने एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। साथ ही, उन्होंने फिल्म और टेलीविजन संस्थान ऑफ इंडिया से भी स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी।
पुणे स्थित (FTII) ने अपना अभिनय कार्यक्रम बंद कर दिया था।

जयपुर को विदाई

‘मेरी जिंदगी तब शुरू हुई जब मुझे एनएसडी में दाखिला मिला,’ उन्होंने विनय पाठक को बताया।
टेलीविजन शो 'द हाउस दैट मेड मी'। 'उससे पहले मैं एक अंडे के अंदर थी।' 'अभी पैदा भी नहीं हुआ था।' जयपुर में इरफान का अध्याय यहीं समाप्त हो गया और युवा अभिनेता
वह दुनिया का सामना करने के लिए तैयार था।
हालांकि, एनएसडी की प्रवेश नीति के अनुसार आवेदकों को निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी होंगी:
कम से कम दस नाटकों में अभिनय किया है। इरफान ने अभी तक दस नाटकों में अभिनय नहीं किया था, और
इसलिए उसने अपने आवेदन में छोटे-छोटे झूठ शामिल करके उसे और भी पुख्ता बना दिया, जिसमें उन नाटकों के नाम भी शामिल थे जिनमें उसने अभिनय किया था।
इसमें अभिनय नहीं किया गया।
बाद में इरफान ने अभिनेता अनुपम से कहा, 'उन्हें मुझमें कुछ तो पसंद आया होगा।'

खेर.9 ‘मुझमें सीखने की इतनी लगन, ईमानदारी और ईमानदारी थी। यहाँ तक कि मुझमें यह भी था कि
मैंने उनसे स्नातक होने के बाद अपने भविष्य के बारे में झूठ बोला था। मैंने उनसे कहा था कि मैं थिएटर करूंगा, जबकि मेरी इच्छा केवल फिल्मों में अभिनय करने की थी।
एनएसडी में प्रवेश के लिए उनका साक्षात्कार लेने वालों में मोहन भी शामिल थे।
महर्षि, जिन्होंने 1984-86 तक विद्यालय के निदेशक के रूप में कार्य किया था।
मोहन ने दो दशक पहले, 1965 में एनएसडी से स्नातक की उपाधि भी प्राप्त की थी।
2012 में एनडीटीवी के शो 'इट्स माय लाइफ' में इरफान खान पर केंद्रित कार्यक्रम में अतिथि के रूप में शामिल हुए।
रवीना टंडन शो की एंकर थीं। 'उनमें इतनी एकाग्रता थी और
मोहन ने बताया, 'वह वास्तव में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में शामिल होना चाहता था।'
शो के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें पता था कि इरफान का थिएटर में भविष्य उज्ज्वल है।10 मुख्य
मोहन जैसे शिक्षकों की चिंता यह थी कि स्नातक होने के बाद क्या होगा। एनएसडी, इरफान जैसे लोग थिएटर में काम करना जारी रखेंगे या किसी और चीज़ के लालच में आ जाएंगे।
फिल्म जगत की चकाचौंध और ग्लैमर। और फिर, इरफान को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा,
आपने एक खूबसूरत झूठ बोला और उसे इतने यकीन दिलाने वाले अंदाज में कहा। और अब आप जी रहे हैं।
वह जीवन जो तुम दिल से चाहते थे।
हालांकि इरफान को एनएसडी में छात्रवृत्ति की पेशकश की गई थी, फिर भी परिवार के सदस्यों के बीच कुछ मतभेद थे।

दिल्ली जाने से पहले उन्हें कुछ मामलों को निपटाना था। इरफान के पिता ने हाल ही में
उनके निधन के बाद, सबसे बड़े बेटे के रूप में उनसे परिवार की बागडोर संभालने की उम्मीद की जा रही थी।
टायर की दुकान। लेकिन इरफान के छोटे भाई इमरान खान ने हस्तक्षेप किया और पेशकश की कि...
व्यवसाय चलाना। उनकी माँ को लगता था कि स्नातक होने के बाद, इरफ़ान वापस जयपुर जाकर एक सम्मानजनक नौकरी करेगा। वह चाहती थी कि सब कुछ ठीक हो जाए।
उसके बच्चे पास में ही रहकर थोड़ी-बहुत कमाई कर सकें। उसका भाई (इरफान का)
मामा बंबई के लिए रवाना हो गए थे और कभी घर नहीं लौटे, और वह भी नहीं लौटी।
वह अपने बेटे को बड़े शहर में खोना चाहती थी। लेकिन इरफान के जीवन में कुछ और ही योजनाएँ थीं। वह
अपने पंख फैलाने के लिए नियत।
उन्होंने विनय पाठक से कहा, ‘मनुष्य उड़ने और बढ़ने के लिए पैदा होते हैं। अगर आप
अगर आप जीवन में प्रगति नहीं कर सकते, तो जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।
Later, on Anupam Kher’s show, Kuch Bhi Ho Sakta Hai, Irrfan quoted दिवंगत गिरीश कर्नाड के क्लासिक नाटक तुगलक से यह सुझाव देते हुए कि एनएसडी में शामिल होने के बाद उन्हें लगा कि वे लगभग कुछ भी कर सकते हैं: ‘उमंगो भारी उमर’
hai. Saare aalam ko fateh karne ka khwaab dekhne ki umar hai (My life and
यह युग आशाओं से भरा है। यह वह युग है जब हम पूरी दुनिया को जीतने का सपना देख सकते हैं।

1978 में एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाले अनुपम प्रसन्न होकर इरफान के साथ शामिल हो गए।
पंक्ति का पाठ करते हुए।

रंगमंच के मक्का में

हालांकि उन्हें एनएसडी में दाखिला मिल गया, लेकिन इरफान को अपनी छवि से बाहर निकलने में थोड़ा समय लगा।
शर्मीला, अंतर्मुखी व्यक्तित्व। उनके एनएसडी मित्र उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में याद करते हैं जो...
वह दूसरों से ज्यादा घुलता-मिलता नहीं था। उसका एक शांत लेकिन एकाग्रचित्त पहलू भी था।
उसे। यह भी संभव है कि चूंकि वह एक छोटे शहर से था, इसलिए शायद वह एक बड़े शहरों से आए लोगों की मौजूदगी में थोड़ा असहज महसूस हुआ।
The NSD men’s hostel was located on Vakil Lane. ‘Hostel mein bilkul bekaar sa kamra tha uska, chhota sa, kone mein (In the hostel he had

a

(बेकार कमरा, छोटा और कोने में स्थित),’ उनके दोस्त तिग्मांशु धूलिया ने कहा।
कहते हैं। तिशु, जैसा कि उनके दोस्त और अब हिंदी फिल्म उद्योग के सहकर्मी उन्हें बुलाते हैं।
इरफ़ान से दो साल जूनियर (1989 बैच) थे। अधिकांश प्रथम वर्ष के एनएसडी छात्र
ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें कमरे साझा करने पड़े, जिनमें से कुछ लोग प्रत्येक कमरे में रह रहे थे।

लेकिन इरफान किसी तरह दो सिंगल कमरों में से एक कमरा पाने में कामयाब हो गया था।
अभिनेता विपिन शर्मा, जो खुद भी एनएसडी के स्नातक (1983 बैच) हैं, के पास भी यही डिग्री है।
इरफ़ान के कमरे को याद करते हुए उनकी प्रतिक्रिया कुछ इस तरह होती है: 'वह कोने में था, और हमारे पास था।'
उसके कमरे के पास से गुजरते हुए बाथरूम जाने के लिए। हालाँकि उसने एक साल पहले ही स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली थी।
इरफ़ान के शामिल होने से पहले, विपिन अक्सर लड़कों के छात्रावास में समय बिताया करता था।
तिशु जैसे छोटे छात्रों के साथ दोस्तों से मिलना और रात बिताना
और संजय मिश्रा (दोनों ने 1989 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की)।
‘वहाँ एक खिड़की थी। मुझे इरफ़ान की वह छवि याद है, जो कमरे के अंदर बैठे थे।
या खिड़की के पास बैठकर बीड़ी पीते हुए।’ विपिन का मानना है कि इरफान ने जानबूझकर ऐसा किया।
उसने वह कमरा चुना। 'शुरू से ही वह अलग-थलग लग रहा था, लेकिन शायद उसे ज़रूरत थी।'
'उसकी जगह,' वह कहते हैं। 'पीछे मुड़कर देखने पर, अब मुझे लगता है कि यही कारण था कि उसने चुना
वह कमरा। शायद वह अपनी ही दुनिया में रहना चाहता था।'
इरफ़ान की कक्षा में कुल 18 छात्र थे, जिनमें से अधिकांश को छात्रवृत्ति मिली हुई थी, और सभी
भारत के विभिन्न हिस्सों से आए हुए; कुछ छोटे शहरों से, जबकि अन्य बड़े शहरों से आए हुए। और उनमें से कुछ को अंग्रेजी बोलना भी मुश्किल था। दो घनिष्ठ मित्र इरफान
आगे चलकर जो रचनाएँ करने वाले थे, वे दोनों बड़े शहरों से थे—मीता वशिष्ठ से

चंडीगढ़ से इरफान और दिल्ली से सुतापा सिकदर (इरफान और सुतापा शुरुआत करेंगे)
एनएसडी में शामिल होने के तुरंत बाद ही उन्होंने डेटिंग शुरू कर दी थी।
छात्र एक दूसरे के साथ लंबे, गहन घंटे बिताते थे—एक दूसरे को गले लगाते हुए
मंडी हाउस स्थित चाय की दुकान पर अड्डे लगाना, रात के 2 बजे पराठे खाना, बहस करना,
प्रतिस्पर्धा करना, नाटकों का पूर्वाभ्यास करना और सहयोग करना। 'वे सभी चीजें जिनकी आप अपेक्षा करते हैं'
अभिनेता बनने की पढ़ाई कर रहे युवा छात्रों के एक समूह से—थोड़ी मस्ती, एक
'थोड़ा मज़ाक था,' सुतापा ने सेल्फी शो में याद करते हुए कहा। वे इसी से प्रेरित थे।
कुछ बड़ा करने की इच्छा, अपने परिवार द्वारा उनके लिए परिकल्पित जीवन पथ से अलग कुछ करने की इच्छा। 'हम सभी विद्रोही बनकर आ रहे थे, अपने परिवारों को छोड़कर।'
मीता कहती हैं, 'परिवारों के लिए सुरक्षित पेशा कोई नहीं चुन रहा था।' इरफ़ान के बारे में बात करते हुए, मीता को याद आता है कि उन्होंने उन्हें देखा ही नहीं था।
शुरुआत में। 'वह घुंघराले बालों वाला एक दुबला-पतला आदमी था, जिसके बाल बहुत पतले थे, साथ ही साथ
उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे। लेकिन उसकी मुस्कान लाजवाब थी। यह एक बहुत ही शर्मीली मुस्कान थी।
पूरी तरह से दुष्ट। और उसकी आवाज़ भी कुछ ऐसी ही थी। मुझे बनावट वाली आवाज़ें पसंद हैं।
आवाजें। यह कोई गहरी आवाज नहीं थी; यह बैंजो जैसी कर्कश आवाज थी।

कक्षा के प्रत्येक छात्र के पास उन शुरुआती दिनों की अनगिनत कहानियां हैं।
मीता को प्रथम वर्ष की एक घटना याद आती है।
आज सुबह मीता और इरफान के बीच कक्षा में हाथापाई हो गई। उसे याद नहीं आ रहा कि क्या हुआ था।
इस बात पर झगड़ा हुआ था, लेकिन उसे इतना याद है: 'उसने कुछ कहा और मैंने कहा...'
कुछ हुआ। फिर मुझे पता चला कि हम एक दूसरे को पीट रहे थे और पूरी क्लास को देखना पड़ा।
'हमें अलग कर दो।' वे तीनों वर्षों के दौरान दोस्त और प्रतिद्वंद्वी दोनों बने रहे।
एनएसडी में कई वर्षों तक, अक्सर नाटकों में एक साथ अभिनय करते हुए और फिर एक ही मंच पर प्रदर्शन करते हुए।
स्नातक होने के बाद वे टेलीविजन शो और फिल्मों में काम करने लगे।
मैंने इरफ़ान खान के बारे में जिन दूसरे लोगों से बात की, उनमें उनके एनएसडी शिक्षक राम भी शामिल थे।
गोपाल बजाज—जिन्हें प्यार से बज्जो भाई कहा जाता था—जो स्वयं भी स्नातक थे।
एनएसडी (1965 बैच)। अब 79 वर्षीय बज्जो भाई अभी भी टेलीविजन में अभिनय करते हैं।
और फिल्में।
‘इरफान सबसे ज्यादा सहमा हुआ था (इरफान सबसे ज्यादा घबराया हुआ था),’ बज्जो भाई याद करते हुए कहते हैं, 'मुझे उनके दुबलेपन और उभरे हुए शरीर के बीच एक संबंध नजर आता है।'
eyes, angry and yet sehma hua ke kuch kar nahi sakta (and yet nervous that
वह कुछ नहीं कर सका। मुझे लगता है कि इरफान का कोई दोस्त नहीं था।

सुतापा को छोड़कर बाकी सब क्लास में थे। वह मूल रूप से एकांतप्रिय था और इसीलिए मैंने उस पर ध्यान दिया।
उसे।’ और फिर वह आगे कहते हैं, ‘उसमें एक तरह की आंतरिक कोमलता थी।’ लड़का, जो शायद जारी रहेगा।'
उनकी अलग-अलग पृष्ठभूमि के बावजूद, बज्जो भाई का मानना है कि उनमें एक समानता थी।
छात्रों में एक बात समान थी। 'वे अक्सर स्कूल बीच में ही छोड़ देने वाले छात्र थे।'
समाज और शिक्षाविदों के बीच, उन्होंने एक अपरंपरागत मार्ग अपनाया और एक
ड्रामा स्कूल।'
हालांकि, इरफान एक मामले में सबसे अलग थे। उन्हें लगता था कि दोस्तों के साथ घूमना-फिरना,
अड्डों पर चाय पीना, देर रात तक बातचीत और बहस करना
सहपाठी होना समय की बर्बादी थी। 'इरफ़ान जिस पृष्ठभूमि से आता था, वह ऐसा नहीं था।
'उन्हें काफी एक्सपोजर मिलता है,' सुतापा ने 11 सेल्फी पर कहा। चूंकि सुतापा दिल्ली से थीं,
वह रंगमंच और कलाओं से परिचित थी। वह लोगों में मौजूद भूख को देख सकती थी।
इरफ़ान में तेज़ी से सीखने की तीव्र इच्छा थी, और वह अपने साथियों के बराबर आने के लिए बेताब था।
और जितना हो सके उतना ज्ञान प्राप्त कर ले ताकि वह उनके बराबर आ सके। तिशु भी सहमत हैं। वे कहते हैं, 'मैंने वर्षों से इरफान का विकास देखा है।'
वह जयपुर से आए थे, जहां उन्हें दर्शनशास्त्र का ज्यादा ज्ञान नहीं था।
और विचारों से। लेकिन दुनिया को देखकर, अवलोकन करके, पढ़कर और खोजकर।

सिनेमा जगत में उन्होंने काफी तेजी से तरक्की की। मेरे कई दोस्त हैं, लेकिन इरफान में, जो सबसे खास है।
विकास उल्लेखनीय है।
वह हमेशा किताबें पढ़ता रहता था; उसके पास हमेशा नवीनतम पटकथा मौजूद रहती थी।
सुतापा ने आगे कहा, 'उसके हाथ में एक नाटक था। मुझे कोई और सहपाठी याद नहीं है जो...'
वे अपने हाथों में ढेरों स्क्रिप्ट और किताबें लिए घूमते थे। कभी-कभी सुतापा की माँ पूरी कक्षा को रात के खाने पर आमंत्रित करती थीं।
दिल्ली में उनके घर पर। सुतापा ने कहा, 'हम सब खूब मौज-मस्ती और पार्टी करते थे।'
लेकिन इरफान घर में घुसते ही सीधे मेरे भाई के कमरे में चले जाते थे। किताबों की अलमारी। मेरे भाई के पास रूसी साहित्य का एक बड़ा संग्रह था। मेरी माँ
बंगाली में कहते, 'कृपया उस बेचारे लड़के को बुलाओ। जब से वह अंदर आया है, तब से...'
मैं वहां बैठकर पढ़ रहा था।
निर्देशक तिग्मांशु धूलिया इरफान की फिल्मों के प्रमुख किरदारों में से एक हैं।
कहानी। विपिन शर्मा ने तिशु को इरफान से मिलवाने का श्रेय लिया। 'मैं याद है, उन दिनों तिग्मांशु और इरफान ज्यादा बात नहीं करते थे,’ वे कहते हैं।
मैंने इरफान के कोई भी नाटक नहीं देखे थे। लेकिन मैंने हमेशा सुना था कि वो अच्छे लेखक हैं।
विपिन ने तिशु से इरफान से मिलने और बातचीत करने को कहा। और इस तरह उन तीनों की मुलाकात हुई।
वे करीब आ गए।

तिशु और इरफान की पहली मुलाकात फिल्मों में उनकी साझा रुचि के कारण हुई थी।
तिशु को फिल्म निर्देशन में गहरी दिलचस्पी थी और वह एनएसडी का उपयोग करना चाहता था।
हिंदी फिल्म उद्योग में कदम रखने के लिए प्रशिक्षण एक सीढ़ी के रूप में काम करता है। और इरफान यही चाहते थे।
वे फिल्मों में अभिनय करते थे। वे फिल्में देखने और उनके बारे में बातें करने में काफी समय बिताते थे।
रॉबर्ट डी नीरो और अल पचीनो जैसे अभिनेताओं वाली हॉलीवुड फिल्में, और
वे साथ मिलकर मार्टिन स्कोर्सेसी की अन्य अंतरराष्ट्रीय कृतियों पर चर्चा करेंगे।
फिल्म निर्माता, जैसे कि रेनर वर्नर फासबिंडर। 'फिल्मों ने हमें जोड़ा,' तिशु
कहता है।
जब इरफान तीसरे वर्ष में था, तब जाकर तिशु को असल में इस बात का एहसास हुआ।
वह कितने सशक्त अभिनेता थे! अंतिम वर्ष में इरफान की कक्षा ने 'तलघर' नाटक का मंचन किया था।
मैक्सिम गोर्की की रचना 'लोअर डेप्थ्स' का हिंदी संस्करण। 'उस दिन से मैं बन गया'
मैं उनका प्रशंसक हूं,’ तिशु कहते हैं। ‘उनका प्रदर्शन बाकी सभी से अलग था।’
उनकी कक्षा के अन्य अभिनेताओं से उनका दृष्टिकोण अलग था।
तलघर का हिंदी अनुवाद जीत कौशिक ने किया था और इसका निर्देशन राम ने किया था।
गोपाल बजाज। इरफान को आंद्रेई मिट्रिच क्लेश्टच की भूमिका के लिए चुना गया था - एक क्रूर व्यक्ति।

एक व्यक्ति जो ताला बनाने का काम करके अपना जीवन यापन करता है। इरफान के किरदार ने उसे पीटा है और
उसने अपनी पत्नी अन्ना को इस हद तक प्रताड़ित किया कि वह मरने की कगार पर पहुँच गई। दरअसल, नाटक के आगे बढ़ने के साथ ही उसकी मृत्यु हो जाती है। अन्ना का किरदार मीता वशिष्ठ ने निभाया था। 'मेरे पास सबसे छोटा
'मेरी भूमिका महत्वहीन थी,' मीता कहती हैं। 'मैं इरफान के साथ मंच के एक कोने में थी।'
मुझे बस वहीं लेटना पड़ा और मुझे याद है कि इरफान हमेशा कुछ न कुछ समझने की कोशिश करता रहता था।
उनके प्रदर्शन के मूल तत्व।
‘इरफान व्याकरण के नियमों का पालन नहीं कर रहे थे, और यह कहना जल्दबाजी होगी’
‘बज्जो भाई कहते हैं, ‘वे सभी युवा छात्र थे, इसलिए उन्हें कुछ भी नहीं मिलता था।’ ‘उनके पास
बिना किसी पूर्व प्रशिक्षण के आए थे। कोई शैली नहीं थी। एनएसडी या ऐसा कुछ भी नहीं।
यह संस्थान उन सभी के लिए प्रशिक्षण का पहला मंच है। आप केवल देख सकते हैं
इस लड़के या लड़की के लिए पहले या दूसरे वर्ष में क्या-क्या संभावनाएं होंगी।
लेकिन वह आगे कहते हैं कि इरफान की संवेदनशीलता, साथ ही साथ उनका एकांतप्रिय स्वभाव, जो उन्हें खो जाने की स्थिति में डाल देता था, उनकी अपनी ही दुनिया, उनके अच्छे अभिनय में तब्दील हो गई। 'वह नाटक में अच्छे थे और
इससे किरदार की आंतरिक पीड़ा झलकती थी। उसके किरदार में हताशा झलकती थी।
और अपनी पत्नी का भरण-पोषण न कर पाने की निराशा। अन्यथा वह

'बहुत ही सौम्य, रोमांटिक,' बज्जो भाई ने आगे कहा।
कई साल बाद, तिशु ने इरफान को कुछ बड़ी सफलता दिलाने में अहम भूमिका निभाई।
उन्हें टेलीविजन और अंततः फिल्मों में मौके मिले। वह कास्टिंग डायरेक्टर थे।
आसिफ कपाडिया की फिल्म 'द वॉरियर' (2001) में उन्होंने इससे पहले भी इसी तरह का काम किया था।
शेखर कपूर की फिल्म बैंडिट क्वीन (1994)। तिशु ने इरफान खान को भी अपनी फिल्म में लिया था।
उनकी पहली निर्देशित फिल्म हासिल (2003) थी, जिसके परिणामस्वरूप विशाल भारद्वाज को सफलता मिली।
उन्हें शेक्सपियर के नाटक पर आधारित उनकी फिल्म मकबूल (2003) में मुख्य भूमिका की पेशकश की गई।
मैकबेथ।

असली प्रेरणा

इरफ़ान के एनएसडी के सहपाठियों को एक बात जो याद है, वह है उनकी दीवानगी।
नसीरुद्दीन शाह। 1980 के दशक में, एनएसडी के युवा छात्रों की कुछ भूमिकाएँ थीं।
आदर्श अभिनेता—स्वतंत्र विचारों वाले अभिनेता जो नई लहर के अग्रदूत थे
या कहें समानांतर सिनेमा आंदोलन, और नसीर निश्चित रूप से उनमें से एक थे।

शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल और ओम पुरी के साथ।
मीता वशिष्ठ कहती हैं, 'हम सब उसे इस बात पर चिढ़ाते थे। ऐसा लगता था जैसे, "अरे!"
यार इरफान, नसीर को छोड़ दो (कृपया इरफान, नसीर को भूल जाओ)।" लेकिन यह
यह वह तरीका था जिससे वह किसी भूमिका को निभाना चाहता था, जिस तरह से वह प्रदर्शन करना चाहता था। हम अक्सर
मैंने नसीर को उनके प्रदर्शन में देखा।
कई साल बाद इरफान ने नसीरुद्दीन शाह के सामने ईमानदारी से कबूल किया कि कैसे
वरिष्ठ अभिनेता ने उन्हें बहुत प्रेरित किया था। 'मुझे खुशी है कि उन्होंने उनकी तरह बनने की कोशिश नहीं की।'
'एक और नसीरुद्दीन शाह, और अपनी खुद की पहचान की खोज की,' नसीर कहते हैं।
उन्होंने मुझसे कहा, “मेरी माँ तुम्हें कोसती थी।” तो मैंने पूछा, “क्यों यार?” और उन्होंने
said, “Tum uss Naseeruddin Shah ki nakal kar rahe ho. Woh to pahunch
gaya, aur tum kahan ho (You always imitate that Naseeruddin Shah. He has
“तुमने बड़ी सफलता हासिल कर ली, और तुम कहाँ हो?” तो आखिरकार जब उसने सफलता हासिल कर ली, तो मैंने कहा, “यार,
apni ammi ko mera salaam kehna. And tell her ki main itna bura example
नहीं था (मेरे मित्र, अपनी माँ को मेरा सलाम कहना। और उन्हें बताना कि मैं था)
यह वाकई इतना बुरा उदाहरण नहीं है।

एक अभिनेता का विकास होता है

एनएसडी से स्नातक होने के बाद इरफान ने थिएटर में सक्रिय रूप से अपना करियर नहीं बनाया। लेकिन तिशु
remembers him from one more performance—Lal Ghas Par Neele Ghode,
मिखाइल शत्रोव के रूसी नाटक, ब्लू हॉर्सेस ऑन रेड का हिंदी अनुवाद घास। साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता कवि और लेखक उदय प्रकाश ने इसे लिखा।
नाटक का अनुवाद, और एनएसडी के महत्वपूर्ण शिक्षकों में से एक, प्रसन्ना,
इसका निर्देशन इरफान ने किया था। नाटक में इरफान ने व्लादिमीर लेनिन की भूमिका निभाई थी।
तिशु याद करती हैं कि इरफान लेनिन से बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं थे, फिर भी उन्होंने
अपने अभिनय में चरित्र की भावना को दर्शाते हुए। वह आगे बात करते हैं...
उन्होंने अपने प्रदर्शन को शानदार बताया और कहा कि तब भी इरफान बहुत सी चीजों में विश्वास नहीं करते थे।
अभिनय और मेलोड्रामा के मामले में वह बेहद सूक्ष्म और संयमित थे। एक गहरी समझ कि एक अभिनेता को हर चीज को समझाने की जरूरत नहीं है बोलते हुए। वह एक बहुत ही व्यावहारिक अभिनेता थे। मीता वशिष्ठ भी इस बात से सहमत हैं। 'इरफान एक

अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद, वह एक संतुलित व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। उसका ध्यान सही दिशा में केंद्रित था।
उसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर बहुत ऊंचा था। वह जानता था कि उसे क्या चाहिए।
मैंने भावनात्मक रूप से जीवन जिया, जो हममें से कई लोगों ने नहीं जिया। मैंने भी नहीं जिया।'
कुछ अन्य लोग भी थे जिन्हें इरफान को एक अभिनेता के रूप में विकसित होते देखना याद है।
जब वह एनएसडी में थे, तब नर्तक और कोरियोग्राफर भरत शर्मा ने उन्हें पढ़ाया।
इरफ़ान और उनके परिवार के लिए शास्त्रीय भारतीय नृत्य से प्रेरित एक मूवमेंट क्लास।
सहपाठी। यह चौथे सेमेस्टर में था, सुबह-सुबह एक घंटे की क्लास थी। सुबह 8 से 9 बजे तक। अधिकांश छात्र रात देर तक जागते रहते थे और अक्सर कई छात्र कक्षा में नहीं आते थे। अगर वे आते भी थे, तो वे आपस में बहस करते थे।
भारत उन्हें जो प्रशिक्षण दे रहा था, उसका महत्व। 'वे सभी भारत का अनुसरण करना चाहते थे।'
भरत कहते हैं, 'नसीर और ओम का यही रास्ता है। इसलिए मैं उन्हें दोष नहीं देता, क्योंकि यही उनकी राह है।' '
मेरी एक्टिंग पर लोगों का ध्यान जाता था। वे मुझसे सवाल करते थे, अक्सर पूछते थे, 'इसका क्या फायदा?'
इसका क्या मतलब है?
भरत को इरफान की लगन याद है। ‘जब भी वह आता था, तो वह...
'पूरी ईमानदारी से कक्षा पर ध्यान केंद्रित करो,' वे कहते हैं। उन्हें इरफान की यादें भी ताजा हैं।
वह अपने बाएं हाथ को लेकर शर्मिंदा था, बचपन में हुए हादसे के सदमे से।

मुझे इस बात का पूरा एहसास है।
कई वर्षों बाद, फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने भी उसी शारीरिक बदलाव को देखा।
इरफ़ान के साथ समस्या। श्याम बाबू ने इरफ़ान को दो टेलीविजन शो में कास्ट किया था—
एंटोन चेखव की कहानी पर आधारित एपिसोड 'वार्ड नंबर 6' (1986), जो श्रृंखला का हिस्सा है।
Katha Sagar series, and Bharat Ek Khoj (1988), made soon after the actor
उन्होंने एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। श्याम बाबू कहते हैं, 'वह प्रतिभाशाली थे, (लेकिन) मैं
मुझे याद है कि वह अपनी एक बांह को लेकर बेहद सचेत रहता था, जो कि एक बचपन में हुई एक दुर्घटना के कारण थोड़ा छोटा हो गया।
बैरी जॉन, जो दिल्ली की प्रतिष्ठित शौकिया अभिनेताओं की कंपनी चलाते थे,
थिएटर एक्शन ग्रुप (जहां शाहरुख खान, मीरा नायर और जैसे कलाकार) मनोज बाजपेयी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया), एनएसडी में कार्यशालाएं कीं, जो एक थिएटर का हिस्सा है।
शिक्षा परियोजना में। हालाँकि बैरी ने इरफ़ान की कक्षा को नहीं पढ़ाया, लेकिन उन्होंने देखा कि
एनएसडी में एक एकल-कलाकार के नाटक में अभिनय कर रहे थे। उन्हें नाटक का नाम याद नहीं है, लेकिन
उन्हें वह प्रदर्शन स्पष्ट रूप से याद है। 'यह एक अंतरंग स्टूडियो थिएटर में था, एक
बैरी कहते हैं, 'तंग जगह थी। वह अकेला था, लेकिन सबका ध्यान अपनी ओर खींच रहा था।'
उस समय भी वह दूसरे या तीसरे वर्ष में रहा होगा।

बैरी को इरफान तब याद आया जब उसने एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली थी। ब्रिटिश
निर्देशक दक्षिण दिल्ली के जंगपुरा इलाके में एक बरसाती में रहते थे, और
कई युवा अभिनेता चाय, भोजन और बातचीत के लिए अक्सर यहाँ आते थे।
एक समय तो अनुभवी थिएटर कलाकारों द्वारा एक थिएटर कार्यशाला भी आयोजित की गई थी।
personality Badal Sircar. Irrfan and Manoj Bajpayee were regulars at such
सभाओं में। 2009 में, फिल्म बिल्लू के प्रचार के दौरान, इरफान अक्सर सभाओं में शामिल होते थे।
उन्होंने बताया कि यहीं पर उनकी मुलाकात फिल्म के उनके सह-कलाकार शाहरुख खान से हुई थी।
खान उस समय दिल्ली में एक संघर्षरत अभिनेता थे।

एक दरवाजा बंद होता है, दूसरा खुलता है

1986 में, हार्वर्ड विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित और न्यूयॉर्क में रहने वाली फिल्म निर्माता मीरा
नायर अपनी पहली फीचर फिल्म, सलाम बॉम्बे (1988) के लिए अभिनेताओं का चयन करने वाली थीं।
मुंबई के बेघर बच्चों की दिल दहला देने वाली कहानी, जिसमें एक भावपूर्ण संगीत है।
शास्त्रीय भारतीय वायलिन वादक

एल. सुब्रमण्यम नायर की हार्वर्ड स्थित मित्र सूनी तारापोरेवाला ने पटकथा लिखी थी।
उस फिल्म के बारे में जिसे अंततः सर्वश्रेष्ठ विदेशी श्रेणी में ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया था।
भाषा फिल्म श्रेणी (उस श्रेणी में नामांकित होने वाली तीन भारतीय फिल्मों में से एक)
(1929 में ऑस्कर की शुरुआत के बाद से इस श्रेणी में शामिल रहे हैं)। नायर मिश्रण करना चाहते थे
प्रशिक्षित अभिनेताओं के साथ गैर-अभिनेताओं (ज्यादातर मुंबई के सड़क के बच्चे) के साथ काम करने के कारण वह चली गई।
भारत में रंगमंच का मक्का माने जाने वाले एनएसडी में वह युवा प्रशिक्षित अभिनेताओं को ढूंढती थी जिन्हें वह अपनी फिल्मों में अभिनय के लिए चुन सके।
फिल्म में।
वह अचानक कक्षाओं में चली जाती थी, इस उम्मीद में कि उसे युवा अभिनेताओं की भर्ती करने का अवसर मिल जाए।
वह उन सड़क पर रहने वाले बच्चों के साथ घुलमिल सकती थी जिन्हें वह 'सलाम बॉम्बे' में कास्ट करने की योजना बना रही थी।
एक दिन वह तहखाने में बनी कार्यशाला में गई, और वहीं उसने यह देखा। इरफान खान।
‘तुरंत ही,’ मीरा कहती हैं। ‘मेरी नज़र इन चीज़ों पर रहती है, लेकिन मैंने उसका भी ध्यान रखा।’
उसका ध्यान, उसकी तीव्रता, उसका बेहद उल्लेखनीय रूप—उसकी झुकी हुई आँखें। मैंने देखा
मैंने उससे बात नहीं की।' अगले दिन मीरा इरफान को देखने के लिए एनएसडी लौट आई।
फिर से। इस बार उसने उससे बात की और पूछा कि क्या वह किसी समूह का हिस्सा बनना चाहता है।

एक थिएटर वर्कशॉप जिसके बाद इरफान को 'सलाम बॉम्बे' में एक भूमिका मिली।
उस समय वह बीस साल का था और उसने तुरंत हाँ कह दी। यही बात हुई थी।
इरफ़ान को दिल्ली लाने वाली चीज़ थी उनका सपना, उनकी उम्मीद कि एक दिन वो अभिनय करेंगे।
मुंबई में फिल्में।
इरफ़ान ने विशेष अनुमति ली और कुछ महीनों बाद वह चले गए।
बॉम्बे। मीरा ने बॉम्बे के पेडर रोड पर, ठीक ऊपर एक फ्लैट किराए पर लिया था।
जहां श्याम बेनेगल रहते थे। वह वहां एक फिल्म निर्माता के साथ रह रही थीं।
सैंडी सिसल, जिन्होंने बाद में सलाम बॉम्बे फिल्म की शूटिंग की। कुछ और भी थे।
खाली कमरे, और कभी-कभी कार्यशाला में मौजूद सड़क के बच्चे भी होते थे।
रात वहीं बितानी पड़ती थी। अगर किसी बच्चे के पास रात बिताने के लिए बिस्तर नहीं होता, तो वह कहीं भी सो सकता था।
उपस्थित हों। रघुबीर यादव (एनएसडी, 1977 बैच), जिन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी।
मैसी साहिब (1987) में काम किया और अंततः सलाम बॉम्बे में चिलम के रूप में कास्ट किया गया।
वो भी उसी फ्लैट में रुके थे। ‘और फिर इरफान भी थे,’ मीरा कहती हैं। ‘और हम सब
साथ रहते थे।
मीरा ने सड़क पर रहने वाले बच्चों में से एक सलीम की भूमिका के लिए इरफान पर विचार किया। हालांकि वह उन्हें तुरंत कास्ट करना चाहती थीं, लेकिन वह यह भी चाहती थीं कि वह फिल्म के साथ काम करें।

बच्चों। कार्यशाला शुरू होने से पहले, वृत्तचित्र फिल्म निर्माता नीलिता वचानी
(उन्हें सलाम बॉम्बे के लिए पटकथा पर्यवेक्षक का श्रेय मिला, लेकिन अन्य लोगों की तरह)
फिल्म पर काम करने वाले (नीलिता ने भी कई भूमिकाएँ निभाईं) लगभग 120 लोगों से संपर्क किया।
मीरा को सड़कों पर मिले बच्चे। आखिरकार मीरा ने उनमें से 24 बच्चों को चुना और बैरी ने उन्हें अपने साथ शामिल कर लिया।
जॉन प्रशिक्षण में मदद करने के लिए दिल्ली से आए थे। सूनी तारापोरेवाला
आगे बताया गया है कि मीरा उन सभी सड़क के बच्चों को कास्ट करने को लेकर घबराई हुई थी जिन्होंने कभी कुछ नहीं देखा था।
अभिनय किया। 'इसलिए, रघुबीर और इरफान को समूह में शामिल करना एक तरह से सुरक्षा कवच था।
वह कहती है, 'कंबल।'
मीरा के मन में इरफान को कास्ट न करने का कोई सवाल ही नहीं था। लेकिन जब
निर्देशक और उनकी टीम बच्चों को अंतिम रूप देने में जुट गई, तभी उन्हें कुछ एहसास हुआ।
मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं था। कुपोषण के कारण बच्चे कद में छोटे थे, कुछ
मीरा के धड़ तक मुश्किल से ही पहुँच पा रहा था। जैसे ही कैमरे लाए गए और टेस्ट शॉट्स लिए गए।
काम खत्म होने के बाद, 6 फीट 1 इंच लंबे इरफान गली में एक अजीब से आदमी की तरह लग रहे थे।
बच्चे। उसका कद-काठी और मध्यमवर्गीय परिवार में उसे मिला पोषण।
परिवार ने उसे सबसे अलग बना दिया। 'बाकी सब कुपोषित और कमजोर थे।' 'छोटे बच्चे,' मीरा कहती हैं।

सैंडी सिसल ने यह भी बताया कि इरफान काफी बड़े और लंबे दिख रहे थे।
दूसरे बच्चों की तुलना में। सूनी को याद है कि संदी को लगता था कि इरफ़ान ऐसा नहीं करेगा।
वे एक बच्चे की तरह दिखेंगे और किशोर अपराधियों के गिरोह की तरह प्रतीत होंगे।
सड़क के बच्चों की तुलना में।
इसलिए मुझे उसे हटाना पड़ा और मैंने बहुत कठिन निर्णय लिया, केवल दो मीरा कहती हैं, 'शूटिंग से कुछ दिन पहले, उन्होंने मेरी बात सुनी और उसे पूरी तरह समझ गए।'
और मैंने उनसे कहा, “इरफान भाई, एक ही सीन बचा है (सिर्फ एक छोटा सा सीन है)
(जिस दृश्य के लिए कास्टिंग बाकी है), पत्र लेखक वाला दृश्य, जो एक खूबसूरत दृश्य है।
खुद ही।" सूनी ने एक ही दृश्य में पूरी कहानी लिख डाली थी। मैंने कहा, "ये कर दीजिए।"
अभी (कृपया अभी के लिए इतना कर दीजिए), लेकिन मैं आपका ऋणी हूँ।" वह यह जानता था और मैंने अपना इरादा नहीं बदला।
शब्द।'
इरफ़ान मीरा के साथ फिर से काम करेंगे, हालांकि दोनों के अलग होने के तुरंत बाद नहीं।
जैसा कि अपेक्षित था। 2007 में, मीरा ने उन्हें एक लघु फिल्म में एक विवाहित, गुप्त समलैंगिक व्यक्ति के रूप में कास्ट किया। माइग्रेशन, एड्स जागो की उन चार फिल्मों में से एक थी जिसे उन्होंने बिल के लिए निर्मित किया था और
मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन। इरफान ने नताली के साथ मुख्य भूमिका भी निभाई।
पोर्टमैन ने एक अन्य लघु फिल्म में अभिनय किया है जिसका निर्देशन नायर ने संकलन, न्यू यॉर्क, आई लव के लिए किया था।

यू (2008)। और, बेशक, उन्होंने उन्हें अशोक गांगुली की अहम भूमिका दी।
हर लिहाज से इरफ़ान के करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन - फिल्म 'द नेम्सके' में।
(2006).
मीरा को लगा कि इरफ़ान को सलाम बॉम्बे में कास्ट न होने का कारण समझ आ गया था, लेकिन फिर भी वह बहुत निराश थे। ‘मैंने उन्हें दिलासा देते हुए कहा...’
सूनी ने कुछ घिसा-पिटा वाक्य कहा, जैसे "एक दरवाजा बंद होता है, दूसरा खुलता है"।
तारापोरेवाला कहते हैं, 'लेकिन मेरा मतलब सचमुच यही था, क्योंकि मुझे कुछ पता था।'
उसके लिए और भी अवसर सामने आ सकते थे। दुर्भाग्यवश, इसमें काफी समय लग गया।
कुछ न कुछ हो ही गया।'
‘वह बहुत उत्साहित था और फिर बहुत निराश हो गया,’ सुतापा ने सेल्फी पर कहा। ‘वह
दरअसल, मैं बहुत रोया था।’ और एक इंटरव्यू में इरफान ने कहा, ‘मुझे याद है कि मैं पूरे समय फूट-फूट कर रोता रहा था।’
उस रात मीरा ने मुझे बताया कि मेरी भूमिका लगभग नगण्य हो गई है। लेकिन यह
मेरे अंदर कुछ बदल गया। उसके बाद मैं किसी भी चीज के लिए तैयार हो गया।
उन्होंने बंबई में दो महीने बिताए थे और बच्चों से उनका अच्छा खासा लगाव हो गया था।
मैं अभी भी एनएसडी में थी और जीवन बहुत अनिश्चित लग रहा था। अचानक, अप्रत्याशित रूप से,

उन्हें एक बड़ा अवसर मिला। और ठीक उसी समय जब उन्होंने इसका आनंद लेना शुरू किया था...
जब वह इस प्रक्रिया में शामिल हुआ और टीम के साथ जुड़ गया, तो उसे बताया गया कि उसका समय समाप्त हो गया है और
उन्हें जाना पड़ा। एनएसडी में वापस आना भी उनके लिए बहुत मुश्किल रहा होगा।
और उसे अपने सहपाठियों का सामना करना पड़ा। यकीनन उनमें से कुछ को इस अवसर से ईर्ष्या हो रही थी।
इरफ़ान को जिन विकल्पों से अवगत कराया गया था, अब उन्हें उन सभी का सामना करना होगा।
सलाम बॉम्बे में इरफान के साथ फिल्माए गए छोटे से दृश्य का वीडियो क्लिप यहां उपलब्ध है।
YouTube.13 वास्तव में यह एक प्यारा दृश्य है जहां फिल्म का मुख्य किरदार, युवा
कृष्णा (शफीक सैयद) इरफान के पास आता है, जो फुटपाथ पर बैठा एक पत्र लेखक है।
बंबई। कृष्णा अपने नाम लिखे पत्र का अधिकांश भाग पहले ही सुना चुके हैं।
माँ—वह कैसे खो गया, बॉम्बे पहुँचा और अब एक नौकर के रूप में काम करता है
चाय की दुकान। और फिर अचानक, उसकी चौड़ी आँखों में महीनों का दुख झलक रहा था।
living as a street kid, Krishna says, ‘Sone ke time teri bahut yaad aati hai (I
सोते समय मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।’ इरफ़ान के पत्र लेखक कहते हैं, ‘बस,
bas, dus line ho gaya hai. Aage likhne ka pachas paise extra lagega (Enough,

बस, दस लाइनें पूरी हो गईं। इससे ज़्यादा लिखने पर 50 पैसे अतिरिक्त लगेंगे।
जब कृष्णा को पता चलता है कि उसे अपना सही पता नहीं पता, तो इरफान का पत्र-
लेखक उसे फटकारता है। कृष्णा निराश होकर चला जाता है, जबकि पत्र-लेखक कागज को मसलकर कूड़ेदान में फेंक देता है। हमें यह पसंद नहीं है।
पत्र लेखक के रूप में उनकी भूमिका, लेकिन यही आखिरी क्रिया इरफान की संक्षिप्त भूमिका को खास बनाती है।

अच्छी संगत में, एनएसडी के दौरान और उससे पहले भी बनी मित्रताएँ फलती-फूलती रहीं।
मुंबई में। इरफान 1980 के दशक के अंत में मुंबई पहुंचे। वरुण गौतम मुंबई गए।
1986 में बॉम्बे में। जयपुर में इरफान के साथ एक संक्षिप्त मुलाकात के अलावा, उनके बीच कोई खास बातचीत नहीं हुई थी।
संपर्क टूट गया। 'तब मोबाइल फोन और सोशल मीडिया नहीं थे और हम पत्र नहीं लिखते थे।'
वरुण कहते हैं, 'पत्र।' फिर, कुछ साल बाद, वरुण ने इरफान को पास की एक सड़क पर देखा।
मुंबई के अंधेरी पश्चिम में स्थित ईएसआईसी नगर से जुहू की ओर जाते हुए।
'गये क्या (तो अब तुम यहाँ आ गए हो)?' दोनों ने एक दूसरे से कहा। इरफान और
उस समय सुतापा साथ थे। वरुण ने कहा, 'उनकी शादी हो चुकी थी।'

याद करते हुए कहते हैं, 'उनकी कभी कोई बड़ी और महंगी शादी नहीं हुई। वे लिव-इन रिलेशनशिप में रहते थे।'
बात शादी तक पहुंच गई। जयपुर के अन्य दोस्तों ने भी दोबारा संपर्क साधा, और इरफान
और सुतापा का फ्लैट एक केंद्रीय मिलन स्थल बन गया। 'इरफान के पास एक यज़्दी बाइक थी।
वरुण आगे कहते हैं, 'उन दिनों की बात है।'
वरुण को लगता है कि इरफान को जो चीज दूसरों से अलग बनाती है, वह एक ऐसा गुण है जो उन्हें
वरुण जीवन में लगातार और अधिक पाने के लिए प्रयासरत रहता है। वरुण ने इरफान को कभी खुश नहीं देखा।
और उन्हें यह आभास होता है कि अभिनेता के भीतर कुछ ऐसा है जो हमेशा से उन्हें रोके रखता आया है।
उसे असंतुष्ट रखते हुए, हमेशा उसे और अधिक हासिल करने, और अधिक बनने की इच्छा बनाए रखना।
बेहतर। 'उनका दिमाग हमेशा दार्शनिक प्रश्नों में डूबा रहता है। वह लगातार
'वह चीजों का विश्लेषण करता रहता है। वह हमेशा इसी तरह के विचारों में डूबा रहता है,' वरुण कहते हैं।
इरफ़ान के बारे में एक समान लेकिन अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण हाल के एक अन्य व्यक्ति द्वारा भी साझा किया जाता है।
friend—writer and producer Shailja Kejriwal. Irrfan and Sutapa met Shailja
1990 के दशक के मध्य में बॉम्बे में, एनएसडी से स्नातक होने के काफी समय बाद।
उन्होंने टेलीविजन शो स्टार बेस्टसेलर्स पर काम किया, और फिर, कई साल बाद,

पेशेवर और व्यक्तिगत मित्रता के चलते शैलजा ने उनके साथ दो फिल्में बनाईं।
इरफ़ान- मदारी (2016) और क़रीब क़रीब सिंगल (2017)।
इरफ़ान एक ऐसे व्यक्ति हैं जो हमेशा कहते हैं, “कुछ और करते हैं (चलो करते हैं)”
“कुछ और भी है,” शैलजा कहती हैं। “मुझे लगता है कि उनका दिमाग इतना उर्वर है कि वह
बस ऐसा लगता है, "ओह, मैंने यह नहीं किया है, तो चलो मैं अपने लिए इस बाधा को तोड़ दूं।"
वह ऐसा व्यक्ति नहीं बनना चाहता जो अपनी पिछली उपलब्धियों पर ही संतुष्ट होकर बैठा रहे। वह ऐसा हो सकता है
वह कहते हैं, "अब मेरे पास एक हॉलीवुड फिल्म है, तो मुझे इसे करने दो।" लेकिन वह हमेशा
वह अपने लिए कुछ नया करने की सोच रहा है।
इरफ़ान की पेशेवर ज़रूरतों को पूरा करने में तिग्मांशु धूलिया का योगदान बहुत मददगार साबित होगा।
अधिक चुनौतीपूर्ण काम करने की इच्छा। तिशु 1993 में बॉम्बे पहुंचे। बैंडिट क्वीन के पूरा होने पर, अभिनेताओं का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ।
दिल्ली, भोपाल और अन्य शहरों के जिन कलाकारों ने फिल्म में अभिनय किया था, उनमें से कुछ
being Saurabh Shukla, Manoj Bajpayee, Seema Biswas, Nirmal Pandey and
खुद तिशु ने कहा, 'दिल्ली का मंडी हाउस सचमुच खाली लग रहा था।' हंसते हुए कहा, 'मंडी हाउस की चाय की दुकान के बाहर के अड्डे खत्म हो गए थे।'
राम गोपाल बजाज दिल्ली में ही रुक गए और अंततः इरफान से उनका संपर्क टूट गया।

एक दशक से भी अधिक समय बाद, बॉम्बे की यात्रा के दौरान, वे निर्देशक केतन से मिलने गए।
मेहता और उनकी अभिनेत्री पत्नी दीपा साही माढ द्वीप स्थित अपने आवास पर एक कार्यक्रम के लिए गए थे।
पार्टी। बज्जो भाई जानते थे कि सुधीर मिश्रा उनके पड़ोसियों में से एक था, लेकिन
इरफ़ान और सुतापा को बाहर टहलते देख उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ।
केतन मेहता की इमारत। 'क्रिसमस के आसपास का समय था और मैं एक सांता क्लॉज़ को लेकर जा रहा था।'
क्लॉस मास्क,’ वह कहते हैं। ‘मुझे उनके साथ सेल्फी लेना याद है। अच्छा लगा, और
वे भी मुझे देखकर खुश हुए।
इरफ़ान के स्नातक होने के समय के आसपास ही विपिन शर्मा कनाडा चले गए थे।
उन्होंने एनएसडी से पढ़ाई की। वहां वे फिल्म एडिटर बन गए। लेकिन वे भारत की यात्राएं भी करते रहते थे।
और बॉम्बे में इरफान और तिग्मांशु धूलिया से दोबारा संपर्क स्थापित किया। वह अक्सर
इरफ़ान के साथ अभिनय के बारे में बातचीत करते हुए और यह चर्चा करते हुए समय बिताया कि कैसे इतनी सारी हिंदी फिल्में
उनकी शैली मुखर थी। भारत की अपनी एक यात्रा के दौरान, इरफान ने उनसे पूछा कि...
मकबूल देखें।
‘He said, “Hindi cinema badal raha hai (Hindi cinema is changing),”’ विपिन याद करते हुए बताते हैं, ‘मैंने फिल्म देखी, उन्हें फोन किया और बताया कि मैं फिल्म में अभिनय करना चाहता हूं।’
मैंने तो पूरी तरह से हार मान ली थी। उसका जवाब था कि मुझे वापस लौटना होगा।

भारत।’ विपिन लगभग तेरह वर्षों से भारत से दूर था, लेकिन वह एक इरफ़ान के साथ हुई बातचीत ने उन्हें कनाडा वापस जाने और उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया।
अभिनय कार्यशालाएँ।
एनडीटीवी के शो 'इट्स माय लाइफ' में विपिन ने इससे पहले एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी थी।
इरफान के बारे में एक इंटरव्यू जिसमें वह रोने लगे थे।
जब मुझे मंच पर बुलाया गया, तो उन्होंने मेरा वो वीडियो दिखाया जिसमें मैं रो रही थी। इरफान
उन्होंने मेरी तरफ देखा और पूछा, “तुम मेरे लिए रोईं? क्या तुम सचमुच रोईं?” और मैंने कहा,
“हां, मैंने किया।” उसने जवाब दिया, “ये तो बहुत बढ़िया है यार, क्योंकि लोग आमतौर पर ऐसा ही करते हैं।”
इस उद्योग में दूसरों के लिए इस तरह की भावनाएं व्यक्त न करें।' और वह आगे कहते हैं,
‘इरफान और मेरा रिश्ता ऐसा है कि मैं बहुत भावुक हो जाती हूँ। मैं रोने लगती हूँ।
हमारी दोस्ती के बारे में सोचते हुए, मुझे हमेशा से लगता रहा है कि इरफान बहुत ही रूहानी इंसान हैं।
(आध्यात्मिक) व्यक्ति। वह लोगों से जुड़ता है। मैं उसके बहुत करीब महसूस करता हूँ, और मैं
मैंने हमेशा उनके काम की प्रशंसा की है।
इरफ़ान और मीता वशिष्ठ के करियर की गति अलग-अलग रही। उनका करियर यश चोपड़ा की फिल्म चांदनी में सहायक भूमिका से ही उन्होंने काफी जल्दी अपने करियर की शुरुआत की।
डिंपल कपाडिया की करीबी अभिनेत्रियों में (1989) और मणि कौल की सिद्धेश्वरी (1990) शामिल हैं।

गोविंद निहलानी की फिल्म दृष्टि (1990) में एक दोस्त की भूमिका में, जिसमें इरफान ने भी एक किरदार निभाया था।
छोटी भूमिका, और कुमार शाहानी द्वारा निर्देशित दो फिल्में—ख्याल गाथा (1989)
और कस्बा (1991)। दूसरी ओर, इरफान का फिल्मी करियर थोड़ा देर से शुरू हुआ।
1990 में, कोलकाता में अंतर्राष्ट्रीय भारतीय फिल्म महोत्सव आयोजित हुआ था। मीता की दो फिल्में प्रदर्शित हो रही थीं— सिद्धेश्वरी और ख्याल गाथा। वह एक
महोत्सव में आधिकारिक अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल में एक कमरा बुक किया गया है।
कुछ टेलीविजन शो में काम करने के लिए संघर्ष कर रहे इरफान, महोत्सव में पहुंचे।
विपिन शर्मा, जो कनाडा से घूमने आए थे। दोनों दोस्तों के बीच कोई खास बातचीत नहीं हुई थी।
रात बिताने के लिए जगह की तलाश में, वे मीता के होटल के कमरे में फर्श पर सो गए।
अगली सुबह मुझे सफाई कर्मचारियों के आने से पहले उन्हें बाहर निकालना पड़ा, जो कि शाम 6 बजे था।
मीता याद करती हैं, ‘सुबह के समय, उनमें से एक ने कहा, “चाय तो पीने दे (कम से कम एक बार तो पी लें)
“चाय,” और मैंने जवाब दिया, “जाओ ढाबे में पी लो।” और
वे चले गए जबकि मैंने उनके द्वारा छोड़ी गई गंदगी को साफ किया जिसमें उनके कंबल भी शामिल थे।
उनके रास्ते बार-बार टकराते रहे। मीता को सफलता के बाद हुई एनएसडी की एक सभा याद है।
हासिल और मकबूल की. इरफान और तिग्मांशु धूलिया घिरे हुए थे

ड्रामा स्कूल से स्नातक हुए जूनियर छात्र। इरफान, मीता से हालचाल जानने के लिए उसके पास गया।
तब तक उनके दूसरे बेटे अयान का जन्म हो चुका था। मीता ने कहा, 'वह इससे बहुत खुश थे।'
वह याद करते हुए कहते हैं, 'उन्होंने मुझे बताया कि बच्चा बिना किसी चिंता के कैसे सोता है।
दुनिया।’ और फिर उसने उससे पूछा कि वह कैसी है। ‘मैंने उसे बताया कि चीजें बदल गई हैं।’
काम धीमा हो गया था और मुझे कोई अच्छा काम नहीं मिल रहा था,’ वह आगे कहती हैं। ‘उन्होंने प्रस्ताव दिया
उन्होंने मुझे एक अंकशास्त्री से मिलवाया जिनसे वे परामर्श ले रहे थे। यह उनकी बहुत बड़ी मेहरबानी थी।
उसे। ऐसा कौन करता है भला?
नवंबर 2016 में मीता जयपुर थिएटर फेस्टिवल 'जयरंगम' में थीं। उन्होंने उद्घाटन दिवस पर कश्मीरी नाटक 'लाल डेड' में अभिनय किया। इरफ़ान इस महोत्सव के ब्रांड एंबेसडर थे और वे महोत्सव में पहुंचे थे।
अगले दिन, एक स्वयंसेवक ने मीता को बताया कि इरफ़ान मंच पर थे और वह उसने उसे बुलाया था। 'अचानक मुझे स्पीकर पर इरफान की तेज़ आवाज़ सुनाई दी,
“Arre yaar Mita, aa jaa. Kahan hai? Kitna intezaar karoon (Hey Mita, please
आओ। तुम कहाँ हो? मुझे और कितना इंतज़ार करना चाहिए? इरफ़ान presented a bouquet of flowers. And then he spoke, “Isse pehle ki mujhse koi
sawal pooche main yeh bouquet apni classmate aur dost Mita Vashisht ko

dena chahta hoon. Woh NSD mein meri prerna thi (Before you start to ask
मुझे कुछ सवाल हैं, मैं अपने सहपाठी को फूलों का यह गुलदस्ता भेंट करना चाहता हूँ और
मेरी दोस्त मीता वशिष्ठ। वह मेरे लिए एनएसडी में प्रेरणा थीं।
वह कहती हैं, 'उन्होंने मुझे गुलदस्ता दिया और बैठ गए। उन्हें ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी।'
यह बहुत ही प्यारी और नाजुक चीज थी।
वह इरफान को अपना एनएसडी भाई और दोस्त कहती हैं। 'चाहे उसे काम मिला हो या नहीं।'
चाहे वह स्टार बना हो या नहीं, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।
जिस तरह से मैं उसके साथ रहूंगी।' यह स्वाभाविक था कि दुनिया के तरीके में
जब हमने उसे देखा, तो इरफान बदल गया था, बल्कि विकसित हो गया था, क्योंकि वह एक बड़ा खिलाड़ी बन गया था।
वह भारत और विदेश में एक स्टार हैं। और शायद इससे उनमें थोड़ा बदलाव आया हो। लेकिन हमारे रिश्ते में कोई बदलाव नहीं आया,’ वह आगे कहती हैं।
एनएसडी छोड़ने के बाद, इरफान के संघर्ष और निराशाओं का दौर शुरू हो गया।
उन्हें काम करना पड़ता—काफी टेलीविजन, कुछ छोटी फिल्में, लेकिन वरुण के रूप में
गौतम ने कहा कि उनके अंदर के अभिनेता को संतुष्ट करने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

1. ‘मेरा जीवन और मेरी उम्र उम्मीदों से भरी है। यह दुनिया को जीतने का सपना देखने की उम्र है।’ गिरीश कर्नाड के नाटक तुगलक से।

2Kuch Bhi Ho Sakta Hai, Season 2, Episode 5, 30 August 2015, https://www.voot.com/shows/the-anupam-kher-show-s02/2/383623/the-warrior/383780
3. ‘इरफान खान का अनुपमा चोपड़ा के साथ साक्षात्कार’, फिल्म कंपेनियन, हिंदी मीडियम, 8 मई 2017, https://www.youtube.com/watch?v=Lbjz76KV5ok&t=518s
4‘मैं अपने लिए कभी भी पर्याप्त अच्छा नहीं हूँ’, ओपन, 6 दिसंबर 2017, https://openthemagazine.com/cinema/i-am-never-good-enough-for-myself/
5Kuch Bhi Ho Sakta Hai,, Season 2, Episode 5, 30 August, 2015, https://www.voot.com/shows/the-anupam-kher-show-s02/2/383623/the-warrior/383780
6‘मैं दुबला-पतला, सांवला और शर्मीला था; अभिनेता जैसा बिल्कुल नहीं था, लेकिन मैंने सपना देखा था,’ इरफान कहते हैं, एबीपी न्यूज, सेल्फी। https://www.youtube.com/watch?v=3eLhye62EHs
7Kuch Bhi Ho Sakta Hai, Season 2, Episode 5, 30 August 2015, https://www.voot.com/shows/the-anupam-kher-show-s02/2/383623/the-warrior/383780
8 वही।
9 वही।
10‘इट्स माय लाइफ विद इरफान खान’, एनडीटीवी, 4 मार्च 2012, https://www.ndtv.com/video/shows/it-s-my-जीवन/यह-मेरा-जीवन-इरफ़ान-खान-के-साथ-है-225484
11‘मैं दुबला-पतला, सांवला और शर्मीला था; अभिनेता जैसा बिल्कुल नहीं था, लेकिन मैंने सपना देखा था,’ इरफान कहते हैं, एबीपी न्यूज, सेल्फी।
https://www.youtube.com/watch?v=3eLhye62EHs

12 [illegible], ‘[illegible]’, [illegible], 7 [illegible] 2015, https://openthemagazine.com/art-[illegible]/[illegible]-[illegible]-[illegible]/

13. ‘[illegible]’, [illegible], 5 [illegible] 2017, https://www.youtube.com/watch?v=x8GPnm73CEw&t=2s

2

[illegible]

[illegible]

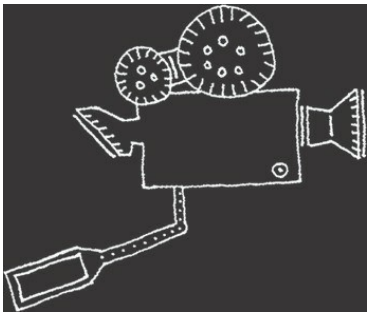

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]14

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उन्होंने फिल्म निर्माता और छायाकार गोविंद निहलानी से संपर्क किया।
जिन्होंने अभी-अभी अपनी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित टेलीविजन मिनी- सीरीज़, तमास, प्रस्तुत की थी।
(1988), लेखक भीष्म साहनी के उपन्यास पर आधारित।
तामस के बाद, गोविंद कुछ छोटे पैमाने पर करने की सोच रहा था।
चूंकि यह शो दूरदर्शन पर प्रसारित होता था, इसलिए गोविंद ने भास्कर से संपर्क किया।
चैनल के महानिदेशक घोष को तीन करने का सुझाव दिया गया था।
अंतरंग नाटक—जो यूरोपीय नाटककारों द्वारा लिखे गए हैं।
तो इस तरह गोविंद निहलानी ने हेनरिक इब्सन के नाटक 'लिटिल आयॉल्फ' का निर्देशन किया।
(जज़ीरे, 1991), ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग की द फादर (पिटा, 1991) और फेडरिको
गार्सिया लोरका की 'द हाउस ऑफ बर्नांडा अल्बा' (रुकमावती की हवेली, 1991)।
उन्होंने पाठ में कोई बदलाव या संपादन नहीं किया, सिवाय इसके कि टेलीप्ले का प्रदर्शन किया गया।
हिंदी। नाटकों के पात्रों के आधार पर सेटिंग्स बदल दी गईं।
भारत में। और उन्होंने पहले दो प्रोडक्शन में इरफान खान को कास्ट किया।
1980 के दशक के उत्तरार्ध में, गोविंद को उनके मित्र राम गोपाल बजाज ने आमंत्रित किया था।
उन्होंने एंटोन चेखव के नाटक 'द सीगल' के एनएसडी रिहर्सल को देखा। और उन्होंने इरफान खान को भी देखा।
नाटक में अभिनय करना।
गोविंद कहते हैं, 'मैं इरफान से प्रभावित था। एक अभिनेता के तौर पर (भले ही वह

(वह अभी भी छात्र था), उसने अपने सह-कलाकार को काम पर रख लिया।' गोविंद आगे कहते हैं कि वहाँ हैं
कई अभिनेता जो दूसरे अभिनेता की ओर न देखने की विधि का पालन करते हैं दृश्य तो नहीं, लेकिन इसके बजाय, वे दूसरी दिशाओं में देखते हैं, इस उम्मीद में कि उन्हें कुछ मिल जाएगा।
बहुत अधिक ध्यान। इरफान अपने सह-कलाकार की ओर देखते थे।
गोविंद भी इरफान के भाषण से प्रभावित हुए। यह अनोखा था, एक अलग ही अंदाज का।
वह स्वयं का था, और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि वह किसी की नकल कर रहा हो। स्वाभाविक रूप से यही बात थी।
एनएसडी के आखिरी दिनों में इरफान ने इससे किनारा कर लिया था।
नसीरुद्दीन शाह से प्रेरित अभिनय का दौर। गोविंद का मानना है कि कुछ अभिनेता ऐसे हैं।
ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें अपने अभिनय कौशल का प्रदर्शन करने की जरूरत होती है, लेकिन इरफान में वह गुण नहीं था।
‘Mehnat toh kar rahe hote hain, lekin agar woh mehnat dikh jaye, phir audience ka maza nikal jaata hai (They are working hard, but if the audience
जब वे उस कड़ी मेहनत को देखते हैं, तो उन्हें उसमें मजा आना बंद हो जाता है। वे बता सकते हैं कि अभिनेता
अभिनय।’ लेकिन इरफान उन अभिनेताओं से अलग थे, क्योंकि उनका प्रदर्शन ऐसा था मानो
effortless. ‘Hindi mein bolte hain sehajata se acting karna (They say in गोविंद कहते हैं, 'यह हिंदी में स्वाभाविक सहजता के साथ अभिनय कर रहा है।'
वह काम करने के लिए उत्सुक था, लेकिन उसका इरादा था कि यह कुछ ऐसा होना चाहिए
substantial,’ Govind says. ‘Chhota bhi role ho, par usmein kuch hona

चाहिए (भले ही छोटी भूमिका हो, उसमें कुछ सार होना चाहिए)।
फिल्म जज़ीर में इरफ़ान की सह-कलाकार रत्ना पाठक शाह थीं (जिन्होंने शादी कर ली थी)।
Naseeruddin Shah in 1982) and Mita Vashisht.
नसीरुद्दीन शाह को इरफान से अपनी पहली मुलाकात का वो पल याद है, जब... युवा अभिनेता रत्ना के साथ रिहर्सल करने के लिए उनके घर आए थे। 'जब मैंने उन्हें देखा तो...'
जज़ीर, मुझे फिल्म पसंद नहीं आई और मुझे समझ भी नहीं आई,’ वे कहते हैं। ‘लेकिन मैं था
मैं इरफान द्वारा इस भूमिका में लाई गई गंभीरता और उनकी समझदारी से बहुत प्रभावित हूं।
भाषण से बना। मुझे लगा कि वह एक दुर्लभ अभिनेता थे जो इस पर जोर नहीं देते थे।
सभी ज़ोरदार शब्द, जो कई अभिनेता करते हैं। मुझे एहसास हुआ कि यह आदमी अपने काम में माहिर है।
शिल्प।'
एक दिन नसीरुद्दीन शाह भी राजकमल में मिलने आए थे।
शूटिंग देखने के लिए स्टूडियो में मौजूद थे। इरफान ने कहा, 'नसीर साहब को मेरा अभिनय पसंद आया।'
इंडिया टुडे द्वारा आयोजित वरिष्ठ अभिनेता इरफान इरफान के साथ एक बातचीत में।
उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि प्रदर्शनों की योजना बनाने में काफी मेहनत लगी थी।
वह टेलीप्ले उन्हें पसंद नहीं आया और उसमें वह सहजता नहीं थी जो वह चाहते थे।
turned to Naseeruddin Shah and said, ‘Aapko Jazeere ki performance achhi

lagti hai. Mujhe kabhi nahi lagti (You liked my performance in Jazeere. I
मुझे यह कभी पसंद नहीं आया।
‘मुझे याद है कि मैं उलझन में थी,’ रत्ना अपने अनुभव को याद करते हुए कहती हैं।
अपने शुरुआती बड़े प्रोजेक्ट्स में से एक, जज़ीरे पर काम करते हुए, भले ही उनके पास
उन्होंने 1981 में एनएसडी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शूटिंग से पहले उन्होंने काफी रिहर्सल की, लेकिन वह
उन्हें याद है कि इरफान परियोजना के आगे बढ़ने के तरीके से ‘नाराज़’ थे। ‘यह था
यह कभी स्पष्ट नहीं हुआ कि गोविंद क्या उम्मीद कर रहा था, हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए। क्या हमें
क्या हम फिल्म में एक-दूसरे से जो कह रहे हैं, उसमें वास्तविक व्यवहार कर रहे हैं? या फिर क्या...
क्या इसमें कुछ हद तक नाटकीय अभिनय की आवश्यकता है? मुझे इस तरह का अभिनय बिल्कुल पसंद नहीं है।
मैं स्टेज पर इतना अच्छा अभिनय कर सकता हूँ, तो फिल्म में उस तरह का अभिनय क्यों करूँ? लेकिन मेरे पास ऐसा करने का समय नहीं था।
उस समय मेरे पास सवाल पूछने के लिए पर्याप्त अनुभव था।
जज़ीर से मिली निराशा के बावजूद, इरफान ने गोविंद निहलानी की अगली फिल्म दृष्टि में सहायक भूमिका निभाने के लिए सहमति दी, जो 1990 में ही बनी थी।
इंगमार बर्गमैन की क्लासिक फिल्म, सीन्स फ्रॉम अ मैरिज से प्रेरित, दृष्टि
यह भारतीय विवाह के बिगड़ने पर गोविंद का दृष्टिकोण था।
डिंपल कपाडिया और शेखर कपूर को संध्या और दंपत्ति के रूप में कास्ट किया गया था।

Nikhil. Irrfan’s NSD classmate Mita Vashisht played Prabha, a close friend
संध्या की कहानी, जो खुद एक मुश्किल वैवाहिक जीवन से गुजर रही है। इरफान को इस भूमिका के लिए चुना गया था।
राहुल, संध्या और निखिल के एक दोस्त का भतीजा, जो अप्रत्याशित रूप से...
उनकी शादी की सालगिरह की पार्टी में आता है।
इरफ़ान के राहुल के किरदार में एक खास तरह की शर्म और शांत स्वभाव झलकता है। वह एक संगीतकार हैं।
और वह कुर्ता पहनकर पार्टी में आता है, जबकि बाकी सभी पुरुष कपड़े पहने होते हैं।
पतलून और कमीज। संध्या और उनके बीच तुरंत एक जुड़ाव महसूस होता है।
राहुल, हालांकि यह स्पष्ट है कि उनके बीच उम्र का अंतर है (डिंपल खुद उस समय 33 साल की थीं)।
फिल्म बनने के समय, जब इरफान 23 वर्ष के थे। शुरुआती हल्की-फुल्की बातचीत।
इससे उन्हें यह अहसास होता है कि उन्हें एक ही गुरु द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा है।
बाद में, पार्टी में, राहुल संध्या को उसके कमरे में अकेले रोते हुए पकड़ लेता है।
इरफान बड़े ही केयरिंग अंदाज में डिंपल की संध्या से कहते हैं, 'मत रोइए। एएपी
par rona achha nahi lagta. Bahut khoobsurat lagti hain jab aap khush hoti
है। कृपया मत रोइए। (रोना आपको शोभा नहीं देता। आप बहुत अच्छे नहीं लगते।)
खुश रहने पर तुम खूबसूरत लगती हो। इसलिए कृपया रोना मत।’ एक अन्य दृश्य में, इसके बाद

डिंपल और इरफान के किरदार रिलेशनशिप में हैं, वह मीता से बात करती हैं।
वशिष्ठ अपने युवा प्रेमी के बारे में बात करती है। और वह इरफान के किरदार की आँखों का जिक्र करती है।
नवजात बछड़े के समान।
कुछ दृश्यों के बाद संध्या और राहुल किशोरी के साथ प्रेम संबंध बनाते हैं।
Amonkar’s song (she composed the music for the film) ‘Meha Jhar Jhar
पृष्ठभूमि में 'बरसात रे' बज रहा है। बाहर तेज बारिश हो रही है। इरफान सौम्य हैं।
और परेशान डिंपल के प्रति कोमल, जो अचानक इस घटना से प्रभावित हो जाती है।
युवक का ध्यान अपनी ओर खींचता है। वह उसके गालों और गर्दन को चूमता है और उसके बालों से खेलता है।
बिजली की चमक से उनके चेहरों पर रोशनी पड़ रही थी। यह उन कुछ ही पलों में से एक था।
कई बार इरफान ने किसी फिल्म में सेक्स सीन किया है। उन्होंने इस बारे में बात की है कि यह कैसा था।
इससे उसे हमेशा असहज महसूस होता था। लेकिन तीन और फिल्में हैं।
जिन फिल्मों में उन्होंने यौन दृश्यों के लिए सहमति दी थी—रोड टू लद्दाख (2003), रोग (2005) और
द नेम्सकेक (2006)।
इरफ़ान के लिए एक और दुर्लभ बात यह है कि दृष्टि में, वह एक गाना गाते हैं (या यूं कहें कि लिप सिंक करते हैं)।
तानपुरा धारण करते हुए गाया जाने वाला गीत; पंडित जी की आवाज़ में ‘बजट घन मृदुंग’।

Raghunandan Panshikar, who was Kishori Amonkar’s disciple. His mind and
उसका शरीर गाने की धुन पर झूम रहा था। फिल्म निर्माताओं ने वास्तव में कभी नहीं देखा।
इरफ़ान एक रोमांटिक अभिनेता थे जो प्रेम गीतों पर लिप सिंक करते थे। और वे खुद भी हिंदी फिल्मों में दिखाए जाने वाले आम रोमांटिक किरदारों को निभाने में सहज नहीं थे।
इसी वजह से उन्होंने एवरी बॉलीवुड नामक पैरोडी में भाग लेने का फैसला किया।
2015 में कॉमेडी ग्रुप ऑल इंडिया बकचोद के लिए पार्टी सॉन्ग 16।
1990 में, इरफ़ान खान ने बंगाली संगीतकार की फिल्म में एक बड़ी सहायक भूमिका निभाई।
तपन सिन्हा की फिल्म 'एक डॉक्टर की मौत' (ईडीकेएम)। तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की विजेता।
पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ द्वितीय फीचर फिल्म और जूरी द्वारा विशेष उल्लेख के लिए)
मुख्य अभिनेता पंकज कपूर के लिए, ईडीकेएम एक सच्ची घटना से प्रेरित थी।
एक डॉक्टर जिसके शोध ने उसके साथियों के बीच ईर्ष्या और जलन पैदा कर दी और
वरिष्ठ नागरिक। यह फिल्म एक अत्यंत समर्पित चिकित्सा अनुसंधान पर केंद्रित है।
एक पेशेवर डॉक्टर, डॉ. दीपांकर रॉय (पंकज कपूर द्वारा अभिनीत), जो इलाज ढूंढ निकालते हैं।
कुष्ठ रोग के लिए, लेकिन अपनी निजी जिंदगी की कीमत पर। कहानी में, उनके निष्कर्ष ये हैं:
उनके वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उनका उपहास किया जाता है, और उन्हें विदेश यात्रा करने की अनुमति नहीं है।

एक सम्मेलन में प्रस्तुति।
इरफ़ान ने अमूल्या का किरदार निभाया, जो एक उत्साही पत्रकार है जिसकी रिपोर्ट सबसे पहले सामने आती है।
डॉ. रॉय के निष्कर्षों पर ध्यान केंद्रित किया गया। शबाना आज़मी ने डॉक्टर की अकेली भूमिका निभाई।
पत्नी, सीमा। यह इरफान के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका है। वह कई फिल्मों में दिखाई देते हैं।
पंकज और शबाना के साथ के दृश्यों में, पंकज धीरे-धीरे उस गलत बात को समझने लगता है जो हुई है।
डॉक्टर के पास गया था। इरफान का वही युवा, लंबा और दुबला-पतला रूप बरकरार था।
वह 1990 के दशक में उनके साथ रहे, जब तक कि उन्होंने बड़ी फिल्मी भूमिकाओं के लिए जगह भरना शुरू नहीं कर दिया।
वैसे, यह भी उल्लेखनीय है कि यह इरफान की एकमात्र फिल्म होगी जिसमें वह नज़र आएंगे।
शबाना (हालांकि उनके साथ में कोई खास महत्वपूर्ण दृश्य नहीं हैं) ईडीकेएम) संजय गुप्ता की 2015 की जोरदार थ्रिलर, जज़्बा तक। यह अजीब बात है
भारत के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में से दो होने के बावजूद, किसी अन्य निर्देशक ने उनके बारे में नहीं सोचा।
दोनों की उम्र में 16 साल का अंतर होने के बावजूद उन्हें एक ही फिल्म में कास्ट करना
दो।
1990 के दशक के अंत में, इरफ़ान ने दो फ़िल्म परियोजनाओं पर काम किया,
इसमें उनके आदर्श नसीरुद्दीन शाह को दिखाया गया था। अभिनेता- निर्देशक रजत कपूर भी थे।

उनकी पहली फीचर फिल्म, प्राइवेट डिटेक्टिव: टू प्लस टू प्लस वन (1997) थी। यह फिल्म थी
दो दंपतियों, एक विवाहेतर संबंध और एक ताक-झांक करने वाले निजी जासूस की एक जटिल कहानी।
नसीर द्वारा अभिनीत जासूस और हत्या का मामला। इरफान ने एक पुलिसवाले के रूप में बहुत छोटी भूमिका निभाई थी।
हत्या की जांच कर रहे थे। दुख की बात है कि उनके और नसीर के साथ कोई सीन नहीं थे। इरफान
उनके कुछ महत्वपूर्ण संवाद थे और वे उनमें बहुत आत्मविश्वासी और स्वाभाविक दिखाई दिए।
माहौल। बॉम्बे के एक पुलिसवाले की तरह साफ दाढ़ी और छोटे बालों वाला वह व्यक्ति दिख रहा था।
युवा, हालांकि 1997 तक वह पहले ही 30 वर्ष के हो चुके थे। 'वह आश्चर्यजनक रूप से अच्छे थे।
नसीरुद्दीन शाह कहते हैं, 'फिल्म खुद ही काफी भुला देने लायक थी।' रजत कपूर की लगभग उत्कृष्ट कृतियाँ, मिथ्या, मिक्स्ड डबल्स और आँखें 'देखी' अगली सदी में बनेगी। लेकिन उसमें इरफान को दोबारा कास्ट नहीं किया जाएगा।
फिर कैनेडियन फिल्म में इरफान खान की एक छोटी सी भूमिका थी, जिसे आप पलक झपकते ही मिस कर सकते हैं।
आइसलैंडिक निर्देशक स्टर्ला गुन्नारसन की फिल्म 'सच अ लॉन्ग जर्नी' (1998), जो इस पर आधारित है
रोहिंटन मिस्त्री का 1991 का इसी नाम का उपन्यास और सूनी द्वारा लिखित एक पटकथा।
तारापोरेवाला। फिल्म के क्रेडिट्स में इरफान का नाम युवा गुस्ताद नोबल के रूप में दर्ज है।
(रोशन सेठ वयस्क गुस्ताद के पिता की भूमिका निभाते हैं)। इरफ़ान मुश्किल से दो फिल्मों में दिखाई देते हैं।

पृष्ठभूमि में दृश्य धुंधले हैं। जब तक कि उसे नज़रअंदाज़ न किया जाए, तब तक उसे पहचानना मुश्किल होगा।
फिल्म में इरफ़ान को खास तौर पर देखा जा रहा था। कागज़ पर, एक ऐसी फिल्म जिसमें
नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी और पर्ल सहित उत्कृष्ट सहायक कलाकार। पद्मसी एक दिलचस्प प्रोजेक्ट लग रहा होगा। और शायद वह भूमिका भी।
फिल्म लंबी थी। लेकिन फिल्म में इरफान के लिए कुछ खास नहीं था। फिर भी यह देखने लायक है।
यह देखते हुए कि इरफान तब वैसे अभिनेता नहीं थे जैसे वे अब हैं। और इसलिए वे ऐसा करते थे।
जो भी उसके रास्ते में आता। कोई केवल यही अनुमान लगा सकता है कि वह कम से कम
फिल्म के कनाडाई प्रोडक्शन होने के कारण उन्हें अच्छा भुगतान मिला।

सीखने का एक दशक

कुछ फिल्मों के अलावा, इरफान ने 1990 के दशक का अधिकांश समय एक टेलीविजन कार्यक्रम में बिताया।
एक के बाद एक शो। इससे वह व्यस्त रहता था और उसके बिलों का भुगतान होता था, हालांकि वह बना रहा।
काफी दुखी थे। उनका मन फिल्मों में लगता था, लेकिन उन्हें वो मौके नहीं मिल रहे थे।
वह कभी-कभी सुनता था कि किसी खास फिल्म निर्माता ने पूछताछ की है।
उसके बारे में। जैसे कि एक बार किसी ने उसे बताया था कि सुभाष घई ने उसे देखा था।

on a television show. And that he had asked, ‘Yeh ladka kaun hai serial mein
(सीरियल में यह लड़का कौन है?)’ नसीरुद्दीन शाह से यह कहते हुए उन्होंने आगे कहा,
मैं हमेशा इस बात का इंतजार करता था कि वह (सुभाष घई) मुझे कभी फोन करेगा। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।
हुआ।’17
टेलीविजन का काम दोहराव वाला था, लेकिन कम से कम इससे रोजगार तो मिलता था।
ब्रिटिश-भारतीय फिल्म निर्माता आसिफ कपाडिया के साथ एक साक्षात्कार के दौरान बोलते हुए,
ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट (बीएफआई) द्वारा प्रसारित एक कार्यक्रम में इरफान ने कहा कि वह ऊब गए थे।
टेलीविजन के साथ। उन्होंने कहा, 'अभिनय में अपनी रुचि बनाए रखना मुश्किल था।'18
एक ऐसे उद्योग में जहां बहुत कम लोग जोखिम उठाते हैं, अगर कोई अभिनेता कुछ अच्छा करता है तो
एक टेलीविजन शो में, फिर लोग उससे उसे दोहराने के लिए कहते थे। इरफान ने शो को बताया, 'मैं आपके लिए हर हफ्ते इसी तरह के सीन लिखूंगा, जिन्हें आपको परफॉर्म करना होगा।'
सेल्फी।
एक अन्य साक्षात्कार में, INKtalks की संस्थापक लक्ष्मी प्रतुरी से बातचीत करते हुए,
इरफ़ान ने कहा कि भारत में टेलीविजन शो अक्सर मौखिक नाटक होते हैं जिनमें अभिनेता
उन्हें यह बताना था कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है या वे कैसे सोच रहे हैं।

दर्शकों के लिए कल्पना करने या व्याख्या करने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। 'यह बहुत ही
'शाब्दिक; सब कुछ बोलकर और शब्दों में व्यक्त करना पड़ता था,' उन्होंने कहा। 'एक गृहिणी
वह रसोई में हो सकती थी, लेकिन अगर लिविंग रूम में टेलीविजन चल रहा होता, तो वह
वह समझ सकती थी कि क्या हो रहा है। उसे इसे देखने की ज़रूरत नहीं थी। कभी-कभी टेलीविजन शो की शूटिंग के दौरान वह अपने साथ अपना सामान ले आता था।
थिएटर प्रशिक्षण, जिसमें शब्दों या वाक्यों के बीच विराम होता है। लेकिन फिर कुछ
निर्माता उस पर गुस्सा हो जाते थे और वह उन्हें यह कहते हुए सुनता था, 'अरे यार, यह
वह आदमी यहाँ है, अब वह दृश्य को और लंबा कर देगा,’ उसने कहा।20 ‘वे बस यही चाहते थे’
मुझे जितनी जल्दी हो सके डायलॉग बोलने के लिए कहा जाए ताकि वे एडिटिंग पर पैसे बचा सकें।'
इरफ़ान द्वारा अपने किरदार के रूप या व्यवहार को बदलने के लिए दिए गए किसी भी सुझाव के लिए धन्यवाद।
वे हतोत्साहित हो जाएंगे। उन्होंने आगे कहा, 'क्योंकि हर चीज में पैसा लगता है।'
अन्य चुनौतियाँ भी थीं। थिएटर से संक्रमण
टेलीविजन का सफर आसान नहीं था, क्योंकि इस नए माध्यम में अलग तरह के अभिनय की आवश्यकता थी।
अभिनेताओं से कौशल। उदाहरण के लिए, थिएटर में, इरफान को देखने की आदत थी।
जहां भी उनका मन करता। लेकिन टेलीविजन के लिए अभिनेताओं को बहुत सटीक होना पड़ता था।

उनके हाव-भाव में। शो भारत एक खोज पर काम करते हुए, इरफान
उन्हें महान छायाकार वी.के. मूर्ति के प्रकोप का सामना करना पड़ा (उन्होंने फिल्म की शूटिंग की थी)
गुरु दत्त की लगभग सभी फिल्मों में)। इरफान को यह प्रशिक्षण नहीं दिया गया था कि कहाँ
देखिए, कैमरे की दृष्टि से, मैं थोड़ा सा नज़रें हटा लेता था। कैमरा और इससे लाइटिंग पर असर पड़ेगा,’ उन्होंने सेल्फी को बताया। ‘मूर्ति साहब
scolded me, “Kahan dekhte ho? Kya hai wahan? Chalo, focus here (Where
क्या तुम देख रहे हो? देखने लायक क्या है? चलो, यहाँ ध्यान केंद्रित करो। शुरू करो!
सिनेमैटोग्राफरों को चौंकाने की इरफ़ान की आदत हाल तक जारी रही। कई बार। वी.के. मूर्ति के साथ काम करने के वर्षों बाद, उन्होंने दो फिल्मों में अभिनय किया।
(मदारी, 2016 और कारवां, 2018) एफटीआईआई प्रशिक्षित एक युवा द्वारा शूट किया गया
छायाकार अविनाश अरुण हैं। अविनाश ने राष्ट्रीय फिल्म का निर्देशन भी किया है।
पुरस्कार विजेता मराठी फिल्म किला (2014)। चुनौतियों पर विचार करते हुए।
फिल्मों में इरफान को कैमरे में कैद करना और उनके सहज शारीरिक हाव-भाव को दर्शाना, अविनाश
उनका कहना है, ‘इरफान खान एक ऐसे अभिनेता हैं जिन्हें अंक नहीं दिए जा सकते। आप उन्हें सीमित नहीं कर सकते।
उसे। आप कभी नहीं जान सकते कि वह हर टेक में कैसे हरकत करेगा या क्या करेगा।'

तिग्मांशु धूलिया 1993 में बॉम्बे पहुंचे और तुरंत ही उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया।
बिजनेस इंडिया द्वारा संचालित एक नए चैनल, BITV के साथ काम कर रहा हूँ। शेखर कपूर
वह समूह के रचनात्मक प्रमुख थे। हाल ही में उनके सहयोग के कारण बैंडिट क्वीन (1994) के बाद, शेखर ने तिशु को हम बंबई नहीं जाएंगे (1994-95) नामक एक शो का निर्देशन करने के लिए कहा। हाल ही में आए सभी प्रमुख कलाकार इसमें शामिल थे।
शो में दिल्ली से इरफान खान, मनोज बाजपेयी सहित कई लोग शामिल हुए। Saurabh Shukla, Vijay Raaz and Kannan Iyer. They shot eight episodes, but
चैनल बंद हो गया। इरफान फिर से नौकरी की तलाश में बाजार में उतर गए।
इन्हीं दिनों इरफान का सामना अन्य प्रमुख फिल्म सितारों से हुआ।
आज के व्यक्तित्वों में से एक। 1995-96 में, उन्होंने 'डर' नामक एक श्रृंखला में अभिनय किया।
के.के. मेनन के साथ। इस सीरीज का निर्देशन अभिनव कश्यप ने किया था और इसकी पटकथा भी उन्होंने ही लिखी थी।
उनके बड़े भाई अनुराग कश्यप द्वारा।
बाद में उन्होंने गुलजार के टेलीविजन शो के कुछ एपिसोड में भी अभिनय किया।
किरदार (1993-95)। शो का हर एपिसोड एक अलग कहानी थी, लेकिन
ओम पुरी हमेशा नायक की भूमिका में रहे। 'हिसाब किताब' में इरफान ने अभिनय किया है
ओम के बेटे की भूमिका। 'खुदा हाफ़िज़' नामक एक अन्य एपिसोड में, इरफ़ान और
ओम दो ऐसे किरदारों को निभाते हैं जो सांप्रदायिक दंगों के दौरान छिपे हुए हैं—एक अंदर
एक कूड़ेदान और दूसरा बाहर। लेकिन हमें नहीं पता कि कौन हिंदू है और

जो मुसलमान है। दोनों प्रसंग गुलज़ार की अपनी कहानियों पर आधारित थे। हालाँकि
उनकी आवाज युवा लग रही थी, एक प्रशिक्षित अभिनेता के रूप में इरफान आत्मविश्वासी थे और
ओम पुरी जैसे अनुभवी अभिनेता के साथ अभिनय करने में सहज। गुलजार की बेटी मेघना को याद है कि फिल्म की शूटिंग के दौरान उनकी पहली मुलाकात इरफान से हुई थी।
किरदार के एक एपिसोड में। उनके अभिनय कौशल से मेघना प्रभावित हुईं, और,
2015 में, उन्होंने इरफ़ान को तलवार में मुख्य भूमिका में लिया, जो आरुषि की कहानी पर आधारित उनकी शानदार फिल्म थी।
Talwar and Hemraj Banjade murder case.
1990 के दशक में कुछ ऐसे टेलीविजन शो भी आए थे जिन्होंने
इरफ़ान की प्रसिद्धि और कुछ हद तक संतुष्टि। पहला एक काल्पनिक टेलीविजन शो था।
चंद्रकांता नामक यह शो मूल रूप से रविवार को दूरदर्शन पर प्रसारित होता था।
1994-96 के दौरान। यह आंशिक रूप से देवकी नंदन खत्री के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है।
इस शो का नाम नीरजा गुलेरी ने रखा था। इरफान इसमें अभिनय करने के लिए अनिच्छुक थे।
शो देखने के लिए उन्हें अपने अभिनेता मित्र शाहबाज खान से मनाना पड़ा, जिन्होंने इसमें अभिनय किया था।
मुख्य किरदार। इरफान ने अंततः जुड़वां भाइयों की भूमिका निभाई।
बद्रीनाथ और सोमनाथ।
लड़ाई के दौरान तेज संगीत और धमाकेदार आवाज़ों के साथ
दृश्यों के लिहाज से, चंद्रकांता में बी-ग्रेड व्यावसायिक हिंदी फिल्म के सभी गुण मौजूद थे।

फिल्म। इसमें युद्ध के दृश्य, घुड़सवार सैनिक, रोमांस, विश्वासघात और अन्य पात्र थे।
जानवरों में रूपांतरित होना और अंततः बुराई पर अच्छाई की जीत होना।
स्पेशल इफेक्ट्स वाले पहले टेलीविजन शो में से एक, चंद्रकांता को अचानक बंद कर दिया गया था।
एक मुकदमे के कारण प्रसारण बंद हो गया, जिससे इसके वफादार श्रोताओं को काफी निराशा हुई।
प्रशंसकों, विशेषकर बच्चों और किशोरों के बीच। इरफान पुराने शो के री-रन में अजीब लग रहे हैं।
शो में अभिनेता ने युद्ध की वर्दी और आंखों में मेकअप लगाया हुआ था।
लेकिन शो के दो साल के सफल संचालन ने अभिनेता को मुंबई की भागदौड़ भरी जिंदगी में टिके रहने में मदद की।
दूसरा शो 'बनेगी अपनी बात' पति-पत्नी की जोड़ी ने बनाया था।
ज़ी टीवी के लिए टोनी और दीया सिंह की प्रोडक्शन टीम में सुतापा को शामिल किया गया था।
शो के लेखक। अमेरिकी टेलीविजन शो से प्रेरित, जिनमें कहानियाँ हैं कॉलेज के छात्र, उनके प्रेम प्रसंग, आकांक्षाएं और पारिवारिक जीवन, बनेगी अपनी
बात काफी लोकप्रिय हो गई, खासकर युवा दर्शकों के बीच, और यह चलती रही। चार वर्षों तक, 1993-97 तक। हाल ही में एक लेख में, लेखक विवेक तेजूजा ने यह लिखा था।
शो के बारे में उनका कहना है: 'बनेगी अपनी बात ने हमें इस विचार से भी परिचित कराया कि...'
किसिंग से लेकर सेक्स तक, उन विषयों तक जो कभी वर्जित थे, लेकिन अब नहीं।
दुनिया तेजी से बदल रही थी।21
इरफ़ान खान ने एक अधेड़ उम्र के पिता की भूमिका निभाई, जिनके दो बच्चे हैं।

कॉलेज जाने वाले बेटे। चश्मा पहने, बालों में थोड़ी सफेदी और एक मूंछों के मामले में, इरफान उस भूमिका के लिए उम्र में उपयुक्त थे।
उस समय उनकी उम्र केवल 26 वर्ष थी।
दीया सिंह के अनुसार, सुतापा शुरू में उसे लाने के लिए अनिच्छुक थी।
शो में पति को लेकर उनकी झिझक दूर हो गई। लेकिन जब इरफान ने ऑडिशन दिया तो उनकी झिझक गायब हो गई।
इस शो में सुरेखा सिकरी समेत कई कलाकार शामिल थे।
एनएसडी स्नातक (1968 बैच)। और बनेगी अपनी बात ने भी एक भविष्य का परिचय कराया।
हिंदी और तमिल फिल्मों के स्टार—जमशेदपुर में जन्मे आर. माधवन। उदारीकरण के बाद के भारत में, मनमोहक पात्रों के साथ, जो कपड़े पहनते थे और
नियमित शहरी लोगों की तरह व्यवहार किया, बनेगी अपनी बात ने सभी सही सुर लगाए
लोकप्रिय टेलीविजन श्रृंखला के लिए, प्रतिगामी सास-बहू नाटकों के विपरीत।
इसे एकता कपूर द्वारा संचालित प्रोडक्शन हाउस बालाजी टेलीफिल्म्स ने लोकप्रिय बनाया।
बनेगी अपनी बात भी एक धारावाहिक था, लेकिन काफी हद तक वास्तविकता के करीब था।
टेलीविजन शो के प्रति अपनी असुविधा के बावजूद, इरफान को लगता था कि वह सबसे ज्यादा खुश तभी होते थे।
इस शो को कर रहे हैं। उनके दोस्त वरुण गौतम की राय अलग है। 'उन्होंने कभी नहीं
वरुण इरफान के बारे में कहते हैं, 'मैं उनके किसी भी प्रदर्शन से खुश रहा हूं।'
शायद मकबूल में अभिनय करने का मौका मिलने के बाद उन्हें अंततः संतुष्टि मिली।

(2003), द नेम्सके (2006) और पान सिंह तोमर (2012)।

1990 के दशक में शैलजा केजरीवाल टेलीविजन के लिए काम कर रही थीं, जब उन्होंने
मुझे स्टार केबल चैनल को एक शो का प्रस्ताव देने का मौका मिला। शो के प्रत्येक एपिसोड में,
स्टार बेस्टसेलर, 45-50 मिनट लंबे होंगे और एक प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित होंगे।
लघु कहानी। और उन्होंने शो के लिए निर्देशकों की एक प्रभावशाली सूची तैयार की है—तिग्मांशु धूलिया, अनुराग कश्यप, इम्तियाज अली, श्रीराम राघवन और यहां तक कि राजकुमार हिरानी भी। दरअसल, तिग्मांशु ने छह फिल्मों का निर्देशन किया था।
उन्होंने बाकी सभी से ज्यादा एपिसोड में काम किया, और इरफान ने उनमें से कुछ में अभिनय भी किया।
including ‘Ek Shaam Ki Mulakaat’ (with Tisca Chopra) and ‘Fursat Mein’
(भूमिका चावला के साथ)। एनएसडी की दोस्ती ने तिशु और इरफान को एक साथ ला दिया था।
अविभाज्य। 'उन दिनों हम हर समय साथ रहते थे, इससे पहले कि उसे यह बीमारी हो जाए।'
'अभी की तरह व्यस्त हूं,' तिशु कहती हैं।
एक दिन सुतापा, शैलजा से मिलने गई ताकि वह स्टार के लिए एक एपिसोड का प्रस्ताव रख सके।
बेस्टसेलर। दोनों एक दूसरे के बारे में जानते थे लेकिन उनके बीच कभी कोई वास्तविक संबंध नहीं बना था।

पेशेवर या व्यक्तिगत रूप से। सुतापा के साथ तिग्मांशु भी थे।
जो उनके द्वारा लिखे गए एक एपिसोड का निर्देशन करना चाहते थे—जो हिट शो राजश्री पर आधारित एक व्यंग्यपूर्ण एपिसोड था।
Productions film Hum Saath Saath Hain (1999). Sutapa’s episode was called
Hum Saath Saath Hain Kya? Shailja remembers laughing a lot with her
अतिथि।
कुछ समय बाद सुतापा अपने पति को शैलजा से मिलवाने ले गई। इरफान के पास
वह पहले ही स्टार बेस्टसेलर के कुछ एपिसोड में अभिनय कर चुके थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया था।
शैलजा ने शो के निर्माता से आधिकारिक तौर पर मुलाकात की। बातचीत के दौरान शैलजा ने उन्हें आश्वस्त कर दिया।
इरफान ‘अलविदा’ नामक एपिसोड का निर्देशन करेंगे। सुतापा ने ही इस एपिसोड की पटकथा भी लिखी है।
यह एपिसोड मार्च 2000 में प्रसारित हुआ था और इरफान ने इसमें सादिया सिद्दीकी को कास्ट किया था।
वह उस युवा अभिनेत्री को, जिसे वह 'बनेगी अपनी बात' से जानते थे, फिल्म में मुख्य महिला किरदार के लिए चुना गया।
शो के लिए उन्होंने पुरुष मुख्य भूमिका के लिए हाल ही में एनएसडी से स्नातक हुए नवाजुद्दीन को चुना।
सिद्दीकी (1996 बैच)। नवाज़ इरफ़ान से सात साल छोटे थे।
वर्षों के संघर्ष के बाद, नवाज़ एक जाने-माने अभिनेता और स्टार भी बन गए।
हिंदी सिनेमा। एनएसडी के ये दोनों स्नातक कुछ फिल्मों में एक साथ अभिनय करेंगे।

जिसमें एक लघु फिल्म, द बाईपास (2003), और फिर पान सिंह तोमर (2012) शामिल हैं।
न्यूयॉर्क (2009) और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफल फिल्म द लंचबॉक्स (2013)।

एक कहानी के जादू का अनुभव करना

1990 के दशक के उत्तरार्ध में, आसिफ कपाडिया, जो एक गुजराती मुस्लिम परिवार के सबसे छोटे बेटे थे, का जन्म हुआ।
लंदन में एक अप्रवासी परिवार से ताल्लुक रखने वाला छात्र रॉयल कॉलेज में मास्टर्स की पढ़ाई कर रहा था।
जब वे भारत यात्रा पर गए थे तब कला के क्षेत्र में काम कर रहे थे। वे अपने प्रोजेक्ट के लिए सहयोगियों की तलाश कर रहे थे।
एक छात्र फिल्म के दौरान, उन्हें पुणे में एफटीआईआई में दाखिला मिल गया। वहां उनकी मुलाकात एफटीआईआई के ही एक छात्र अमित कुमार से हुई। दोनों की खूब जमी और उन्होंने हर प्रोजेक्ट पर साथ काम करना शुरू कर दिया।
अन्य की फिल्में—आसिफ की छात्र फिल्म द शीप थीफ (1997), उनकी पहली फीचर फिल्म
द वॉरियर (2001) और अमित की पहली लघु फिल्म, द बाईपास (2003)।
भारत में आसिफ जिस एकमात्र कास्टिंग व्यक्ति को जानता था, वह तिग्मांशु धूलिया था, जो
बैंडिट क्वीन (1994) के लिए कास्टिंग डायरेक्टर का क्रेडिट उन्हें मिला था। हालाँकि तिशू

बैंडिट क्वीन में वह सहायक निर्देशक की भूमिका में थे, उन्होंने कुछ कामों में मदद की थी।
कास्टिंग प्रक्रिया के दौरान, उन्होंने निर्देशक शेखर कपूर को उन्हें यह भूमिका देने के लिए मना लिया।
कास्टिंग डायरेक्टर का क्रेडिट। उन्हें उम्मीद थी कि इससे उन्हें विदेशी पहचान मिलेगी।
ऐसी प्रोडक्शन कंपनियाँ जो भारत में फिल्में बनाना चाहती थीं। और ऐसा हुआ भी।
जब आसिफ कपाडिया ने राजस्थान में फिल्म 'द वॉरियर' बनाने का फैसला किया और
हिमाचल प्रदेश।
आसिफ ने टिम मिलर के साथ मिलकर फिल्म की पटकथा लिखी, जो उनके प्रोफेसर थे।
रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट। दोनों ने एक समुराई के बारे में एक जापानी लोक कथा ली और
उसका छोटा बेटा अपने पिता की जान बचाने के लिए झूठ बोलता है। समुराई ने फैसला किया है कि...
हिंसा से दूर रहने के कारण, उसके पूर्व सहकर्मी उसका पीछा कर रहे हैं। लेकिन आसिफ
और टिम ने फिल्म की कहानी भारत के प्राचीन काल में सेट करने का फैसला किया। भव्य
रोमन ओसिन द्वारा छायांकन (प्राइड एंड प्रेजुडिस, 2005 और लैबिरिंथ ऑफ)
लाइज़, 2014), और रेगिस्तान और पहाड़ों के विशाल व्यापक शॉट्स, 87-एक मिनट लंबी फिल्म 'द वॉरियर' एक शांत लेकिन बेहद दिलचस्प और मनोरंजक फिल्म है।
इसमें डारियो मारियानेली (2007 में आई फिल्म 'एटोनमेंट' के लिए ऑस्कर विजेता) का एक भावपूर्ण संगीत है।

और मुख्य भूमिका में इरफान खान का शानदार प्रदर्शन—लाफकाडिया, योद्धा। इरफान को इस तरह का अवसर पाने के लिए एक दशक से अधिक समय से इंतजार था।
यह।
फिल्म के प्रमोशन के दौरान आसिफ ने अपने मुख्य अभिनेता के बारे में कहा, 'इरफान में एक
उनकी दमदार स्क्रीन प्रेजेंस थी और उनके किरदार के डायलॉग बहुत कम थे। मुझे लगा
कि वह बिना बोले अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता था!’22
मैंने 2005 में आसिफ कपाडिया से बात की थी जब 'द वॉरियर' फिल्म अमेरिका में रिलीज हुई थी।
उन्होंने इरफान के अभिनय से मोहभंग होने के दौर को याद किया। 'एक तरह से मुझे खुशी है'
मैंने उनका टेलीविजन का काम नहीं देखा, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो मेरे मन में पूर्वाग्रह पैदा हो जाता।
आसिफ ने कहा, 'क्योंकि उन्हें एक ही तरह के किरदारों में बांधा जा रहा था। जब मैं उनसे मिला तो वह...
वह बेहद प्यारा लड़का है, उसकी मौजूदगी, उसकी आंखें और उसका व्यवहार सब कुछ लाजवाब है।
वह स्वयं…'
लेकिन आसिफ कपाडिया को मनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। तिग्मांशु के अनुसार
धुलिया और इरफान ने तीन-चार ऑडिशन दिए। शुरुआत में आसिफ को चुना नहीं गया था।
यह बात स्वीकार्य थी, लेकिन तिशु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इरफ़ान ही उनकी भूमिका के लिए एकमात्र संभावित अभिनेता थे।
उस आयु वर्ग के लोग जो यह भूमिका निभा सकते थे। 'एक कास्टिंग डायरेक्टर के तौर पर मैंने उन्हें उनसे मिलवाया।'

वह कहते हैं, 'हर संभावित अभिनेता ने ऑडिशन दिया। यहां तक कि (दिवंगत) निर्मल पांडे ने भी ऑडिशन दिया। आखिरकार आसिफ मान गए।'
शुरुआत में इरफान भी फिल्म को लेकर थोड़ा अनिश्चित थे, जब तक कि आसिफ ने उन्हें एक कहानी नहीं सुनाई।
यह दृश्य उसके लिए नया था, और उसकी जिज्ञासा बढ़ गई। तब से लेकर अंत तक जब तक वह आखिरकार
कलाकारों के बारे में वह लगातार तिशु और अमित कुमार को परेशान करता रहता था, उनसे लगातार सवाल पूछता रहता था।
अगर उसे वह भूमिका मिलने वाली थी।
इरफ़ान ने बाद में कहा कि जिन चीजों ने उन्हें परेशान किया उनमें से एक यह थी कि
टेलीविजन पर उनका काम कुछ घंटों तक शूटिंग करना और फिर आगे बढ़ जाना था।
द वॉरियर पर काम करने की सबसे अच्छी बात यह थी कि वह उस किरदार को पूरी तरह से जी सकता था।
लंबी अवधि तक। उन्होंने कहा, 'मैंने ढाई महीने तक शूटिंग की।' INKtalk सत्र में।23 'यह पहली बार था जब मैंने किसी जादू का अनुभव किया।
कहानी—एक कहानी एक अभिनेता पर क्या प्रभाव डाल सकती है, और जब आप अभिनय कर रहे होते हैं तो यह आपको कैसे प्रभावित करने लगती है लगातार शूटिंग करना...या जब आप लगातार उससे निपट रहे हों
चरित्र... और यह आपके अनुभव का हिस्सा बन जाता है। यह आपके लिए वास्तविक बन जाता है।
आप।'
कम संवादों के साथ, द वॉरियर में मौन के खूबसूरत क्षण हैं।
इनमें से अधिकांश दृश्यों में डारियो मारियानेली का संगीत गूंजता है, कभी-कभी
भव्य ओपेरा संगीत में डूब जाना, एक ऐसा अनुभव जो किसी को मिलेगा

मौरिस जार्रे के संगीत के साथ लॉरेंस ऑफ अरेबिया देखने से।
फिल्म की शुरुआत रेगिस्तान में एक पेड़ और एक अकेले योद्धा के लंबे शॉट से होती है।
धीमी गति में मार्शल आर्ट का अभ्यास। दमदार शुरुआती शॉट माहौल बना देता है।
फिल्म के बाकी हिस्से के लिए माहौल। तब तक इरफान कुछ फिल्मी काम कर चुके थे और
बहुत सारा टेलीविजन। लेकिन यह पहली बार होगा कि कोई फिल्म निर्माता इसका उपयोग करेगा।
इरफ़ान की गहरी, रहस्यमयी, कुछ उदास दिखने वाली आँखें। इसके तुरंत बाद
क्रेडिट्स चलने लगते हैं, स्क्रीन इरफान की तीव्र झुकी हुई आंखों से भर जाती है, जैसे ही वह
वह अपने बेटे को मार्शल आर्ट का अभ्यास करते हुए देखता है। और कुछ देर के लिए हमें सिर्फ उसकी आंखें ही दिखाई देती हैं।
उसका पूरा चेहरा नहीं।
ऐसे कई क्षण आते हैं, जब कैमरा लाफकाडिया पर ही टिका रहता है।
लंबे बालों, दाढ़ी और थके-हारे चेहरे वाले उस आदमी को प्यार से निहारते हुए,
अपने किए गए पापों के दर्द को दर्शाते हुए, और अब भागने की कोशिश कर रहा है।
उसे उम्मीद है कि उसके अतीत के भूत उसका पीछा नहीं करेंगे।
द वॉरियर एक छोटी सी उत्कृष्ट कृति है। इसने दो बाफ्टा पुरस्कार जीते (सर्वश्रेष्ठ के लिए)।
ब्रिटिश फिल्म और सबसे होनहार नवोदित फिल्म निर्माता)। फिल्म की टैगलाइन थी ‘एंथनी मिंगेला प्रस्तुत करते हैं…’ दिवंगत ब्रिटिश निर्देशक को यह बहुत पसंद था।

उन्होंने फिल्म देखी और इसे अपना नाम देने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि इससे फिल्म के थिएटर में सफल होने में मदद मिलेगी।
एंथनी ने हार्वे और बॉब को रिहा करने के लिए भी राजी किया था। मिरामैक्स के वेनस्टीन इस फिल्म को मूल हिंदी संस्करण के साथ अमेरिका में रिलीज करेंगे।
ट्रैक। वेनस्टीन बंधुओं का अमेरिकी इंडी और विदेशी भाषा की फिल्मों को बॉक्स ऑफिस और ऑस्कर प्रक्रिया के माध्यम से सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने का एक सफल रिकॉर्ड रहा है।
शेक्सपियर इन लव और इतालवी त्रासदी-हास्य फिल्म लाइफ इज जैसी फिल्में
सुंदर।
संयोगवश, उन्हें एक हिंदी भाषा की फिल्म (द वॉरियर) मिल गई। अमेरिकी बाजार में उनकी पकड़ मजबूत नहीं थी और वे इसे आगे बढ़ाने के बारे में पूरी तरह से अनजान लग रहे थे।
बात यहाँ तक पहुँच गई कि उन्होंने इसे अंग्रेजी में डब करने पर भी विचार किया। 'मैंने कहा कि इसे रिलीज़ किया जाना चाहिए।'
हिंदी में और उसके उचित उच्चारण के साथ, क्योंकि यह एक दंतकथा है और दंतकथा कारगर है।
क्योंकि आप एक जादुई कालीन पर सवार होकर एक विदेशी परिदृश्य की यात्रा कर रहे हैं—एक बहुत ही
'विशेष परिदृश्य,' दिवंगत एंथोनी मिंगेला ने मुझे 2005 में बताया था (उनका निधन हो गया)।
तीन साल बाद) अमेरिका में फिल्म की रिलीज के समय। 'अंग्रेजी सुनना' उस परिदृश्य में आवाज़ें, मेरे विचार से, सबसे उपयुक्त तरीका नहीं होंगी।
एक खूबसूरत और अनोखी फिल्म का अनुभव करें।
वेनस्टीन बंधुओं ने फिल्म को अमेरिका में सीमित संख्या में आर्ट सिनेमा के तहत रिलीज किया।

चुनिंदा शहरों में हाउस थिएटर। लेकिन उन्होंने वास्तव में अपनी ताकत का कोई इस्तेमाल नहीं किया।
इसे आगे बढ़ाने की शक्ति। द वॉरियर अमेरिकी बाजार में बुरी तरह फ्लॉप हो गई। फिल्म की लागत
4.5 मिलियन डॉलर, लेकिन इसने अमेरिका में केवल लगभग 50,000 डॉलर और अन्य जगहों पर ही कमाई की।
विदेशी बाजारों में 286,000 डॉलर।
फिल्म 'द वॉरियर' की समीक्षाएँ बहुत सकारात्मक थीं। इरफान खान को एक कुछ आलोचकों ने सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल में लिखते हुए मिक लासेल ने कहा,
अभिनेता खान एक कठोर व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं जिनकी आंखें उदास हैं। वास्तव में, उनकी आंखें कुछ इस तरह की हैं।
टेरेंस हॉवर्ड की फिल्म '24 हसल एंड फ्लो' में, एक संभावित सभ्य व्यक्ति की झलक दिखाई गई है।
कौन जानता है कि वह एक अनैतिक जीवन जी रहा है।’ बोस्टन ग्लोब की जेनिस पेज
उन्होंने लिखा, 'इस कास्ट में कुछ गिने-चुने पेशेवर अभिनेताओं में से एक होने के नाते, खान शायद
उन्हें पहले से ही एक संक्षिप्त पटकथा के बोझ का अंदाजा था। उनका शांत प्रदर्शन
फिल्म का मुख्य आकर्षण वही है, और उसकी सूजी हुई, दुनिया से थकी हुई आंखें हर फ्रेम में छाई रहती हैं, यहां तक कि
कैमरे का फोकस आसमान की ओर चला जाता है ताकि एंड क्रेडिट्स चलने लगें।
लेकिन इरफान जिस बड़े मौके की उम्मीद कर रहे थे, दुर्भाग्य से वह उनके लिए चमत्कार साबित नहीं हुआ।
दरअसल, 'द वॉरियर' को भारत में सिनेमाघरों में रिलीज़ भी नहीं मिली।
लेकिन इरफ़ान

वह उस अनुभव को आज भी महत्व देता है। 'द वॉरियर' के बाद उसके लिए कुछ नए अवसर जरूर खुले।
उन्होंने कहा, 'इस फिल्म ने मुझे एक रास्ता दिखाया और मैंने बस उसी का अनुसरण किया।'
INKtalks साक्षात्कार। ‘उसके बाद मेरी जिंदगी बदल गई।’
और इरफ़ान खुशकिस्मत थे कि उनके आसपास की दुनिया—भारतीय फिल्म जगत — ने उन्हें अपने अनुकूल माहौल प्रदान किया।
उद्योग जगत में भी आखिरकार बदलाव आ रहा था।

14. दिव्या उन्नी, 'मैं अपने लिए कभी भी पर्याप्त अच्छी नहीं हूं', ओपन, 6 दिसंबर 2017,
https://openthemagazine.com/cinema/i-am-never-good-enough-for-myself/
15. 'नसीरुद्दीन शाह और इरफान खान की बातचीत', इंडिया टुडे, 10 दिसंबर 2016,
https://www.youtube.com/watch?v=XvjLyUU6FG0
16‘एआईबी: इरफ़ान अभिनीत हर बॉलीवुड पार्टी सॉन्ग’, ऑल इंडिया बकचोद, 2 अगस्त 2015,
https://www.youtube.com/watch?v=r3nhttUMhrI&t=192s
17. 'नसीरुद्दीन शाह और इरफान खान की बातचीत', इंडिया टुडे, 10 दिसंबर 2016,
https://www.youtube.com/watch?v=XvjLyUU6FG0
18 ‘बॉलीवुड स्टार इरफान खान अपने करियर पर चर्चा करते हैं’, ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट, 11 अगस्त 2016, https://www.youtube.com/watch? v=z7anr2OKnAQ
19‘इरफान खान: कहानी का जादू’, INKtalks, 23 अक्टूबर 2015, https://www.youtube.com/watch?
v=NX7eVqZlAd0

20 वही।
21‘90 के दशक के प्राइम टाइम टीवी पर पुनर्विचार’, वर्व, 7 मार्च 2019, http://www.vervemagazine.in/arts-and-
संस्कृति/90 के दशक के प्राइम टाइम टीवी को पुनः देखना 22‘क्या योद्धा जीतेगा?’, द हिंदू, 6 दिसंबर 2002, https://www.thehindu.com/thehindu/fr/2002/12/06/stories/2002120600950300.htm
23‘इरफान खान: कहानी का जादू’, INKtalks, 23 अक्टूबर 2015, https://www.youtube.com/watch?
v=NX7eVqZlAd0
24 माइक लासेल, 'एक अच्छा पिता अपने बेटे को अपने काम की भयावहता से बचाता है', सैन फ्रांसिस्को
क्रॉनिकल, 29 जुलाई 2005, https://www.sfgate.com/movies/article/A-good-dad-shields-his-son-from-the-
horror-of-his-2619796.php
25 जेनिस पेज, ‘“योद्धा” सही लड़ाई लड़ता है’, द बोस्टन ग्लोब, 29 जुलाई 2005,
http://archive.boston.com/ae/movies/articles/2005/07/29/the_warrior_fights_the_good_fight/
3

द मेकिंग ऑफ द साइलेंट स्टार

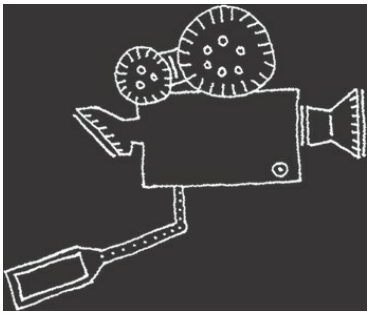

मैं अभिनय करते समय सिनेमा से संदर्भ नहीं लेता। मैं अपने अभिनय के दौरान सिनेमा से प्रेरणा लेता हूँ।
मुझे कैसा महसूस होता है.26

नई सदी की शुरुआत तक, हिंदी सिनेमा एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। रोमांस, मेलोड्रामा, कॉमेडी, खलनायक और सस्पेंस वाली पारंपरिक फॉर्मूला फिल्मों को धीरे-धीरे नकारा जा रहा था। ऋतिक
Roshan’s first film, Kaho Naa Pyaar Hai (2000), was a huge hit, but his बाद की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं। यश चोपड़ा अभी भी मौजूद थे।
करण जौहर के लोकप्रिय बॉलीवुड सिनेमा के ब्रांड के अलावा, इन सबके बीच, एक
फिल्म निर्माताओं, लेखकों की नई पीढ़ी, साथ ही प्रतिभाशाली लोगों का एक बड़ा समूह और
प्रशिक्षित अभिनेता उभरने लगे थे। बैंडिट जैसी फिल्मों ने उनकी मदद की।
क्वीन (1994) और सत्या (1998) जैसी फिल्में बनीं। ये क्रांतिकारी फिल्में थीं।
जिसने नए स्वतंत्र भारतीय सिनेमा के लिए मंच तैयार किया।
इरफ़ान ने अक्सर कहा है कि जब उन्होंने एनएसडी से स्नातक किया, तो समानांतर
या 1970 और 1980 के दशक का न्यू वेव सिनेमा आंदोलन कमोबेश ऐसा ही था।
कुछ फिल्मों को छोड़कर, जिनमें उन्हें भूमिकाएँ निभाने का मौका मिला — जैसे दृष्टि और एक—उनका निधन हो चुका है।

डॉक्टर की मौत (दोनों 1990 में बनी थीं)। लेकिन एक दशक बाद, नई इंडी फिल्म के रूप में
जैसे-जैसे सिनेमा का उदय होने लगा, इरफान खुद को सही जगह पर पाया। यहाँ तक कि
अंततः उनके लिए सही समय आ गया था।
उस समय आसिफ कपाडिया फिल्म 'द वॉरियर' (2001) पर काम कर रहे थे।
तिग्मांशु धूलिया अपनी पहली फिल्म 'हासिल' की पटकथा पर भी काम कर रहे थे।
(2003), जो इलाहाबाद के एक कॉलेज में हिंसक छात्र राजनीति की दुनिया पर आधारित है।
तिशु इलाहाबाद से हैं और उन्होंने वहीं स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की।
एनएसडी में शामिल होने के लिए दिल्ली चले गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।
जब उन्होंने वामपंथी प्रगतिशील छात्र संघ में शामिल हुए तो उन्हें छात्र राजनीति का अनुभव प्राप्त हुआ।
संगठन।
हासिल एक युवा कॉलेज छात्र अनिरुद्ध शर्मा की कहानी है, जो...
वह छात्र नेता रणविजय सिंह की ओर आकर्षित होती है, जिसकी आपराधिक प्रवृत्ति प्रबल है।
एक सभ्य और ईमानदार छात्र अनिरुद्ध की भूमिका के लिए, तिशु ने जिम्मी को चुना।
शेरगिल, जिन्होंने फिल्मों में सहायक भूमिकाओं में पहले ही अपनी पहचान बना ली थी,
माचिस (1996) और मोहब्बतें (2000)। जिमी इनके लिए प्रेरणास्रोत बनेंगे।
तिशु ने फिल्म निर्माता द्वारा निर्देशित चार और फिल्मों में अभिनय किया। रणविजय के नकारात्मक किरदार के लिए, जो एक चालाक लेकिन हिंसक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति है, उन्होंने अपने दोस्त को चुना।

इरफान खान।
इरफ़ान को अपने करियर की शुरुआत में कई नकारात्मक भूमिकाएँ मिलीं।
करियर। लेकिन इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक तो उन्होंने इसके लिए बहुत लंबा इंतजार किया था।
फिल्मों में काम पाने के लिए वह लगभग हर अच्छी भूमिका स्वीकार करने को तैयार था।
उसके रास्ते में आया। तिग्मांशु धूलिया की एक और टिप्पणी है: 'ऐसा नहीं था कि वह
मैं एक हीरो की मुख्य भूमिका निभाना चाहता था और स्क्रीन पर गाने और रोमांस करना चाहता था।
मुझे लगता है कि हर किसी के भीतर यह इच्छा होती है, लेकिन यह उनकी प्रेरणा नहीं थी—
डांसिंग हीरो बनो।
हालांकि, हासिल को वित्तपोषण मिलने में थोड़ा समय लगा। काफी समय तक तिशु ने भी ऐसा ही किया।
उनके पास कोई निर्माता नहीं था। उनकी पटकथा का अंत कुंभ में गोलीबारी के दृश्य से हुआ।
मेला। और जब टीम पैसों की तलाश में जी-तोड़ मेहनत कर रही थी, तब कुंभ मेला शुरू हो गया। अब सवाल यह था कि क्या फिनाले की शूटिंग उसी समय कर ली जाए या फिर किसी और दिन का इंतजार किया जाए।
साल। तो, तिशु, इरफान, जिमी और फिल्म टीम के कुछ अन्य प्रमुख सदस्य।
उन्होंने अपने पैसे जमा किए। वे शूटिंग स्थल पर गए और अंतिम दृश्य की शूटिंग की।
क्रम। उन्हें अभी भी यह नहीं पता था कि बाकी की फंडिंग कब आएगी।
के माध्यम से।
हासिल को और भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। फिल्म को लेकर सभी लोग तनाव में थे।
कार्यक्रम लगातार बदलता रहा। जब अंततः तिशु इलाहाबाद पहुंचा, तो वह

अपनी टीम को साथ लाने को लेकर उत्साहित, यह सोचकर कि वह अपने दम पर शूटिंग करने जा रहा है
शहर। 'लेकिन जल्द ही मैं मुसीबत में पड़ गया,' वह कहते हैं। 'मुझे विश्वविद्यालय में शूटिंग करनी पड़ी।
और लोग कहने लगे कि मैं इलाहाबाद को गलत तरीके से पेश कर रहा हूँ।
इसलिए मैंने सहमति दे दी।
मैं शहर का नाम नहीं लूंगा। इलाहाबाद नाम नहीं।
फिल्म में इसका जिक्र किया गया है। यह वास्तव में हमारे लिए एक बड़ी समस्या बन गई थी।
इरफ़ान ने भी अपने दोस्त के पहले जन्मदिन पर अपना सर्वश्रेष्ठ देने का पक्का इरादा कर लिया था।
फिल्म। तिशु उसे इलाहाबाद ले गया और फिर उसे वहीं छोड़ दिया। 'उसने शुरुआत की।
मैं अपने दोस्तों के साथ घूम रहा था, और 10 दिनों में ही उसने उनका लहजा, उनका शरीर, सब कुछ सीख लिया।
'भाषा,' तिशु कहते हैं। 'हिंदी फिल्मों में लोग अक्सर कहते हैं कि उनके पास है
मैंने किसी भूमिका के लिए बहुत शोध या तैयारी की। लेकिन मुझे पता है कि कोई भी कुछ नहीं करता।
इरफान ने फिल्म में लहजे और उच्चारण को सही ढंग से निभाने के लिए जी- जान से मेहनत की।
हासिल की तरह।
हासिल फिल्म की शुरुआत हिंदी फिल्म के बेहतरीन एक्शन दृश्यों में से एक से होती है।
फिल्म के क्रेडिट्स चलने लगते हैं, इरफान को कॉलेज के गलियारे में प्रतिद्वंद्वी गिरोह द्वारा पीछा किया जाता है।
सदस्यों। शुरुआती दृश्य फिल्म के बाकी हिस्से का माहौल तैयार कर देता है। लेकिन

हिंसा के बावजूद, फिल्म में कुछ बेहद मार्मिक दृश्य हैं।
एक विशेष दृश्य और उसकी पृष्ठभूमि का उल्लेख करना आवश्यक है।
फिल्म के शुरुआती हिस्से में जब जिमी के अनिरुद्ध, इरफान के रणविजय को बताते हैं कि उन्हें एक महिला से प्यार हो गया है, तो रणविजय पूछते हैं, 'क्या तुम्हें सेक्स से परेशानी हो रही है?'
तुमने उसके साथ यौन संबंध बनाए?’ अनिरुद्ध, पहले तो शर्माते हुए, जवाब देता है, ‘मैंने उससे दिल से’
pyar karta hoon. Koi buri nazar se nahi dekhta hoon (I love her from my
मेरा दिल। मैं उसे बुरी नज़र से नहीं देखता।
इसके बाद तिग्मांशु इरफान से एक संवाद में सुधार करवाने में कामयाब रहे।
अनिरुद्ध की बात का जवाब देते हुए रणविजय कहते हैं, 'वही तो यार, नजर का ही तो
khel hai sab, saala dil to hamara bhi varna saaf hai. Bhagwaan ne hamein
aisee ankhein de dee hain, kya karein (That is the thing, my friend. It is the
आँखों और इरादों का खेल; वरना मेरा दिल भी साफ है। अब क्या करूँ? (भगवान ने मुझे ऐसी आंखें दी हैं)?’ फिर वह अपने हाथ से अपनी दाहिनी आंख पर मारता है।
‘इरफान की आंखों के नीचे ये काले घेरे हैं,’ तिशु कहती हैं। ‘ये स्वाभाविक हैं, क्योंकि
उन्हें ये जन्म से ही हैं। उन दिनों ये बहुत प्रमुख हुआ करते थे, इसलिए
मैंने सोचा कि मुझे इनका इस्तेमाल संवाद में करना चाहिए।
यह दो पुरुषों के बीच एक नाजुक दृश्य है—एक, गुरु (रणविजय), और

दूसरा, शिष्य (अनिरुद्ध)। वे एक दीवार पर बैठे हैं, उनके साथ खूबसूरत दिवंगत महिला भी हैं।
उन पर दोपहर की रोशनी पड़ रही है। और गंगा उनके पीछे बह रही है।
यह मानना मुश्किल है कि गुरु रणविजय अंततः इतना दुष्ट बन जाएगा।
दृश्य बहुत अच्छा फिल्माया गया, लेकिन इरफान शुरू में अच्छी स्थिति में नहीं थे।
शूटिंग के दौरान उनका मूड। आज उनकी छुट्टी थी। तिशु किसी और सीन की शूटिंग कर रहे थे।
और अचानक उसकी नज़र उस जगह पर पड़ी जहाँ इरफ़ान और जिम्मी बैठे हुए थे।
और बातचीत कर रहे थे। निर्देशक को लगा कि यह दृश्य के लिए एक आदर्श स्थान होगा।
उन्होंने अपने एक सहायक निर्देशक को इरफान को तुरंत फोन करने के लिए कहा। इरफान
वह अपने होटल में आराम कर रहा था। वह सेट पर आया और स्वाभाविक रूप से थोड़ा गुस्से में था।
‘Yeh kya matlab hai, yaar?’ he said to Tishu. ‘Aap kabhi bhi bula lete ho.
Aise thode na hoga yeh sab (इसका क्या मतलब है? तुम मुझे जब चाहो तब बुलाओगे)
आप ऐसा चाहते हैं। चीजें इस तरह नहीं होंगी।
तिशू ने माफ़ी मांगी. 'मैंने कहा, 'इरफान, यार, मैं भाग भाग कर निर्देशन कर रहा हूं
kar sakta hoon, tu bhaag bhaag kar acting nahi kar sakta (Look, Irrfan, I can
आप इधर-उधर भागते हैं और फिल्म का निर्देशन करते हैं, तो क्या आप इधर-उधर भागते हुए अभिनय भी नहीं कर सकते?

पेशेवर होने के नाते, इरफान तुरंत दृश्य करने के लिए बैठ गए।
तिग्मांशु ने
क्योंकि दोपहर ढल चुकी थी और रोशनी कम थी, इसलिए उस पर थोड़ा दबाव भी पड़ा।
बदलने वाला है।
हासिल को समीक्षकों द्वारा खूब सराहा गया और इरफान के अभिनय की भी प्रशंसा हुई।
पुरस्कारों के सीज़न के दौरान। उन्होंने खलनायक की भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता।
फिल्मफेयर और स्क्रीन वीकली ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए सम्मानित किया।
नकारात्मक भूमिका श्रेणी। इरफ़ान के अभिनय के बारे में Rediff.com की समीक्षा।
उन्होंने लिखा, 'महत्वाकांक्षी, उद्दंड और निडर गुंडे के रूप में इरफान खान का अभिनय अद्भुत है।'
वह बेहद डरावना है और आपको सजग कर देता है, आप सोचने लगते हैं कि वह आगे क्या करेगा।
आखिरकार इरफान खान आ गए थे।

मकबूल बनने के लिए पैदा हुआ

बच्चों की फिल्म मकड़ी (2002) की औसत सफलता के बाद,
शबाना आज़मी एक चुड़ैल का किरदार निभा रही हैं, जबकि विशाल भारद्वाज एक गैंगस्टर बनाना चाहते थे।

फिल्म की कहानी बॉम्बे में सेट है। वह कहानी की तलाश में थे, और संयोगवश, एक
देहरादून से दिल्ली तक अपने धर्मपुत्र के साथ ट्रेन यात्रा के दौरान, विशाल ने बच्चे से पूछा कि क्या वह
उसके पास पढ़ने के लिए कुछ था। बच्चे ने विशाल को शेक्सपियर की कहानियाँ दीं।
चार्ल्स और मैरी लैम्ब। इस पुस्तक में 20 कहानियाँ थीं, जिन्हें चार्ल्स और मैरी लैम्ब की कहानियों से रूपांतरित किया गया था। विलियम शेक्सपियर के नाटक। विशाल ने इनमें से कोई भी नाटक न तो पढ़ा था और न ही सुना था।
शेक्सपियर के नाटक।
विशाल ने सीमा चिश्ती को बताया, 'मैंने जो पहली कहानी पढ़ी थी, वह मैकबेथ थी।'
Express Adda in Delhi.28 ‘And it was so good. Mere hosh udd gaye. Ki yeh
किस तरह की कहानी है (मैंने अपना अस्तित्व खो दिया। यह किस तरह की कहानी थी?)
यह)?’ तब तक विशाल को साहित्य उबाऊ लगता था। दरअसल, जबकि
मकबूल का प्रचार करते हुए उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें अंग्रेजी का ज्ञान नहीं है।
साहित्य बिल्कुल भी नहीं।
मैकबेथ की कहानी ने विशाल को इतना आकर्षित किया कि उसने नाटक खरीदा और उसे पढ़ा।
फिर उन्होंने अपने मकड़ी के सह-लेखक अब्बास टायरवाला से पटकथा लिखने को कहा।
मैकबेथ को मकबूल में रूपांतरित करना। शेक्सपियर का स्कॉटिश ग्रामीण इलाका

फिर बॉम्बे के भीतरी शहर में प्रवेश किया, जहाँ से डॉन कोरलेओन जैसी शख्सियत निकली।
underworld king Jahangir Khan, aka Abbaji (Pankaj Kapur), rules his empire
शहर के हिंदी फिल्म उद्योग में अवैध व्यवसायों और हितों के बारे में। वह अच्छी तरह से जाने जाते हैं-
उसकी सेवा में उसका भरोसेमंद लेफ्टिनेंट मकबूल (इरफान खान) है, जो एक अपने बॉस की रखैल निम्मी (तबू द्वारा अभिनीत लेडी) के साथ अफेयर मैकबेथ)। विशाल ने बाद में कहा कि वह हमेशा से प्यार से मोहित थे। त्रिकोण और उन कथानकों से उत्पन्न होने वाली जटिलताएं, और इसलिए वह उन्होंने फैसला किया कि उनकी पत्नी लेडी मैकबेथ और मैकबेथ का विवाह नहीं होगा।
प्रारंभ में, विशाल भारद्वाज ने के के मेनन को मकबूल की भूमिका की पेशकश की,
लेकिन उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ एक युद्ध ड्रामा फिल्म - दीवार - के लिए इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।
आइए अपने नायकों को घर ले चलें (2004)। वह फिल्म गुम हो गई, और निश्चित रूप से के के को अपने फैसले पर पछतावा हुआ होगा। किसे कास्ट करना है, यह स्पष्ट नहीं था।
मकबूल, विशाल ने उस रोल के लिए कमल हासन से बात भी की थी. नसीरुद्दीन शाह को पहले से ही फिल्म में एक किरदार निभाने के लिए चुना गया था। इसलिए
विशाल ने नसीर को बताया कि उसने मकबूल की भूमिका के लिए कमल से बात की थी।
नसीर बेहद गुस्से में था। उसने कहा, “देखो, अगर तुम उससे बात कर रहे हो, तो मैं जा रहा हूँ।”
कहता है।

काफी सोच-विचार के बाद विशाल ने इरफान खान के साथ जोखिम उठाने का फैसला किया।
उन्हें हासिल में अभिनय करते हुए देखने के बाद, इरफान सबसे कम उम्र के एनएसडी बनेंगे।
कलाकारों में स्नातक, अन्य पूर्व छात्र- नसीर, ओम पुरी, पंकज कपूर शामिल हैं
और पीयूष मिश्रा। दरअसल, फिल्म की शुरुआत में ही एक दृश्य है।
जहां ये सभी कलाकार अब्बाजी के लिविंग रूम में बैठे हैं। इरफान उनमें से एक थे।
सबसे छोटा, लेकिन अब आखिरकार उसका समय आ गया था। वह सबके बीच में बैठा था।
वरिष्ठ अभिनेता एक अनुभवी कलाकार के आत्मविश्वास के साथ।
इरफान की कास्टिंग के बारे में नसीर कहते हैं, 'यह एक मास्टरस्ट्रोक था।' इससे पहले
शूटिंग शुरू हुई, नसीर को अब्बाजी का रोल ऑफर किया गया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि
उन्होंने इससे पहले भी ऐसे किरदार निभाए थे। और फिर विशाल ने यह विचार दिया।
नसीर और ओम को दो अनाड़ी पुलिसवालों के रूप में कास्ट करने का विचार हमेशा ही उल्लेखनीय होता है।
फिल्म के मुख्य पात्रों की कुंडली बनाना। दोनों निरीक्षक— पुरोहित और पंडित—कहानी की तीन महत्वपूर्ण चुड़ैलें बन जाती हैं।
मकबूल वफादारी, विश्वासघात और अपराधबोध जैसे विषयों पर आधारित एक जटिल फिल्म है।
इरफान चिंतित लग रहे थे, क्योंकि यह पहली बार था जब वह कोई प्रेम कहानी कर रहे थे।
और तब भी, यह रोमांस का वह पारंपरिक चित्रण नहीं था जैसा कोई उम्मीद करता है।

ज्यादातर हिंदी फिल्मों में देखने को मिलता है। विशाल द्वारा दो सप्ताह की कार्यशाला आयोजित करने से काफी मदद मिली।
‘हम सभी ने अपने-अपने हिस्से पढ़कर सुनाए,’ इरफान ने एक साक्षात्कार में कहा।29 ‘(इससे मदद मिली)’
सभी पात्रों के बीच एक बंधन विकसित होता है, और सहजता का स्तर दिखाई देता है।
स्क्रीन।’ उन्होंने आगे कहा कि तब्बू ने भी उनसे बातचीत की, जिससे निश्चित रूप से मदद मिली।
उसे अपनी झिझक दूर करने में मदद मिली।
इरफ़ान मकबूल को परिभाषित करने में बहुत विस्तार से जा सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा करना उचित नहीं समझा।
इससे दर्शक ऊब जाते। इसलिए उन्होंने एक तरीका विकसित किया। 'मैं कुछ व्यापक भावनाओं पर जोर दिया गया, जो आने वाले समय से संकेत लेते हुए कही गई हैं।
स्क्रिप्ट में आगे क्या होता है? उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत असुरक्षा की भावना शुरू होती है।
जैसे ही निम्मी उसे उकसाना शुरू करती है, मकबूल के चेहरे पर ये भाव दिखाई देने लगते हैं।
अपने गुरु अब्बाजी के खिलाफ। लेकिन निश्चित रूप से, मैं मैकबेथ की भूमिका नहीं निभाता।
इस तरह मंच पर।
इरफ़ान को इस भूमिका में देखकर कोई भी इस तथ्य पर आश्चर्य ही व्यक्त कर सकता है कि
इस आदमी को इतनी महत्वपूर्ण भूमिका पाने के लिए इतना लंबा इंतजार करना पड़ा। कुछ तो गड़बड़ है।
उनकी प्रस्तुति में ताजगी और सहजता झलकती है। लेकिन मुझे यह भी आश्चर्य होता है कि अगर इरफान कई वर्षों तक फिल्मों में अभिनय करते तो क्या वे इतने प्रभावशाली हो पाते? एक तरह से

अभिनेता की भूख, अब्बाजी की विरासत संभालने के लिए मकबूल की बेताबी के समानांतर है।
साम्राज्य का विस्तार करने और निम्मी को अपनी साथी के रूप में दुनिया से परिचित कराने के लिए इरफ़ान का जन्म हुआ था।
इस भूमिका को निभाएं।
फिल्म के लगभग हर दृश्य में इरफान का अभिनय शानदार है।
शुरुआत में, हम ओम पुरी के इंस्पेक्टर पंडित को यह भविष्यवाणी करते हुए देखते हैं कि छह महीने में
मकबूल अब्बाजी की जगह लेंगे। शुरुआत में रोमांच का क्षण आएगा, और फिर...
इरफ़ान के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। आख़िरकार, यही तो मकबूल की सच्ची महत्वाकांक्षा है। लेकिन
इरफ़ान, मकबूल को उस घोषणा पर ज़्यादा देर तक खुशी मनाने नहीं देता। उसी क्षण, इरफान के चेहरे पर भाव बदल जाते हैं और वह चिल्लाने लगता है।
इंस्पेक्टर ने उसकी जीभ काटने की धमकी दी।
फिल्म में ऐसे कई खास पल हैं—जब अब्बाजी
वह मकबूल का हाथ पकड़ता है और उसे चूमता है, उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं; या
जब मकबूल को इस बात का एहसास होता है तो उसके चेहरे पर ईर्ष्या और असुरक्षा के भाव दिखाई देते हैं।
एक दोपहर निम्मी अब्बाजी के साथ सो रही थी। और फिर मेरा अंतिम पड़ाव है।
Hindi cinema fanboy moment—the ‘Tu Mere Ru Ba Ru Hai’ qawwali वह दृश्य जिसमें तब्बू की निम्मी अपने मोहक अंदाज में नज़र आती है, जब वह चलती है...
मकबूल के साथ दरगाह। इस दौरान हमें दलेर की दिल को छू लेने वाली कव्वाली सुनाई देती है।

मेहंदी की आवाज़। गायिका का चयन विशाल के लिए एक शानदार उपलब्धि साबित हुआ।
भारद्वाज, जो हमेशा की तरह फिल्म के संगीतकार भी थे।
नसीरुद्दीन शाह इरफान के साथ कुछ खास दृश्यों को याद करते हैं।
मकबूल
काका (पियुष मिश्रा द्वारा निभाया गया बैंको का किरदार) के लिए जिम्मेदार है।
मृत्यु। जब काका का शव आंगन में लाया जाता है, तो उनका शरीर
नकाब उतर गया है, और मकबूल को लगता है कि उसकी आँखें खुली हैं। वह चौंक जाता है जैसे कि
उसने भूत देखा है। 'उसकी प्रतिक्रिया में, जिस तरह इरफान पीछे की ओर गिर पड़ा, मैं
नसीर याद करते हुए बताते हैं, ‘उसने उसे गिरने से रोकने की कोशिश की। और उसने कहा, “क्या, नसीर भाई? क्या?”
kar rahe ho (What, Naseer bhai? What are you doing)?” I said, “Tum gir rahe
वे (तुम गिर रहे थे)।" और उसने कहा, "नहीं, नहीं, मैं अभिनय कर रहा था।" और मैंने कहा, "तुम वाकई बहुत अच्छे हो।"
और फिर, अंत में, नसीर का इंस्पेक्टर पुरोहित जेल में है और
मकबूल उस पर बंदूक तान देता है। 'मुझे वह दृश्य अच्छी तरह याद है,' नसीर कहते हैं। '
यह याद रखना जरूरी है कि उस दृश्य में एक किरदार के रूप में उसका पलड़ा भारी था।
लेकिन उन्होंने एक बार भी घमंड नहीं दिखाया। अभिनेता अपनी जीत पर घमंड दिखाने से खुद को रोक नहीं पाते।
किसी दृश्य में ऊपरी हाथ होना। मैंने देखा कि इरफान ऐसा नहीं करते थे। यह आदमी न केवल

उन्हें अपने काम की अच्छी जानकारी है, लेकिन वे एक बहुत ही उदार अभिनेता भी हैं।'

इसका कम और ज्यादा

2000 के दशक की शुरुआत में, जब इरफान के संघर्ष के दिन जारी थे, उन्होंने एक फिल्म में अभिनय करने के लिए सहमति दी।
दो लघु फिल्में—एक, 48 मिनट की रोड स्टोरी—एक आदमी और एक के बारे में एक थ्रिलर
एक महिला भारत और पाकिस्तान की सीमा के करीब स्थित लद्दाख से यात्रा कर रही है।
भविष्य के ऑस्कर-नामांकित फिल्म निर्माता अश्विन कुमार (द लिटिल) द्वारा निर्देशित
टेररिस्ट (2004), रोड टू लद्दाख (2003) में इरफान खान और कोएल पुरी थे।
ड्रग्स, अपराध और सेक्स की एक कहानी में मुख्य भूमिका, और एक यात्रा के माध्यम से...
पहाड़। फिल्म इतनी कठिन परिस्थितियों में बनी थी कि एक
फिल्म 'द नियर अन-मेकिंग ऑफ रोड' के निर्माण पर आधारित वृत्तचित्र लद्दाख की यात्रा भी उतनी ही दिलचस्प है।
अश्विन कुमार की पहली मुलाकात इरफान से चेन्नई में हुई थी, जब वह एक सेल थ्री नामक एक टेलीविजन श्रृंखला के लिए सहायक निर्देशक। बाद में, अश्विन
लंदन फिल्म स्कूल में संक्षिप्त अध्ययन के दौरान उन्होंने फिल्म 'द वॉरियर' देखी।

रंगमंच। अश्विन ने इरफान को ध्यान में रखते हुए 'रोड टू लद्दाख' की पटकथा लिखी।
हासिल और मकबूल को अभी तक रिहा नहीं किया गया था। 'मैंने उसका आक्रामक ढंग से पीछा किया।'
अश्विन कहते हैं, 'उस समय मेरे पास पैसे नहीं थे, इसलिए मुझे उसे मनाने की ज़रूरत पड़ी।'
वह यह काम मुफ्त में करेगा। मुझे नहीं लगता कि उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि वह कुछ भी कर सके।
'मुफ्त में।' फिल्म टीम ने इरफान को शूटिंग के लिए आने के खर्च का भुगतान जरूर किया था।
लेकिन डॉक्यूमेंट्री में उनका एक दृश्य है जिसमें वे शिकायत करते हुए दिखाई देते हैं।
खाने की गुणवत्ता। जब इरफान ने स्क्रिप्ट पढ़ी, तो उन्हें इसमें दिलचस्पी थी।
इस प्रोजेक्ट में, अश्विन ने उन्हें रिहर्सल के लिए दिल्ली जाने के लिए भी मना लिया। इरफान का
शुरुआती प्रतिक्रिया यह थी कि उसने रिहर्सल नहीं की थी, इसलिए अश्विन ने उससे कहा कि ऐसा होगा
यह एक थिएटर कार्यशाला की तरह होगा। और उन्होंने थिएटर पर आधारित कई खेलों की योजना बनाई।
इरफ़ान और कोयल के साथ।
जब इरफान कार्यशाला के लिए दिल्ली में थे, तो एक रात वह बाहर घूमने गए।
वह अपने NSD दोस्तों के साथ पार्टी कर रहा था, तभी उसका स्कूटर पलट गया। उसकी बांह टूट गई।
लेकिन अश्विन ने स्थिति का भरपूर फायदा उठाते हुए इरफान का प्लास्टर अपने चेहरे पर लगा लिया।

कहानी में एक अहम मोड़ है। इरफान के किरदार शफीक को अपने साथ विस्फोटक ले जाते हुए दिखाया गया है।
कलाकार। और फिल्म के अंत में, जब शफीक का प्लास्टर हटाया जाता है, तब...
यह एक वास्तविक स्थिति थी। 'हमने शूटिंग का समय इस तरह तय किया था कि कलाकारों को वास्तव में शूटिंग करनी पड़े।'
'हटा दिया जाए,' अश्विन कहते हैं।
जब इरफान लद्दाख पहुंचे, तो उन्होंने ऊंचाई की भीषण कठिनाई का अनुभव किया।
सिरदर्द से लेकर चक्कर आने तक, तरह-तरह की बीमारियाँ। फिल्म क्रू के लिए रहने की परिस्थितियाँ ठीक नहीं थीं। कलाकार और क्रू सदस्य टेंट में स्लीपिंग बैग में सोते थे।
शूटिंग के दौरान लगातार भारी बारिश होती रही, और काम के दिन बहुत लंबे थे।
एक के बाद एक मुसीबतें आती रहीं, लेकिन इरफान ने बहुत सहयोग किया,’ अश्विन ने कहा।
कहता है।
शूटिंग के दौरान सबसे चुनौतीपूर्ण क्षणों में से एक वह था जब कोएल पुरी
इरफ़ान के साथ सेक्स सीन करने में वह हिचकिचा रही थी, हालाँकि वह जानती थी कि उसे
इसे करने के लिए। यह दृश्य स्क्रिप्ट में शुरू से ही लिखा हुआ था। अश्विन के सुझाव पर, इरफान ने कोयल को यह समझाने में समय बिताया कि प्रेम प्रसंग
यह दृश्य कथानक के लिए आवश्यक था, और वास्तव में, वह इसमें नग्न अवस्था में भी दिखाई दिया था।
फिल्म—यह एकमात्र ऐसा मौका था जब उन्होंने कैमरे के सामने पूरी तरह से कपड़े उतारे थे।

अश्विन कहते हैं, 'वह बिल्कुल भी हिचकिचाया नहीं। मुझे लगता है कि उससे कभी पूछा ही नहीं गया था।'
किसी भी अन्य भारतीय फिल्म में कपड़े उतारना या नग्नता दिखाना मना है। भारतीय फिल्मों में नग्नता दिखाना मना है।
फ़िल्में। मुझे लगा कि वह जवान है, इसलिए वह ऐसा सीन कर सकता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाएगा
अगर वह उम्र में बड़ा होकर स्टार बन जाता है, तो शायद वह इस तरह की भूमिका मिलने पर सतर्क रहेगा।
उसे पेश किया गया।
फिल्म पूरी होने के बाद, अश्विन इसे कान फिल्म फेस्टिवल में ले गए। महोत्सव के बाज़ार खंड में, इरफ़ान भी उनके साथ गया। अश्विन के अनुसार, यह
इरफ़ान की यह पहली विदेश यात्रा थी। अश्विन ने अभिनेता के हवाई किराए का भुगतान किया। फिर भी,
रहने की व्यवस्था आरामदायक नहीं थी, और इरफान अश्विन के साथ एक ही बिस्तर पर सोता था।
उन्हें इस बात का पूरा यकीन था कि वे वापस आएंगे, और अगले
अश्विन कहते हैं, 'उस समय वह अपने निर्देशक के साथ कमरा साझा नहीं करता था। उसने कहा कि...'
मैंने कहा, "अगली बार जब मैं वापस आऊंगा, तो एक फिल्म के साथ आऊंगा, और मैं पैदल चलूंगा।"
वह कालीन।" उन्हें अपनी यात्रा का बहुत स्पष्ट अंदाजा था।
इरफ़ान भी अश्विन के साथ लंदन गए थे। वे अश्विन के छोटे से घर में रुके थे।
दोनों फिर से बिस्तर पर साथ सोने लगे। रातें वे बातें करते हुए बिताते थे।
फिल्मों और अभिनेताओं के बारे में। तब तक इरफान मार्लन ब्रैंडो के बहुत बड़े प्रशंसक बन चुके थे।

और अश्विन को याद है कि उन्होंने इरफान से बहुत कुछ सीखा। 'मैंने उनसे सीखा कि कैसे...'
अश्विन कहते हैं, 'किसी अभिनेता से बात करो।' शुरुआत में इरफान ने अश्विन से कहा था कि यह गलत है।
किसी अभिनेता को यह बताना कि क्या करना है, ऊपर देखना है या नीचे देखना है। इरफ़ान के लिए यह उचित नहीं था।
अभिनय, क्योंकि इससे अभिनेता केवल कठपुतली बन जाएंगे। इरफ़ान का सबसे बड़ा सबक यह था कि...
अश्विन का मानना था कि एक प्रदर्शन किसी विशेष समय पर स्वतःस्फूर्त रूप से होता है।
वह क्षण। कितना भी अभ्यास कर लो, वह क्षण नहीं आ सकता। 'तुम क्या कर सकते हो'
अश्विन कहते हैं, 'हमें बस इतना करना है कि अभिनेताओं के आसपास के वातावरण को ठीक से उपजाऊ बनाना है।'
अश्विन आगे कहते हैं, ‘इरफान एक ज़ेन भिक्षु की तरह हैं। वह उसी अवस्था में रहना चाहते हैं।’
सेट पर आने से पहले ही। वह कोई नाटक नहीं कर रहा है, शॉट से पहले अभिनय नहीं कर रहा है।
वह एकदम स्थिर मन की अवस्था में है। और जैसे ही कैमरा चालू होता है, वह अपना प्रदर्शन देता है।
उन्हें यह बात बहुत पसंद आई। जिस विनम्रता के साथ वे अपना काम करते हैं, वह वाकई प्रेरणादायक है।
अश्विन इरफान के इस साहसिक कदम की बहुत प्रशंसा करते हैं।
एक नवोदित फिल्म निर्माता के साथ काम करना। इरफान ने फिल्म का एक भी फ्रेम नहीं देखा था।
अश्विन ने जो कुछ भी शूट किया था, फिर भी वह स्वेच्छा से साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा।
सड़क। दरअसल, उनका परिवार भी—सुतापा और उनका पहला बेटा बाबुल, जो एक

उस समय मैं एक छोटा बच्चा था—मैंने लद्दाख में शूटिंग सेट का दौरा किया था।
इसी समय के आसपास, इरफान एक और साहसिक यात्रा पर निकल पड़े, इस बार एक और जगह पर।
मैं कुछ दिनों के लिए ही सही, एक लघु फिल्म की शूटिंग के लिए राजस्थान गया था।
16 मिनट लंबी मूक फिल्म, द बाईपास (2003), का निर्देशन अमित ने किया था।
कुमार, आसिफ कपाडिया के मित्र और फिल्म 'द वॉरियर' के एसोसिएट डायरेक्टर थे।
फिल्म के निर्माता के रूप में शामिल हुए, और उनके नियमित और भविष्य के ऑस्कर-
विजेता संगीतकार डारियो मारियानेली ने बैकग्राउंड स्कोर तैयार किया।
यह बाईपास यूट्यूब पर उपलब्ध है। हालाँकि इसे बहुत कम दिखाया गया था।
भारत में, इस लघु फिल्म ने मुंबई के युवा फिल्म निर्माताओं के बीच एक पंथ का दर्जा हासिल कर लिया।
अमित एक चोर की मुख्य भूमिका निभाने के लिए एक नए चेहरे की तलाश कर रहा था।
रेगिस्तान। अमित जिस एकमात्र कास्टिंग एजेंट को जानता था, वह तिग्मांशु धूलिया था।
अमित ने एनएसडी के हाल ही में स्नातक हुए छात्र नवाजुद्दीन सिद्दीकी की सिफारिश की।
मैंने सबसे पहले स्टार बेस्टसेलर्स के एक एपिसोड, 'अलविदा' की वीएचएस टेप देखी, जिसे इरफान ने बनाया था।
फिल्म का निर्देशन अमित ने किया था, जिसमें नवाज़ मुख्य भूमिका में थे। फिर अमित ने नवाज़ का ऑडिशन लिया।

कई बार। लेकिन उसे लगा कि उसे सही लहजा नहीं मिल रहा है।
युवा अभिनेता, खासकर इसलिए क्योंकि फिल्म में कोई संवाद नहीं थे।
'मैं नवाज़ से कहता रहता था।
कम करने के लिए, और उन्होंने कहा, "अमित भाई, इंडस्ट्री में हर कोई मुझसे कहता है कि आप
मैं एक ड्रामा स्कूल से हूँ, इसलिए मुझे कुछ दिखाओ, कुछ करके दिखाओ।
मैं समझता हूँ।
अमित याद करते हुए कहते हैं, "आप जो पूछ रहे हैं, वह मैं आसानी से नहीं कर सकता।" इसमें समय लगा।
दो सप्ताह बीत गए, लेकिन फिर एक दिन नवाज़ का प्रदर्शन एकदम से सफल हो गया।
अमित ने इरफान को एक भ्रष्ट पुलिसवाले पर आधारित फिल्म में एक छोटी भूमिका की पेशकश की। इरफान
फिल्म 'द वॉरियर' की शूटिंग के दौरान अमित से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई थी, इसलिए
उन्हें छोटी भूमिका निभाने में कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन मुख्य भूमिका निभाने में उन्हें थोड़ी झिझक थी।
अमित आगे कहते हैं, 'मुझे उस भूमिका के बारे में पता चला, और इसका कारण मुझे कुछ समय बाद पता चला। जब फिल्म बन रही थी...'
उसने मुझे बताया कि उसे लगता है कि वह पुलिसवाला बहुत ही निर्दयी और क्रूर आदमी था।
आपकी फिल्म देखकर मुझे एहसास होता है कि पूरा ब्रह्मांड ठंडा और क्रूर है और मैं भी उसी श्रेणी में आता हूँ।
“इस परिदृश्य में,” उन्होंने कहा। इरफान एक सफल अभिनेता बनने की कगार पर थे।
जाने-माने अभिनेता (हासिल और मकबूल लगभग एक ही समय में बनी थीं), लेकिन वह

फिर भी वह बाकी कलाकारों और क्रू के साथ एक छोटे से होटल में रुकने के लिए सहमत हो गया।
बाद में, अमित ने अपनी पहली फीचर फिल्म, मॉनसून में इरफान को कास्ट करने पर भी विचार किया था।
शूटआउट (2013)। लेकिन जब फिल्म की शूटिंग शुरू होने वाली थी, तब तक इरफान को...
अतिरिक्त संवाद प्रतिस्थापन (एडीआर) या डबिंग करने के लिए कनाडा की यात्रा करना।
उन्होंने एंग ली की फिल्म 'लाइफ ऑफ पाई' (2012) के लिए काम किया था, और वह भूमिका किसी अन्य अभिनेता को दे दी गई थी।
यह बाईपास एक और कारण से भी प्रसिद्ध है। फिल्म की शूटिंग इनके द्वारा की गई थी।
अमित के एफटीआईआई के सहपाठी, राजीव रवि। अनुराग कश्यप उनसे इतने प्रभावित हुए थे।
राजीव के उस लघु फिल्म पर किए गए काम से प्रभावित होकर ही उन्हें छायाकार के रूप में नियुक्त किया गया था।
उनकी कई फिल्मों में नो स्मोकिंग (2007), दैट गर्ल इन येलो बूट्स शामिल हैं।
राजीव ने (2010) और गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012) जैसी फिल्मों का निर्देशन भी किया है। उन्होंने कुछ अन्य फिल्मों का निर्देशन भी किया है।
इन फिल्मों में लगभग तीन घंटे की गैंगस्टर महाकाव्य फिल्म, कम्मट्टी पादम (2016) भी शामिल है।

भट्ट कनेक्शन

इरफान ने 1990 के दशक में अपना अधिकांश समय टेलीविजन शो में काम करने में बिताया था।
लेकिन उस पूरे समय के दौरान वह भारतीय फिल्म उद्योग के लोगों से भी मिल रहे थे—
कुछ लोग उनके करीबी सहयोगी बन गए। ऐसे ही एक व्यक्ति लेखक थे। निर्देशक और निर्माता, महेश भट्ट। टीवी लेखक और
निर्देशक विंटा नंदा के यहाँ होने के कारण महेश उनसे मित्र और सहयोगी बन गए।
इरफ़ान के मेंटर। और जब इरफ़ान इंडी आर्ट में हाथ आज़माने की कोशिश कर रहे थे।
द वॉरियर और मकबूल जैसी फिल्मों में महेश भट्ट और उनके परिवार सहित कई लोग शामिल हैं।
उनकी बेटी पूजा उन्हें उनके लोकप्रिय ब्रांड की दिशा में ले जाती थी।
सिनेमा—अक्सर यौन उत्तेजना से भरपूर अपराध नाटक, प्रेरित, कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप से
हॉलीवुड फिल्मों से लिया गया। हालांकि इस संबंध से इरफान के करियर को कोई खास फायदा नहीं हुआ।
एक अभिनेता के रूप में अपने करियर में, इसने उन्हें हिंदी फिल्म जगत में मजबूती से खड़े होने का मौका दिया।
उद्योग।
महेश ने पहली मुलाकात को याद करते हुए कहा, 'वह शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, ज्यादा बोलते नहीं थे।'
इरफान खान से मुलाकात। 'लेकिन उनकी शख्सियत कुछ अलग ही थी।'
और इसलिए भट्ट परिवार ने इरफान को कुछ मौके दिए, जिनमें सहायक भूमिकाएँ भी शामिल थीं।

कसूर (2001) में लोक अभियोजक की भूमिका, जो ज्यादातर जगड का रूपांतरण है
एज (1985), जिसमें व्हाट लाइज़ बिनीथ (2000) का कुछ अंश है। यह फिल्म महेश भट्ट के भतीजे विक्रम द्वारा निर्देशित। इरफ़ान दूसरे भाग में नज़र आते हैं।
फिल्म के आधे हिस्से में वह एक आकर्षक बचाव वकील के लिए वैकल्पिक कानूनी शक्ति के रूप में काम करती है।
इस फिल्म में भारतीय-कनाडाई अभिनेत्री लीसा रे ने अभिनय किया है, जो हिंदी फिल्मों में अपना डेब्यू कर रही हैं।
(दुर्भाग्यवश, उन्हें केवल उनकी सुंदरता और शारीरिक बनावट के आधार पर ही चुना गया था, और
फिल्म निर्माताओं ने दिव्या दत्ता को उनकी आवाज डब करने के लिए नियुक्त किया। 'हमें एक विपरीत भाव की आवश्यकता थी।'
खूबसूरत मुख्य किरदार लिसा रे के साथ, जहां एक वकील पूरी तरह से महेश भट्ट ने कसूर में इरफान को कास्ट करने के बारे में कहा, 'वह नायिका के प्रति उदासीन थे।' इरफान भट्ट परिवार के इतने करीब आ गए थे कि उन्होंने फुटपाथ में एक कैमियो करने के लिए भी हामी भर दी थी। (2003) में उन्होंने इमरान हाशमी अभिनीत फिल्म 'द किलर' में सहायक भूमिका निभाई।
(2006).
हालांकि, उन्हें जो बड़ा मौका मिला—हिंदी फिल्म में पहली बार मुख्य भूमिका निभाने का अवसर—वह तब आया जब...
रोग (2005) के साथ, जिसका निर्माण पूजा भट्ट ने किया था। यह ध्यान देने योग्य है कि
द वॉरियर एक ब्रिटिश प्रोडक्शन थी और यह फिल्म भारत में कभी रिलीज नहीं हुई।
‘इरफान खान की कहानी की शुरुआत पूजा के इस विश्वास से हुई कि वह एक

महेश कहते हैं, 'बहुत ही असाधारण अभिनेता।' फिल्म में इरफान ने उदय का किरदार निभाया था।
राठौर, एक अवसादग्रस्त, आत्महत्या की प्रवृत्ति वाला पुलिस निरीक्षक, जिसे यह कार्य सौंपा गया है...
एक मशहूर मॉडल की हत्या की जांच (आकर्षक दक्षिण अफ्रीकी मॉडल इलीन) हमामन का प्रदर्शन बेहद नीरस था।
जांच के दौरान, उदय ने हर्ष समेत तीन संभावित संदिग्धों की पहचान की। प्रसिद्ध पत्रकार (सुहेल सेठ ने एक असाधारण रूप से अतिरंजित अभिनय किया है),
(भयानक उच्चारण के साथ)। रोग में एक गंभीर भूमिका निभाना एक चुनौती रही होगी।
इरफ़ान जैसे प्रशिक्षित अभिनेता के लिए यह एक चुनौती है, खासकर सहायक कलाकारों की संख्या को देखते हुए।
उन्होंने फिल्म में अपने अभिनय से सबका ध्यान खींचा।
मुझे आज भी वो शानदार दृश्य याद है जो मैंने सेट पर लिखा था, जिसमें वो
महेश उस दिन के बारे में बताते हैं जब वह (इरफान के उदय) थेरेपिस्ट से बात कर रहे थे।
मैंने पूजा की मदद करने के लिए सेट पर काम किया। मैंने वह दृश्य लिखा जिसमें वह कहता है, "मेरी आँखें सोती हैं।"
hain, magar mera dil hamesha jaga rehta hai (My eyes sleep, but my heart is
हमेशा जागते रहते थे)। मुझे याद है जिस तरह से उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, "क्या बात है..."
hai, Bhatt saab (That is excellent, Bhatt saab)!” I said, “Yeh jumla nahi. Saari
zindagi se nikaal kar lani padti hai baat (This is not just a sentence. One has

उस भावना को साकार करने के लिए पूरा जीवन जीना।
इरफ़ान दृष्टि और रोड टू जैसी फिल्मों में पहले ही प्रेम प्रसंग के दृश्य कर चुके थे।
लद्दाख, लेकिन महेश और पूजा को याद है कि उन्हें उसे वहाँ जाने के लिए कितना मनाना पड़ा था।
इरफ़ान ने इलीन हमामन को किस किया। इरफ़ान प्रेम प्रसंग के दृश्य को टालना चाहते थे।
the day came closer, he would say to Pooja, ‘Kal karengey, parson karengey’
(चलो इसे कल या परसों करते हैं।) वह बहुत तनाव में था।
यहां तक कि जिस दिन सीन शूट होना था, उससे एक दिन पहले उन्हें बुखार भी आ गया था।
महेश कहते हैं, ‘मैंने कहा, “इरफान, तुम्हें क्या हुआ है?” और उसने पूछा, “कुछ…
storyboard hai (Is there a storyboard)?” And I said, “Kya bakwaas kar raha
है यार (ये क्या बकवास कर रहे हो)?
महेश को याद है जब कॉरिडोर में एक शॉट के दौरान पूजा को इरफान को धक्का देना पड़ा था।
जहां दोनों अभिनेताओं को एक दूसरे के साथ रोमांस करना था। 'वह बहुत घबराया हुआ था।'
महेश कहते हैं, 'यह वह क्षेत्र नहीं था जिसमें वह पहले कभी रहे थे। उन्होंने हमेशा एक अलग भूमिका निभाई थी।
उन्होंने नकारात्मक भूमिका निभाई या फिर एक रोमांटिक हीरो का किरदार निभाया, लेकिन यह कोई आम हिंदी फिल्म नहीं थी।
आखिरकार पूजा इरफान के साथ इलीन के मेकअप रूम में गई और उसने
उन दोनों को एक अल्टीमेटम दिया गया कि या तो वे इस दृश्य से हट जाएं।

जल्दी करो वरना पूरे दल को पूरी रात वहीं रुकना पड़ेगा। 'मुझे लगता है—'
और वह उस मायने में एक अभिनेत्री नहीं थी—किसी के साथ काम करने का फायदा यह था कि
विदेश से आई एक महिला मॉडल के बारे में यह कहा जा सकता है कि उनके पास एक
पूजा कहती हैं, 'अपने शरीर के साथ एक निश्चित स्तर का सहजता का स्तर होना चाहिए,' और आगे कहती हैं कि
इलीन ने इरफान को सहज महसूस कराया। यह दृश्य एक भावुक क्षण को दर्शाने के लिए फिल्माया गया था।
उन दोनों के बीच, उसने एक तरह से पहल की, जबकि इरफान तनाव में था,
उस शॉट से पहले पूजा ने रम के दो पेग पी लिए थे। जब पहला टेक पूरा हो गया, पूजा
मुझे लगा कि सब ठीक चल रहा है। लेकिन इरफान ने एक और मांगा। और मैंने पूछा,
“फिल्म का क्या हुआ?”’ वह पूछती है। उन दिनों फिल्म स्टॉक महंगा हुआ करता था।
तो उसने कहा, “मैं घर से लाऊंगा।”
फटा हुआ।'
यह संभव है कि इरफान की चिंता का कुछ हिस्सा इस समझ से उपजा हो। हिंदी फिल्म के नायकों को एक खास तरह का दिखना पड़ता था—मानक रूप-रंग,
ability to romance the heroines as Shahrukh Khan did in Dilwale Dulhaniya
Le Jayenge (1995) and Kuch Kuch Hota Hai (1998). And perhaps—as his
मेरे मित्र तिग्मांशु धूलिया ने भी यही सुझाव दिया है—कहीं न कहीं उनके भीतर वह

उनका मानना था कि वह उस तरह के हीरो या मुख्य अभिनेता बनने लायक नहीं थे।
‘इरफ़ान को अपने भीतर यह आभास था कि किसी को योग्य होना चाहिए’
महेश कहते हैं, 'उन्हें मुख्य भूमिकाएँ मिल रही हैं।' 'पूजा ने उन्हें इस तरह देखा।'
दुनिया ने बाद में उसे पहचाना और उसकी ओर देखा। वह स्वयं
वह खुद को उस नज़रिए से देखने में हिचकिचाता था। और उसे मनाना और प्रेरित करना पड़ा।
उस भूमिका को निभाने के लिए।
इस पर पूजा ने कहा कि उन्हें इरफान बहुत आकर्षक पुरुष लगते हैं। यहां हर तरह के पुरुष और अभिनेता हैं, लेकिन बॉम्बे जैसी फिल्म इंडस्ट्री में,
यह अक्सर खलनायक या नायक के स्वरूप को लेकर एक रूढ़िवादी सोच बना देता है। 'मैं कोशिश कर रहा था कि...'
वह कहती हैं, 'उन सीमाओं को धुंधला करना है। इसलिए हमें एक अभिनेता की ज़रूरत थी, न कि किसी ऐसे स्टार की जो ऐसा न कर सके।' '
कार्यवाही करना।'
लेकिन पूजा मानती हैं कि इरफान की घबराहट का कुछ हिस्सा शायद पूजा की वजह से भी हो सकता है।
इसका संबंध इस तथ्य से है कि इलीन हैमन एक बेहद खूबसूरत महिला हैं। 'मैं करती हूँ।'
वह कहती हैं, 'यह समझना जरूरी है कि खूबसूरत महिलाएं कुछ हद तक डराने वाली हो सकती हैं।'
कई साल बाद, इरफान खान एक अभिनेत्री के साथ बातचीत में मशगूल थे।
कंगना रनौत फिल्म कंपेनियन के 'द मीटिंग' नामक कार्यक्रम में। ज़मीन पर। दोनों अभिनेताओं ने अपने करियर विकल्पों और अपनी तकनीकों के बारे में बात की।

काम करने के बारे में। एक बार इरफान ने महेश भट्ट का हवाला देते हुए कहा, 'भट्ट साहब बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हैं; वे बहुत जागरूक हैं। वे कहते थे, "अरे इरफान, गंदी एक्टिंग!"
कर 30 (इरफान, खराब एक्टिंग करो)। दर्शकों को सब कुछ चम्मच से खिलाओ।) इरफ़ान ने थिएटर में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, और उनका दृष्टिकोण और इच्छा फिल्म निर्माता बनने की थी।
अच्छी कलात्मक सिनेमा। लेकिन महेश भट्ट यह भी चाहते थे कि वह सिनेमा का सार समझे।
जन सिनेमा में जहां सूक्ष्म प्रदर्शन जरूरी नहीं कि कारगर साबित हों श्रोता।
मेरा मानना है कि कलात्मक और अस्पष्ट होने की बजाय असभ्य और स्पष्ट होना बेहतर है।
महेश कहते हैं, 'क्योंकि जिस निर्वाचन क्षेत्र में हम अपनी बात रख रहे हैं, वह...'
यह कोई विशिष्ट, परिष्कृत, दिखावटी दर्शक वर्ग नहीं है जो एक विशेष संवेदनशीलता से आकार ले रहा हो।
वर्षों से। मुख्यधारा के मनोरंजन का मूलमंत्र अधिकतम पहुंच है। मुहावरे हमें थोड़ा तीखा बोलने के लिए मजबूर करते हैं। और आपको उस व्यक्ति को प्रभावित करना होता है।
जो एक घटिया किस्म का मूर्ख है और आपके सिनेमा हॉल की आखिरी पंक्ति में बैठा है।
Usko samajh mein aana chaiye baat (He has to understand the film).’ महेश को लगता था कि इरफान जैसे अभिनेता, अपनी एनएसडी ट्रेनिंग के बावजूद, अक्सर गलत राह पर चल पड़ते हैं।
एक ऐसा जाल जहाँ वे तब तक खुश दिखते हैं जब तक आलोचक, स्तंभकार और फिल्म महोत्सव के लोग उनकी आलोचना करते रहते हैं।
प्रोग्रामर उनकी सराहना करते हैं। लेकिन वे बाहरी दुनिया को नहीं देखते। महेश

उन्होंने स्वयं अपने करियर की शुरुआत आर्थ जैसी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित मेलोड्रामा फिल्मों से की थी।
(1982) और सारांश (1984) जैसी फिल्मों के बाद, वे धीरे-धीरे अधिक लोकप्रिय फिल्मों की ओर बढ़ते चले गए।
अंततः भट्ट परिवार ने भारी मात्रा में अपराध नाटकों वाली फिल्में बनाईं।
यौन संबंध की संकेतात्मक खुराक।
महेश दो तमिल अभिनेताओं—शिवाजी गणेशन और
कमल हासन ने कहा कि दोनों अभिनेता कला की बहुत अलग-अलग शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
अभिनय। और वह आगे कहते हैं, 'शिवाजी गणेशन ने कहा था, "ऐसा नहीं है कि हम सूक्ष्म कलाओं को नहीं जानते।"
अभिनय। जिस जगह से हम आते हैं, वहां हमने नुक्कड़ रंगमंच किया है और वहां
भीड़भाड़ वाली सड़क पर हमें अपनी आवाज बुलंद करके ही अपना गुजारा करना पड़ता था।
और एक सब्जी विक्रेता के रूप में काम करने वाले व्यक्ति द्वारा महसूस की गई हमारी भावनाएँ।
सड़क के उस पार बैठा था। शो खत्म होने के तुरंत बाद मुझे जाना होगा और उससे मेरे पैसे मांगो। अगर उसे अच्छा नहीं लगा तो वो मुझे कुछ नहीं देगा।
पैसा।
इरफ़ान और महेश भट्ट ने भारत से जुड़े मुद्दों पर भी आपस में बातचीत की।
देश का राजनीतिक और धार्मिक माहौल, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि अभिनेता उग्रवादी इस्लाम के विचार के विरोधी थे।
ये ऐसे मुद्दे थे जिनके बारे में इरफान अपने करीबी लोगों से बात करते थे, लेकिन

वह धर्म और राजनीति पर सार्वजनिक रूप से शायद ही कभी अपने विचार व्यक्त करते थे।
लेकिन अपनी फिल्म 'मदारी' की रिलीज के आसपास उन्होंने कुछ फिल्में बनाईं।
कुछ ऐसे बयान जिनसे कुछ मुस्लिम धर्मगुरु बेहद नाराज हो गए। 'उपवास करने के बजाय
रमज़ान के दौरान लोगों को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए,’ उन्होंने अपने एक भाषण के दौरान यह बात कही।
रमज़ान के महीने में प्रचार कार्यक्रम।31 उन्होंने कहा कि मुसलमानों के पास
मुहर्रम का उपहास उड़ाया गया, क्योंकि ‘जानवरों को मुहर्रम के नाम पर काटा जा रहा है’
मुहर्रम के दौरान कुर्बानी के बारे में बात न करने के लिए इरफान ने मुसलमानों की आलोचना भी की। इरफान ने यह भी कहा कि मुसलमान कुर्बानी के बारे में बात नहीं करते।
आतंकवाद के खिलाफ। इरफान के गृह राज्य राजस्थान के मुस्लिम धर्मगुरुओं ने इसकी कड़ी निंदा की।
अभिनेता ने इन टिप्पणियों पर आपत्ति जताई। राज्य के मौलाना अब्दुल वाहिद खत्री ने कहा...
जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने सुझाव दिया कि इरफान को अपने फिल्मी करियर पर ध्यान देना चाहिए।
धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने के बजाय।
इन मुद्दों ने विशेष रूप से इरफान को महेश भट्ट से जोड़ा। लेकिन
इन वर्षों में दोनों मित्र अपने-अपने अलग-अलग प्रोजेक्टों में व्यस्त हो गए और कुछ हद तक
वे अलग हो गए। द किलर (2006) के बाद, इरफान ने महेश की किसी भी फिल्म में अभिनय नहीं किया।

भट्ट की फिल्मों में काम करते थे। लेकिन अनुभवी फिल्म निर्माता कभी- कभी वहां जाते थे।
इरफ़ान की फिल्मों के प्रीमियर और एडवांस स्क्रीनिंग में भाग लेना उन्हें याद है।
लाइफ ऑफ पाई (2012) और हाल ही में रिलीज हुई करीब करीब सिंगल (2017) की स्क्रीनिंग।
2014 में महेश कोलकाता में थे और ओबेरॉय ग्रैंड होटल में ठहरे हुए थे। यह उनका
वह कल रात शहर में था और उसे सुबह जल्दी फ्लाइट पकड़नी थी। अचानक वह लॉबी से फोन आया। दूसरी तरफ से एक आदमी ने कहा, 'सर, मैं इरफान हूं।' बोल रहा हूँ। आ सकता हूँ (सर, मैं इरफ़ान हूँ। क्या मैं आपके कमरे में आ सकता हूँ?)
महेश दरअसल उस आवाज को पहचान नहीं पाया और उसने फोन करने वाले से पीछा छुड़ाने की कोशिश की।
मैंने कहा, “नहीं यार, बहुत देर हो गई है और मुझे सुबह जल्दी फ्लाइट पकड़नी है।” लेकिन इरफान मान गए।
उसने ज़िद की और कहा कि उसे केवल 10 मिनट लगेंगे। उसने घंटी बजाई और मैंने देखा।
उसे वहाँ खड़ा देखकर, मैंने कहा, “तू है!” और उसने कहा, “भट्ट
saab, mujhe laga ke aapne pechana nahi (I thought you did not recognize
me, Bhatt saab).”’
इरफ़ान फिल्म 'पिकू' (2015) की शूटिंग के लिए कोलकाता में थे। वह मुलाकात कुछ खास रही।
इरफ़ान द्वारा मांगे गए 10 मिनट से कहीं अधिक समय बीत गया। दोनों दोस्तों ने
कुछ देर तक बात हुई, और इसलिए वे काफी देर तक बात करते रहे।

guftagu ki. Yahan wahan ki baatein (We sat and chatted about this and that),’
महेश भट्ट कहते हैं।

त्वचा में प्रवेश करना

जैसे-जैसे इरफान को काम मिलने लगा, उन्होंने अपने काम के दायरे को बढ़ाने और नए प्रयोग करने की कोशिश भी की।
उन्होंने कई तरह की भूमिकाएँ निभाईं, जिनमें एक अभिनेता के रूप में अपने हास्य कौशल का प्रदर्शन करना भी शामिल है। उनकी शुरुआती फिल्मों के तुरंत बाद उन्होंने दो दिलचस्प फिल्मों में अभिनय किया। — हासिल, मकबूल और रोग। पहली फिल्म, दुबई रिटर्न (2005), कभी हिट नहीं हुई।
भारत में सिनेमाघरों में रिलीज नहीं हुई, हालांकि इसे कुछ फिल्म समारोहों में दिखाया गया था; और
दूसरी फिल्म, एक हिंदी भाषा की फिल्म है जिसमें कई कलाकार हैं, जिसका नाम है 'लाइफ इन अ...'
मेट्रो (2007), जिसने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी सफलता हासिल की थी।
दुबई रिटर्न का निर्देशन आदित्य भट्टाचार्य ने किया था, जो कि हिंदी सिनेमा के दिग्गज; उनके नाना बिमल रॉय थे और उनके
उनके पिता निर्देशक बसु भट्टाचार्य थे। आदित्य ने आमिर खान को अपनी फिल्म में पेश किया था।
पहली फिल्म, राख (1989)—बांद्रा में बचपन की दोस्ती एक ऐसे मोड़ पर आ जाती है जहाँ...

कल्ट हिंदी थ्रिलर। आदित्य और इरफान की मुलाकात पहली बार तब हुई जब अभिनेता
वह अभी भी टेलीविजन में काम कर रहे थे। द वॉरियर के बाद, इरफान पहले ही हासिल की शूटिंग कर चुके थे।
जब आदित्य और उनकी निर्माता मान्या पाटिल सेठ (स्मिता पाटिल की छोटी बहन)
उन्होंने दुबई रिटर्न के लिए उनका नाम लिखवा दिया। आदित्य का दावा है—और यह दावा बिल्कुल सही है—कि
इस फिल्म ने इरफान खान को किसी भारतीय फिल्म में पहली बार मुख्य भूमिका दी।
हालांकि, इरफान की कुछ निजी प्रतिबद्धताएं थीं—उनकी पत्नी
वे अपने दूसरे बच्चे, अयान, की उम्मीद कर रहे थे और परिवार की आर्थिक ज़रूरतें भी बढ़ गई थीं।
बढ़ने वाला है। मकबूल के निर्माता बॉबी बेदी ने कुछ ऐसा ही किया था।
इरफ़ान को एक आकर्षक प्रस्ताव मिला—जो उन्हें मिलने वाली राशि से कहीं अधिक था।
दुबई रिटर्न जैसी एक इंडी परियोजना। इसलिए आदित्य और मान्या ने इसमें अपना योगदान देने पर सहमति जताई।
इरफ़ान को एक ब्रेक मिला। 'वह एक बच्चे के पिता बनने वाले थे और उन्हें तीन गुना ज़्यादा मिल रहा था।'
आदित्य कहते हैं, 'उसे मुझसे क्या मिल रहा था, यह स्वाभाविक था कि हमने उसे ऐसा करने दिया।' 'यह स्वाभाविक था कि
'पहले मकबूल को खत्म करो।' दुबई रिटर्न का एक हिस्सा पहले ही शूट हो चुका था।
मकबूल तो तैयार थे, लेकिन बाकी लोगों को काफी लंबा इंतजार करना पड़ा। जब तक इरफान तैयार हुए, तब तक
दुबई लौटने पर, उन्होंने रोग पर काम करने की प्रतिबद्धता भी जताई थी।

रोग और दुबई रिटर्न दोनों फिल्में 2005 में पूरी हो गईं थीं। लेकिन इनमें से केवल एक ही फिल्म सफल रही।
जारी किया।
दुबई रिटर्न मुंबई के अंडरवर्ल्ड में घटित एक कॉमेडी फिल्म है, जहां छोटे-मोटे...
धोखाधड़ी करने वाले लोग सामाजिक स्तर पर ऊपर चढ़ने की उम्मीद में ध्यान और बदनामी बटोरने की कोशिश करते हैं।
उनके ब्रह्मांड में सीढ़ी। इरफान आफताब अंग्रेज की भूमिका निभाते हैं, जिन्हें एक काम पर भेजा जाता है।
प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सरगना को खत्म करने के लिए। काम पूरा होने के बाद, आफताब को भेज दिया जाता है।
दुबई में छिपने के लिए, ठीक वैसे ही जैसे द गॉडफादर में माइकल कोरलेओन छिपा था।
अस्थायी निर्वासन पर सिसिली भेज दिया गया।
कई वर्षों बाद, आफताब लौटता है और पाता है कि उसका बॉम्बे बदल चुका है।
काफी हद तक। उसे शायद ही कोई याद करता है और किसी के पास भी उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।
आफताब द्वारा किए गए हत्या के बारे में यादें। तो, बाकी में
फिल्म में, दुबई से लौटा हुआ व्यक्ति नए व्यक्ति को समझाने का प्रयास करता है।
गैंगस्टरों के उस समूह के बारे में, जिसके साथ वह कभी स्टार किलर हुआ करता था।
दुबई रिटर्न में इरफान के सह-कलाकार दो जाने-माने चरित्र अभिनेता थे।
हालांकि वे सिनेमा के बिल्कुल अलग क्षेत्रों से आते हैं— विजय मौर्य
और दिवंगत रजाक खान।

'दुबई रिटर्न' उन फिल्मों में से एक है जो सेट पर जीवंत हो उठी, अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले तीन अभिनेताओं के बीच जुगलबंदी,’ आदित्य
विजय मौर्य अनुराग कश्यप की कुछ फिल्मों में भी काम कर चुके हैं और उन्होंने ये भी बताया है।
टेलीविजन शो में। इरफान थिएटर और टेलीविजन से आ रहे थे। 'और
रजाक भाई व्यावसायिक सिनेमा के निचले स्तर से आए हैं। वे आए थे विभिन्न फिल्मी घरानों में। मैं इन अविश्वसनीय सामाजिक समूहों के साथ बस एक रिंगमास्टर की भूमिका में था।
जानवरों ने खूब मस्ती की। मुझे लगता है कि यही बात फिल्म को इतना खास बनाती है।
काम।'
लेकिन रज़ाक थोड़ा डरा हुआ था, आदित्य आगे बताते हैं। ‘उसने मुझसे कुछ इस तरह कहा, “मैं
पकड़ा जाऊंगा। ये लोग तो असल अभिनेता हैं। (मैं पकड़ा जाऊंगा।) (असली अभिनेता हैं)। मैं एक धोखेबाज हूं।" लेकिन आदित्य को लगता है कि रजाक का
दुबई रिटर्न में उनका प्रदर्शन इरफान और विजय के प्रदर्शन जितना ही अच्छा है।
वह कहते हैं, 'इरफान की उदारता और समर्थन के कारण। इरफान प्रशिक्षण के लिहाज से निस्संदेह सबसे वरिष्ठ अभिनेता। लेकिन एक थोड़े अलग कौशल वाले इन लोगों के बीच सौहार्द था।
फिल्म रिलीज न हो पाने से दिल टूट गया, लेकिन आदित्य के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी।
इन सभी अभिनेताओं के साथ काम करने का मौका मिलने से उनकी प्रतिष्ठा कुछ हद तक संतुलित हो गई।
इरफ़ान और आदित्य की दोस्ती कई सालों तक कायम रही। एक साल बाद

आदित्य ने इरफान के साथ एक और प्रोजेक्ट की घोषणा की—बॉलीवुड कॉप। इस समय तक
आदित्य भी इटली में अधिक से अधिक समय बिताने लगा था, इसलिए वह भी। घोषणा की गई कि इतालवी अभिनेत्री मारिया ग्राज़िया कुसिनोटा (इल पोस्टिनो) ने
इरफ़ान के साथ अभिनय करने के लिए तैयार हो गईं। बॉलीवुड कॉप को 'द' के रूप में वर्णित किया गया था।
यह कहानी एक ऐसे सख्त मुठभेड़ विशेषज्ञ की है जो अपनी शक्ति और पद का दुरुपयोग करता है।
मुंबई में बॉलीवुड अभिनेत्री के रूप में अपना जीवन यापन कर रही एक कामुक इतालवी महिला का शोषण करना।
आइटम गर्ल’.32
लेकिन जैसा कि अक्सर विभिन्न फिल्म उद्योगों में होता है, बॉलीवुड कॉप कभी नहीं
बात आगे बढ़ी। आदित्य ने इरफान के साथ एक और प्रोजेक्ट पर काम किया। — एचबीओ की सीरीज 'इन ट्रीटमेंट' (2010)।

दो महान अभिनेता एक साथ। अनुराग बसु ने महेश भट्ट और उनके द्वारा निर्मित तीन फिल्मों का निर्देशन किया था।
brother Mukesh Bhatt (Murder, 2004, Tumsa Nahi Dekha, 2004 and उन्होंने यूटीवी मोशन पिक्चर्स द्वारा प्रायोजित फिल्म का निर्देशन करने से पहले गैंगस्टर (2006) का निर्देशन किया था। प्रोजेक्ट, लाइफ इन अ… मेट्रो, परस्पर जुड़ी कहानियों की एक श्रृंखला है, जो सभी एक मेट्रो में घटित होती हैं।
बॉम्बे। इस सामूहिक प्रस्तुति में कई कलाकार शामिल थे—धर्मेंद्र,

Nafisa Ali, Kangana Ranaut, Shiney Ahuja, Shilpa Shetty, Kay Kay Menon,
कोंकणा सेन शर्मा और इरफान खान। और भले ही फिल्म में कई तरह के कलाकार हों।
प्रेरणा के स्रोतों में एक ऐसा ट्रैक भी शामिल है जो बिली से चुराया गया है।
वाइल्डर की क्लासिक फिल्म, द अपार्टमेंट, लाइफ इन ए… मेट्रो, बेहद मनोरंजक है।
पतली परत।
भरपूर हास्य के बावजूद, मेट्रो में जीवन… कभी-कभी नीरस भी हो सकता है।
इसे एकतरफा प्यार की कहानियों की श्रृंखला के रूप में वर्णित किया गया है। मेरे पसंदीदा खंड में,
कोंकणा की श्रुति अपने बॉस (अश्विन मुशरन) से प्यार करती है, जो एक एक गुप्त समलैंगिक पुरुष। इसी बीच उसे अपना वैवाहिक विज्ञापन मिलता है।
मोंटी (इरफान एक थोड़े सनकी हास्य किरदार में) का संबंध थोड़ा अशिष्ट है।
उसे यह पसंद नहीं था। उसने मोंटी को अपनी छातियों को घूरते हुए पकड़ लिया, और बस यहीं बात खत्म। वह
उसका नाम उसकी सूची से हटा दिया गया। लेकिन मोंटी इतनी आसानी से हार नहीं मानता, और एक दृश्य में,
जब श्रुति बहुत परेशान दिखाई देती है, तो वह उसे अपने घर की छत पर ले जाता है।
ऑफिस की इमारत (दोनों अंततः एक ही ऑफिस में काम करने लगते हैं) और वे चिल्लाते हैं
अपनी सारी नाराजगी और शत्रुता को बाहर निकालने के लिए उसने जोर-जोर से आवाज लगाई।

यह एक शानदार दृश्य है, जिसमें भारत के दो महानतम अभिनेता, इरफान और कोनकोना के लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। लेकिन उस दृश्य की शूटिंग आसान नहीं थी।
स्क्रीन पर जितना नाटकीय दिख रहा था, उतना ही नाटकीय था। 'चीखने वाला दृश्य खत्म हो चुका था।
कोनकोना याद करते हुए कहते हैं, 'जल्दी से। इसमें ज्यादा कुछ नहीं था। सिवाय इसके कि...'
हम हंस रहे थे, मजाक कर रहे थे और सहज महसूस कर रहे थे। इसका बहुत सारा श्रेय जाता है
अनुराग ने भी ऐसा ही माहौल बनाया था।
हालांकि मोंटी की भूमिका कुछ अन्य पात्रों की तुलना में छोटी है, इरफ़ान इसका भरपूर फायदा उठाते हैं, पंजाबी में बात करने लगते हैं, और अंत में, जब
दूल्हे के वेश में, घोड़े पर सवार होकर, श्रुति का पीछा कर रहा है जबकि वह एक
पहले ऑटो में, और फिर लोकल ट्रेन में। इरफान के किरदार मोंटी की वह मुस्कान जो वह श्रुति को देता है।
गले मिलने से पहले महिलाओं के कंपार्टमेंट का दृश्य अनमोल होता है। मुझे याद है, बहुत पहले की बात है, जब 'लाइफ इन अ... मेट्रो' की शूटिंग अभी नहीं हुई थी, तब की बात है।
कोंकणा कहती हैं, 'एक समय ऐसा था जब इरफान यह करने वाले नहीं थे या उन्हें यकीन नहीं था।'
और मुझे याद है मैंने अनुराग से कहा था कि हम इरफान के बिना यह नहीं कर सकते। मैं
मैं लंबे समय से उनका बहुत बड़ा प्रशंसक रहा हूँ। जब 'लाइफ इन अ… मेट्रो' शुरू हुई, तब तक हम पहले से ही उनके प्रशंसक थे।
हम एक दूसरे को काफी अच्छी तरह जानते थे। और हम एक दूसरे के साथ बहुत सहज थे।'

लाइफ इन ए… मेट्रो के अलावा, दोनों ने कई फिल्मों में एक साथ काम किया - यूं होता तो क्या होता (2006), डेडलाइन: सिर्फ 24 घंटे (2006), आजा
Nachle (2007), Dil Kabaddi (2008), 7 Khoon Maaf (2011) and Talvar (2015).
कोंकणा कहती हैं कि जब उन्होंने इरफान और तब्बू को देखा तो उन्हें उनसे प्यार हो गया।
मकबूल। उस समय वह दोनों अभिनेताओं को नहीं जानती थी। यह स्थिति तब बदल गई जब
उन्हें इरफान के साथ एक फिल्म में भूमिका की पेशकश की गई थी। 'अगर इरफान कोई फिल्म कर रहे होते,
'आमतौर पर मैं ऐसा करती,' वह कहती हैं। कई बार अभिनेताओं के मन में कुछ संदेह भी होता है।
जब वे निर्देशक या पटकथा के बारे में अनिश्चित होते हैं। लेकिन अगर इरफान पहले से ही
जब वह किसी फिल्म के लिए साइन अप करती थी, तो वह अक्सर सोचती थी, 'अच्छा, चलो!'
(ठीक है, ठीक है), इरफ़ान ऐसा कर रहा है, तो ज़रूर कुछ अच्छा होगा।' कोंकणा
वह दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीत चुकी एक प्रख्यात अभिनेत्री हैं और कोई भी उन्हें पहचान सकता है।
उस अभिनेता की प्रतिभा का अंदाजा तो इस बात से ही लगाया जा सकता है कि वह उस पर कितना भरोसा करती है।
कोंकणा के अनुसार, इरफान कभी भी अपनी तकनीक का खुलासा नहीं करते और अक्सर ऐसा होता है कि
यह मानना असंभव है कि वह सचमुच स्क्रीन पर अभिनय कर रहा है। 'आप बस वह कहती हैं, 'किरदार पर विश्वास करो, तुम उस व्यक्ति पर विश्वास करोगे।' 'जब तुम

उस समय उनके साथ काम करते हुए, मुझे ऐसा लगता था कि यह सब उनके लिए बहुत सहज था।
इरफ़ान और कोंकणा एक और फिल्म में साथ काम करने वाले थे, जो संभव हो सकती थी
यह उनका सबसे महत्वपूर्ण सहयोग रहा है, एक आंशिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय परियोजना जो कि
मीरा नायर की फिल्म 'द नेम्सके' (2006) की अधिकांश शूटिंग अमेरिका में हुई थी। इरफान ने इस फिल्म में काम किया था।
पहले ही अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र का परीक्षण शुरू कर दिया गया था और यह एक अच्छा कदम होता।
कोनकोना के लिए भी ओपनिंग एक्ट किया गया था। लेकिन चीजें योजना के मुताबिक नहीं हुईं।

26 अरवा जनजली, ‘इरफान खान—अनेक यात्राओं का धनी व्यक्ति’, सोसाइटी, 3 अगस्त 2018,
http://societymag.co.in/article/cover-story/irrfan-khan---the-man-of-many-journeys/12228
27 कंचना सुग्गु, ‘“हासिल” सबके लिए नहीं है’, rediff.com, 16 मई 2003, https://www.rediff.com/movies/2003/may/16haasil.htm
28‘कलाकार होने के नाते, हम किसी का पक्ष नहीं लेते। हम सही का पक्ष लेते हैं: एक्सप्रेस अड्डा में विशाल भारद्वाज’
इंडियन एक्सप्रेस, 5 अक्टूबर 2018, https://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/as-artistes-we-take-no-sides-we-take-the-side-of-whats-right-vishal-bhardwaj-at-express-adda-5387186/
29. ‘मकबूल लोकप्रियता के मामले में सबसे आगे’, द हिंदू, 3 फरवरी 2004, https://www.thehindu.com/thehindu/mp/2004/02/03/stories/2004020300510400.htm

30‘□□□□□ □□□□ □□ □□□□□: □□□□□□□ □□ □□□□□’, □□□□□ □□□□□□□□, 28 □□ 2015,
https://www.youtube.com/watch?v=jbqPwgHucKA&t=120s
31 ‘□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□’, □□□□
□□, 30 □□□ 2016, https://www.indiatoday.in/india/story/irrfan-khan-questions-ramzan-fast-muslim-
□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ (17336-2016-06-30)
32'□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□', □□□□□, 24 □□ 2006, https://www.dnaindia.com/mumbai/report-il-□□□□□□□□-□□□□□-□□□□□□-□□□□-□□□□□-1031040

4

□□□□□□□ □□ □□□□□□ □ □□□ □□:

□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□

□□□□□□

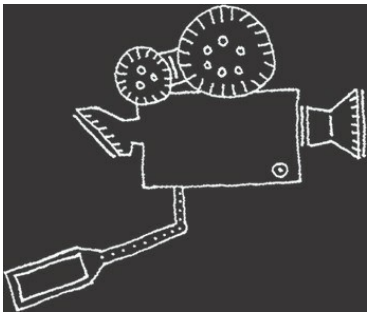

□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□

□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□ □□

हॉलीवुड हो, बॉलीवुड हो या फ्रांस, मैं इसे करने के लिए तुरंत तैयार हूँ। 33

हॉलीवुड दशकों से भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं के लिए एक बड़ा आकर्षण रहा है। अमेरिकी फिल्म उद्योग का एक ऐसा चुंबकीय आकर्षण है जिसका विरोध करना कुछ ही लोग मुश्किल से संभव पाते हैं। 1967 में, सत्यजीत रे लॉस एंजिल्स गए, इस उम्मीद में कि...
अपनी हॉलीवुड फिल्म 'द एलियन' को एक अमेरिकी स्टूडियो के साथ बनाएं। धन की कमी थी, और उन्होंने मार्लन ब्रैंडो, पीटर सेलर्स या स्टीव को कास्ट करने पर विचार किया।
उसमें मैकक्वीन थे। वह फिल्म कभी बनी ही नहीं। उनके करियर के चरम पर, आई.एस. जौहर से लेकर कबीर बेदी और शशि कपूर तक, भारतीय अभिनेताओं ने फिल्मों में काम किया।
अमेरिकी और अन्य यूरोपीय प्रस्तुतियाँ।
1999 में, न्यूयॉर्क में अपनी ब्रिटिश फिल्म 'ईस्ट इज़ ईस्ट' का प्रचार करते समय
सिटी में, दिवंगत अभिनेता ओम पुरी ने मुझे बताया कि उनका एक सबसे बड़ा अफसोस यह था कि वह...
डस्टिन हॉफमैन और रॉबर्ट डी नीरो को मिलने वाली भूमिकाएँ कभी नहीं मिलतीं। कम से कम ओम
पुरी को पश्चिम में कुछ छोटे-मोटे मौके जरूर मिले, जिनमें हॉलीवुड की दो फिल्में भी शामिल थीं।
माइक निकोल्स द्वारा निर्देशित फिल्में—वुल्फ (1994) और चार्ली विल्सन वॉर
(2007)। उन्होंने कुछ ब्रिटिश परियोजनाओं में भी अभिनय किया।

बाद में, कुछ भारतीय अभिनेत्रियों ने हॉलीवुड में तैरने का प्रयास किया।
स्लमडॉग मिलियनेयर की सफलता के बाद फ्रीडा पिंटो को काफी प्रसिद्धि मिली।
(2008)। लेकिन वुडी एलन की फिल्म 'यू विल' जैसी कई चर्चित फिल्मों के बाद...
मीट ए टॉल डार्क स्ट्रेंजर (2010), जूलियन श्नाबेल की मिराल (2010), रूपर्ट
वायट की राइज़ ऑफ़ द प्लैनेट ऑफ़ द एप्स (2011) और तरसेम सिंह की इमॉर्टल्स
(2011) में, उनका हॉलीवुड करियर अचानक रुक गया। ऐश्वर्या राय ने एक हॉलीवुड में काम करने के लिए सुनियोजित प्रयास किए गए, लेकिन फिर से, परिणाम मिले-जुले रहे। अधिकांश
जिन फिल्मों में उन्होंने अभिनय किया है—ब्राइड एंड प्रेजुडिस (2004) से लेकर द मिस्ट्रेस ऑफ तक
स्पाइसेस (2005) और द पिंक पैंथर 2 (2009) बॉक्स ऑफिस पर असफल रहीं। अंततः ऐश्वर्या की प्राथमिकताएं बदल गईं। उन्होंने शादी करने और नई शुरुआत करने का फैसला किया।
भारत में एक परिवार।
फिलहाल दो भारतीय अभिनेता हैं, प्रियंका चोपड़ा और इरफान खान।
जिन्होंने हॉलीवुड और अन्य क्षेत्रों में विभिन्न परियोजनाओं में एक साथ काम करने में सफलता हासिल की है।
बॉलीवुड। क्वांटिको के बाद प्रियंका का हॉलीवुड करियर अभी भी लिखा जा रहा है। दूसरी ओर, इरफान का हॉलीवुड में एक मजबूत करियर है, और बेशक, बॉलीवुड।

‘एक मुट्ठी में पूरा जीवन’34

जब मीरा नायर विलियम के रूपांतरण को पूरा करने के बीच में थीं मेकपीस थैकरे की वैनिटी फेयर (2004) में, उनकी सास की मृत्यु हो गई थी।
न्यूयॉर्क के एक अस्पताल में लापरवाही। नायर के ससुराल वाले युगांडा से थे, लेकिन वह
और उसके पति ने न्यू जर्सी में एक बर्फीले दिन उसकी सास को दफनाया। भारत वापस लौटते हुए, वैनिटी फेयर के अंतिम दृश्यों की शूटिंग के लिए, नायर ने शुरुआत की।
झुम्पा लाहिड़ी की किताब 'द नेम्सके' पढ़ने के बाद, मुझे लगा कि झुम्पा मेरे दुख को समझती हैं।
मीरा कहती हैं, 'इसने मुझे पूरी तरह से मोहित कर लिया - 70 के दशक की तीस साल की समृद्ध यादें।'
जिस कलकत्ता में मैं पला-बढ़ा, उससे लेकर आज के मैनहट्टन तक। उन्होंने उपन्यास के अधिकार हासिल कर लिए और अपनी दोस्त और नियमित ग्राहक से मदद मांगी।
सहयोगी सूनी तारापोरेवाला ने उपन्यास को पटकथा में रूपांतरित किया। जब यह
कास्टिंग की बात आई तो मीरा ने सबसे पहले बंगाली अभिनेताओं के बारे में सोचा। आशिमा गांगुली के लिए
इस किरदार के लिए उन्होंने शुरू में रानी मुखर्जी के बारे में सोचा था। उन्होंने उनसे संपर्क भी किया था।
कोंकणा सेन शर्मा ने पहले तो हां कह दी थी, लेकिन आखिरी मिनट में अपना नाम वापस ले लिया।
अपनी मां अपर्णा सेन द्वारा निर्देशित की जाने वाली फिल्म में अभिनय करने के लिए। अंततः

मीरा को बंगाली अभिनेताओं से परे सोचना पड़ा, और सौभाग्य से उन्हें तब्बू मिल गईं।
आशिमा का किरदार निभाएं।
हालांकि, कास्टिंग प्रक्रिया की शुरुआत से ही मीरा को इस बात का पूरा यकीन था।
एक बात। ‘इरफान हमेशा से अशोक गांगुली का किरदार निभाने वाले थे,’ वह कहती हैं। तब्बू
और इरफान बंगाली नहीं हैं, इसलिए मीरा ने उन्हें बंगाली संस्कृति में ढाल दिया।
उसके दोनों मुख्य किरदारों के बारे में सब कुछ, उनके हाथ के इशारे, जिस तरह से वे अपने पैरों को झुकाते हैं
सिर आदि ने समझदार दर्शकों को भी आश्वस्त कर दिया कि दोनों अभिनेता बंगाली।
अपने बंगाली उच्चारण को सही करने के लिए, इरफान ने झुम्पा के साथ काफी समय बिताया।
लाहिरी के पिता, जो रोड आइलैंड में रहने वाले एक सेवानिवृत्त विश्वविद्यालय लाइब्रेरियन थे,
क्वींस में रहने वाले बंगाली रेस्तरां मालिक और खानपान व्यवसायी शंकर, इरफान के ग्राहक बन गए।
बंगाली कोच। 'एक समय इरफान उस लहजे में इतना डूब गया था कि हमें मीरा कहती हैं, 'इसे वापस खींचना चुनौतीपूर्ण था।' 'एक भाषण देना चुनौतीपूर्ण था।'
यह प्रामाणिक भारतीय-बंगाली लहजा है, लेकिन पश्चिमी देशों के लोगों के लिए बिना सबटाइटल के भी समझने योग्य है।
हालांकि इरफान की पत्नी बंगाली हैं, फिर भी उन्हें विशेष बंगाली सीखनी पड़ी।
अपने किरदार को निभाने के लिए वाक्यों का इस्तेमाल करना पड़ता है।
'लेकिन वह कुशल है,' मीरा आगे कहती हैं। 'इसके विपरीत

अधिकांश भारतीय अभिनेताओं की तरह, इरफान वास्तव में बहुत मेहनत करते हैं। अगर उन्हें किसी मदद की जरूरत होती है, तो वे तुरंत मदद मांग लेते हैं।
उसे बैसाखियाँ दिखाई देती हैं, वह उन्हें पकड़ लेता है, फिर उन्हें परिष्कृत करता है और उन्हें एक अलग स्तर पर ले जाता है।'
झुम्पा लाहिड़ी का उपन्यास मूलतः गोगोल (द्वारा अभिनीत) की कहानी थी।
भारतीय-अमेरिकी अभिनेता काल पेन)—दूसरी पीढ़ी के बंगाली-
आशिमा और अशोक के पुत्र, एक अमेरिकी, अपने पिता द्वारा दिए गए नाम के बोझ तले दबा हुआ।
क्योंकि उनका मानना था कि निकोलाई गोगोल की कृति 'द ओवरकोट' की एक प्रति कभी उनके पास थी।
एक ट्रेन दुर्घटना में उनकी जान बचाई। 'हम सब गोगोल के ओवरकोट से निकले हैं।'
फिल्म में अशोक अपने नासमझ और नशे में धुत किशोर बेटे गोगोल से कहता है, 'एक
एक दिन तुम समझ जाओगे।’ यह फिल्म के सबसे मार्मिक दृश्यों में से एक है और
इसे अंत में भी दोहराया जाता है। इसे देखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इसे समझना असंभव है।
दृश्य में आंसू नहीं उमड़ेंगे।
सूनी और मीरा के कुशल निर्देशन में, यह फिल्म एक प्रेम कहानी भी बन गई।
कलकत्ता के एक युवा जोड़े, अशोक और आशिमा के बीच की कहानी, जो धीरे- धीरे विकसित हो रही है...
उनकी शादी और अमेरिका में उनका जीवन, जो उनका गोद लिया हुआ देश था।
मीरा ने मॉडलिंग की।

दो समान आत्माओं के बीच एक शांत प्रेम कहानी, जो उनके जीवन पर आधारित है।
उसके ससुराल वालों के बारे में टिप्पणियाँ।
द नेम्सके में, मकबूल के उनके हिंसक, मोहक किरदारों से प्रेरित होकर, इरफ़ान और तब्बू ने खुद को एक शांत दंपति के रूप में बदल लिया, जो उपनगरीय इलाके में रहते थे।
अमेरिका। अशोक और के बीच कुछ प्यारे और नाजुक दृश्य हैं।
अशिमा, जहां इरफान और तब्बू बिना बोले ही बहुत कुछ कह देते हैं। एक बार भी नहीं...
वे अपनी आवाज बुलंद करते हैं। दरअसल, अशोक को केवल एक ही बार थोड़ी सी नाराजगी होती है।
आशिमा अमेरिका में पहली बार कपड़े धो रही थी, और गलती से उसने उसमें कुछ डाल दिया।
उसने अपने स्वेटर ड्रायर में डाले और वो सिकुड़ गए। फिर वो अनमोल दृश्य है।
जब दोनों चुपचाप एक साथ अपनी आखिरी चाय पीते हैं, अशोक के आने से पहले वह क्लीवलैंड में अपनी शिक्षण नौकरी के लिए रवाना हो जाता है, और आशिमा को न्यू यॉर्क में पीछे छोड़ देता है।
जर्सी।
उस पीढ़ी को हॉलमार्क कार्ड या वैलेंटाइन डे के बारे में पता ही नहीं था।
मीरा कहती हैं, 'यह एक तरह का वीकेंड रोमांस था। वे बस एक साथ बैठे रहते थे।'
रसोई में चाय पीते समय, वे कुछ नहीं कहते थे। मैं इसे ही कहता था... मेरी अम्मी और दादाजी के सम्मान में एक प्रेम दृश्य, क्योंकि यही उनकी इच्छा थी।
चलेगा।

और वह आगे कहती हैं, 'उस दृश्य की शूटिंग करना बहुत ही शानदार अनुभव था क्योंकि वे लोग इतने प्यारे थे।'
वे शानदार अभिनेता हैं और चाय डालते समय, उसे हिलाते समय भी बहुत मजाकिया होते हैं।
हमने मीठी बातों पर ध्यान दिया और भावुक और उबाऊ होने से इनकार कर दिया। हमने दृश्य की रूपरेखा तैयार की थी, लेकिन बहुत ही ढीले ढंग से।
द नेम्सकेक की शुरुआत में एक खूबसूरत दृश्य फिल्माया गया है,
अशोक और आशिमा के बीच एक नाजुक प्रेम प्रसंग का दृश्य। इसके अलावा, ऐसे बहुत कम मौके हैं जब इरफान और तब्बू के किरदारों ने वास्तव में प्यार का इजहार किया है।
एक-दूसरे के लिए, लेकिन यह सब बहुत धीमी आवाज़ में होता है। कलकत्ता की यात्रा के दौरान,
अशोक और आशिमा विक्टोरिया मेमोरियल गार्डन से गुजरते हैं और वह पूछता है
उसने उससे पूछा कि उसने उससे शादी करने का फैसला क्यों किया। वह थोड़ा मजाक करती है, फिर उसकी कमीज पकड़ लेती है।
और पूछता है, 'क्या तुम चाहते हो कि मैं अमेरिकियों की तरह "आई लव यू" कहूँ?' और संक्षेप में
वह अपना चेहरा उसकी छाती में छिपा लेती है। और इरफान बेहद आकर्षक, लेकिन थोड़ा शर्मीला सा व्यवहार करता है।
मुस्कुराते हुए, वह बस इतना कहता है, 'हाँ'। यह एक अनमोल क्षण है जब दो पात्र संक्षेप में अपने कमजोर पक्ष को प्रकट करते हैं और वास्तव में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।
एक-दूसरे के लिए भावनाएँ। बाद में, ताजमहल की यात्रा के दौरान, आशिमा कहती हैं,
‘ज़रा सोचिए शाहजहाँ मुमताज़ से कितना प्यार करता होगा कि उसने यह बनाया।

उसके लिए।’ जिस पर अशोक जवाब देते हैं, ‘दूसरे पति भी अपनी पत्नियों से प्यार करते हैं।’
'आशिमा,' और इरफ़ान ने तब्बू का हाथ पकड़ लिया। 'सिर्फ़ वे ताज महल बनाने का खर्च नहीं उठा सकते।'
महल।’ अचानक गोगोल अपने माता-पिता के पास जाता है और आशिमा उसका हाथ खींच लेती है।
शर्मिंदा होकर दूर चले गए।
फिल्म में इरफान हमें कई दिल दहला देने वाले पल देते हैं, जिनमें शामिल हैं...
आखिरी बार हम अशोक गांगुली को तब देखते हैं जब वह एक पे फोन बूथ से अपनी पत्नी को फोन करते हैं।
क्लीवलैंड के एक अस्पताल में। मीरा अक्सर अन्य फिल्मों, कला से प्रेरित दृश्यों का उपयोग करती हैं।
कुछ रचनाएँ और क्लासिक तस्वीरें। फ़ोन बूथ में इरफ़ान की वह तस्वीर गैरी विनोग्रैंड की एक तस्वीर से प्रेरित। सेट डिजाइनर ने फोन बनाया।
उस तस्वीर की प्रतिकृति बनाने के लिए अस्पताल के गलियारे में एक बूथ बनाया गया। 'मेरा मानना है कि...'
मीरा कहती हैं, 'हाथों को दिखाना जीवन का प्रतीक है। इसलिए कैमरा आप वहां हैं और आप उसका जीवन देख रहे हैं।'
मीरा के अनुसार, इरफान के निर्देशन में काम करना किसी दोस्त के साथ काम करने जैसा था।
वह कहती हैं, 'वे मेरे चेहरे को देखकर बता सकते थे कि मैं शॉट लेने से खुश हूं या नहीं।'
उन्हें सबसे खूबसूरत दृश्यों में से एक की शूटिंग याद है जब अशोक और गोगोल और निकोला गोगोल कार में हैं और पिता उन्हें निकोला गोगोल के महत्व के बारे में समझाते हैं।

उसका बेटा। 'उसने वह दृश्य बहुत अच्छे से किया, लेकिन मैं उसे एक पिल्ले की तरह देख रहा था।'
after that,’ she says. ‘And he asked, “Kuch chahiye naa, tujhe (You need
something else, right)?” And I said, “Haan, halka sa ankh mein

ansoon,

मगर नीचे नहीं आना चाहिए (हाँ, आँखों में थोड़ा सा आँसू आ गया है, लेकिन आना चाहिए)
अपने गालों से नीचे मत लुढ़कना। और उसने कहा, "ठीक है, मीरा।"
मैं आमतौर पर अभिनेताओं से इस तरह बात नहीं करता ताकि वे आंसू बहाएं, खासकर
आंसू जो गिरते नहीं। और यही दृश्य हमें दूसरे टेक में मिला है।
इस दृश्य में कुछ बारीकियां जोड़ने की जरूरत थी। देखने में तो यह सहज लगता है, लेकिन मुझे यकीन है कि ऐसा नहीं था।'
कभी-कभी इरफान मीरा को चौंका भी देते थे, जैसे उस दृश्य में जब गोगोल वह अपनी प्रेमिका मैक्सिन (जैसिंडा बैरेट) को पहली बार अपने माता- पिता से मिलवाने लाता है।
समय। एक संक्षिप्त क्षण में, सामान्यतः शांत और काफी रूढ़िवादी व्यक्ति भी बदल जाता है।
अशोक गांगुली ने गोगोल की अमेरिकी गेंद पर प्रशंसा भरी नजर डाली।
प्रेमिका। सूनी ने इसे स्क्रिप्ट में नहीं लिखा था, और न ही मीरा ने।
मैंने इरफ़ान से इस तरह की किसी भी बात पर चर्चा की थी। तो वह सब इरफ़ान का ही काम था, उन्होंने बिना तैयारी के ही सब कुछ किया। अपनी गंभीर भूमिका में थोड़ा हास्य का पुट। 'उस संक्षिप्त स्पर्श ने दिल को छू लिया।'
मीरा कहती हैं, 'अशोके का गरिमापूर्ण बाहरी रूप। इसने दर्शकों को उनके व्यक्तित्व का एहसास दिलाया।'
भेद्यता।'

मीरा ने इरफ़ान के निर्देशों को समझने के तरीके के बारे में भी यह बात कही। 'आप बात करते हैं'
और आप एक शांत क्षण देखेंगे, जब वह बस इस बात पर विचार करता है कि उसे क्या करना है।
बनना। यह फटक से (तुरंत) जैसा नहीं था। हमेशा होता है
चिंतन। वह सेट पर लोकप्रियता की होड़ में नहीं है। तब्बू यह कर दिखाती है।
ऊपरी तौर पर वह अधिक सहजता से दिखती है। उसके पास अभिनय का कोई प्रशिक्षण नहीं है और यह...
अद्भुत। इरफान इसे अधिक शांत तरीके से करते हैं, लेकिन वह कभी गलती नहीं करते।
फिल्म 'द नेम्सके' की शूटिंग के दौरान इरफान पहली बार अमेरिका गए थे। और मीरा
फिल्म की तैयारी के दौरान उन्हें न्यूयॉर्क शहर आमंत्रित किया और उन्हें
टाइम्स स्क्वायर के एक होटल में। 'वह बिल्कुल अशोक गांगुली की तरह थे।'
वह एक प्यारे बच्चे की तरह था। ‘मैं तो पढ़ रहा हूँ यार’
सब कुछ)। मीरा को यह भी लगा कि इरफ़ान को मैनहट्टन के बीचोंबीच छोड़ना ठीक नहीं था।
अशोक गांगुली के किरदार में ढलने में उन्हें मदद मिली। 'हमने ऐसा नहीं किया।'
हम उसे खूब लाड़-प्यार करते हैं, उसे हर दिन अपने घर बुलाते हैं,’ वह कहती हैं। ‘हम उसे अपनी मर्जी से रहने देते हैं।
वहाँ। शंकर, जो खानपान का काम करता था, उसका सबसे करीबी दोस्त था। और हम चाहते थे कि वह वहाँ रहे।
उस अलगाव को समझें।

फिल्म 'द नेम्सके' का प्रीमियर स्की पार्क में आयोजित टेलुराइड फिल्म फेस्टिवल में हुआ।
सितंबर 2006 में कोलोराडो के पहाड़ों में। मैं फिल्म के प्रीमियर में मौजूद था।
मुझे याद है कि उस मार्मिक दृश्य में इरफान को अपने घर जाते हुए देखकर मेरी आंखों में आंसू आ गए थे।
बेटे के कमरे में उसे 'द ओवरकोट' की एक प्रति उपहार में देने के लिए।
उसके मन में एक तीव्र इच्छा है।
पिता अपने बेटे से जुड़ना चाहता है, उसे अपने सारे अनुभव बताना चाहता है।
इतने लंबे समय तक खुद को रोके रखने के बावजूद, वह असफल हो जाता है।
इरफ़ान के अशोक को जो अस्वीकृति महसूस होती है, वह...
दिल दहला देने वाला। वह शांत, असहाय है, और फिर हार मानने का फैसला करता है। वह दृश्य अभी भी दिल को छू जाता है।
जब भी मैं यह फिल्म देखती हूं, मेरा दिल टूट जाता है।
यह फिल्म अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफल रही और इसने 20 मिलियन डॉलर की कमाई की।
दुनिया भर में, जिसमें अकेले अमेरिका में 13.6 मिलियन डॉलर शामिल हैं। पश्चिमी आलोचकों ने प्रशंसा की।
फिल्म के लिए इरफान को एक महत्वपूर्ण नामांकन भी मिला—सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का नामांकन।
इरफ़ान को इंडिपेंडेंट स्पिरिट अवार्ड के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरुष अभिनेता का पुरस्कार दिया गया था। हालाँकि इरफ़ान यह पुरस्कार नहीं जीत पाए।
पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, उन्होंने कैलिफोर्निया के सांता मोनिका में समुद्र तट पर एक तंबू के नीचे आयोजित समारोह में भाग लिया। उन्होंने ब्रैड पिट सहित कई प्रसिद्ध अभिनेताओं को देखा।

और एंजेलीना जोली। वह जल्द ही एंजेलीना के साथ 'ए माइटी हार्ट' में काम करेंगे।
(2007)। उन्होंने डस्टिन हॉफमैन, फॉरेस्ट व्हिटेकर और फिलिप सेमोर को भी देखा।
दर्शकों में हॉफमैन मौजूद थे।
बाद में, भारत में एक प्रकाशन से बात करते हुए, इरफ़ान ने कहा, 'डस्टिन हॉफमैन बैठे थे'
मेरे ठीक सामने वाली पंक्ति में। लेकिन मैं उसे छूने की हिम्मत नहीं कर पाया।
मुझे अपना परिचय देना है। आप उन अभिनेताओं से कैसे संपर्क करते हैं जिनसे आप मिल चुके हैं?
आपने अपनी आधी जिंदगी प्रशंसा पाई है? शायद मुझे भी अब यह सीखने की जरूरत है।
हालांकि, चूंकि इरफान पश्चिम में अभी भी एक नया चेहरा थे, इसलिए अधिकांश आलोचकों ने मुश्किल से ही उनकी सराहना की।
फिल्म 'द नेम्सके' की समीक्षाओं में उनके नाम का उल्लेख किया गया था। भारत में, इरफ़ान खान
फिल्म देखने के बाद शर्मिला टैगोर से मुझे एक प्यारा सा संदेश मिला। ‘आप
'तुम्हें अपने माता-पिता का शुक्रिया अदा करना चाहिए जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया,' उसने लिखा।
हालांकि, एक व्यक्ति जो फिल्म से खुश नहीं था, वह इरफान का प्रशंसक था।
अपनी माँ। बॉम्बे में 'द नेम्सके' के प्रीमियर के बाद, जहाँ इरफ़ान जब वह अपनी माँ को अतिथि के रूप में लेकर आया, तो उसने उनसे फिल्म के बारे में उनकी राय पूछी।
मां ने पूछा कि फिल्म का निर्देशक कहां है। जब इरफान ने इशारा किया तो...

मीरा नायर, जो कुछ पास ही खड़ी थी, उसकी माँ ने कहा, 'बुला, उसको,' bula. Usko mera baccha hee mila tha maarne ke liye (Call her, call her.
क्या वह फिल्म में सिर्फ मेरे बेटे को मारने के लिए ही ढूंढ रही थी?’36 इरफ़ान आखिरकार गया और
उसने मीरा को बताया कि उसकी माँ ने क्या कहा था, और निर्देशक दिल खोलकर हँस पड़ा।

एक अभिनेता, कई यादगार भूमिकाएँ

फिल्म 'द नेम्सके' के प्रीमियर के दो साल बाद, मीरा नायर ने इरफान को दो बेहद ही अलग तरह की फिल्मों में कास्ट किया।
अलग-अलग लघु फिल्में। पहली फिल्म 'माइग्रेशन' थी, जिसे फिल्म निर्माता ने लिखा था।
जोया अख्तर और मीरा द्वारा निर्मित चार लघु फिल्मों में से एक एड्स जागो (2007) में से एक में उन्होंने काम किया था।
बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के लिए। मीरा ने माइग्रेशन का निर्देशन भी किया।
जबकि अन्य तीन फिल्मों का निर्देशन विशाल भारद्वाज, संतोष सिवान और फरहान अख्तर।
फिल्म 'माइग्रेशन' में इरफान एक ऐसे समलैंगिक व्यक्ति का किरदार निभाते हैं जो अपनी समलैंगिकता छुपाता है और जिसका एक साथी है - अर्जुन।
माथुर इमरान का किरदार निभा रहे हैं, जो एक युवा प्रेमी है। इरफान द्वारा अभिनीत अभय भी शादीशुदा है।

दिव्या (समीरा रेड्डी) के साथ, लेकिन दंपति के बीच शायद ही कभी यौन संबंध बनते हैं।
संयोग से दिव्या का अपने फ्लैट के बाहर काम कर रहे एक निर्माण मजदूर बिरजू (शाइनी आहूजा) के साथ यौन संबंध बन जाता है। 17 मिनट की इस फिल्म में दिखाया गया है कि असुरक्षित यौन संबंध किस प्रकार नुकसान पहुंचा सकते हैं।
एक समलैंगिक पुरुष (इमरान) अपने साथी (अभय) को एचआईवी वायरस संचारित कर सकता है।
उसकी पत्नी (दिव्या) निर्माण मजदूर को और अंततः उसकी पत्नी को।
नवजात शिशु।
यह पहली और एकमात्र बार था जब इरफान ने एक समलैंगिक व्यक्ति की भूमिका निभाई थी।
फिल्म 'माइग्रेशन' में बहुत कुछ समेटना था और समय बहुत कम था। चरित्रों को विकसित करने के लिए। इसलिए इरफान ने तुरंत ही उन विशेषताओं को प्रदर्शित किया और
एक ऐसे समलैंगिक व्यक्ति के हाव-भाव जो अपनी यौन पहचान छिपाने की कोशिश करता है, लेकिन हालात
अगर कोई उसके छोटे-छोटे हाव-भाव या उसकी आवाज के लहजे पर ध्यान दे तो यह बात स्पष्ट हो जाती है।
वह एक ऐसे समलैंगिक व्यक्ति की भूमिका निभा रहे थे, जो कई अन्य लोगों की तरह, एक मुखौटा पहने हुए है।
और बेचैनी,’ मीरा कहती हैं। ‘लेकिन वह हाव-भाव का अध्ययन कर रहा था, ज्यादातर मेरी तरह।
मैंने अपने आस-पास के कुछ समलैंगिक पुरुषों को देखा। हमारे आस-पास के कुछ लोग, उनमें से कुछ।
वे दिखावटी नहीं हैं और उनमें से कुछ हैं। महत्वपूर्ण बात उनकी भावना थी।

उसके लिए। वह किरदार पूरी तरह से छिपा हुआ था, वास्तव में व्यथित और क्रूर था।
उनकी पत्नी और उनके साथी को।
फिल्म 'माइग्रेशन' में शाइनी के बिरजू पर ध्यान केंद्रित किया गया है, लेकिन एक छोटी भूमिका में भी,
इरफ़ान कहानी पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। मीरा नायर ने इरफ़ान खान से वादा किया था कि एक
जिस दिन वह उसके साथ काम करने वाली थी, वह दिन सचमुच सच हो गया था। 2008 में दोनों ने जिस दूसरे छोटे प्रोजेक्ट पर काम किया, वह सेगमेंट था।
कई सितारों से सजी एंथोलॉजी, न्यूयॉर्क, आई लव यू। 'कोशर' नामक खंड में।
लेखक सुकेतु मेहता द्वारा लिखित 'वेजिटेरियन' में इरफान ने मनसुखभाई की भूमिका निभाई है
गुजराती जैन हीरा व्यापारी (एक ऐसी दुनिया जिसे सुकेतु अच्छी तरह जानता है—उसका परिवार)
वह कई गुजराती जैनियों को जानता है और उसके पिता हीरे का व्यापार करते हैं।
न्यूयॉर्क शहर के डायमंड डिस्ट्रिक्ट में वेस्ट 47 वीं स्ट्रीट से बाहर। उनका एकमात्र
कर्मचारी एक रूढ़िवादी यहूदी महिला है, रिफ़्का मालोन (जिसकी भूमिका नताली ने निभाई है)।
पोर्टमैन)। रिफ़्का की शादी होने वाली है, लेकिन ऑफिस में एक संक्षिप्त क्षण में
दोनों के बीच एक भावनात्मक जुड़ाव है—जब मनसुखभाई कल्पना करने लगते हैं
अगर वह भारतीय पारंपरिक विवाह समारोह में रिफ़्का से शादी कर सकता (हमने संक्षेप में

(नताली को भारतीय दुल्हन के रूप में देखें) या यहूदी रीति-रिवाज से शादी करें। इरफ़ान
वह एक रूढ़िवादी हसीदिक शादी में दूल्हा बनने की कल्पना भी करता है। जैनियों के गंजे होने के साथ-साथ रूढ़िवादी यहूदियों के गंजे होने के भी संदर्भ थे।
मीरा कहती हैं, 'महिलाएं अपने सिर मुंडवा रही हैं। लेकिन रूढ़िवादिता कुछ समय के लिए गायब हो जाती है।'
एक पल में ही वे एक-दूसरे के प्यार में पड़ जाते हैं, दोनों बराबर प्यार करते हैं।’ अभिनय करने वाले कलाकारों के बारे में
मीरा का कहना है कि चार दिन की शूटिंग के दौरान अपनी भूमिकाओं को निभाते हुए उन्होंने एक साथ बहुत अच्छा काम किया।
वे पेशेवर खिलाड़ियों की तरह थे। 'लेकिन ऐसा कुछ नहीं था कि वहां दो बड़े सितारे मौजूद हों।'
ऐसा कुछ नहीं है। ऐसे लोगों के साथ रहना अच्छा लगता है जो अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उत्सुक हों।
इस गहन संतोष के साथ स्वयं को रचनात्मक रूप से सशक्त बनाएं, यह जानते हुए कि इस पृथ्वी पर हमें यही करना है।
इरफ़ान के साथ काम करने के बारे में मीरा आगे कहती हैं, 'यह किसी चीज़ को और बेहतर बनाने जैसा है।'
एक शानदार वाद्य यंत्र, क्योंकि वह अन्यथा हमेशा सक्रिय रहता है। इरफान को इसमें बहुत आनंद आता है।
वह जो करता है। ऐसा नहीं है कि उस पर कोई दबाव है या उसे पढ़ाई करनी पड़ती है। मेरा मतलब है कि यह सब कुछ उसका अपना है।
लेकिन यह बात उनमें झलकती नहीं है। ऐसा कुछ भी नहीं है जहाँ एक अभिनेता
would say, ‘Kya saala, karna hai mujhe kaam (What, man, I have to work).’

त्रुटिहीन प्रस्तुति की एक उत्कृष्ट कृति

द नेम्सके और माइकल में इरफ़ान का दमदार अभिनय
विंटरबॉटम की फिल्म ए माइटी हार्ट (2009) को एक अमेरिकी अभिनेता ने देखा।
डैन फुटरमैन। डैन ने फिल्म 'ए माइटी' में अमेरिकी पत्रकार डैनियल पर्ल की भूमिका निभाई थी।
हार्ट (फिल्म के बारे में थोड़ी देर बाद और बात करेंगे) और उन्होंने एक की भूमिका भी निभाई।
एचबीओ सीरीज़ इन ट्रीटमेंट (2010) के कार्यकारी निर्माता, जो एक रीमेक है
इजरायली शो, बेतिपुल (2005)।
एचबीओ शो के सात एपिसोड में इरफान की भूमिका के अलावा, और भी कई बातें थीं।
द नेम्सकेक के साथ एक और संबंध। इन ट्रीटमेंट टीम ने नियुक्त किया था।
झुम्पा लाहिड़ी सलाहकार के रूप में थीं। इरफान के साथ वाले सेगमेंट लिखे गए थे।
नाटककार और पुलित्जर पुरस्कार के नामांकित व्यक्ति, एडम रैप, जिन्होंने गहराई से अध्ययन किया
बंगाली संस्कृति को समझने के लिए झुम्पा के अनुभवों और स्मृतियों का सहारा लिया गया है।
न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में रैप ने इरफान के बारे में कहा, 'मैं...चाहता था...'

एक ऐसे अभिनेता के लिए लिखना जिसमें हास्यबोध और गहरी समझ हो। मुझे सचमुच लगता है
इरफ़ान जीवित अभिनेताओं में से एक महानतम हैं।
अमेरिकी और इजरायली दोनों शो में, एक थेरेपिस्ट (गैब्रियल बायरन) इरफ़ान (एक अमेरिकी सीरीज़) अपने ग्राहकों से आधे घंटे के सेशन के लिए मिलते हैं।
सुनील सान्याल की भूमिका, जो एक अधेड़ उम्र के बंगाली विधुर हैं, जिन्होंने हाल ही में
अमेरिका पहुंचे और अपने बेटे (न्यूयॉर्क स्थित अभिनेता सम्राट) के साथ रहने लगे।
चक्रबर्ती) और उनकी अमेरिकी पत्नी के निधन से सुनील अवसादग्रस्त है। न केवल वह अपनी पत्नी के प्रति संवेदनशील है, बल्कि उसे अपने बेटे के प्रति अपने लगाव से निपटना भी मुश्किल हो रहा है।
बदल गया है, और खासकर, उनकी बहू की अमेरिकी जीवनशैली में बदलाव आया है।
इस शो में इरफान ने दिल दहला देने वाला प्रदर्शन किया है, जिसे पहली बार एक के रूप में प्रस्तुत किया गया था।
बिखरे बालों वाला, उदास दिखने वाला व्यक्ति जो काफी शांत भी है। हालाँकि,
समय बीतने के साथ-साथ वह थेरेपिस्ट डॉ. पॉल वेस्टन (गैब्रियल बायरन) के साथ अधिक सहज महसूस करने लगता है।
इरफान ने खुद यह बात कही है कि यह उनके द्वारा निभाई गई सबसे कठिन भूमिका थी।
न्यूयॉर्क टाइम्स से बात करते हुए उन्होंने कहा, 'किरदार में भावनात्मक जुड़ाव होना जरूरी है।
इसकी ज़रूरत थी, और शुरू से ही मुझे लग रहा था, "मैं इसमें नाकाम रह जाऊँगा। मैं कहाँ पहुँचूँगा?"

क्या मैं अपने जीवन से इन चीजों का उदाहरण लेता हूँ? मुझे इनमें कोई अनुभव नहीं है।
और वे बेहद तीव्र थे।’38
इसके अलावा, शो में लंबे-लंबे शॉट्स थे, लगभग 14 मिनट के प्रत्येक शॉट, और इसलिए,
एनएसडी से स्नातक होने के बाद पहली बार इरफान को लंबे पाठ याद करने पड़े।
स्क्रिप्ट के कुछ अंश। इससे उसे अपने अध्ययन के दिनों की याद आ गई। परीक्षाएँ। यह उनके लिए इतनी बड़ी चुनौती बन गई कि एक रात उन्होंने फोन किया
नसीरुद्दीन शाह सलाह के लिए भारत में हैं।
नसीर के अनुसार, फोन पर हुई बातचीत कुछ इस तरह थी। ‘इरफान ने फोन किया था।
and said, “Mere char-char page ke dialogues hain. Kaise memorize karoonga? Aap kaise yaad karte ho?” Maine kaha, “Bhaiya time kitna hai
aapke pass?” He said, “Ek raat hai.” “Phir to yeh raat to gayee tumharee.
Sona wona bhool jao. Raat bhar baith kar yaad karo. Koi aur tareeka nahi
hai. Koi jadoo ki pudiya nahi hai mere pass. Main hazaar dafa padhta hoon
tab yaad hota hai. Is raat jitni baar padh sako padh lo.”’ (‘Irrfan called and
उन्होंने कहा, “मेरे पास चार पन्नों जितने लंबे संवाद हैं। मैं उन्हें कैसे याद करूं? कैसे?”
मैंने उनसे पूछा, "क्या आप इतने लंबे संवाद याद कर लेते हैं? इसमें कितना समय लगता है?"

“तुमने किया है?” उसने कहा, “सिर्फ़ एक रात।” “तो फिर वो रात भी बीत गई। भूल जाओ।”
सोने जा रहे हो तो, पूरी रात जागकर इसे याद कर लो। इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।
मेरे पास कोई जादुई तरकीब नहीं है। मैं संवादों को हज़ार बार पढ़ता हूँ, तभी मुझे समझ आता है।
मैं इन्हें याद कर सकता हूँ। इसलिए आज रात जितना हो सके संवाद पढ़ने की कोशिश करें।
जितनी बार हो सके उतनी बार।
नसीर आगे कहते हैं, 'और उन्होंने उम्मीदों पर खरा उतरते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया। शो में उनका अभिनय बहुत अच्छा है।'
इरफ़ान के साथ काम करना, खासकर उनके बंगाली उच्चारण को निखारना, एचबीओ के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी।
मैंने अभिनेता के दोस्त और निर्देशक आदित्य भट्टाचार्य को काम पर रखा। 'मेरे कागजात'
अभिनय प्रशिक्षक ने कहा, जो कि बहुत अजीब है, क्योंकि आप अभिनय प्रशिक्षक नहीं हो सकते।
आदित्य बताते हैं, 'इरफान के कोच।' उन्होंने इरफान के होटल के कमरे में साथ में समय बिताया।
टाइम्स स्क्वायर में, अभिनेता शो के लिए अपने संवाद याद करते थे। जल्द ही आदित्य को एहसास हुआ कि सुनील सान्याल के किरदार का अंधकारमय पहलू
इरफ़ान पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। 'मैं उसका दोस्त हूँ, लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैं लगभग
वह पत्नी जिसे पेय पदार्थ छिपाने पड़ते थे, यह सुनिश्चित करना पड़ता था कि वह समय पर सो जाए।
आदित्य आगे बताते हैं, रात में कई बार जब आदित्य वापस लौट रहे होते थे।

जहां वह रह रहा था, वहां से वापस इरफान के साथ रहने के लिए उसके मन में आधा-अधूरा विचार आता था।
उन्होंने उस समय बॉम्बे में मौजूद सुतापा सिकदर को फोन करके बताया कि उन्हें इरफान की सेहत की चिंता है।
उन्होंने आगे कहा, 'मुझे सचमुच उनके लिए चिंता हो रही थी। एक अभिनेता में एक नाजुकता होती है और हम
उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि उनके कार्यों का उन पर कितना असर पड़ता है।
इसमें कोई हैरानी नहीं कि इरफान ने अनुपमा चोपड़ा को एक इंटरव्यू के दौरान बताया था कि जब
शो खत्म होते ही वह जोर से चिल्लाया, मानो उसने विश्व कप जीत लिया हो। 39
एक एपिसोड में इरफान के साथ काम करने से सम्राट चक्रबर्ती को एक अलग ही अनुभव मिला।
अभिनेता और उनकी कार्यशैली को देखने का मौका मिला। 'जब हम बाहर होते थे,
सम्राट कहते हैं, 'ब्रेक लेकर वह अपने किरदार से बाहर निकलकर मजाक कर सकते थे।'
लेकिन जब वह सेट पर आता और अपना ब्लेज़र पहनता, तो उसका शरीर
भाषा बदल जाती। उसके चलने का तरीका, बैठने का तरीका, सिगरेट बनाने का तरीका,
वह समाधि की अवस्था में, ध्यान में, अपनी प्रक्रिया में लीन रहता था। वह अपने कान को छूने का एक दिलचस्प इशारा करता था, जो कि
वह आगे कहते हैं, 'अमेरिका में यह आम है। वह जानता है कि ऐसा कैसे करना है, अपनी रचना करके।' '
वह हर टेक में किरदार को प्रामाणिक और स्वाभाविक बनाए रखते थे।
रुको और दूसरी तरफ देखो।

फिर ऐसे भी मौके आए जब सम्राट इरफान को आसपास की जगहें घुमाने के लिए बाहर ले गए।
न्यूयॉर्क शहर। दोनों के बीच बंगाली कनेक्शन के कारण घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ था - इरफान का
उनकी पत्नी बंगाली थीं। इसलिए उन्होंने अपने सह-कलाकार को 'शमरात' कहकर बुलाना शुरू कर दिया। उन्होंने एक
पब्लिक थिएटर में नाटक देखा, शहर के अलग-अलग हिस्सों में खाना खाया और यहाँ तक कि
वे देर रात टाइम्स स्क्वायर में घूम रहे थे। और उनकी एक गुप्त भाषा थी।
एक साथ। 'वह सड़क पर पड़ा कचरा देखता और हिंदी में कुछ बुदबुदाता, “यहाँ बहुत गंदगी है।” सेट पर भी, वह स्क्रिप्ट सुपरवाइजर की ओर देखता था।
और पूछता, “ये क्या कह रहा है?” कभी-कभी वह
शिकायत यह थी कि बहुत सारी लाइनें थीं।
द न्यू यॉर्क टाइम्स में लिखते हुए, एलेसांद्रा स्टेनली ने सुनील (इरफान के) को
(किरदार) श्रृंखला का 'सबसे दिलचस्प मरीज'। उन्होंने आगे कहा, 'इससे मदद मिली कि
शोकग्रस्त भारतीय प्रवासी की भूमिका में इरफान का अभिनय कुशल और प्रभावशाली है।
एक पराई संस्कृति में अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। आदित्य भट्टाचार्य को कुछ यादगार घटनाएं याद हैं।
इरफ़ान। एक दिन दोनों एक मशहूर रेस्टोरेंट में ब्रंच कर रहे थे।
निर्माता लेस्ली होलेरन के साथ न्यूयॉर्क शहर (द साइडर हाउस रूल्स, 1999)
और चॉकलेट, 2000)। यह डैनी की अपार सफलता के एक साल बाद की बात है।

बॉयल की फिल्म 'स्लमडॉग मिलियनेयर' के बाद हर कोई इरफान से मिलना चाहता था।
अचानक इरफान ने आदित्य को कोहनी मारी। उसने देखा कि अभिनेता मार्क रफ़ालो
वह बगल वाली मेज पर बैठा था। लेकिन वह लोगों के एक बड़े समूह के साथ वहाँ था।
शायद उनका परिवार। इरफान ने आदित्य को बताया कि वह मार्क के बहुत बड़े प्रशंसक थे और
किसी तरह परिचय चाहता था।
मैंने लेस्ली से पूछा कि क्या वह उसे जानती है, और उसने कहा कि वह जानती है, लेकिन उसे ऐसा महसूस नहीं हुआ।
आदित्य कहते हैं, 'जैसे मार्क के पास जाकर बात करना। उसने कहा कि यह ठीक नहीं लग रहा है। लेकिन मैं
इरफ़ान को यह सोचते हुए भी देखा जा सकता है, "हेलो तो बोलते हैं (कम से कम कहते तो हैं)"
नमस्ते)।"'
जब हम जा रहे थे, इरफान निराश दिख रहा था, लेकिन फिर कुछ हुआ।
आदित्य आगे कहते हैं, 'अविश्वसनीय घटना घटी। मार्क ने उसे देखा, अपना हाथ आगे बढ़ाया और...'
उन्होंने कहा, “अरे यार, मुझे तुम्हारा काम बहुत पसंद है।” और इरफान को शायद चमकती हुई रोशनी दिखाई दी होगी।
भर बर।'
एक और दिन आदित्य और इरफान मैनहट्टन से ब्रुकलिन तक टैक्सी से गए। जहां शो की शूटिंग हो रही थी। दोनों टैक्सी में बैठ गए और बातें करने लगे।
आदित्य ने जब रियर मिरर में ड्राइवर की आंखें देखीं, तब उसे हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाएं आती थीं।
मानो वह उन दोनों को देख रहा हो।

जब हम नीचे उतरे—यह कोई सस्ता सफर नहीं था—और इरफान किराया देने गया, तब
आदित्य बताते हैं, 'ड्राइवर ने पैसे लेने से इनकार कर दिया।' वह एक पाकिस्तानी ड्राइवर था।
उन्होंने इरफान को गले लगाया। उन्होंने उर्दू में इरफान से कहा, "तुम्हारे पास जो कुछ भी है उसके बाद..."
आपने हमें जो खुशी उपहार में दी है, उसके बदले मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता।
उस समय न तो कोई सेल्फी ली गई और न ही ऑटोग्राफ। बस यही हुआ। इरफान ने कहा,
“ये वो चीजें हैं जो इसे सार्थक बनाती हैं।” और तभी मुझे यह बात समझ में आई:
हम जो करते हैं, खासकर अभिनेता जो करते हैं, उसकी शक्ति।

एंजेलीना और इरफान

द नेम्सकेक के एक साल बाद, इरफान ने दो हॉलीवुड प्रोजेक्ट्स में अभिनय किया, दोनों
भारत से संबंध रखने वाली कंपनियों में से पहली थी दार्जिलिंग लिमिटेड (2007), जिसके निदेशक थे।
वेस एंडरसन की तीन भाइयों की मनमोहक कहानी, जो कमोबेश एक-दूसरे से अलग-थलग हैं।
(एड्रियान ब्रोडी, जेसन श्वार्ट्जमैन और ओवेन विल्सन द्वारा अभिनीत) एक
अपनी मां (एंजेलिका हस्टन) की तलाश में भारत में एक साहसिक यात्रा।

इरफ़ान ने एक ग्रामीण की संक्षिप्त भूमिका निभाई, जिसकी बेटी दुर्घटना में डूब जाती है।
और दोनों भाई उस छोटी बच्ची के अंतिम संस्कार में शामिल होते हैं।
फिल्म में इरफान का कोई संवाद नहीं है, हालांकि उनका अभिनय बेहद प्रभावशाली है।
प्रभावी। उनकी भूमिका इतनी छोटी है कि आश्चर्य होता है कि उन्होंने काम क्यों किया होगा।
इस फिल्म के बारे में। लेकिन यह भी सच है कि इरफान अपने करियर के शिखर पर पहुँचने वाले थे।
हॉलीवुड में, और निश्चित रूप से कुछ कास्टिंग एजेंटों और निर्माताओं ने उन्हें नोटिस किया होगा, खासकर अमेरिकी बाजार में द नेम्सके की सफलता के बाद।
वह ऐसे दौर में था जहाँ किसी भी तरह का एक्सपोजर उसके लिए फायदेमंद था और उसने निश्चित रूप से इसका लाभ उठाया।
दार्जिलिंग लिमिटेड की भूमिका स्वीकार करना सही कदम है।
एक इंटरव्यू में उन्होंने अपने रोल के बारे में कहा, ‘वेस ने मेरे लिए एक छोटा सा रोल लिखा था।’
और मुझे उनकी फिल्म का हिस्सा बनकर बेहद खुशी हुई।
दार्जिलिंग लिमिटेड की रिलीज से कुछ महीने पहले, इरफान ने एक भूमिका निभाई थी।
माइकल विंटरबॉटम की फिल्म 'ए माइटी हार्ट' में एक महत्वपूर्ण सहायक भूमिका,
वॉल स्ट्रीट जर्नल के साउथ के अपहरण और हत्या की कहानी
एशिया ब्यूरो प्रमुख, डैनियल पर्ल। यह उनके द्वारा लिखित पुस्तक पर आधारित था।
इरफ़ान की विधवा, मारियान पर्ल। इरफ़ान को एंजेलीना जोली के बाद तीसरी बिलिंग मिली।

(मैरियन पर्ल) और डैन फुटरमैन (डेनियल पर्ल की भूमिका निभा रहे हैं, लेकिन ज्यादातर
अतीत की यादें)।
ए माइटी हार्ट 9/11 के बाद बनी फिल्मों की त्रयी की तीसरी फिल्म होगी।
माइकल विंटरबॉटम ने इसका निर्देशन किया था। पहली फिल्म, इन दिस वर्ल्ड (2002), में कहानी को दिखाया गया था।
पाकिस्तान के एक शरणार्थी शिविर से दो अफगान लड़कों की हताश यात्रा ब्रिटेन; जबकि द रोड टू ग्वांतानामो (2006) युवा ब्रिटिश लोगों के बारे में थी।
ग्वांतानामो बे में अमेरिका द्वारा कैद किए गए मुसलमान, जो यात्रा करने के बाद...
पाकिस्तान और अफगानिस्तान।
फिल्म का अधिकांश भाग पाकिस्तान के कराची और उसके आसपास के इलाकों में फिल्माया गया है (वास्तव में फिल्म की शूटिंग यहीं हुई थी)। पुणे में फिल्माई गई इस फिल्म का निर्माण ब्रैड पिट की प्लान बी एंटरटेनमेंट ने किया है।
उन्होंने अपनी पूर्व पत्नी जेनिफर एनिस्टन के साथ मिलकर जो कंपनी शुरू की थी, 'ए माइटी हार्ट', वह एक कंपनी है।
साज़िश, कुछ सटीक जांच और अंत में, एक सशक्त कहानी।
11 के आतंकवादी हमले के तुरंत बाद हुई त्रासदी ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया।
सितंबर 2001। एंजेलीना ने एक बेहद गर्भवती मारियान पर्ल की भूमिका निभाई, उनके साथ
फ्रांसीसी पत्रकार के व्यक्तित्व को, जिसमें उनका विशिष्ट उच्चारण भी शामिल है, ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करें।
इरफ़ान ने कैप्टन का किरदार निभाया, जो एक रहस्यमय पाकिस्तानी सैन्य खुफिया अधिकारी था।

जो मैरिएन और डेनियल पर्ल के दोस्त, भारतीय के प्रति सहानुभूति रखने लगे थे।
उस समय कराची में रह रही अमेरिकी पत्रकार असरा नोमानी।
डैनियल के गायब होने से पहले पर्ल्स, असरा के मेहमान थे। कैप्टन के पास एक
फिल्म में उनकी दमदार उपस्थिति है, लेकिन वास्तविक जीवन में इस रहस्यमय व्यक्ति के बारे में बहुत कम जानकारी है।
आदमी।
फिल्म में इरफान का परिचय सूक्ष्म तरीके से कराया गया है। डेनियल के बाद...
कई अधिकारियों के लापता होने की सूचना मिली है, जिनमें कुछ पाकिस्तानी हैं, लेकिन अमेरिकियों की संख्या अधिक है।
वे आसरा नोमानी के घर पहुंचते हैं। सबसे पहले हम इरफान को कार से बाहर निकलते हुए देखते हैं।
आसरा के घर के बाहर। छोटे बालों और मूंछों के साथ, वह एक पाकिस्तानी गुप्त पुलिस अधिकारी। फिर, कुछ मिनट बाद, सबके बीच में। घर के अंदर मची अफरा-तफरी के बीच, वह मारियान पर्ल को नमस्कार करता है। 'आप कौन हैं?' वह पूछती है, और वह जवाब देता है, 'मैं जावेद हबीब, एसएसपी, सीआईडी हूं।' इस स्तर पर,
जब तक आपको यह पता न हो कि इरफान कितने बड़े स्टार हैं, तब तक आप यह नहीं बता सकते कि इस आदमी में कितनी बड़ी प्रतिभा है।
फिल्म में उनकी भूमिका बहुत कम है। वे फिल्म के बाकी किरदारों की भीड़ में एक छोटे से किरदार की तरह लगते हैं।
अन्य श्वेत अमेरिकी जो लगातार असरा के घर आते रहते हैं।
लेकिन इरफ़ान का किरदार—जिसे हमेशा कैप्टन कहा जाता है—धीरे-धीरे विकसित होता है।
महत्व के लिहाज से। एक बार जांच शुरू हो जाए, तो आपको पता चल जाता है कि इरफान का कप्तान किस स्थिति में है।

[illegible]
trying to track a phone call. ‘Arre hamare pass waqt nahi hai, behenc**d
(illegible), [illegible]
[illegible]
[illegible]
‘[illegible],’ [illegible]42 ‘[illegible]

वह व्यक्ति को लेकर बहुत पैनी नजर रखता है और उसमें उन तत्वों की तलाश करता है जिनकी उसे जरूरत होती है।
उन्हें किरदार ढूंढने का काम सौंपा गया है। इसलिए, कास्टिंग में ही उनका आधा काम हो चुका है, और
शूटिंग के दौरान, क्योंकि वह डिजिटल वीडियो कैमरा से शूट करता है, इसलिए कोई समस्या नहीं होती।
समय की पाबंदी के बावजूद, आप चीजों को अपने हिसाब से ढाल सकते हैं। और वह आपको इसकी अनुमति देता है।
बहुत कुछ तात्कालिक रूप से करो।'
एक अन्य साक्षात्कार में इरफान ने माइकल विंटरबॉटम की शैली के बारे में विस्तार से बताया।
फिल्म की शूटिंग के दौरान। 'सीन खत्म होने के बाद वह एक बार भी "कट" नहीं बोलते थे!'
वह अभिनेताओं के कुछ नया जोड़ने का इंतजार करता था। तब तक
दृश्य की शूटिंग हो चुकी है, एक अभिनेता के रूप में आपने लगभग पटकथा को फिर से लिख दिया है।
कुछ अभिनेताओं को तब चुनौती का सामना करना पड़ सकता है जब निर्देशक उनकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता।
लेकिन इरफान के लिए यह एक राहत की सांस थी। उन्होंने आगे कहा, 'मुझे यह बहुत पसंद आया।'44
'अभिनेता संवादों पर निर्भर करते हैं, आप जानते हैं, वे पटकथा में लिखी बातों पर निर्भर करते हैं।'
लेकिन कोई सुरक्षा जाल नहीं है। असल में, यह मुक्तिदायक था। क्योंकि यहीं पर
आप किरदार से जुड़ने लगते हैं क्योंकि आपको हर समय सतर्क रहना पड़ता है।'
जब इरफान इस भूमिका की तैयारी कर रहे थे, तब स्टूडियो ने उनके लिए कुछ व्यवस्था की थी।

मैंने असली कप्तान से फोन पर बात की। हमने थोड़ी देर बात की, लेकिन लगभग
मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह इस स्थिति में असहज महसूस कर रहा हो... उससे बात करने में।
कोई ऐसा व्यक्ति जो गुप्त सेवा में हो।’45 अंततः इरफान ने मारियान पर भरोसा किया
पर्ल की किताब और कैप्टन तथा उस पूरे दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम पर उनका दृष्टिकोण।
ए माइटी हार्ट का प्रीमियर मई 2007 में कान फिल्म फेस्टिवल में हुआ था।
कुछ ही साल पहले, इरफान अश्विन कुमार के साथ कान्स गए थे और उन्होंने कहा कि एक दिन वह महोत्सव में वापस आएंगे और रेड कार्पेट पर चलेंगे।
अपनी खुद की फिल्म के साथ। उन्होंने चार साल बाद उस वादे को पूरा किया जब उन्होंने
माइकल विंटरबॉटम और उनकी सह-कलाकार एंजेलीना के साथ कान पहुंचे। जोली, डैन फूटरमैन और आर्ची पंजाबी।
फिल्म 'ए माइटी हार्ट' अक्टूबर 2007 में भारत में रिलीज हुई थी। लगभग उसी समय
इरफान की एनएसडी की सहपाठी मीता वशिष्ठ बॉम्बे में एक नए फ्लैट में शिफ्ट हो गई थीं।
जब मीता का नया फ्रिज अखबार में लिपटा हुआ आया, तो उसने उसमें एक
उस पर फिल्म का विज्ञापन था, साथ ही इरफान और एंजेलिना की तस्वीर भी थी। 'मैं
मीता कहती हैं, "मुझे याद है कि मैंने सोचा था, 'ठीक है, उसने यह कर दिखाया।'"
ए माइटी हार्ट और दार्जिलिंग लिमिटेड दोनों ही ऐसी परियोजनाएं थीं जो

भारत में कास्टिंग एजेंटों के माध्यम से इरफान से संपर्क हुआ। उनके प्रभावशाली प्रदर्शन ने उन्हें काफी प्रभावित किया।
उनके नाम का उनके पास आने वाले काम में निश्चित रूप से बहुत बड़ा योगदान था।
उन्हें भूमिकाओं के लिए ऑडिशन नहीं देना पड़ा, लेकिन उन्होंने अभी तक सक्रिय रूप से काम शुरू नहीं किया था।
अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं की तलाश करें। लेकिन एक और परियोजना के साथ यह सब बदलने वाला था।
वह फिल्म जो उन्हें ऑफर की जाने वाली थी—एक देखने में छोटी सी फिल्म जो
इसने सभी की उम्मीदों को पार करते हुए ऑस्कर में आठ पुरस्कार जीतकर धूम मचा दी।
स्लमडॉग मिलियनेयर नाम की एक फिल्म थी।

Jai Ho!

ब्रिटिश निर्देशक डैनी बॉयल ने एक नवोन्मेषी निर्देशक के रूप में अपनी पहचान बनाई थी।
शैलो ग्रेव (1994) से लेकर कल्ट फेवरेट तक की फिल्मों के साथ। ट्रेनस्पॉटिंग (1996), ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट (बीएफआई) की रैंकिंग में 10 वें स्थान पर है।
बीसवीं सदी की शीर्ष 100 ब्रिटिश फिल्मों की सूची। वह पहले ही बना चुके थे

सात फिल्मों में काम करने के बाद उन्हें स्लमडॉग मिलियनेयर की पटकथा सौंपी गई, जो भारतीय विदेश सेवा अधिकारी विकास स्वरूप के उपन्यास 'क्यू एंड ए' पर आधारित थी।
यह कहानी पूरी तरह से भारत में घटित होती है, एक ऐसा देश जहां डैनी ने अब तक यात्रा नहीं की थी।
स्लमडॉग मिलियनेयर बनाते समय, जो गरीबी से अमीरी तक की एक कहानी है, जिसमें रोमांस भी शामिल है,
अपराध और ढेर सारे संगीत के बीच, डैनी ने एक अनछुए क्षेत्र में कदम रखा—
लोकप्रिय हिंदी सिनेमा, उसकी भाषा और लोकाचार को अपने संगीत से जोड़ने का प्रयास करते हुए
ट्रेनस्पॉटिंग जैसी फिल्मों से मशहूर हुई सिनेमा की यह शैली, जहां तेज गति से चलने वाले दृश्य दिखाए जाते हैं।
कई बेसहारा लोगों की कहानी में कैमरावर्क भी एक किरदार बन गया। युवा नशाखोर। और उन्होंने यह काम ए.आर. रहमान की अति-ऊर्जावान शैली का उपयोग करके किया।
असली साउंडट्रैक।
स्लमडॉग मिलियनेयर आशा और नए भारतीय के बारे में है, जो...
उदारीकरण और हर हाल में किए जा सकने वाले सकारात्मक रवैये ने मध्यम वर्ग को भी ऊर्जा प्रदान की है।
और देश के निचले वर्गों को दर्शाती है। यह फिल्म एक गरीब मुस्लिम की कहानी बयां करती है।
किशोर जमाल मलिक (देव पटेल द्वारा अभिनीत, जो उस समय एक अज्ञात किशोर थे)
ब्रिटेन के टेलीविजन अभिनेता ने बड़ी रकम जीती—20 मिलियन रुपये टीवी शो 'हू वांट्स टू बी अ मिलियनेयर?' का भारतीय संस्करण। फिल्म का कलाकारों में अनिल कपूर एंकर की भूमिका में थे, साथ ही एक खूबसूरत भारतीय मॉडल भी शामिल थीं।

और टीवी होस्ट फ्रीडा पिंटो और इरफान खान, एक बार फिर एक की भूमिका निभा रहे हैं।
एक कठोर और गुस्सैल पुलिस इंस्पेक्टर खेल में संभावित धोखाधड़ी की जांच कर रहा है।
शो। टेलुराइड फिल्म फेस्टिवल में फिल्म के प्रीमियर के बाद, डैनी बॉयल
वह मुझे बताता था कि उसे हिंदी फिल्मों की अच्छी जानकारी है और वह अनिल को जानता है।
कपूर और इरफान कपूर के करियर के बारे में। उन्होंने लगान, ताल और जैसी फिल्में देखी थीं।
स्लमडॉग मिलियनेयर के लिए अभिनेताओं का चयन करने से पहले उन्होंने इसी नाम के व्यक्ति से संपर्क किया था।
दरअसल, फिल्म की प्रोडक्शन कंपनी ने सबसे पहले शाहरुख खान से संपर्क किया था।
खान को टीवी शो होस्ट की भूमिका के लिए संपर्क किया गया था। लेकिन स्टार उपलब्ध नहीं थे और इसलिए
उन्होंने अनिल कपूर को अपना दूसरा विकल्प मानकर संतोष कर लिया।46 बॉयल द्वारा खोजे गए बॉम्बे में, उसकी झुग्गी-झोपड़ियों और चॉलों के साथ, एक जीवंत शहर है।
गिरोहवारों का जंगल, हिंदू-मुस्लिम संघर्ष और बच्चों का शोषण
और उन्हें सड़कों पर भीख मांगने का प्रशिक्षण दिया गया है। लेकिन उनमें कुछ बहुत ही आकर्षक भी है।
बॉयल के बॉम्बे के बारे में—अपने रंगों, स्पंदित संगीत और उच्च ऊर्जा के साथ।
इरफ़ान खान ने कुछ हद तक अपनी फिल्म 'ए माइटी हार्ट' वाली भूमिका को दोहराया है—हालांकि यहाँ वह
उन्हें पूछताछ अधिकारी की भूमिका में कम स्क्रीन टाइम मिलता है, जो सभी हथकंडे अपनाता है।

पुस्तक में (और पुस्तक के बाहर भी कुछ जगहों पर), हिंसा और यातना से संबंधित बातें
आरोपी जमाल मलिक ने अपना दयालु हृदय दिखाया।
बाद में, टाइम पत्रिका से बात करते हुए, डैनी बॉयल ने बताया कि कैसे उन्होंने
मुझे लगता है कि फिल्म की कहानी में इरफान की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। 'आप इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।'
‘आपकी उंगली उस पर है,’ लेकिन इरफान सहज रूप से किसी भी चीज का “नैतिक केंद्र” ढूंढ सकते थे।
डैनी ने 47 टाइम को बताया, "किरदार के बारे में। और यह सच है कि स्लमडॉग मिलियनेयर में, हमें यह एहसास होने लगता है कि पुलिस अधिकारी वास्तव में यह मान सकता है कि देव पटेल का जमाल
निर्दोष है।
‘थोड़ी सी बिजली से उसकी जुबान खुल जाएगी,’ इरफान ने बेहद सहज लहजे में कहा।
एक सामान्य तरीके से, जबकि जमाल को अपने हाथों से छत से लटकते हुए दिखाया गया है।
उसे बांध दिया गया। और जब जमाल लटकते हुए बेहोश हो जाता है, तो इरफान उस पर चिल्लाता है।
जूनियर अधिकारी (सौरभ शुक्ला) ने कहा, 'अब हमारे पास एमनेस्टी इंटरनेशनल होगी।'
यहां मानवाधिकारों के नाम पर वे अपनी पैंट गीली कर रहे हैं।' यह एक ऐसी भूमिका है जिसे हमने देखा है
इरफ़ान ने इससे पहले भी कई बार अभिनय किया था, लेकिन पश्चिमी दर्शकों के लिए यह उनके पहले अभिनयों में से एक था।
कई बार उन्होंने इस अभिनेता की अभिनय क्षमता को सचमुच महसूस किया।
स्लमडॉग मिलियनेयर की एक समस्या अलग-अलग लहजों का इस्तेमाल था।

भारतीय अभिनेताओं में से जो अंग्रेजी में बोलते हैं। मध्य स्तर का जमाल (तीन अभिनेता)
तनाय छेड़ा (जिन्होंने यह भूमिका निभाई), अंग्रेजी माध्यम के एक स्कूल में बिल्कुल सही अंग्रेजी बोलते हैं।
वहीं देव पटेल अपने ब्रिटिश लहजे को मुश्किल से छिपा पाते हैं। अनिल कपूर का भी ब्रिटिश लहजा है।
परिष्कृत उच्चारण, और इरफान खान की आवाज़ से ऐसा लगता है जैसे उन्हें अंग्रेजी आती हो, लेकिन
इरफ़ान हिंदी बोलने में ज़्यादा सहज हैं। इसलिए, जबकि इरफ़ान एक शानदार प्रदर्शन करते हैं।
प्रदर्शन—गुस्से से भरा, व्यंग्यात्मक और कभी-कभी जमाल के प्रति थोड़ी सहानुभूतिपूर्ण, एक
यह स्पष्ट है कि उन्हें अंग्रेजी में अभिनय करने की आदत नहीं है। शायद पश्चिमी आलोचक और यहां तक कि
डैनी बॉयल ने लहजों में अंतर पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन कई भारतीयों को यह अंतर स्पष्ट रूप से महसूस हुआ।
यह बहुत ही अटपटा था।
स्लमडॉग मिलियनेयर मूल रूप से फ्रीडा पिंटो और देव पटेल की फिल्म है।
दो अनजान अभिनेता जो रातोंरात सनसनी बन गए (पहले फ्रीडा, जबकि
देव को पहचान मिलने में कुछ और साल लग गए, और अंततः
(ऑस्कर नामांकन प्राप्त हुआ)। लेकिन स्लमडॉग मिलियनेयर की सफलता इसने इरफान के लिए नए रास्ते खोल दिए, जो पहले ही तीन विदेशी फिल्मों में काम कर चुके थे।
कुछ ही वर्षों में निर्मित फिल्में, द नेम्सके, द दार्जिलिंग लिमिटेड और ए माइटी हार्ट—जैसा पहले कभी नहीं हुआ, अनिल के लिए तो इससे भी ज्यादा।

कपूर। तीन साल बाद अनिल को मिशन इम्पॉसिबल: द कपूर में एक छोटी भूमिका मिली।
घोस्ट प्रोटोकॉल। वह फिल्म, हिट टीवी शो 24 में एक अतिथि भूमिका और यह तथ्य कि वह
उन्होंने सीरीज के भारतीय अधिकार खरीदे, बस इतना ही उनका काम था।
हॉलीवुड की सैर।
हालांकि, स्लमडॉग मिलियनेयर ने इरफान खान को हिंदी फिल्म का पहला अभिनेता बना दिया।
अपनी पीढ़ी के पहले ऐसे अभिनेता जो हॉलीवुड में कदम रखने जा रहे हैं।
टाइम से बातचीत में उन्होंने यह बात कही।
स्लमडॉग मिलियनेयर की सफलता के बाद एक पत्रिका को दिए इंटरव्यू में डैनी बॉयल ने कहा कि वह
ऐसी उम्मीद थी कि पश्चिमी स्टूडियो फिल्म की सफलता को दोहराने की कोशिश करेंगे।
भारत में बनी फिल्मों में। और उन्होंने भविष्यवाणी की कि इरफान और भी अधिक
यह मांग इसलिए की गई क्योंकि वह 'पूरी तरह से भारतीय थे, और फिर भी कुछ और थे'।
इसके अलावा, वह दो दुनियाओं को जोड़ने वाला एक कसौटी है, डैनी ने कहा। 48

दिलचस्प कहानियां सुनाने की इच्छा

स्लमडॉग मिलियनेयर के प्रेस टूर के दौरान, इरफान खान ने एक व्यक्ति से मुलाकात की।

हॉलीवुड में रहने वाले भारतीय-अमेरिकी जय खन्ना, जो उस समय एक मैनेजर थे,
ब्रिलस्टीन एंटरटेनमेंट पार्टनर्स। परिचय ऋतिक द्वारा कराया गया।
रोशन और उनके पिता राकेश रोशन, जिनका प्रतिनिधित्व भी जय ने किया।
प्रबंधन टीम, जय और ब्रिलस्टीन टीम ने एक एजेंट, एक वकील और एक अन्य व्यक्ति को नियुक्त किया।
हॉलीवुड में इरफान के प्रचारक। इरफान के एजेंट नेट स्टीडमैन हैं।
डेविड डेकामिलो, द गर्श एजेंसी में कार्यरत।
जय के अनुसार, इरफान ने पहले के प्रोजेक्ट्स में जो काम किया, वही उनका जुनून बन गया।
द वॉरियर, द नेम्सके और ए माइटी हार्ट कार्ड बड़े बॉक्स में नहीं थे। ऑफिस में तो ये झटके लगे, लेकिन ये ठोस प्रोजेक्ट थे जिनसे उन्हें फायदा मिला और
अन्य सभी अभिनेताओं से कहीं आगे। 'मुझे लगता है कि इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने के लिए वे बहुत श्रेय के पात्र हैं।'
हॉलीवुड की नजर भारतीय अभिनेताओं की प्रतिभा पर है और यह दूसरों के लिए रास्ता बना रहा है।
जय ने आगे कहा।
तो यह जय खन्ना और ब्रिलस्टीन एंटरटेनमेंट के प्रयासों के माध्यम से संभव हुआ।
इरफ़ान को 'इन ट्रीटमेंट' जैसी कई बड़ी हॉलीवुड परियोजनाओं के लिए उनके साझेदार मिले।
(2010) और द अमेजिंग स्पाइडर-मैन (2012) से लेकर लाइफ ऑफ पाई (2012), जुरासिक तक
वर्ल्ड (2015), इन्फर्नो (2016) और पज़ल (2018)।
इरफ़ान की हॉलीवुड में काम करने की इच्छा के साथ-साथ बढ़ती हुई जिम्मेदारियों को संभालना भी एक चुनौती थी।

भारत में अपना करियर बनाने की मेरी इच्छा ठोस और सार्थक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने की चाहत से प्रेरित थी।
जय खन्ना कहते हैं, 'वह दिलचस्प कहानियों और मजबूत परियोजनाओं की ओर आकर्षित होते हैं।'
किरदारों के साथ-साथ, उभरते निर्देशकों को खोजने के लिए सर्वश्रेष्ठ में से एक होने के नाते। बड़ा या
छोटा है, उसे उससे भावनात्मक स्तर पर जुड़ने की जरूरत है। उसका करियर इसका संकेत है।
उनकी अद्भुत पसंद, चाहे वह अमेरिका में हो या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर।

33 नमन रामचंद्रन, ‘“जुरासिक वर्ल्ड” स्टार इरफान खान ने बॉलीवुड और हॉलीवुड’, वैरायटी, 12 जून 2015, https://variety.com/2015/film/global/jurassic-world-irrfan-khan-बॉलीवुड-हॉलीवुड-1201517910/
34 झुम्पा लाहिड़ी, द नेम्सके, हार्परकॉलिन्स, 5 मार्च 2007, पृष्ठ 167
35. ‘मीरा नायर की अगली फिल्म में इरफान खान और नताली पोर्टमैन,’ indiaforums.com, 27 फरवरी 2008, https://www.indiaforums.com/article/irrfan-khan-natalie-portman-in-mira-nairs-next_4462
36Kuch Bhi Ho Sakta Hai, Season 2, Episode 5, 30 August 2015, https://www.voot.com/shows/the-anupam-kher-show-s02/2/383623/the-warrior/383780
37 ‘थेरेपी? उनके बस की बात नहीं’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 12 नवंबर 2010,
https://www.nytimes.com/2010/11/14/arts/television/14treatment.html 38 वही।

39 ‘इरफान खान का अनुपमा चोपड़ा के साथ साक्षात्कार’, फिल्म कंपेनियन, 8 मई 2017,
https://www.youtube.com/watch?v=Lbjz76KV5ok&t=534s
40‘एचबीओ पर डॉक्टर की वापसी’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 24 अक्टूबर 2010, https://www.nytimes.com/2010/10/25/arts/television/25treatment.html 41‘इरफान खान के साथ एक फिल्मी मुलाकात’, हिंदुस्तान टाइम्स, 4 जुलाई 2016,
https://www.hindustantimes.com/brunch/on-a-movie-date-with-irrfan-khan/story-
hrFYkA9jsjWN4cWUlTfN7M.html
42‘ए माइटी हार्ट—इरफान खान इंटरव्यू’, indielondon.co.uk, http://www.indielondon.co.uk/Film-समीक्षा/एक-महक-दिल-इरफान-खान-साक्षात्कार
43 ‘इरफान खान के साथ एक फिल्मी मुलाकात’, द हिंदुस्तान टाइम्स, 4 जुलाई 2016,
https://www.hindustantimes.com/brunch/on-a-movie-date-with-irrfan-khan/story-
hrFYkA9jsjWN4cWUlTfN7M.html
44‘ए माइटी हार्ट—इरफान खान इंटरव्यू’, indielondon.co.uk, http://www.indielondon.co.uk/Film-समीक्षा/एक-महक-दिल-इरफान-खान-साक्षात्कार
45 वही।
46 ‘बॉलीवुड को समझना’, मुंबई मिरर, 7 सितंबर 2018, https://mumbaimirror.indiatimes.com/opinion/columnists/aseem-chhabra/deciphering-
बॉलीवुड/आर्टिकलशो/15849690.सीएमएस
47 वही।
48‘कीपिंग इट रियल’, टाइम, 15 फरवरी 2010

5

हॉलीवुड की शीर्ष परियोजनाओं में से एक:

असेंबल

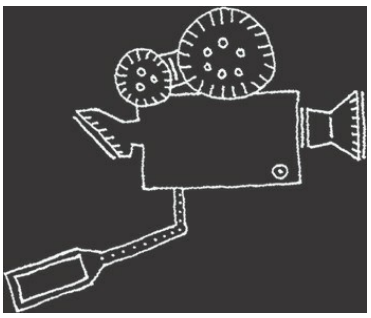

जब पहली जुरासिक पार्क फिल्म रिलीज़ हुई थी, तब मुझे इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। इसे देखने के लिए पैसे खर्च किए, और अब मैं इसमें एक भूमिका निभा रहा हूँ।49

यह एक ऐसी पटकथा है जिसे कोई लिख ही नहीं सकता था। इरफान खान ने 1980 के दशक के मध्य में जयपुर छोड़ दिया था, इस उम्मीद में कि वे एक छोटे शहर के चंगुल से खुद को मुक्त कर लेंगे।
हिंदी फिल्म अभिनेता बनने का सपना देखता है। लेकिन किसने सोचा होगा...
कि एक दिन, कुछ दशकों बाद, वही इरफ़ान, एक प्रशिक्षित एनएसडी अभिनेता, अंततः ऑस्कर विजेता फिल्मों में अभिनय करने का मौका मिला। भाग्य की यह लहर एक छोटे से काम से शुरू हुई।

ब्रिटिश फिल्म, जिसमें भारतीय कलाकार हैं—जिनमें से अधिकांश बाहर जाने-माने नहीं हैं, फिर भी,
2008 में स्लमडॉग मिलियनेयर की जबरदस्त सफलता ने इसके मुख्य अभिनेता के लिए कमाल कर दिया।
अभिनेताओं के लिए, विशेष रूप से इरफान खान के लिए, जो पहले से ही अधिग्रहण करने की कगार पर थे।
बड़ी और व्यापक परियोजनाएं।
‘किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि मैं एक अभिनेत्री बनूंगी; मैं इतनी शर्मीली और इतनी दुबली-पतली थी।’
उन्होंने द गार्जियन को बताया, ‘लेकिन इच्छा इतनी तीव्र थी कि मुझे लगा कि मैं
दम घुट जाना।
स्लमडॉग मिलियनेयर के बाद इरफान ने जिन प्रतिष्ठित परियोजनाओं में अभिनय किया, उनमें से एक ये भी शामिल है।
ताइवानी-अमेरिकी फिल्म निर्माता एंग ली की फिल्म लाइफ ऑफ पाई (2012) काफी लोकप्रिय थी।
वह फिल्म जिसे बहुत पसंद किया गया और जिसने चार ऑस्कर जीते।

पाई खेलना

स्पेनिश-कनाडाई लेखक यान मार्टेल की जीवन-प्रेरक, मैन बुकर पुरस्कार विजेता कृति-
पुरस्कार विजेता उपन्यास लाइफ ऑफ पाई (2001) एक बहुत बड़ी अंतरराष्ट्रीय बेस्टसेलर थी। 2003 में,

फॉक्स 2000 पिक्चर्स ने इस पुस्तक के फिल्म अधिकार हासिल कर लिए हैं — यह एक कहानी है
पुडुचेरी के चिड़ियाघर से जानवरों के साथ एक जहाज पर सवार भारतीय परिवार, एक तूफान के दौरान
किशोर पिसीन मोलिटर 'पाई' पटेल और एक बंगाल टाइगर को छोड़कर सब कुछ नष्ट कर देता है।
जिसका नाम रिचर्ड पार्कर है। कहानी का वर्णन वयस्क पाई (इरफान द्वारा अभिनीत) द्वारा किया गया है।
खान, जो अब मॉन्ट्रियल में रहते हैं, मुख्य रूप से अपने खुशहाल बचपन, जहाज़ के डूबने की घटना और अपने साथी के साथ लाइफबोट पर 227 दिनों की कठिन यात्रा पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
साथी, रिचर्ड पार्कर।
फॉक्स 2000 ने एम. नाइट श्यामलन सहित कई ए-लिस्ट फिल्म निर्माताओं पर विचार किया,
जो इस परियोजना की ओर इसलिए आकर्षित हुए क्योंकि यह पांडिचेरी में आधारित थी (वह थे)
(उसी शहर में पैदा हुई थी), लेकिन लगातार दो फिल्मों में व्यस्त थी, द विलेज
(2004) और लेडी इन द वाटर (2006); ऑस्कर विजेता मैक्सिकन फिल्म निर्माता
अल्फोंसो कुआरॉन (ग्रेविटी, 2014 और रोमा, 2018) और यहां तक कि फ्रांसीसी भी
निर्देशक जीन-पियरे जेनेट (एमिली, 2001)। अंततः यह परियोजना... ताइवानी-अमेरिकी ऑस्कर विजेता निर्देशक एंग ली (सेंस एंड द स्टार्स) सेंसिबिलिटी, 1995; क्राउचिंग टाइगर, हिडन ड्रैगन, 2000; ब्रोकबैक माउंटेन, 2005)। हाल के समय में एक निर्देशक द्वारा बनाई गई सबसे कठिन फिल्मों में से एक।

हॉलीवुड स्टूडियो की 3 डी एपिक फिल्म 'लाइफ ऑफ पाई' ने एंग को उनकी दूसरी सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार दिलाया।
निर्देशक का ऑस्कर पुरस्कार (पहला पुरस्कार उन्हें ब्रोकबैक माउंटेन के लिए मिला था)।
जब कास्टिंग की बात आई, तो एंग का पहला काम सही अभिनेता को ढूंढना था।
युवा पाई की भूमिका निभाने वाले, जिन्होंने फिल्म के निर्माण के दौरान काफी समय बिताया था।
फिल्म में एक विशाल जल टैंक पर तैरती हुई लाइफबोट में अकेले दिखाया गया है।
ताइवान में परित्यक्त हवाई अड्डे के रनवे पर, एक काल्पनिक आकृति को घूरते और उससे बातें करते हुए।
बाघ। रिचर्ड पार्कर को बाद में सीजीआई तकनीक से बनाया गया था। चूंकि इसका एक हिस्सा
फिल्म की शूटिंग भारत में होनी थी, एंग ली को भारतीय फिल्म निर्माताओं को मनाना पड़ा।
सरकार को यह बताना कि उसने वास्तव में शूटिंग में किसी असली जानवर का इस्तेमाल नहीं किया था!51
दिल्ली के अभिनेता सूरज शर्मा को 16 वर्षीय लड़के की भूमिका निभाने के लिए चुना गया था।
लगभग 3,000 लोगों में से एक भारतीय लड़का (फिल्म रिलीज होने के समय सूरज 19 वर्ष का था)।
ऑडिशन के बाद, एंग और उनके कास्टिंग एजेंट उस किरदार को निभाने के लिए एक अभिनेता की तलाश करने लगे।
वयस्क पाई। सूची में सबसे ऊपर इरफान का नाम था। एक तो वह उससे लंबा था।
सूरज, और यह बात अंग को समझ में आ गई। निर्देशक इरफान को पहले ही देख चुके थे।
स्लमडॉग मिलियनेयर, द नेम्सके (2006) और ए माइटी हार्ट (2007)।

भारत में चुनने के लिए केवल कुछ ही अभिनेता थे और वह उनमें से एक थे। 'यह मेरी पहली पसंद थी,' एंग कहती हैं। 'ज़ाहिर है, मैं एक अंतरराष्ट्रीय फिल्म बनाना चाहती थी।'
लेकिन मैंने उन्हें उनकी अच्छी एक्टिंग के लिए भी चुना। ऐसा नहीं था कि मेरे पास पांच लोगों की सूची थी।
चुनने के लिए कई लोग थे। और उसकी लंबाई भी काम आ रही थी।' एंग ने एक और बेहतरीन कलाकार को कास्ट किया।
भारतीय अभिनेता आदिल हुसैन ने छोटे पाई के पिता की भूमिका निभाई।
तब्बू ने पाई की मां का किरदार निभाया।
हालांकि फिल्म में दोनों ने मां-बेटे का किरदार निभाया था, लेकिन तब्बू और इरफान के बीच कोई वास्तविक संबंध नहीं था।
स्क्रीन टाइम साझा करें।
एंग का कहना है कि कई कारणों से 'लाइफ ऑफ पाई' को फिल्म के रूप में प्रस्तुत करना असंभव था, लेकिन
विशेषकर इसलिए क्योंकि यह कथावाचन की धारणा को चुनौती देता है। इरफ़ान की 'पाई' से इसकी शुरुआत होती है।
फिल्म में वॉइसओवर का इस्तेमाल किया गया है, जिससे कहानी को प्रथम व्यक्ति के दृष्टिकोण से सुनाने का एहसास मिलता है। लेकिन इसका अधिकांश भाग
वर्णन भी तीसरे व्यक्ति में है, क्योंकि हम युवा पाई और उसके लाइफबोट साथी रिचर्ड पार्कर के साथ घटित हो रही वास्तविक घटना को देखते हैं, जो सीजीआई द्वारा निर्मित है।
बाघ। और इरफान का सबसे कठिन काम फिल्म को भावनात्मक रूप से समाप्त करना था।
जोड़ता है।
पाई द्वारा सुनाई गई कहानी वास्तव में दो कथाओं का निर्माण करती है — और यह इसके लिए है

दर्शकों को दोनों कहानियों में से किसी एक पर विश्वास करना होगा। 'इरफान को भावनात्मक रूप से
उसके चरित्र का विकास हो और साथ ही वह दार्शनिक दृष्टिकोण को भी समझ सके।
एंग कहते हैं, 'कथावाचन और साथ ही एक धूर्त प्रकार का कथावाचक।' और वह आगे कहते हैं, 'मैं
मैंने इरफ़ान से कहा कि पाई बकवास कर रहा है। क्योंकि इन दोनों में से किसी पर भी विश्वास करना मुश्किल है।
कहानियाँ। और जो सवाल पूछा जाता है—‘आपको कौन सी कहानी पसंद है, न कि 'पसंद है?'—यह भी सोचने पर मजबूर करता है।
इरफ़ान को छोटे पाई (सूरज द्वारा अभिनीत) की मासूमियत से भी मेल खाना था।
शर्मा, और एक वयस्क का व्यंग्यात्मक लहजा विकसित करें। 'लोग शायद इस पर विश्वास कर लें।'
एंग कहते हैं, 'किसी भी तरह से हो सकता है। यह बिल्कुल किनारे पर होना चाहिए जहाँ यह होगा।' 'यह बिल्कुल किनारे पर होना चाहिए जहाँ यह होगा।'
यह सबके लिए काम करेगा। कहानी के दो संस्करण हो सकते हैं और वे सभी स्वीकार्य होंगे।
बहस को समझ में लाना। यही सबसे कठिन काम था, एक रचना करने के अलावा। 'डिजिटल रूप में समुद्र में बाघ।'
फिल्म की शूटिंग शुरू होने पर इरफान ताइवान चले गए। लेकिन फिर आंग और उनकी टीम शूटिंग के लिए भारत गई और ताइवान लौटकर उस दृश्य को पुनः प्रस्तुत किया।
समुद्र में खोई हुई लाइफबोट के दृश्य। इरफान कई महीनों बाद ताइवान लौट आए।
बाद में मॉन्ट्रियल के आंतरिक दृश्यों की शूटिंग के लिए। और बाद में, क्रू ने यात्रा की।

फिल्म के बाहरी दृश्यों की शूटिंग पूरी करने के लिए मॉन्ट्रियल में। 'उसने यह नहीं देखा था कि क्या
हमने शूटिंग कर ली थी और वह इसे एक साल बाद तक नहीं देख पाएगा, जब फिल्म रिलीज हो जाएगी।
'पूरा हो गया, क्योंकि इसका बहुत सारा काम डिजिटल होने वाला था,' एंग कहती हैं। 'और मैं भी
मुझे नहीं पता था कि डिजिटल दृश्य कैसे बनेंगे। मैं बस अनुमान लगा रहा था।
मैंने उसे अपने मन की बात बताई। मैंने कहानी, तस्वीरें, और हम कैसे हुए, सब कुछ समझाया।
वे फिल्म के बाकी हिस्से की शूटिंग करने की योजना बना रहे थे।'
फिर वो अहम दृश्य आया जब इरफान के किरदार पाई ने लाइफबोट के बारे में बात की।
सुनसान समुद्र तट पर उतरने के बाद, दुबले-पतले रिचर्ड पार्कर चलते हुए दिखाई दिए।
अपने साथी नाविक को अलविदा कहे बिना ही वह पीछे मुड़े बिना ही चला गया।
मुझे पूरा यकीन था कि वह मेरी तरफ देखेगा, अपने कान चपटे कर लेगा।
'सिर, गुर्राना,' इरफ़ान के पाई द्वारा एक लंबे एकालाप, वॉयसओवर में कहा जाता है, जैसे ही वह वर्णन करता है।
उनकी कहानी एक लेखक को सुनाई गई, जिसमें यान मार्टेल का किरदार ब्रिटिश अभिनेता ने निभाया है।
राफे स्पॉल। 'कि वह किसी न किसी तरह से हमारे रिश्ते को खत्म कर देगा।' लेकिन
वह बस जंगल की ओर देखता रहा। (अब कैमरा इरफान के चेहरे पर केंद्रित हो चुका था।)
और फिर रिचर्ड पार्कर, मेरा जोशीला साथी, वह भयानक इंसान जिसने मुझे अपने वश में रखा

'जीवित रहते हुए भी, वह हमेशा के लिए मेरे जीवन से गायब हो गया।' फिर वह आगे कहते हैं, 'मैं एक बच्चे की तरह रोया।'
मैं इसलिए नहीं रो रही थी क्योंकि मैं बच जाने से अभिभूत थी, हालांकि मैं थी। मैं इसलिए रो रही थी क्योंकि रिचर्ड पार्कर ने मुझे इतनी बेरहमी से छोड़ दिया। इसने मुझे तोड़ दिया।
दिल।'
एंग के अनुसार, अंतिम संवाद में, वह भाषण जो कहानी का समापन करता है। ली, इरफान खान के पाई कहते हैं, 'जानते हो, मेरे पिता सही थे।' रिचर्ड पार्कर
उसने मुझे कभी दोस्त नहीं समझा। हमारे बीच जो कुछ भी हुआ, उसके बाद भी उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं।
वापस। लेकिन मुझे विश्वास करना होगा कि उसकी आँखों में मेरी छवि से कहीं अधिक कुछ था।
मेरी ओर घूर रहा है। मुझे पता है। मैंने इसे महसूस किया है। भले ही मैं इसे साबित न कर सकूँ। तुम जानते हो मैं
मैंने बहुत कुछ पीछे छोड़ दिया है। मेरा परिवार, भारत, चिड़ियाघर, आनंदी (उसकी किशोरावस्था)।
(प्रेम)। मुझे लगता है, अंततः, पूरा जीवन त्यागने का ही एक कार्य बन जाता है।
लेकिन सबसे ज्यादा दुख इस बात का होगा कि हमने अलविदा कहने के लिए एक पल भी नहीं निकाला।
वह आगे कहते हैं कि उन्होंने अपने पिता को कभी धन्यवाद नहीं दिया, जिनके बिना उन्हें शिक्षाएं नहीं मिल पातीं।
वह समुद्र में जीवित नहीं रह पाता। 'मैं जानता हूँ कि रिचर्ड पार्कर एक शेर है, लेकिन मैं
काश मैंने कहा होता, “सब खत्म हो गया, हम बच गए। मेरी जान बचाने के लिए धन्यवाद। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।”

रिचर्ड पार्कर, तुम हमेशा मेरे साथ रहोगे। ईश्वर तुम्हारी आत्मा को शांति दे।
यह एक बेहद भावुक कर देने वाला भाषण था और इरफान सचमुच भावुक होकर रो पड़े।
उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे और वह रो रहा था, और ऐसा दो बार हुआ। एंग का कहना है कि वह
उन्होंने इरफान से आंसू बहाने की मांग नहीं की। उन्होंने बस भावनाओं को समझाया,
पृष्ठभूमि और उस दृश्य के बारे में सोचते हुए उन्हें कैसा महसूस हुआ। 'अभिनेताओं के साथ मैं बस यही चाहता हूँ।
परिणाम देखने के लिए,’ वह कहते हैं। ‘मुझे परवाह नहीं कि वे इसे कैसे अंजाम देते हैं। क्या अनुभव होगा।
वे इसका इस्तेमाल करते हैं, वे इसे अपने तक ही रख सकते हैं। लेकिन मैं यही प्रभाव चाहता था।
मेरे लिए उस भाषण का क्या महत्व था।
Hollywood.com से बात करते हुए, इरफान ने इस बात पर जोर दिया कि यह अंत कितना अलग है।
यह वैसा ही था जैसा आमतौर पर ज्यादातर फिल्मों में होता है। 'आमतौर पर... आपके पास एक बहुत बड़ा
अंत में चरमोत्कर्ष। लेकिन यह फिल्म इसके विपरीत करती है: वह (पाई) ला रहा है
पूरी यात्रा के अनुभव को एक साथ साझा करना और उसे आत्मसात करने का प्रयास करना।
उन्हें दर्शकों को इस तरह से बांधे रखना चाहिए कि वह फिल्म का चरमोत्कर्ष बन जाए।
इस रचना को देखते समय वे भावनात्मक रूप से आवेशित होने चाहिए।’52 इरफ़ान

डेविड मैगी की पटकथा में संवादों और भाषा का वर्णन करते हुए कहा गया कि यह बहुत ही
सटीक, अर्थों की कई परतों से भरा हुआ। 'इतने सारे विचारों को समाहित करने का प्रयास'
एक पंक्ति में कहें तो... मुझे भाषा से जुड़ने में समय लगा।'
एक अन्य साक्षात्कार में, इरफान ने शोक के सार्वभौमिक पहलू के बारे में बात की।
उसका पाई व्यक्त करता है। 'एंग ने मुझसे कहा कि मुझे अपने निजी दुख को ज़ाहिर नहीं करना चाहिए, कि मेरा
उन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स को बताया, 'आवाज मानवता की आवाज बननी चाहिए।'
मैंने अपने प्रदर्शन में यही करने की कोशिश की।53
फिर एंग ली द्वारा बीच के दृश्यों की शूटिंग के दौरान अतिरिक्त बोझ भी था।
इरफ़ान खान और लेखक ने दो बार संपर्क किया। उन्होंने पहले टोबी मैगुइरे को कास्ट किया था, जिनके पास
उन्होंने निर्देशक के साथ दो फिल्मों में काम किया—द आइस स्टॉर्म (1997) और राइड विद द डेविल (1999)। लाइफ ऑफ पाई की शूटिंग के समय तक टोबी एक बड़े अभिनेता बन चुके थे।
हॉलीवुड स्टार, जिन्होंने पहली तीन स्पाइडर-मैन फिल्मों में अभिनय किया था।
टोबे के दृश्यों की शूटिंग इरफान के साथ की गई थी, एंग को लगा कि अमेरिकी अभिनेता की स्टारडम
उपस्थिति उस कथा पर हावी हो रही थी जिस पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए था।
भारतीय अभिनेता का दिल दहला देने वाला भाषण। और इसलिए, पहली बार शूटिंग करने के कुछ महीनों बाद।

टोबी मैगुइरे के साथ वाले दृश्यों की शूटिंग के लिए इरफान लॉस एंजिल्स गए थे।
राफे स्पॉल के साथ अनुक्रम।
एंग अब कास्टिंग में हुए बदलाव के बारे में बात करना पसंद नहीं करतीं, लेकिन उस समय...
फिल्म की रिलीज के बारे में उन्होंने कहा, 'मैंने स्थिति को गलत समझा।'
सितारों की ताकत को कम आंका। मुझे टोबी बहुत पसंद है। लेकिन यह एक छोटी सी भूमिका है। तो
जब वहां कोई फिल्म स्टार बैठा होता है, तो वह सबका ध्यान खींच लेता है। लेकिन यह तरीका कारगर नहीं रहा।
बाहर।’54 इरफ़ान, जिन्हें लगा था कि उनके लिए शूटिंग खत्म हो गई है, यह देखकर हैरान रह गए कि
मुझे निर्देशक का फोन आया कि दृश्यों को दोबारा शूट करना है। 'मैंने सब कुछ डिलीट कर दिया था।'
'यह मेरे सिस्टम से आया है,' इरफान ने कहा। 'और इसे दोबारा करने के लिए बहुत बड़ी भावनात्मक शक्ति की जरूरत है।' 'और
निवेश।
इरफ़ान ने इस बातचीत को सुनाते हुए स्थिति को हल्के में लिया।
एंग ली के साथ उनका जो अनुभव था, उस पर उन्होंने लिखा, “अचानक मुझे एंग ली का फोन आया और उन्होंने कहा, “हम
कुछ हिस्सों को दोबारा शूट करना होगा।” मैंने कहा, “दोबारा शूट? कौन से हिस्से?”
उसने कहा, "सब कुछ।" तो मैंने कहा, "एंग। ये तो ऐसा है जैसे मैंने अभी- अभी प्यार किया हो।"
और आप कह रहे हैं, "चलो, फिर से शुरू करो।" तो उन्होंने कहा, "बस कल्पना करो कि यह एक नया है।"
लड़की!”’55

इरफ़ान के शानदार अभिनय के बावजूद, एंग ली को एक चिंता से जूझना पड़ा

—

भारतीय अभिनेता लंबे संवाद बोलते समय अक्सर अस्पष्ट बोलते हैं। लेकिन इरफान ऐसा नहीं करते।
वह अकेले ही कहते हैं, और आगे कहते हैं, 'रॉबर्ट डी नीरो जैसे अन्य महान अभिनेता भी हैं।'
उदाहरण के लिए, जो बुदबुदाते हैं। ऐसा नहीं है कि मैं उस आवाज़ को लूप नहीं कर सकता था। लेकिन यह एक
संवाद लंबा था इसलिए मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि यह स्पष्ट हो। उसे होना ही था।
समझ में आता है।
इरफ़ान के अंग्रेज़ी उच्चारण को लेकर भी चिंता थी। जैसे-जैसे फिल्म आगे बढ़ती गई,
जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, पाई लाइफबोट पर बैठे किशोर से परिपक्व होकर एक ऐसे वयस्क में बदल जाता है जो...
मॉन्ट्रियल और उसके अंग्रेजी बोलने का तरीका भी बदल जाता है। फिल्म का निर्माण
टीम ने इरफान के लिए मॉन्ट्रियल के एक अंग्रेजी उच्चारण प्रशिक्षक को नियुक्त किया। लेकिन इसके बावजूद
कोचिंग के दौरान, इरफ़ान के संवाद—भले ही वे भावनात्मक रूप से कितने ही मार्मिक हों—सुनने में ऐसे लगते हैं जैसे
ये बातें एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बोली जा रही हैं जो अंग्रेजी धाराप्रवाह नहीं बोल पाता है।
इरफ़ान के कम से कम एक प्रशंसक में इतनी ईमानदारी तो थी कि उसने ऐसा कहा।
‘मुझे बहुत खुशी हुई कि उन्हें (इरफान को) हॉलीवुड फिल्मों में भूमिकाएं मिलीं,’ नसीरुद्दीन ने कहा।

शाह कहते हैं। लेकिन नसीर अपनी राय बेबाक रखने और सच को सच कहने के लिए जाने जाते हैं।
‘सिर्फ ‘लाइफ ऑफ पाई’ में ही मुझे उनका अभिनय पसंद नहीं आया क्योंकि उन्होंने कनाडाई लहजे में बोलने की कोशिश की थी और वह कामयाब नहीं हुआ।’
उच्चारण बदल सके। (वह इतनी अच्छी अंग्रेजी नहीं बोलता कि अपना उच्चारण बदल सके।)
(उच्चारण।) मैंने उसे यही बताया और उसने इसे मान लिया।'
लेकिन फिल्म में इरफान ने जो कुछ भी किया, उसके लिए एंग ली हमेशा उनके आभारी रहेंगे।
मैं इसके लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं। यह दुनिया भर के कई लोगों के लिए बहुत प्रेरणादायक है।
उनका भाषण किसी फिल्म निर्माता के लिए सपने जैसा था। उन्हें नामांकित किया जाना चाहिए था।
उस भाषण के लिए उन्हें पुरस्कार मिलना चाहिए था।
फिल्म 'लाइफ ऑफ पाई' नवंबर 2012 में ऑस्कर समारोह के मौके पर अमेरिका में रिलीज हुई थी।
सीज़न। फिल्म को 11 ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया था और इसने चार पुरस्कार जीते, जिनमें शामिल हैं
एंग ली को दूसरा सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का ऑस्कर मिला। इरफ़ान को कोई पुरस्कार नहीं मिला।
उन्हें नामांकन नहीं मिले, हालांकि कुछ आलोचकों ने उनके प्रदर्शन की सराहना की। ए.ओ.
न्यूयॉर्क टाइम्स के स्कॉट ने उन्हें 'विश्वसनीय रूप से आकर्षक' बताया, जबकि जेनी ने
द टेलीग्राफ के मैकार्थी ने लिखा, 'खान... एक तरह का स्वप्निल भाव व्यक्त करते हैं।'
अधिकार।'

जैसे-जैसे इरफ़ान का हॉलीवुड करियर बढ़ता गया, उनसे इस बारे में पूछा जाने लगा कि...
भारत और अमेरिका के मुख्यधारा के फिल्म उद्योगों के बीच प्रमुख अंतर।
एक तो उन्हें ‘बॉलीवुड’ शब्द से ही आपत्ति थी। जैसा कि उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था।
द गार्जियन से बातचीत में उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा 'बॉलीवुड' शब्द का विरोध करता हूं। मुझे नहीं लगता कि यह सही है।'
यह नाम रखना उचित है। क्योंकि उस उद्योग की अपनी तकनीक है, अपनी खुद की तकनीक है।
फिल्म बनाने का एक ऐसा तरीका जिसका हॉलीवुड की नकल करने से कोई लेना- देना नहीं है।
इसकी उत्पत्ति पारसी थिएटर से हुई है।
इसके अलावा, उन्हें लगता था कि हॉलीवुड की पटकथाएँ जटिल पात्रों का निर्माण करती हैं। 'हमारे
उन्होंने एक श्रोता से कहा, 'सिनेमा में हम जटिल व्यवहार पर ज्यादा ध्यान नहीं देते।'
एनडीटीवी शो में दर्शकों में से एक सदस्य।57 'कोई छिपी हुई परतें नहीं हैं।
इसमें कोई जटिलता नहीं है। यह बिल्कुल सपाट है। पहले हम इस तरह की फिल्में देखते थे।
60 के दशक में, 60 के दशक से पहले, लेकिन हम कहीं खो गए थे।
हॉलीवुड की जिन परियोजनाओं पर उन्होंने काम किया था, उनमें कहानी ही मुख्य होती थी।
केंद्र बिंदु होगा, और हर कोई कहानी को आगे बढ़ाने के लिए काम करेगा।
'यह टॉम हैंक्स वाली कहानी नहीं है।'
हम जो छवि प्रस्तुत कर रहे हैं... यहां (भारत में) हमारे पास एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थिति हो सकती है।

वह चरित्र तो निभाएगा, लेकिन अंत में वह स्टार की छवि को ही संजोकर रखेगा।'58

हॉलीवुड में और भी रोमांचक कारनामे: इरफान खान के हॉलीवुड करियर के लिए वर्ष 2012 का अंत अच्छा रहा। इससे पहले
उसी वर्ष की गर्मियों में वह हॉलीवुड के पुनरुद्धार में दिखाई दिए। स्पाइडर-मैन फ्रैंचाइज़ी—निर्देशक मार्क वेब की फिल्म द अमेज़िंग स्पाइडर-मैन में।
भारत में उनके प्रशंसक इस बड़े अवसर को लेकर उत्साहित थे, लेकिन इरफान कभी भी सफल नहीं हो पाए।
इस भूमिका का अधिकांश हिस्सा, और इसके पीछे एक अच्छा कारण है। फिल्म के तीन संक्षिप्त दृश्यों में,
इरफ़ान को स्क्रीन पर मुश्किल से पाँच से छह मिनट का समय मिलता है। वास्तव में, इरफ़ान को
फिल्म में एंड्रयू गारफील्ड, एम्मा स्टोन, रीस इफान्स के बाद छठी भूमिका में।
डेनिस लेरी और कैंपबेल स्कॉट (जो फिल्म में मुश्किल से ही दिखाई देते हैं)। 'मैं
‘मैं यह फिल्म देखना नहीं चाहता, न ही इसके बारे में बात करना चाहता हूं!’ इरफान ने बाद में हिंदुस्तान को बताया।
टाइम्स 59। ऐसा कहा जाता है कि डॉ. रणजीत राथा के रूप में उनकी भूमिका कम कर दी गई थी, हालांकि
इसका कारण स्पष्ट नहीं है।
फिल्म रिलीज होने पर उनके प्रशंसक बेहद नाराज थे और कई लोगों ने सोशल मीडिया पर अपनी नाराजगी जाहिर की।

मीडिया ने अभिनेता के हॉलीवुड की एक बड़ी परियोजना में अभिनय करने के फैसले का मजाक उड़ाया।
उनकी छोटी भूमिका के बावजूद। फिल्मफेयर के संपादक जितेश पिल्लई ने यही कहा।
ट्विटर पर लोगों ने पूछा, ‘स्पाइडरमैन में इरफान खान आखिर कर क्या रहे थे?’
क्या यह रूढ़िवादी सोच को बढ़ावा दे रहा है कि भारतीयों को केवल मामूली और तुच्छ भूमिकाएँ ही मिलेंगी?
सचमुच अभी।'
मार्क वेब को अब भी उम्मीद थी कि वह इस फिल्म को सबसे लोकप्रिय फिल्मों में से एक के भारतीय प्रशंसकों को बेच पाएंगे।
मार्वल की सफल फ्रेंचाइजी। इसलिए, उन्होंने प्रेस को पर्याप्त बयान दिए।
भारत। ‘मैंने इरफान को फिल्म 60 द नेम्सके में देखा और मैं पूरी तरह से मुग्ध हो गया।’ और
इससे पहले उन्होंने इरफान के प्रशंसकों को फिल्म के प्रति उत्साहित रखने के लिए यह बात कही थी। 'डॉ. राथा के लिए,
मुझे ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो परिष्कृत हो, जिसमें बहुत ताकत हो और
बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले इरफान इस भूमिका में खरे उतरे। वह पहले हाफ में हैं।
फिल्म में और कई दृश्यों में।’61 अब हम जानते हैं कि आखिरी वाक्य गलत है।
भ्रामक विज्ञापन के बावजूद, कोलंबिया पिक्चर्स को काफी उम्मीदें थीं।
इस बारे में कि फिल्म अंतरराष्ट्रीय बॉक्स ऑफिस पर कैसा प्रदर्शन करेगी। और इसलिए द

अमेजिंग स्पाइडर-मैन अमेरिका में रिलीज होने से एक हफ्ते पहले रिलीज हुई थी।
भारत और जर्मनी, रूस, जापान सहित कई अन्य देश
फिलीपींस और हांगकांग। फिल्म ने 758 मिलियन डॉलर कमाए; लगभग दो- तिहाई
इसका कुछ हिस्सा विदेशी बाजारों से आया था।
स्पाइडर-मैन में अपनी भूमिका के बाद से, इरफान ने दो अन्य हॉलीवुड फिल्मों में अभिनय किया है।
फ्रैंचाइज़। 2015 में उन्होंने स्टीवन स्पीलबर्ग की फिल्म में अभिनय किया (फिल्म निर्माता
(प्रोजेक्ट में कार्यकारी निर्माता के रूप में सूचीबद्ध), जुरासिक वर्ल्ड, चौथी फिल्म
हॉलीवुड के दिग्गज निर्देशक द्वारा शुरू की गई यह श्रृंखला, उनकी पहली फिल्म से शुरू होती है।
जुरासिक पार्क (1993) एक बहुत बड़ी हिट थी। जुरासिक वर्ल्ड, पिछली फिल्मों की तरह ही थी।
यह फिल्म, बेस्टसेलिंग लेखक माइकल द्वारा बनाए गए पात्रों पर आधारित थी।
क्राइटन।
फिल्म में इरफान साइमन मसराणी का किरदार निभा रहे हैं, जो एक रंगीन मिजाज के व्यवसायी हैं।
यह काल्पनिक कैरेबियन द्वीप इस्ला नुबलर पर आधारित मनोरंजन पार्क का मालिक है जिसे
जुरासिक वर्ल्ड के निर्देशक और कथित तौर पर दुनिया के आठवें सबसे अमीर व्यक्ति हैं।
वह एक महंगे डिजाइनर सूट और शर्ट में इतराता हुआ घूमता है, और हाल ही में हासिल की गई एक

अमेरिकी लहजा, या यूं कहें कि उस तरह का लहजा जो कुछ भारतीय बाद में अपना लेते हैं।
अमेरिका में कुछ समय बिताने के बाद, उनके बालों में सफ़ेद बाल दिखने लगे हैं, काफी हद तक।
दाढ़ी में और भी कुछ है, और इरफान फिल्म में बेहद आकर्षक लग रहे हैं। साथ ही उनके पास है
जुरासिक वर्ल्ड में एक लंबी भूमिका और करने के लिए बहुत कुछ है, जिसमें एक विमान उड़ाना भी शामिल है।
हेलिकॉप्टर। उसका भारी उच्चारण परेशान करने वाला है, लेकिन फिल्म निर्माता ऐसा नहीं लगता।
वे इसकी बहुत परवाह करते हैं। फिल्म में बेहद आकर्षक फ्रांसीसी अभिनेता भी हैं।
उमर साइ। कभी-कभी उमर के अंग्रेजी संवादों को समझना और भी मुश्किल हो जाता है।
स्पष्टतः फिल्म निर्माताओं ने हॉलीवुड के नियम का पालन किया—एक ऐसी फिल्म जिसमें अलग-अलग पात्र हों
विदेशी लहजे वाली फिल्म का अंतरराष्ट्रीय बॉक्स ऑफिस कलेक्शन अच्छा होना तय है।
हालांकि यह उन प्रमुख तत्वों को दोहराता है जिन्होंने फ्रैंचाइज़ी को सफल बनाया था
जुरासिक वर्ल्ड रोमांच से भरपूर है। हालांकि, कई बार यह बहुत ज्यादा रोमांचक भी हो जाता है।
संवाद प्रधान और कुछ हद तक नीरस। इसलिए एक दृश्य है जिसमें इरफान का साइमन मसराणी है।
विंसेंट डी'ओनोफ्रियो के विक हॉस्किन्स से बात करते हुए, जहाँ वह कहते हैं, 'मेरा इरादा है कि...'
मैं व्यक्तिगत रूप से आपकी परियोजना की व्यवहार्यता का निर्धारण नैतिक सीमाओं के भीतर करते हुए उसकी जांच करूंगा।

इस कंपनी के सिद्धांतों का क्या मतलब है? जब हम किसी डायनासोर से क्या उद्देश्य प्राप्त कर सकते हैं?
क्या यह छलावरण कर सकता है? यह जल तकनीक से छिप गया, यह कैसे संभव है? इस तरह के दृश्यों को देखकर कोई भी कह सकता है कि इरफान का दृढ़ विश्वास किरदार में नहीं है।
भावनात्मक रूप से वह साइमन मसराणी की भूमिका निभाने में रुचि नहीं रखते। वैसे भी,
इरफ़ान के साइमन या किसी अन्य अभिनेता के लिए कोई चरित्र विकास नहीं है। यह फिल्म सिर्फ इसलिए बनाई गई है ताकि...
यह दर्शकों को रोमांच और उत्साह प्रदान करेगी। यह ऐसी फिल्म नहीं है जो...
इनमें से किसी भी अभिनेता को ऑस्कर नामांकन मिल सकता है।
फिल्म के अंत में क्रेडिट्स में इरफान को क्रिस के बाद दसवां स्थान मिलता है।
प्रैट, ब्राइस डलास हॉवर्ड्स, विंसेंट डी'ओनोफ्रियो, उमर सी और नाटककार-
अभिनेता बी.डी. वोंग। लेकिन उनके अंत में क्रेडिट में लिखा है, 'और इरफ़ान खान', जो कि...
एक सहायक अभिनेता के लिए विशेष सम्मान, एक वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त स्टार के लिए।
साल 2015 था और तब तक इरफान विश्व सिनेमा जगत में एक जाना-पहचाना चेहरा बन चुके थे।
द नेम्सके, लाइफ ऑफ पाई और द जैसी फिल्मों की सफलता के बाद सिनेमा जगत में
लंचबॉक्स, समीक्षकों और बॉक्स ऑफिस दोनों ही दृष्टि से सफल रही। जुरासिक वर्ल्ड एक बहुत बड़ी हिट थी—यह अब तक की छठी सबसे सफल फिल्म है।

इस समय, इसने दुनिया भर में 1.7 बिलियन डॉलर की कमाई की, जिसमें विदेशी राजस्व में 1 बिलियन डॉलर शामिल है।
बाज़ार। यह कहा जा सकता है कि इस फिल्म ने इरफान को उनके सभी साथियों से एक अलग ही मुकाम पर पहुंचा दिया।
हिंदी सिनेमा में सहकर्मियों के बीच, हालांकि यह भी सच है कि सफलता जुरासिक वर्ल्ड का इरफान के फिल्म में होने या उनके द्वारा निभाए गए किरदार से कोई खास संबंध नहीं था। लेकिन वे फिल्म का हिस्सा थे और यह बात हमेशा फिल्म के इतिहास का हिस्सा रहेगी।
उनका बायोडाटा।
इरफान के लिए जुरासिक वर्ल्ड की शानदार सफलता के पीछे एक विडंबना छिपी थी।
जुरासिक पार्क की पहली फिल्म 1993 में रिलीज हुई थी, जब इरफान खान संघर्ष कर रहे थे।
मुंबई में टीवी के लिए छोटे-मोटे काम करते हुए आर्थिक रूप से मजबूत स्थिति में थी। एक साक्षात्कार से पहले
जुरासिक वर्ल्ड की रिलीज के बारे में उन्होंने हॉलीवुड से यह कहा: रिपोर्टर ने कहा, 'जब पहली जुरासिक पार्क फिल्म आई थी, तब मेरे पास मुश्किल से ही पैसे थे।'
मैंने इसे देखा, और अब मैं इसमें एक भूमिका निभा रहा हूँ।
अगले साल, 2016 में, इरफ़ान एक और हॉलीवुड फिल्म में वापस आ गए।
डैन ब्राउन के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित फ्रैंचाइज़ी, इन्फर्नो।
निर्देशित।
हॉलीवुड के शीर्ष फिल्म निर्माता रॉन हॉवर्ड द्वारा निर्देशित, इन्फर्नो द का सीक्वल है।
दा विंची कोड और एंजल्स एंड डेमन्स पर आधारित यह श्रृंखला की तीसरी और अंतिम कड़ी है।
रॉबर्ट लैंगडन की फिल्में। अन्य फिल्मों की तरह, रॉबर्ट का किरदार लैंगडन का किरदार टॉम हैंक्स निभा रहे हैं।

इस फिल्म में कई अंतरराष्ट्रीय कलाकार भी हैं—ब्रिटिश अभिनेत्री फेलिसिटी
जोन्स, एक बार फिर फ्रांसीसी अभिनेता उमर सी और कई इतालवी और अन्य कलाकार।
यूरोपीय अभिनेता। फिल्म में एक बार फिर कई अंतरराष्ट्रीय लहजों का मिश्रण देखने को मिलता है।
अगर आप सिर्फ अंग्रेजी भाषा में वीडियो देखने के आदी हैं तो इनमें से कई को समझना इतना आसान नहीं होगा।
हॉलीवुड और ब्रिटेन की फिल्में। जैसा कि जुरासिक वर्ल्ड के साथ हुआ था।
इरफ़ान को एक बार फिर अंग्रेज़ी नाम हैरी सिम्स दिया गया है, लेकिन वह अंग्रेज़ी बोलने के तरीके में कुछ और ही है।
एक भारतीय, और यह महज़ एक छोटी सी बात है। बड़े संदर्भ में इसका कोई खास महत्व नहीं है।
फिल्म की योजना। हैरी सिम्स फिल्म के खलनायकों में से एक है, उसके पास एक महासागर है।
वह अपने कार्यालय के रूप में लाइनर का उपयोग करता है और एक ऐसा वायरस फैलाने की कोशिश करता है जो दुनिया को नियंत्रित कर सके।
वह बहुत अच्छे कपड़े पहनता है और अंततः फिल्म में चाकू से मारा जाता है।
संयोगवश, इन तीनों बड़ी फिल्मों में इरफान के किरदारों की हत्या कर दी जाती है।
हॉलीवुड प्रोडक्शन। द अमेजिंग स्पाइडर-मैन में, कार दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती है।
एक विशालकाय छिपकली द्वारा धक्का दिए जाने पर वह पुल से गिर जाता है।
जुरासिक वर्ल्ड में उसकी मृत्यु हो जाती है।
जब विशालकाय डायनासोर जैसे पक्षियों के हमले के बाद उनका हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है।

टिफिन की कहानियाँ

हाल के वर्षों में इरफ़ान खान के हॉलीवुड में प्रवेश का एक बड़ा कारण यह है कि
रितेश बत्रा की पहली फीचर फिल्म, द लंचबॉक्स (2013) की सफलता के कारण, जिसे कान फिल्म फेस्टिवल के अंतर्राष्ट्रीय समीक्षक सप्ताह अनुभाग में प्रदर्शित किया गया था।
इस फिल्म को फेस्टिवल में प्रदर्शित किया गया और ग्रैंड गोल्डन रेल अवार्ड जीता गया। फिल्म को यूएस के लिए भी चुना गया था।
सोनी पिक्चर्स क्लासिक्स द्वारा वितरण—प्रतिष्ठित स्वतंत्र आर्ट हाउस
यह फिल्म सोनी पिक्चर्स की शाखा थी और समीक्षकों द्वारा सराही गई थी।
द लंचबॉक्स एक शानदार फिल्म है जिसकी अपील सार्वभौमिक है, लेकिन इसने कुछ कमियां भी छोड़ीं।
दरअसल, इसके प्रमुख निर्माता गुनीत मोंगा और अनुराग कश्यप ने इसमें योगदान दिया है।
कई अन्य बड़े नाम भी टीम का हिस्सा बने, जिससे यह फिल्म सबसे बेहतरीन फिल्मों में से एक बन गई।
भारत से आने वाली पहली अंतरराष्ट्रीय सह-निर्मित फिल्मों में से एक।
फिल्म की लंबी सूची।
निर्माताओं में ऑस्कर विजेता बोस्नियाई फिल्म निर्माता जैसे विविध नाम शामिल थे।

डेनिस टानोविक, मीरा नायर की नियमित निर्माता लिडिया डीन पिल्चर और यहां तक कि
बॉलीवुड निर्देशक करण जौहर।
जब रितेश ने मूल रूप से पटकथा पर काम शुरू किया था, तब उनके पास इरफान अभिनेता थे।
उन्होंने साजन फर्नांडीस की मुख्य भूमिका निभाने के लिए मन बना लिया है, जो एक अधेड़ उम्र का अकेला विधुर है।
50 के दशक के उत्तरार्ध तक। रितेश ने इरफान को 'द नेम्सके' और 'इन ट्रीटमेंट' में देखा था। लेकिन
रितेश इरफान को नहीं जानता था। उसे वो समय याद है जब वो फिल्म स्कूल में पढ़ता था।
न्यूयॉर्क में उन्होंने इरफान को बी एंड एच फोटो वीडियो के अंदर चलते हुए देखा, जो एक डिस्काउंट स्टोर है।
इलेक्ट्रॉनिक्स स्टोर। लेकिन रितेश में उसके पास जाने की हिम्मत नहीं थी।
हैलो कहें।
'यह उनके व्यवहार का तरीका और उन दोनों में उनके द्वारा किया गया काम था।
परियोजनाओं के दौरान, मुझे सहज रूप से पता था कि अगर कोई इसे इतनी बारीकी से कर सकता है तो वह यही है।
जिसकी जरूरत थी, वो इरफान ही थे,’ वो कहते हैं। ‘और इरफान में हमेशा से ही एक खोजपूर्ण प्रवृत्ति रही है।
गुणवत्ता। ऐसा लगता है कि वह हमेशा कुछ गहरा खोजने की कोशिश करता रहता है।'
रितेश द्वारा गढ़े जा रहे साजन के चरित्र में एक और विशेषता थी। अपनी लेखन शैली में। वे कहते हैं, 'यह किसी बूढ़े आदमी की कहानी नहीं थी। यह एक कहानी थी...'

कोई ऐसा व्यक्ति जिसे लगता था कि वह बूढ़ा हो गया है।’ रितेश यह भी कहते हैं कि कुछ प्रेरणा
साजन फर्नांडीस का व्यक्तित्व एक क्लासिक जापानी फिल्म, इकिरू (1952) से प्रेरित था।
साजन का सामान्य व्यवहार कांजी वतनबे नामक चरित्र से प्रेरित था। अकीरा कुरोसावा की एक पुराने नौकरशाह के बारे में बनी उत्कृष्ट कृति में (ताकाशी शिमुरा)
उन्हें लाइलाज कैंसर होने की खबर से निपटना पड़ रहा है। जिस तरह से साजन ने
उसकी नाक पर टिका चश्मा, उसके कपड़े और उसके कंधों से उसकी चाल झुकना—इसका काफी हिस्सा लिपि में शामिल हो गया क्योंकि रितेश बत्रा ने कांजी का प्रयोग जारी रखा।
उनके मन में वातानाबे हैं। फिल्म के प्रोडक्शन डिजाइन में इकिरू भी शामिल हैं।
लंचबॉक्स। 1950 के दशक की शुरुआत में जापान में कांजी वातानाबे का कार्यालय बिल्कुल ऐसा ही दिखता था।
2013 के बॉम्बे में साजन के कार्यक्षेत्र की ओर— डेस्क की कतारें अव्यवस्थित वस्तुओं से भरी हुई थीं
फाइलें, ऊबे हुए नौकरशाह और क्लर्क जो किसी तरह हर दिन अपना काम चला रहे हैं।
इस दिल को छू लेने वाली रोमांटिक फिल्म में भरपूर हास्य का पुट है। मुंबई में रहने वाले एक अधेड़ उम्र के ऑफिस क्लर्क साजन को गलती से किसी और के लिए बना लंचबॉक्स मिल जाता है। फिल्म इस बात पर जोर देती है कि...
यह मानना कि मुंबई में लंचबॉक्स डिलीवरी सिस्टम त्रुटिरहित है, गलत है। लेकिन गलती यह है कि
यह सिलसिला हर दिन दोहराया जाता था और जल्द ही साजन हस्तलिखित संदेशों का आदान-प्रदान करने लगता था।

लंचबॉक्स तैयार करने वाली महिला—एक दुखी गृहिणी, इला (अभिनीत किरदार)
निम्रत कौर द्वारा लिखित। दो किरदारों के बीच एक अप्रत्याशित प्रेम कहानी शुरू हो जाती है।
जो कभी मिलते नहीं, भले ही वे एक-दूसरे के बारे में अंतरंग बातें जानते हों।
ज़िंदगियाँ।
लंचबॉक्स और भोजन से प्रेरित इस प्रेम कहानी में, रितेश एक नए किरदार का भी परिचय कराते हैं।
तीसरा किरदार, शेख, एक अति उत्साही क्लर्क है जिसे साजन की जगह नियुक्त किया गया है।
सेवानिवृत्त होने वाले हैं। शेख, एक विनोदी, आक्रामक चरित्र हैं जो बेचैनी पैदा करते हैं।
साजन के जीवन में उथल-पुथल मचाने वाली इस फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने मुख्य भूमिका निभाई है। यह उनकी चौथी फिल्म थी।
नवाज़ और इरफ़ान पहली बार किसी फिल्म में साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले वे अमित फिल्म में साथ नज़र आ चुके हैं।
कुमार की लघु फिल्म, द बाईपास (2003), और दो फीचर फिल्में, न्यूयॉर्क (2009) और
पान सिंह तोमर (2012)। शेख एक संतुलनकारी प्रतिवाद बन जाता है साजन का उदास, लगभग अवसादग्रस्त व्यक्ति।
फिल्म में इरफान का अकेलापन दिल दहला देने वाला है, खासकर उनके साथ वाले दृश्य।
वह अपनी बालकनी में चुपचाप सिगरेट पीता है और सामने एक परिवार को देखता है।
सड़क किनारे साथ में खाना खाना। फिल्म वास्तव में सड़क पर होने वाले दुख को दर्शाती है।

बड़े शहरों में अकेले और तन्हा रहना, और इरफान इस शहरी परेशानी को जीवंत रूप से प्रस्तुत करते हैं।
फिल्म में ऐसे कई दृश्य हैं, लेकिन जिस दृश्य ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया,
द लंचबॉक्स को पांच बार देखने के बाद भी, क्या बस में उसका वो दृश्य सबसे यादगार है?
उसकी उभरी हुई आंखें बहुत दर्द दर्शा रही थीं।
रितेश, इरफ़ान को एक बेहद पेशेवर और उदार अभिनेता बताते हैं।
जब हमें किसी दूसरे किरदार को देखते हुए उसके कंधे के ऊपर से शूट करना होता था, या वहाँ
तस्वीर में उनकी झलक दिखती है, वह हमेशा खड़े होकर खुद ही काम करते थे। हमें कभी मौका नहीं मिला।
उसके बदले में एक प्रतिनिधि।
इरफ़ान प्रयोगों, तात्कालिक सुधारों और अंतिम क्षणों में लिए गए निर्णयों के लिए भी खुले विचारों वाले थे।
पटकथा में बदलाव। रितेश बत्रा को लगातार बदलाव करने की आदत है।
स्क्रिप्ट के अनुसार तो इरफान हमेशा तैयार रहते थे, लेकिन वे अप्रत्याशित घटनाओं और आखिरी समय के फैसलों के लिए भी हमेशा तत्पर रहते थे।
चुनौतियाँ।
शुरुआती स्क्रिप्ट में, इरफ़ान का किरदार एक हॉकी खिलाड़ी था जब वह युवा। उसे हॉकी स्टिक से ड्रिबल करते हुए दिखाने की योजना थी। अपनी बालकनी में। इरफान ने इसकी खूब प्रैक्टिस की थी, और फिल्म टीम के पास एक कोच भी था।
उनके साथ काम करना। लेकिन शूटिंग के दिन, जब रितेश सेट पर पहुंचे, तो उन्होंने
फिल्म के प्रोडक्शन डिजाइनर ने साजन के लिविंग रूम में एक रेडियो रख दिया था, यह बात उन्होंने गौर की।

कमरा। और रेडियो ने रितेश से स्क्रिप्ट में अचानक बदलाव करवा दिए। रितेश कहते हैं, 'मैंने उनसे कहा कि हॉकी वाली बात शायद कुछ ज़्यादा ही हो रही है। आप बस बैठकर रेडियो क्यों नहीं सुन लेते?' जब तक हम
हम समझते थे कि हम हमेशा ईमानदार रहने और कुछ गहरा खोजने की कोशिश कर रहे थे।
सिर्फ उसके रेडियो सुनने मात्र से ही कहानी का लहजा और भी प्रभावशाली हो गया। मुझे लगता है
हम दोनों उस स्वाभाविक प्रक्रिया की सराहना करते थे। हम वहाँ मौजूद नहीं थे।
सिर्फ स्क्रिप्ट के आधार पर शूटिंग और कवर करने के लिए।
उन्होंने आगे कहा, 'वह हमेशा कोशिश करने को तैयार रहते थे। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या आप वाकई आश्वस्त हैं?"'
और उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे टहल कर वापस आना चाहिए। उन्होंने कहा, "यह तुम्हारा है।"
आपकी पहली फिल्म। आपने बहुत अच्छी पटकथा लिखी है। मुझे लगता है यह एक शानदार विचार है और अगर आप
अगर आप चाहते हैं कि मैं यह करूं तो मैं इसका समर्थन करूंगा।
रितेश के अनुसार, इरफ़ान के लिए सबसे कठिन हिस्सा उन दृश्यों की शूटिंग थी जो...
उसका अपार्टमेंट। कई दृश्यों में साजन अपने अपार्टमेंट में अकेला है।
पांच या छह दिनों की शूटिंग जिसमें इरफान बिल्कुल अकेले थे। कुछ दृश्य
अंतिम चयन में जगह नहीं बना पाईं। निम्रत कौर के साथ भी ऐसा ही हुआ। अक्सर वह अपने अपार्टमेंट में अकेली होती थी, अपने पति के लिए खाना बना रही होती थी।
लेकिन यह निश्चित रूप से साजन फर्नांडीस की डेस्क पर ही पहुँचता था।
'वह था

रितेश का कहना है, 'शायद यह उन दोनों के लिए मुश्किल होगा।' फिल्मों की शूटिंग के दौरान, रितेश को किताबें पढ़ने की आदत है। फिल्म के लहजे और माहौल के साथ। द लंचबॉक्स लिखते समय वे
मैं जापानी लेखक हारुकी का उपन्यास नॉर्वेजियन वुड भी पढ़ रहा हूँ। मुरकामी। फिर, शूटिंग के दौरान, रितेश को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इरफान
मैं मुराकामी की एक किताब भी पढ़ रहा था।
रितेश कहते हैं, 'वह सचमुच एक अच्छे पाठक हैं। सेट पर उनके पास हमेशा एक किताब रहती थी।'
और यह कोई संयोग नहीं था। यह उनकी बुद्धिमत्ता के बारे में था। वह कर सकते थे
हम जो कर रहे थे और फिल्म का जो लहजा चल रहा था, उससे हम यह समझ सकते थे।
मुझे लगता है कि फ़िल्म के भाव को समझने में किताबें बहुत मददगार होती हैं, यहाँ तक कि
फिल्मों से भी ज्यादा। असल में, मैं सोते समय फिल्म देखना नहीं चाहता।
एक बना रहे हैं।
कान्स में फिल्म के प्रीमियर के बाद, जिसमें इरफान भी शामिल हुए थे, उनके सह-कलाकारों और रितेश के साथ, फिल्म 'द लंचबॉक्स' टेलुराइड फिल्म थिएटर में प्रदर्शित की गई।
महोत्सव में, और एक सप्ताह बाद, टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में।
टेलुराइड में, आयोजकों ने फिल्म की चार स्क्रीनिंग की योजना बनाई थी। लेकिन
लंचबॉक्स इतना लोकप्रिय साबित हुआ कि इसमें तीन और शो जोड़ दिए गए। महोत्सव के दर्शकों की मांगों को पूरा करना। और फिर भी कुछ लोग बंद थे।

बाहर। टेलुराइड की सड़कों पर, लोग मुझे रोककर पूछते थे, 'क्या आप यहीं से हैं?'
भारत? क्या आपने 'द लंचबॉक्स' देखी? कितनी प्यारी थी ना?’ मैं लगातार यही सोचता रहता था।
उन अमेरिकियों में जो फिल्म के बारे में मुझसे बात करना चाहते थे।
चर्चा ज़ोरों पर थी।
टोरंटो में भी उतनी ही मजबूत स्थिति है।
सितंबर 2013 में, सभी की निगाहें उस फिल्म पर टिकी थीं जो इस श्रेणी में आती थी।
विदेशी भाषा ऑस्कर प्रतियोगिता में भारत की आधिकारिक प्रविष्टि।
ऐनी थॉम्पसन,
सबसे प्रभावशाली फिल्म पत्रकारों में से एक ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारत इसे चुनेगा।
'द लंचबॉक्स' को आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में। 'मैं भारत द्वारा रितेश को भेजने का समर्थन कर रहा था।'
बत्रा की सोनी पिक्चर्स क्लासिक्स द्वारा चुनी गई फिल्म, द लंचबॉक्स, मुंबई की एक गर्मजोशी भरी कहानी है।
इरफ़ान खान अभिनीत वह रोमांटिक फिल्म जिसने फिल्म समारोहों में धूम मचा दी।
कान्स से टेलुराइड और टोरंटो तक… (इसमें) सफल होने का एक वास्तविक मौका था,’ उन्होंने लिखा।
IndieWire.63 और द हॉलीवुड रिपोर्टर के स्तंभकार स्कॉट फेनबर्ग, उन्होंने कहा कि द लंचबॉक्स के पांच नामांकितों में शामिल होने की अच्छी संभावना है।
विदेशी भाषा की फिल्में।64
द लंचबॉक्स के टोरंटो प्रीमियर के बाद, चुनिंदा मेहमानों को आमंत्रित किया गया था।

मुझे भारतीय रेस्टोरेंट 'द होस्ट' में डिनर के लिए आमंत्रित किया गया था। मैंने प्रोड्यूसर से बात की।
डेनिस टानोविक ने मुझसे कहा कि उन्हें उम्मीद है कि 'द लंचबॉक्स' भारत का आधिकारिक प्रकाशन होगा।
प्रवेश। तानोविक ने कहा, 'अगर भारत जीतना चाहता है तो यही भारत का विकल्प होना चाहिए।'
टानोविक ने नो मैन्स के लिए 2002 का सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म का ऑस्कर पुरस्कार जीता था।
लैंड (उनकी फिल्म ने उस साल ऑस्कर की दौड़ में लगान को हराया था)। लेकिन माइकल बार्कर,
सोनी पिक्चर्स क्लासिक्स के सह-अध्यक्ष और सह-संस्थापक को सम्मानित किया गया।
उसी पार्टी का कहना है कि समिति पर हर तरह का दबाव होगा।
भारतीय प्रतिभागी का चयन किया जाएगा। 'हर देश के चयन में राजनीति शामिल होती है।'
'प्रक्रिया,' माइकल ने मुझसे कहा।
यह स्पष्ट नहीं है कि माइकल बार्कर किस राजनीति का सुझाव दे रहे थे, लेकिन फिल्म
फेडरेशन ऑफ इंडिया (एफएफआई), जो भारत की आधिकारिक प्रविष्टि का चयन करने वाली संस्था है,
अंततः भारत की ऑस्कर प्रविष्टि के रूप में एक गुजराती फिल्म, द गुड रोड, को चुना गया।
बहुत कम लोगों ने 'द गुड रोड' देखी थी। दर्शकों के बीच इसका कोई नामोनिशान नहीं था।
हालांकि, एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर्स आर्ट्स एंड साइंसेज के सदस्य उनमें से कई लोगों ने फिल्म समारोहों में से किसी एक में पहले ही 'द लंचबॉक्स' देख ली थी।
कई लोग निराश, स्तब्ध और क्रोधित थे। उन्होंने सवाल उठाए।

एफएफआई को किस प्रकार अकादमी के सदस्यों से एक अज्ञात व्यक्ति से जुड़ने की उम्मीद थी?
विदेशी भाषाओं की फिल्मों की भीड़ के बीच उन्हें भारतीय फिल्म भी देखनी पड़ी।
भारत में कुछ आलोचकों ने अंततः 'द गुड रोड' देखी और वे
फिल्म की काफी आलोचना हुई। मैंने भी इसे डीवीडी पर देखा और काफी निराश हुआ।
चौंक गया। गुजराती फिल्म में कई असंबंधित घटनाओं को शामिल किया गया था।
कुछ हद तक घटिया अभिनय और विदेशी भारत के कुछ अंशों के साथ, जो कुछ भारतीय
फिल्म निर्माताओं को लगता है कि यह पश्चिमी दर्शकों के लिए कारगर साबित होगा। द लंचबॉक्स,
इसके विपरीत, यह एक उत्कृष्ट फिल्म निर्माण का नमूना था, अकेलेपन के प्रति एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि।
एक बड़े महानगर में रहने वाले लोग।
खबर सामने आने पर रितेश बत्रा ने यह ट्वीट किया: ‘दिल टूट गया। हम उतनी दूरी तय कर सकते थे जितनी हमें हमारे अमेरिकी अधिकारियों ने बताई थी।’
वितरकों द्वारा, हॉलीवुड प्रेस द्वारा...' फिल्म के दो निर्माता, अनुराग
कश्यप और करण जौहर ने भी सोशल मीडिया पर अपनी संवेदना व्यक्त की। निराशा। और फिल्म के निर्माताओं में से एक इरफान ने भी इस बारे में खुलकर बात की।
एफएफआई के फैसले के खिलाफ। 'संस्था की जो भी जिम्मेदारी हो, वे ‘मुझे अच्छा काम करना चाहिए था,’ इरफान ने एक इंटरव्यू में कहा। ‘मैं बस
निराशा हुई क्योंकि यह एक नई भाषा वाली फिल्म थी और इसमें क्षमता थी

विश्व दर्शकों से जुड़ना। वह फिल्म अपने आप में अनूठी थी।’65
और बाद में उन्होंने एक अन्य साक्षात्कार में कहा, 'किसी को जूरी सदस्यों से पूछना चाहिए।'
उन्होंने 'द गुड रोड' को क्यों चुना? उनसे यह पूछना चाहिए कि उसमें ऐसा क्या खास था।
उस फिल्म के बारे में।
कुछ लोग एफएफआई के फैसले को लेकर कुछ समय तक असंतुष्ट रहे, और
खासकर तब जब 'द गुड रोड' ऑस्कर की दौड़ से कई अन्य फिल्मों के साथ गायब हो गई।
अन्य उल्लेखनीय विदेशी भाषा की फिल्मों में भी काम किया। लेकिन इरफ़ान अंततः आगे बढ़ गए।
चाहे इसे पुरस्कार मिले हों या न मिले हों, 'द लंचबॉक्स' आज भी एक अनमोल कृति बनी हुई है।
इरफ़ान की अभिनय प्रतिभा का शिखर। आज भी 'द लंचबॉक्स' जैसी फिल्म को याद किया जाता है।
पश्चिम में न केवल इरफान के अभिनय के लिए बल्कि इसलिए भी क्योंकि इसने
भारतीय सिनेमा पर उसी तरह से ध्यान केंद्रित किया जाए, जैसे 2001 में 'मॉनसून वेडिंग' ने किया था।
'जब भारत के बाहर के लोग मेरे काम को पहचानते हैं तो मुझे खुशी होती है।'
क्योंकि एक स्तर पर मैं सिनेमा के बारे में उनके विचार को बदलने में भी सक्षम हूं।'
इरफ़ान ने एक इंटरव्यू में बॉलीवुड से बाहर रहने के प्रभाव के बारे में बात करते हुए यह कहा।
फ़िल्में.67 'हमारी कहानियाँ और अधिक वास्तविक होती जा रही हैं, हमारे दर्शक बदल रहे हैं और
दुनिया को इसके बारे में पता होना चाहिए।'

पहेली को सुलझाना

जून 2017 में इरफान खान ने इंस्टाग्राम पर कई तस्वीरें पोस्ट कीं, जिनमें
उन्हें या तो न्यूयॉर्क शहर की सड़कों पर चलते हुए या फिर किसी और जगह पर दिखाया गया था।
योंकर्स का उत्तरी उपनगर। एक तस्वीर में, मुस्कुराते हुए इरफान ने एक
किमोनो पहने हुए और मैनहट्टन की एक सड़क के किनारे खड़े हुए। तस्वीरों में #thepuzzle हैशटैग था। बाद में यह स्पष्ट हो गया कि इरफान
पज़ल (2018) नामक एक इंडी फिल्म में अभिनय करना।
अर्जेंटीना की फिल्म रोमपेकाबेज़ास (2009) पर आधारित, पज़ल का निर्देशन मार्क टर्टलटाउब ने किया था, जो कई अमेरिकी फिल्मों के निर्माता के रूप में जाने जाते हैं।
इंडी फिल्में, लिटिल मिस सनशाइन (2006) से लेकर लविंग (2016) तक। अपेक्षाकृत छोटी
बड़े हॉलीवुड फ्रेंचाइज़ फिल्मों की तुलना में, इरफ़ान पहले ही कई फिल्मों का निर्माण कर चुके थे।
पज़ल उनकी पहली अमेरिकी इंडी फिल्म होगी जिसमें उन्होंने अभिनय किया था।
पज़ल में स्कॉटिश अभिनेत्री केली मैकडोनाल्ड मुख्य भूमिका में हैं।
एग्नेस, एक शांत स्वभाव की गृहिणी और माँ, अपने जीवन से ऊब चुकी थी, जब तक कि उसे एक नया जीवन नहीं मिल गया।

उद्देश्य—उसे एहसास होता है कि वह जिगसॉ पहेलियाँ सुलझाने में बहुत अच्छी है। इरफ़ान खेलता है।
रॉबर्ट, एक धनी तलाकशुदा व्यक्ति और एग्नेस का पहेली सुलझाने वाला साथी, जो इस घटनाक्रम को शुरू करता है।
उसके अंदर जुनून जाग उठता है, और दोनों को अपने जटिल जीवन में शांति का अनुभव होता है।
इरफ़ान के रॉबर्ट कहते हैं, 'पहेलियाँ सुलझाना अराजकता को नियंत्रित करने का एक तरीका है।'
फिल्म। 'जब हम इसे पूरा कर लेते हैं, तो इससे एक संपूर्ण तस्वीर मिलती है, नियंत्रण करने का हमारा तरीका।
हमारे चारों ओर फैली अव्यवस्था।
फिल्म के निर्माता पीटर सराफ ने ही सबसे पहले इरफान को कास्ट करने का विचार किया था।
फिल्म में। 'इरफान उन अभिनेताओं में से एक हैं जो तुरंत आपको अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं और
फिल्म में पीटर के हवाले से कहा गया है, 'आप उससे अपनी नजरें नहीं हटा सकते।'
कार्यक्रम संबंधी टिप्पणियाँ। ‘मैंने उस दृश्य के बारे में सोचा जहाँ एग्नेस मिलने जाती है
जिस व्यक्ति ने पहेली सुलझाने के लिए साथी की तलाश में व्यक्तिगत विज्ञापन दिया था। क्या यह नहीं होगा?
अगर इरफान खान दरवाजा खोल दें तो यह असाधारण बात होगी?
मार्क टर्टलटाउब ने इरफ़ान को उनकी बड़ी हॉलीवुड फिल्मों में और यहां तक कि
उनकी अधिक अंतरंग रचनाएँ, जैसे कि द लंचबॉक्स। 'मुझे लगा कि वह एक खूबसूरत रचना है।'
'चित्रण,' मार्क कहते हैं। उन्हें एचबीओ शो 'इन' में इरफान को देखने की भी याद आई।

उपचार। 'मैं उन्हें दुनिया के महानतम अभिनेताओं में से एक मानता हूँ।' लेकिन जब
निर्माता पीटर सराफ ने इरफान खान को इस भूमिका के लिए विचार करने के लिए संपर्क किया।
रॉबर्ट, मार्क थोड़ा हिचकिचा रहा था। 'मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह पूरी तरह से आने पर विचार करेगा।'
भारत से हमारी छोटी फिल्म बनाने का रास्ता। लेकिन पीटर ने कहा, "हमें कोशिश करनी चाहिए।"
आखिरकार फिल्म की पटकथा भारत भेजी गई, और मार्क को आश्चर्य हुआ कि इरफान को वह बहुत पसंद आई।
यह।
हालांकि इरफान को एक बार फिर अंग्रेजी नाम दिया गया था, फिल्म ठीक-ठाक थी।
एक ऐसे भारतीय अभिनेता को कास्ट करके, जिसकी बोली में स्पष्ट लहजा झलकता था, जो उसकी पहचान बन सके।
जातीयता और राष्ट्रीय मूल। 'यह भूमिका किसी भारतीय या किसी अन्य व्यक्ति के लिए नहीं लिखी गई थी।'
मार्क कहते हैं, 'हमें एक श्वेत अभिनेता चाहिए था। हम बस एक ऐसे व्यक्ति को चाहते थे जो अविश्वसनीय हो।' '
अभिनेता। इसलिए हमारे मन में किसी भी तरफ कोई पूर्वाग्रह नहीं था।' और यह
इरफ़ान को कलर-ब्लाइंड कास्ट करना एक अच्छा संकेत था। तब तक इरफ़ान अपना मुकाम बना चुके थे।
उनकी उपस्थिति महसूस की गई और हॉलीवुड उन्हें ऐसी भूमिकाएँ देने को तैयार था जो पहले संभव नहीं थीं।
इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि वह एक भारतीय अभिनेता थे।
मार्क अपने अभिनेताओं के साथ पूर्वाभ्यास नहीं करते थे। उन्हें नहीं लगता था कि उनके अभिनेता 'विश्व स्तरीय' हैं।

अभिनेताओं को पूर्वाभ्यास की आवश्यकता थी। उन्होंने कहा कि निर्माता के रूप में अपने वर्षों के अनुभव से उन्होंने सीखा है कि अभिनेताओं को बिना किसी पूर्वाभ्यास के अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन करने देना अच्छा होता है।
पहले से ही। इसमें मामूली समायोजन करने की गुंजाइश हमेशा रहेगी। सेट। 'लोग मुझे उनके शानदार प्रदर्शन का श्रेय देते हैं,' वह कहते हैं। 'लेकिन मुझे पता है
सच तो यह है कि मैं इतना समझदार था कि उनके रास्ते से हट गया और उन्हें अपना काम करने दिया।
क्या करते है वो।'
मैंने वर्षों से यह सीखा है कि अभिनेताओं के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि वे
न केवल उनके द्वारा कहे जाने वाले शब्दों को ढूंढें, बल्कि यह भी पता लगाएं कि वे उन्हें कहाँ कहना चाहते हैं।
और वे सेट पर कैसे आगे बढ़ना चाहते हैं,’ वे आगे कहते हैं। ‘आपको उन्हें इसकी अनुमति देनी होगी।
वह आजादी। तब वे आराम कर सकते हैं और आपको सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दे सकते हैं।'
फिल्म में एक खूबसूरत दृश्य है जहां केली मैकडोनाल्ड की एग्नेस
वह अपने बेटे द्वारा कॉलेज में दाखिले के लिए लिखे गए पत्र को साझा करना चाहती है।
एग्नेस इरफान खान के रॉबर्ट के साथ रसोई में है। मार्क ने पहले से ही योजना बनाई थी।
जब रॉबर्ट आता है तो दोनों अभिनेता रसोई की मेज के चारों ओर खड़े होते हैं।
एग्नेस के करीब जाकर पूछता है कि क्या वह उसे चूम सकता है। लेकिन तभी इरफान ने सुझाव दिया।

टेबल के पास बैठकर उस दृश्य को फिल्माने की कोशिश कर रही थी। 'यह मेरी सहज प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं थी, लेकिन मुझे लगता है कि यह
मार्क कहते हैं, 'यह एक बहुत ही बढ़िया ढंग से फिल्माया गया दृश्य साबित हुआ। अभिनेताओं को इसमें अपनी प्रतिभा का परिचय देना होगा।' वह स्थान जहां वे सबसे अधिक सहज महसूस करते हैं।
शूटिंग के दौरान कभी-कभी मार्क इरफान को अपने किरदार की तैयारी करते हुए देखता था।
या फिर किसी शॉट के दौरान। आम तौर पर अभिनेता सहज और आरामदेह महसूस करता है, लेकिन कभी-कभी...
अक्सर वह चुप रहता था, जिससे ऐसा लगता था कि वह इस बारे में सोच रहा है कि वह कैसे
अगला सीन करना चाहते थे। इरफ़ान रॉबर्ट के किरदार में बहुत सहज थे, और उन्होंने
वह सेट पर काफी घूमता रहता था। 'उसके हाव-भाव अक्सर अप्रत्याशित होते थे।'
जब वह अपना हाथ हवा में उठाता था, या गोलाकार आकृति बनाता था, तो वह ऐसा करता था।
'इशारा,' मार्क कहते हैं। 'देखने वाले हर किसी की तरह, मैं भी सोचता, "वाह, यह कहाँ है?"
क्या वह इसके साथ जाएगा? और ज़ाहिर है, अंततः यह एक प्रदर्शन ही साबित हुआ।
जहां आपको एक सनकी, धनी, करिश्माई व्यक्ति दिखाई देता है। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता था।
मैंने खुद देखने तक इसकी भविष्यवाणी की थी।
यह पहेली असल में केली मैकडोनाल्ड की है क्योंकि वही इसका मुख्य पात्र है।
कहानी का सार यही है, और एक तरह से यह फिल्म एक महिला के बड़े होने की कहानी है।

जो 40 वर्ष से अधिक उम्र की हैं। फिल्म को नारीवादी रंग देने के लिए, मार्क और उनके निर्माता ने एक महिला को काम पर रखा।
एक महिला संपादक, कैथरीन हाइट। वे एक महिला का दृष्टिकोण चाहते थे।
फिल्म की एडिटिंग चल रही थी। लेकिन जब मार्क ने फिल्म का पहला कट देखा तो वह हैरान रह गया।
बाद में पता चला कि यह कहानी ज्यादातर इरफान के बारे में थी। उन्होंने कहा, 'मैंने पूछा, "केट, क्या हुआ?" मुझे लगा कि वह कोशिश कर रही थी...'
फिल्म में महिला आवाज की रक्षा करें। और उसने कहा, "हाँ, लेकिन मुझे प्यार हो गया..."
इरफ़ान।
इरफ़ान जनवरी 2018 में अपने निर्देशक और सह-कलाकारों के साथ सनडांस फिल्म फेस्टिवल में गए थे। डेडलाइन हॉलीवुड से बात करते हुए उन्होंने कहा कि फिल्म...
लेखन ने मुझ पर जादू कर दिया। वह इस परियोजना की ओर आकर्षित हुए क्योंकि इसमें
सरल, फिर भी जीवन के जटिल तत्वों को समाहित करने में सक्षम। और फिर वह उन्होंने आगे कहा, 'मैं बड़े स्टूडियो की फ्रेंचाइज़ फिल्मों में काम कर रहा हूं। इसलिए मैं एक नई फिल्म की तलाश में था।'
एक ऐसी फिल्म जो अधिक अंतरंग, अधिक व्यक्तिगत थी। अचानक, अप्रत्याशित रूप से, यह
मुझे स्क्रिप्ट मिली और मुझे वह बहुत पसंद आई, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे इसे करना ही होगा।
समीक्षाएँ अधिकतर सकारात्मक थीं। वाशिंगटन की ऐनी हॉर्नाडे पोस्ट ने कहा कि हालांकि फिल्म केली मैकडोनाल्ड की थी, लेकिन 'उनकी ओर से,
इरफ़ान खान ने एग्नेस के पहेली पार्टनर के रूप में मोहक अंदाज़ में मनोरंजन किया है, जो एक नए शहर में रहता है।

यॉर्क का एक टाउनहाउस जो किसी तरह से एक ही समय में भव्य और बंजर है। 69
गार्जियन के माइक मैकहिल ने कहा कि रॉबर्ट का किरदार 'एक बहुत ही सहज और संयमित अभिनेता' द्वारा निभाया गया था।
इरफ़ान खान’.70
पज़ल इरफ़ान का पहला अमेरिकी प्रोजेक्ट था जिसमें उन्होंने काम किया था।
एक दमदार सहायक भूमिका। और ऐसा लग रहा था कि उन्हें फिल्म में काम करना बहुत पसंद आया। पहेली
यह जुलाई 2018 में न्यूयॉर्क और लॉस एंजिल्स में प्रदर्शित होने से पहले अन्य स्थानों पर भी प्रदर्शित हुआ था।
अन्य अमेरिकी शहरों में। फिल्म के कलाकारों और निर्देशक ने फिल्म के प्रचार में समय बिताया।
फिल्म के प्रमोशन में इरफान शामिल नहीं हो पाए क्योंकि वे लंदन में थे। लेकिन लंदन में होने के कारण वे फिल्म के प्रमोशन में हिस्सा नहीं ले सके।
न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर का इलाज करवा रहे हैं।

कुछ चीजें गिर जाती हैं, कुछ बनी रहती हैं

अमेरिका में इरफान का करियर जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था, उन्हें कभी- कभी ये फैसले लेने पड़ते थे।
भारत में एक महत्वपूर्ण परियोजना लेने और हॉलीवुड की किसी बड़ी फिल्म में काम करने के बीच चुनाव करना कठिन था।

फिल्म। ऐसा कुछ बार हुआ—सबसे महत्वपूर्ण तब था जब उन्होंने 'ना' कह दिया।
रिडले स्कॉट की फिल्म द मार्टियन (2015) के बजाय, उन्होंने एक आकर्षक, शांत किरदार को चुना।
प्रेम कहानी—पिकू (जो 2015 में ही रिलीज़ हुई थी)—जिसमें उन्हें अभिनय करने का मौका भी मिला।
दीपिका पादुकोण की प्रेमिका (हिंदी फिल्मों के सबसे गैर-पारंपरिक तरीके से), और
अमिताभ बच्चन के साथ सह-कलाकार।
‘वह दुविधा में था कि क्या करे, और वह मुझसे बार-बार पूछ रहा था,’ शूजीत ने कहा।
पिकू के निर्देशक सिरकार का कहना है कि दोनों फिल्मों की शूटिंग की तारीखें एक ही थीं।
वही बात। मैं सोच रहा था, शायद उनके लिए, शूजीत सरकार कौन हैं? वो तो कोई नहीं हैं।
हॉलीवुड निर्देशक की तुलना में।
शूजित ने उन्हें अपनी पसंद का कोई भी काम चुनने की छूट दी थी। और इरफ़ान को हमेशा से पता था कि वह सिर्फ़ एक ही फ़िल्म कर सकते हैं। शूजित ने तो उन्हें यह प्रस्ताव भी दिया था कि...
उन्होंने अपनी तारीखें बदल दीं। लेकिन आखिरकार इरफान ने रिडले स्कॉट को मना कर दिया। जाहिर है उन्होंने
एक छोटी लेकिन अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी के लिए आवेदन किया। विंसेंट कपूर की भूमिका उन्हें मिली।
ब्रिटिश-नाइजीरियाई अभिनेता चिवेटेल एजिफोर। लेकिन इरफान ने सही चुनाव किया, क्योंकि
पिकू ने हिंदी रोमांटिक कॉमेडी फिल्मों की एक श्रृंखला की शुरुआत की।
जिसमें वह मुख्य भूमिका निभाएंगे।

इरफ़ान ने रिडले स्कॉट से मुलाकात की और निर्देशक ने उन्हें बताया कि उनके पास
इरफ़ान ने 'द लंचबॉक्स' देखी थी। बाद में उन्होंने प्रेस को बताया कि यह दूसरी बार था जब उन्होंने यह फिल्म देखी थी।
उन्हें हॉलीवुड के निर्देशक और निर्माता द्वारा एक भूमिका की पेशकश की गई थी। पहली
बॉडी ऑफ लाइज़ (2008) प्रोजेक्ट में रसेल क्रो और लियोनार्डो डिकैप्रियो ने अभिनय किया था।
मुख्य भूमिका निभाने के लिए तैयार थे। लेकिन एक बार फिर इरफान को मना करना पड़ा क्योंकि समय अनुकूल नहीं था।
इरफ़ान ने एक बार स्टीवन स्पीलबर्ग को भी मना कर दिया था। यह उनके लिए एक मौका था।
स्कारलेट जोहानसन के प्रेमी की भूमिका निभाने के लिए। लेकिन उन्हें इस बात की चिंता थी कि
फिल्म में उनके किरदार को अभिनय का पर्याप्त अवसर नहीं मिला। शायद वह
द अमेज़िंग स्पाइडर-मैन में एक छोटी सी भूमिका मिलने के बाद से ही सावधानी बरत रहा हूँ।
(2012).
इरफ़ान को सबसे बड़ा अफ़सोस क्रिस्टोफर नोलन की फिल्म में काम न कर पाने का था।
फिल्म इंटरस्टेलर (2014)। शूटिंग के लिए इरफान को अमेरिका में रुकना था।
लगातार चार महीनों तक। उन्होंने कार्यक्रम तय करने की कोशिश की। और उन्होंने तो यहाँ तक कि
मैंने भारत और अमेरिका के बीच आना-जाना करने का सोचा था। लेकिन वह योजना सफल नहीं हो पा रही थी।

इंटरस्टेलर टीम के लिए। और इरफान भारत में रहकर द पर काम करने के इच्छुक थे।
लंचबॉक्स (2013) और डी-डे (2013)। 'मुझे अपने किए पर पछतावा करने की प्रवृत्ति नहीं है।'
हाँ, लेकिन यह जानते हुए कि यह क्रिस्टोफर नोलन की फिल्म है, मैं कह सकता हूँ कि यह
इरफान ने बाद में कहा, 'यह मेरे द्वारा लिए गए सबसे कठिन निर्णयों में से एक था।'71
कुछ अन्य आशाजनक परियोजनाएं भी थीं जो कभी साकार नहीं हुईं।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इरफान से ब्रिटिश निर्देशक जो ने संपर्क किया था।
राइट (जो अनुष्का शंकर के पति भी हैं) जवाहरलाल नेहरू की भूमिका निभाएंगे।
फिल्म इंडियन समर, एलेक्स वॉन टुनज़ेलमैन की इसी नाम की किताब पर आधारित है।
यह फिल्म भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के अंतिम दिनों पर केंद्रित थी।
इसमें नेहरू और एडविना के बीच कथित प्रेम प्रसंग की भी पड़ताल की जानी थी।
माउंटबेटन। केट ब्लैंचेट लेडी माउंटबेटन की भूमिका निभाएंगी और ह्यूग ग्रांट
उन्हें उनके पति, लॉर्ड माउंटबेटन की भूमिका की पेशकश की गई थी। हर बात यही संकेत दे रही थी कि
यह एक प्रतिष्ठित परियोजना है, जिसमें जो राइट (प्राइड एंड प्रेजुडिस) भी शामिल हैं।
फिल्म का निर्देशन (2005 और एटोनमेंट, 2007) करेंगे। फिल्म का शेड्यूल तय हो चुका था।
2011 में रिलीज हुई।

भारतीय अभिनेताओं की कई पीढ़ियों ने जवाहरलाल नेहरू की भूमिका निभाने का सपना देखा है।
या महात्मा गांधी जैसे किरदार निभाने का मौका बहुत कम लोगों को मिला है। स्वाभाविक रूप से इरफान इस भूमिका के लिए चुने जाने को लेकर उत्साहित थे, भले ही उनकी शारीरिक क्षमता उतनी अच्छी नहीं थी। नेहरू से समानता। उन्होंने एक साक्षात्कार में इस चिंता का समाधान किया: 'मैं बदल दूंगा'
अपने रवैये के ज़रिए मैं खुद को किरदार में ढाल लेता था। जब मैं एनएसडी से बाहर आया था, तब मैंने
उन्होंने रूसी नाटक 'ब्लू हॉर्सेस ऑन रेड ग्रास' में लेनिन की भूमिका निभाई थी।
21 में से। इसने मुझे एक अभिनेता के रूप में अपनी क्षमता और दिशा का एहसास कराया,’72 इरफ़ान
कहा।
इसमें देरी हुई, जिसमें सबसे पहली देरी भारतीय सरकार की ओर से हुई।
पूरी स्क्रिप्ट को मंजूरी देने की मांग की गई। यहां तक कि इस संबंध में एक वादा भी किया गया था।
निर्देशक ने कहा था कि वह नेहरू और एडविना के बीच किसी भी तरह के चुंबन का दृश्य नहीं दिखाएंगे।
माउंटबेटन। लेकिन फिल्म का बजट बढ़कर अनुमानित $30 मिलियन हो गया। 40 मिलियन डॉलर। और अंततः परियोजना को रोक दिया गया। 'हम एक मुश्किल स्थिति में थे।
और एक कठिन परिस्थिति,’ जो राइट ने 73 वैरायटी को बताया। ‘भारतीय सरकार चाहती थी
हमें प्रेम कहानी को कम महत्व देने के लिए कहा गया जबकि स्टूडियो (यूनिवर्सल) चाहता था कि हम ऐसा करें।
प्रेम कहानी को और अधिक प्रभावशाली बनाओ।

ह्यूग ग्रांट और केट ब्लैंचेट आगे बढ़ चुके होते क्योंकि वे ऐसा कर सकते थे।
हॉलीवुड और वेस्टर्न फिल्मों के अन्य प्रोजेक्ट्स पर ध्यान दें।
लेकिन अभिनेता भी इंसान होते हैं।
उस समय इरफान खान को पश्चिम में प्रमुख परियोजनाएं मिलनी शुरू ही हुई थीं।
इंडियन समर के रद्द होने से उन्हें बहुत निराशा हुई होगी।
लेकिन इरफान ने आगे बढ़ना सीख लिया था, शायद उस समय से जब वह
मीरा नायर की फिल्म 'सलाम बॉम्बे' के लिए उन्हें पहली बार अस्वीकृति का सामना करना पड़ा। अच्छी बात यह रही कि...
मुझे लगातार दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण परियोजनाएं मिलती रहीं, खासकर भारत में।
इससे उन्हें अपनी छवि को फिर से परिभाषित करने के साथ-साथ एक अभिनेता के रूप में आनंद लेने का अवसर मिला।

49‘“जुरासिक वर्ल्ड” के अभिनेता इरफान खान आगामी फिल्म पर: “यह एक डरावना रोमांच होगा”’, द
हॉलीवुड रिपोर्टर, 10 दिसंबर 2014, https://www.hollywoodreporter.com/news/jurassic-world-अभिनेता-इरफ़ान-खान-756206
50‘इरफान खान: “मैं बॉलीवुड शब्द का विरोध करता हूँ”’, द गार्जियन, 25 जुलाई 2013,
https://www.theguardian.com/film/2013/jul/25/irrfan-khan-bollywood-d-day
51. 'एंग ली ने 'लाइफ ऑफ पाई' के निर्माण पर क्या कहा', एबीसी न्यूज, 14 फरवरी 2013,
https://www.youtube.com/watch?v=rLQK-s4EIEc

52‘“लाइफ ऑफ पाई”: इरफान खान ने एक असंभव भूमिका को कैसे बखूबी निभाया’, hollywood.com, 29 नवंबर 2012, http://www.hollywood.com/movies/life-of-pi-how-irrfan-khan-nailed-an-impossible-role-57154359/
53‘मुझे लाइफ ऑफ पाई में अपनी पूरी भूमिका दोबारा शूट करनी पड़ी: इरफान’, हिंदुस्तान टाइम्स, 1 दिसंबर 2012, https://www.hindustantimes.com/hollywood/i-had-to-re-shoot-my-entire-role-in-life-of-pi-irrfan/story-qwNDyUwVpHYeMcZWHW6UlN.html
54‘“लाइफ ऑफ पाई” ने टोबी मैगुइरे पर काफी असर डाला’, यूएसए टुडे, 12 नवंबर 2012,
https://www.usatoday.com/story/life/movies/2012/11/20/life-of-pi-tobey-maguire/1696157/
55‘इरफान खान ने लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल में भाषण दिया’, roobla.com, 26 जुलाई 2013, https://roobla.com/film/news/26017/irrfan-khan-speaks-at-the-london-indian-film-festival/
56. इरफान खान: “मैं बॉलीवुड शब्द का विरोध करता हूँ”, द गार्जियन, 25 जुलाई 2013,
https://www.theguardian.com/film/2013/jul/25/irrfan-khan-bollywood-d-day
57‘हॉलीवुड और बॉलीवुड में कहानी कहने का तरीका बहुत अलग है: इरफान खान’
https://www.youtube.com/watch?v=46i6p9ShZ-o
58 वही।
59 ‘इरफान खान के साथ एक फिल्मी मुलाकात’, द हिंदुस्तान टाइम्स, 4 जुलाई 2016,

https://www.hindustantimes.com/brunch/on-a-movie-date-with-irrfan-khan/story-
hrFYkA9jsjWN4cWUlTfN7M.html.
60‘क्या वेब है!’ द हिंदू, 23 जून 2012, https://www.thehindu.com/features/cinema/what-a-webb/article3562729.ece
61‘मार्क वेब इरफान खान के प्रशंसक हैं’, inextlive.com, 12 जून 2012, https://inextlive.jagran.com/marc-webb-is-fan-of-irrfan-khan-201206120028
62“जुरासिक वर्ल्ड” के अभिनेता इरफान खान आगामी फिल्म पर: “यह एक डरावना रोमांच होगा”
हॉलीवुड रिपोर्टर, 10 दिसंबर 2014, https://www.hollywoodreporter.com/news/jurassic-world-अभिनेता-इरफ़ान-खान-756206
63. ऐनी थॉम्पसन, 'भारत ने फेस्टिवल हिट "द लंचबॉक्स" को नजरअंदाज किया, ऑस्कर के लिए "द गुड रोड" को भेजा'
इंडिवॉयर, 21 सितंबर 2013, https://www.indiewire.com/2013/09/india-snubs-fest-hit-the-lunchbox-
प्रस्तुत करता है-द-गुड-रोड-फॉर-ऑस्कर-195967/
64 स्कॉट फेनबर्ग, 'फेनबर्ग पूर्वानुमान: टेलुराइड के बाद, टोरंटो और न्यू यॉर्क से पहले ऑस्कर परिदृश्य'
यॉर्क’, द हॉलीवुड रिपोर्टर, 4 सितंबर 2013, https://www.hollywoodreporter.com/race/feinberg-forecast-oscar-landscape-telluride-618626
65 ‘ऑस्कर की दौड़ में द लंचबॉक्स के हारने पर इरफान निराश’, फर्स्टपोस्ट, 3 अक्टूबर 2013, https://www.firstpost.com/entertainment/irrfan-disappointed-at-the-lunchbox-losing-out-in-oscar-

nomination-race-1151287.html
66 ‘लंचबॉक्स के लिए ऑस्कर में नजरअंदाज किए जाने से इरफान अब भी नाराज हैं’, इंडिया टुडे, 18 अक्टूबर 2013, https://www.indiatoday.in/movies/bollywood/story/irrfan-still-bitter-about-oscar-snub-for-lunchbox-
214688-2013-10-18
67 दिव्या उन्नी, ‘इरफान खान इंटरनेशनल’, ओपन, 7 अक्टूबर 2015, https://openthemagazine.com/art-संस्कृति/इरफान-खान-अंतर्राष्ट्रीय/
68‘पज़ल—सनडांस 2018’, डेडलाइन हॉलीवुड, 24 जनवरी 2018, https://www.youtube.com/watch?
v=sAQlBF0jA7c
69 एन हॉर्नाडे, 'यह वह प्रतिस्पर्धी जिगसॉ पज़ल ड्रामा है जिसका आप इंतजार कर रहे थे', द
वॉशिंगटन पोस्ट, 1 अगस्त 2018, https://www.washingtonpost.com/goingoutguide/movies/this-is-the-competitive-jigsaw-puzzle-drama-youve-been-waiting-for/2018/08/01/623c42fe-8f8d-11e8-b769-e3fff17f0689_story.html?utm_term=.3a0128c6259d
70 माइक मैकहिल, 'केली मैकडोनाल्ड जिगसॉ इंडी में व्यापक दृष्टिकोण रखती हैं', द गार्डियन, 20 जून
2018, https://www.theguardian.com/film/2018/jun/20/puzzle-review-jigsaw-kelly-macdonald-irrfan-
खान-एडिनबर्ग-फिल्म-फेस्टिवल
71‘नोलन से लेकर डिकैप्रियो तक: 4 बार इरफान खान ने हॉलीवुड के प्रस्ताव ठुकराए’, हिंदुस्तान टाइम्स, 5
फरवरी 2016, https://www.hindustantimes.com/hollywood/4-times-irrfan-khan-turned-down-

hollywood/story-3hNGrmjxUp3fYLKiKfEB9J.html
72. सुभाष के. झा, ‘मैं नेहरू की भूमिका बखूबी निभा सकता हूँ: इरफान खान,’ हिंदुस्तान टाइम्स, 12 अक्टूबर
2009, https://www.hindustantimes.com/india/i-can-pull-off-nehru-s-role-for-sure-irrfan-khan/story-
8LEScJASRk30DxvrIJ6EjN.html
73‘केट ब्लैंचेट की फिल्म 'इंडियन समर' स्थगित हुई,’ पेस्ट, 27 अक्टूबर 2009,
https://www.pastemagazine.com/articles/2009/10/indian-government-delays-cate-blanchetts-
मूवी.एचटीएमएल.
6

नई क्लासिक फिल्में: अवहेलना

सीमाएँ और लेबल

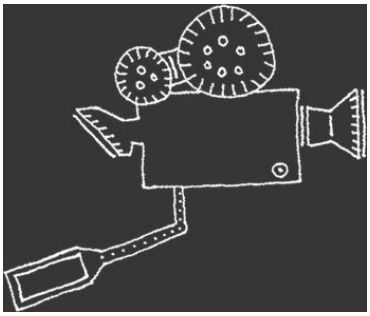

Ek baar to yun hoga, thoda sa sukoon hoga Na dil mein kasaq hogi, na sar mein junoon hoga. 74

जब इरफान खान के दोस्त तिग्मांशु धूलिया फिल्म 'बैंडिट क्वीन' (1994) में शेखर कपूर की सहायता कर रहे थे, तब उन्हें एक साप्ताहिक पत्रिका में डाकू से राजनेता बनी फूलन देवी पर एक लेख मिला।
रविवार को आनंदबाजार पत्रिका में प्रकाशित। यह एक कवर स्टोरी थी, और अंदर...
एक अन्य डाकू, पान सिंह तोमर का भी जिक्र था, जिसने अपनी शुरुआत की थी।
भारतीय सेना के सैनिक के रूप में उनका जीवन। वह सात बार राष्ट्रीय स्टीपलचेज़ विजेता रहे।
चैंपियन, एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए, लेकिन बाद में, एक कारणवश
पारिवारिक भूमि विवाद के कारण, उसे हथियार उठाने और कुख्यात बनने के लिए मजबूर होना पड़ा।
चंबल घाटी में डाकू।
उस समय तिशु को पता था कि एक दिन, निर्देशक बनने के बाद,
वह पान सिंह तोमर के जीवन पर आधारित एक फिल्म बनाएंगे। उन्होंने इरफान को बताया कि वह
उन्हें मुख्य भूमिका में लिया जाएगा।
कई साल बाद, रुड़की में फिल्म की शूटिंग के दौरान, इरफान ने बताया कि टाइम पत्रिका ने बताया कि वह पान सिंह तोमर की कहानी की ओर आकर्षित हुए थे क्योंकि
यह नायक की कहानी को तब आगे बढ़ाता है जब उसे भुला दिया जाता है। 'यह हमारी व्यवस्था के बारे में बात करता है,' वह कहता है।
कहते हैं, 'यह किसी भी राष्ट्र, किसी भी समाज के लिए एक संकेत है कि वे कितना तैयार हैं।'
किसी प्रतिभा की देखभाल करें।
फिल्म पान सिंह तोमर को बनने में काफी समय लगा। एक तो यह कि,

तिशु को एहसास हुआ कि भारत में उत्पादक पूर्ण रूप से निवेश करने को तैयार नहीं थे।
कहानी की पड़ताल। 'यह कहानी गांधी या भगत सिंह के बारे में नहीं है।' ‘जबकि इतनी सारी सामग्री उपलब्ध है,’ वे कहते हैं। ‘लिखी हुई सामग्री बहुत कम है।
पान सिंह तोमर पर शोध करने के लिए मुझे यात्रा करनी होगी और इस विषय पर शोध करना होगा।
मुझे कुछ पैसों की जरूरत थी, लेकिन कोई भी मेरी मदद करने को तैयार नहीं था।
अंततः, प्रोडक्शन हाउस यूटीवी ने हस्तक्षेप किया और फिल्म बन गई।
मार्च 2012 में रिलीज़ हुई, तिग्मांशु धूलिया द्वारा पहली बार रिलीज़ किए जाने के लगभग 20 साल बाद।
इसे बनाने की योजना बनाई थी। लेकिन फिल्म निर्माण के दौरान कई तरह की परेशानियां आईं।
कई समस्याएं सामने आईं। उदाहरण के लिए, वास्तविक उत्पादन 2009 में शुरू हुआ था जब
वैश्विक मंदी शुरू हो चुकी थी। फिल्म का बजट काफी अच्छा था, लेकिन इसके लिए उस दौर की फिल्मों की आवश्यकता थी।
टोक्यो के एक स्टेडियम के पुनर्निर्माण सहित कई विवरणों को आधा कर दिया गया। सभी ने अपने वेतन में 50 प्रतिशत की कटौती की, जिसमें इरफान खान भी शामिल थे।
तब वह वैश्विक स्टार बनने की कगार पर था। लेकिन उसने स्वीकार कर लिया।
यह स्थिति इसलिए भी मायने रखती है क्योंकि पान सिंह तोमर उनके और उनके दोस्त के लिए एक ड्रीम प्रोजेक्ट था।
तिग्मांशु धूलिया।
इरफ़ान ने पान सिंह के किरदार को अपने पिता के आधार पर गढ़ा था। 'कुछ बातें हैं

‘ऐसी भूमिकाएँ जिनमें आपके सामने आदर्शों की आवश्यकता होती है,’ उन्होंने अनुपम खेर से कहा।76 ‘मैं ऐसा नहीं कर सका।’
किसी को भी ढूंढने में मुझे दिक्कत हुई। लेकिन मेरे पास उसकी (उसके पिता की) तस्वीरें थीं। इससे मुझे काफी मदद मिली।
मुझे। जिस तरह से वह चलता था, जिस तरह से वह खुद को संभालता था, उससे मुझे प्रेरणा मिली।'
उन्होंने आगे कहा, 'एक तरह से पान सिंह तोमर मेरे पिता को मेरी श्रद्धांजलि थी।'
फिल्म रिलीज होने के समय इरफान 45 साल के थे और उन्होंने ही सारी भूमिकाएं निभाईं।
तिशु खुद दौड़ और स्टीपलचेज़ प्रतियोगिताओं के दृश्य देख रहा था। वह इसका इस्तेमाल करने के लिए तैयार था।
बॉडी डबल का इस्तेमाल किया गया, फिर भी इरफान ने सभी दृश्यों में खुद अभिनय करने पर जोर दिया।
‘इरफान के लिए स्टीपलचेज़ एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण स्पर्धा थी,’ तिशु कहते हैं। ‘लेकिन इरफान
वह बचपन से ही खेलकूद में रुचि रखता है। उसे बाहर घूमना-फिरना बहुत पसंद है।
मुंबई से बाहर शूटिंग लोकेशन पर। उसके हाथ में पतंग दे दो, वह आनंदित हो जाता है।
उसे।'
एक प्रशिक्षक के साथ प्रशिक्षण लेने के बावजूद, इरफान का एक्सीडेंट हो गया और उनकी एक मांसपेशी फट गई।
लिगामेंट। 'चंबल में जहां हम शूटिंग कर रहे थे, वहां कोई डॉक्टर नहीं था,' तिशु ने कहा।
वह कहता है, 'हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।'
फिल्म की शुरुआत में एक दृश्य है जब पान सिंह

उसे दंडित किया गया और उसे अपना सामान सिर के ऊपर उठाकर मैदान के चक्कर लगाने के लिए कहा गया।
सिर। उसने सेना की वर्दी और भारी जूते पहने हुए हैं। और दुर्भाग्य से उस शूटिंग से दो दिन पहले इरफान के लिगामेंट में चोट लग गई थी। 'दरअसल, हमने ऐसा नहीं किया था।'
'मुझे पता है कि लिगामेंट क्या होता है,' तिशु ने आगे कहा। 'हमने सोचा था कि यह मोच है।'
पान सिंह तोमर का प्रदर्शन न्यूयॉर्क के साउथ एशियन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में हुआ।
2011 के अंत में आयोजित महोत्सव में प्रदर्शित फिल्म का थोड़ा संशोधित संस्करण दिखाया गया था।
बैकग्राउंड स्कोर मार्च 2012 में सिनेमाघरों में रिलीज़ हुआ था। मैंने इसकी समीक्षा की थी।
Rediff.com के लिए फिल्म।77 यहाँ मैंने अपनी 3.5-स्टार समीक्षा की शुरुआत में जो लिखा था वह यह है:

तिग्मांशु धूलिया की नई फिल्म पान सिंह के बीच में
तोमर, इरफान खान…सेना की बैरक के गलियारे में खड़े हैं।
अभी-अभी उसने अपने गुरु, जो सेना में मेजर थे, से फोन पर बात की ही थी कि तभी एक
युवा वार्ड बॉय तोमर के हाथ में आइसक्रीम का एक पैकेट रखता है (यह फिल्म देखने पर समझ में आ जाएगा। खान द्वारा अभिनीत तोमर बेहद भावुक है।
इस हावभाव से। कैमरे के साथ उसके आंशिक रूप से प्रकाशित और जर्जर चेहरे पर मुस्कान लिए वह एक हाथ से बहते आंसू पोंछता है।
उसके गाल।
यह धुलिया की फिल्म का एक खूबसूरत, मार्मिक क्षण है। लेकिन साधारण

खान के बेहतरीन अभिनय की बदौलत ही यह दृश्य इतना प्रभावशाली बन पाता है।
अपने लंबे करियर में… खान एक राष्ट्रीय धरोहर हैं, एक अद्वितीय प्रतिभा के धनी हैं।
भारतीय अभिनेता जो अपनी आंखों, आवाज और चेहरे की अन्य विशेषताओं का उपयोग करते हैं
वह अपने पात्रों में पहले हास्य और फिर करुणा का प्रदर्शन करते हैं। फिल्म में खान बेहद आकर्षक हैं—एक मासूम, भोला-भाला और मनमोहक किरदार।
एक एथलीट, एक साफ दिल का आदमी, जो बाद में एक गुस्सैल इंसान बन जाता है।
एक खतरनाक अपराधी। कैमरा उसे बहुत पसंद करता है और उससे नज़रें हटाना नामुमकिन है।
जब ध्यान उस पर केंद्रित हो तो वह स्क्रीन से दूर रहता है।

पान सिंह तोमर में, या यूं कहें कि कुछ फिल्मों में, ऐसे कई क्षण हैं।
उनकी अन्य फिल्मों में, जहां इरफान तिरछी नजर डालते हैं, एक ऐसी मुस्कान जो पूरे दृश्य को रोशन कर देती है।
पूरी स्क्रीन पर। और कैमरा उसकी मनमोहक मुस्कान को कैद कर लेता है।
तिशु कहता है कि वह
मैंने कभी इरफान से इस तरह मुस्कुराने के लिए नहीं कहा। लेकिन इरफान जानता है कि वह अच्छा दिखता है।
जब वह मुस्कुराता है, और इस तरह वह अपनी कई फिल्मों में अभिनय करता है।
‘इरफान के साथ मेरा रवैया अलग है, क्योंकि हम घनिष्ठ मित्र हैं और वह कहते हैं, 'हम एक-दूसरे को काफी अच्छे से जानते हैं। मैं कभी-कभी उन्हें सिफारिश दे देता हूं।'

वह जीवन के किसी अनुभव को साझा करता है और तुरंत समझ जाता है। मैं किसी और के साथ ऐसा नहीं कर सकता।
दूसरे अभिनेता। हमारे कई अभिनेता अच्छी तरह से शिक्षित नहीं हैं, लेकिन इरफ़ान—अगर आप उन्हें मौका दें तो।
जीवन या नाटक के बारे में उससे कोई भी संदर्भ पूछो, वह समझ जाता है। वह बहुत ही सूक्ष्मदर्शी अभिनेता है।'
पान सिंह तोमर ने दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों सहित कई पुरस्कार जीते।
पुरस्कार—सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए गोल्डन लोटस (तिग्मांशु धूलिया और
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सिल्वर लोटस पुरस्कार (रोनी स्क्रूवाला) और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार (इरफान खान) मिला है। अब तक
यह एकमात्र ऐसा अवसर है जब इरफान को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला है।
तिशु और इरफान ने एक और फिल्म—साहब बीवी और—में साथ काम किया। गैंगस्टर रिटर्न्स (2013), तिशु द्वारा बनाई गई त्रयी का दूसरा भाग। इन सभी फिल्मों में जिमी शेरगिल साहब की भूमिका निभाते हैं, और माही गिल (जिन्होंने पान सिंह तोमर में इरफान की पत्नी का किरदार भी निभाया था) बीवी हैं।
हर फिल्म में गैंगस्टर का किरदार बदलता रहता है। दूसरी फिल्म में इरफान की यही भूमिका थी।
उनका किरदार इंद्रजीत सिंह पुराने राजपरिवार से ताल्लुक रखता है, लेकिन अब उसका परिवार
उसके पास पैसे नहीं हैं। इसलिए वह एक स्थानीय गुंडा बन जाता है, इधर-उधर घूमता रहता है।
एक छोटे से कस्बे में मोटरसाइकिल चलाने वाला लड़का। लेकिन उसके मन में बड़ा बनने और सफलता पाने की ख्वाहिश है।
अपने परिवार को वह गौरव वापस दिलाना जो कभी उनके परिवार ने भोगा था।

तिशु का कहना है कि इंद्रजीत उनके द्वारा लिखे गए सबसे जटिल पात्रों में से एक है, और
खासकर इसलिए, क्योंकि वह जानता था कि इरफान वह सब कुछ कर पाएगा जो अपेक्षित था।
इस भूमिका के लिए यही आवश्यक था। 'पहले भाग की सफलता के बाद, इरफान ने मुझसे कहा कि उन्हें यह पसंद आया।'
तिशु कहते हैं, ‘जब दूसरे भाग की योजना बन रही थी, तो मैंने इरफान से कहा, “मैं एक ऐसा किरदार बनाऊंगा जो एक अलग तरह का गैंगस्टर होगा और लोग उसे पहचान नहीं पाएंगे।”
उसका मजाक उड़ाओ, लेकिन लोग उस पर विश्वास करेंगे। मैं किसी दूसरे अभिनेता पर भरोसा नहीं कर सकता था।
वह भूमिका निभाओ।
Despite Tishu’s efforts to create a unique film, Saheb Biwi Aur Gangster
रिटर्न कारगर नहीं रहे। जिमी शेरगिल और माही गिल ने विश्वसनीयता प्रदान की।
उनके किरदार तो अच्छे थे, लेकिन इरफान ने उनमें भावनात्मक गहराई नहीं डाली। ऐसा लगा जैसे उनका
फिल्म में उनका मन नहीं लग रहा था और वे लगभग नींद में चलते हुए इस प्रोजेक्ट को पूरा कर रहे थे।
इसके अलावा, उनके और सोहा अली खान के बीच कोई केमिस्ट्री नहीं थी—11 साल
इरफ़ान से छोटी, जो जिमी शेरगिल की नई प्रेमिका की भूमिका निभा रही हैं।
आदित्य प्रताप सिंह के साथ-साथ इरफान के इंद्रजीत सिंह के साथ भी उनकी प्रेम कहानी दिखाई देती है। उम्र
अगर दोनों पात्रों की सगाई हो चुकी होती तो यह अंतर ज्यादा मायने नहीं रखता।

जुड़े हुए थे। लेकिन यहाँ वे एक-दूसरे के साथ काफी असहज दिख रहे थे।
तिशु को कुछ और ही लगता है, लेकिन साहब बीवी और गैंगस्टर
रिटर्न्स निश्चित रूप से इरफान की सबसे बेहतरीन कृति नहीं है।

काटना!

अपने करियर के इसी दौर में इरफान खान ने सिंगल्स पर सहयोग किया। मुंबई फिल्म उद्योग की कुछ शीर्ष फिल्मी हस्तियों के साथ परियोजनाएं।
उद्योग जगत के सबसे बड़े सितारों में से एक, शाहरुख खान से लेकर एक अभिनेता तक
जिनका करियर भी रंगमंच से ही उभरा था, मनोज बाजपेयी, और
सुधीर मिश्रा जैसे अनुभवी स्वतंत्र फिल्म निर्देशकों की आवाज़। इरफ़ान की परियोजनाओं में शामिल हैं।
चुनी गई फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई, लेकिन इसने उन्हें एक अवसर प्रदान किया।
ऐसा काम करना जिसमें उनकी रुचि हो और जो उनके पहले से मौजूद ज्ञान में नए आयाम जोड़े
शानदार करियर।
शाहरुख और इरफान ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत एक ही फिल्म से की थी।
दिल्ली में थिएटर करने के लिए जगह होने के कारण, उन्होंने जो फिल्में चुनीं वे बहुत अलग प्रकार की थीं।

[illegible] de [illegible] de [illegible] (2009) [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], de [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (2007), [illegible] [illegible] de de [illegible] de [illegible], [illegible] (2008), [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de, de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible], de de [illegible] [illegible] de de de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de, [illegible] [illegible] de de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] (de [illegible])[illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] (de [illegible] [illegible], de [illegible] [illegible] [illegible]) de [illegible] [illegible] [illegible]
de [illegible] [illegible] de [illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]) de [illegible]
de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de de de [illegible] [illegible] de [illegible]—de [illegible] de [illegible]
de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible], de de [illegible] [illegible] de [illegible]
[illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de
[illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...
de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible]

सिनेमा अभिनेत्रियाँ मानो एक उपेक्षित विचार थीं, एक हताश प्रयास जो किसी और को बचाने की कोशिश लग रही थीं।
यह फिल्म, जिसके निर्माताओं को लगता था कि इसके बिना यह फिल्म सफल नहीं हो पाएगी, इसके निर्माताओं का मानना था कि इसके बिना यह सफल नहीं हो पाएगी।
शाहरुख खान और तीनों अभिनेत्रियां।
हालांकि, बिल्लू को देखना इसलिए भी दिलचस्प होगा कि इरफान कितने सहज हैं।
कॉमेडी प्रस्तुत करते हुए। फिल्म में कई मनोरंजक क्षण हैं, जैसे कि... जब इरफान अपने बच्चों को यह समझाने की कोशिश करता है कि वे साहिर को नहीं देख सकते या वह
सबसे पहले स्टार से पूछा जाएगा कि वह अपने परिवार को शूटिंग पर कब ला सकते हैं। या बिल्लू कब।
says to his wife, ‘Pati ko bachane ke liye patnio ko jhooth bolne mein punya
मिलता है (पति को बचाने के लिए झूठ बोलने वाली पत्नी धन्य है)।
जब वह साहिर के सचिव को फोन करता है तो वह एक हास्यास्पद क्षण होता है।
सचिव को गुस्सा आने लगता है और वह बिल्लू पर चिल्लाने लगती है, जो उसे हंसाने का नाटक करता है।
उसे फोन पर।
फिल्म के अंत में साहिर बिल्लू की छोटी सी झोपड़ी में जाता है, और जैसे-जैसे
जैसा कि उम्मीद थी, दोनों आदमी टूट जाते हैं। पूरी फिल्म इसी दृश्य की ओर अग्रसर होती है। शाह
रुख अपने भावुक क्षणों की तुलना में कुछ हद तक संयमित नज़र आता है। अन्य फिल्मों की बात करें तो, इरफान मेलोड्रामा को बेहतरीन तरीके से पेश करने में उनसे कहीं आगे हैं।

दरअसल, इरफान के आंसू असली लगते हैं और अंतिम दृश्य में उनका अभिनय लाजवाब है।
काफी मार्मिक।
2009 में, इरफान ने एक्शन थ्रिलर फिल्म 'एसिड' में भी अतिथि भूमिका निभाई थी।
सुपर्न वर्मा द्वारा निर्देशित और संजय गुप्ता द्वारा निर्मित फिल्म 'फैक्ट्री',
उनका करियर हॉलीवुड (या यहां तक कि कोरिया) से प्रेरित चीजों से भरा रहा है।
और यह एकमात्र ऐसी फिल्म होगी जिसमें इरफान मनोज के साथ अभिनय करेंगे।
बाजपेयी और उनके बीच भी एक ही सीन था। यह काफी आश्चर्यजनक है।
यह देखते हुए कि दोनों अभिनेताओं ने दिल्ली में थिएटर में अभिनय करना शुरू किया था, और उनका
उनके रास्ते कई बार टकराए। उनकी सफल फिल्में - सत्या (1998) और द वॉरियर (2001) और वॉरियर (2001) के बीच सिर्फ तीन साल का अंतर था। फिर भी, कोई भी फिल्म निर्माता
मैंने एक ऐसी पटकथा के बारे में सोचा जिसमें भारत के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में गिने जाने वाले ये दोनों अभिनेता एक साथ अभिनय कर सकें।
एसिड फैक्ट्री की शुरुआत रिजर्वॉयर डॉग्स जैसी स्थिति से होती है। (संजय गुप्ता)
उन्होंने 2002 में 'रिजर्वॉयर डॉग्स' से प्रेरित फिल्म 'कांटे' का निर्देशन भी किया था।
अपराधियों का एक समूह खुद को एक गैस फैक्ट्री में पाता है और ऐसा लगता है कि वे रास्ता भटक गए हैं।
उनकी याददाश्त। उनमें से एक पुलिस अधिकारी है जिसने उनके गिरोह में घुसपैठ की है।

लेकिन गैस के संपर्क में आने के बाद उनकी याददाश्त भी चली गई है। सुपर्न और
संजय ने अपराधियों की भूमिका निभाने के लिए युवा और वरिष्ठ अभिनेताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को चुना।
फरदीन खान, डैनी डेन्जोंगपा, मनोज बाजपेयी, आफताब शिवदासानी, डिनो मोरिया, दीया मिर्जा और इरफान खान।
फिल्म की कहानी दक्षिण अफ्रीका में घटित होती है, जहां सभी बाहरी दृश्यों की शूटिंग की गई थी।
इरफ़ान की पत्नी और बेटे भी उनके साथ दक्षिण अफ्रीका में शामिल हो गए। आंतरिक सज्जा, गैस
सुपर्न वर्मा के अनुसार, फैक्ट्री के दृश्यों की शूटिंग हैदराबाद के एक स्टूडियो में की गई थी।
इरफ़ान इस भूमिका के लिए इसलिए आकर्षित हुए क्योंकि उनका किरदार एक असाधारण अपराधी का है।
कैसर नाम का एक व्यक्ति जो भड़कीले सूट पहनता है और उसे नौकाओं पर घूमने का मौका मिलता है।
लिमोसिन, पैसों का लेन-देन। इरफान इस बात से उत्साहित थे कि जब तक उस समय, किसी अन्य भारतीय फिल्म निर्माता ने उन्हें एक कूल किरदार में लेने के बारे में नहीं सोचा था।
शातिर अपराधी। उसने गहन और चुनौतीपूर्ण आपराधिक भूमिकाएँ निभाई थीं, लेकिन हर बार
कई बार वह अधिक जमीनी, सहज और भावुक चरित्र वाला व्यक्ति होता था। Suparn feels that Manoj Bajpayee and Irrfan Khan had a good स्क्रीन पर सौहार्द। 'इरफान और मनोज दोनों ही एक ऐसी जगह से आए थे जहां
पूर्ण सुरक्षा और शिल्प के प्रति प्रेम, अपने पदों से संतुष्ट सुपर्न कहती हैं, 'वे दोनों उद्योग और अपने पसंदीदा काम में लगे हुए थे। वे दोनों एक ही जगह टिके हुए थे।'

उनके जीवन में भी लोग थे। तब तक इरफान को जबरदस्त सफलता मिल चुकी थी। मनोज को भी।
उन्हें सफलता मिल चुकी थी। इसलिए उन्हें कुछ खास साबित करने की जरूरत नहीं थी।'
एसिड फैक्ट्री बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही, लेकिन इरफान के लिए इन सब बातों का कोई महत्व नहीं था।
उन्होंने इस परियोजना पर मनोरंजन के लिए और विविध विषयों पर काम करने के लिए काम किया।
अभिनेताओं का।
‘इरफान ने खूब मस्ती की और बाकी कलाकारों ने भी, और उन्हें साथ काम करना बहुत पसंद आया।
सुपर्न कहते हैं, 'प्रोजेक्ट पर। हां, हम एक व्यावसायिक फिल्म बना रहे थे।'
हम ऐसी फिल्म नहीं बना रहे थे जो ऑस्कर तक पहुंचे, लेकिन कम से कम इतना तो था।
वह क्षण था और उस क्षण में हर कोई सच्चा था।

साझा करने का एक अनुभव: सुधीर मिश्रा को इरफान खान से अपनी पहली मुलाकात याद है। यह 1987 की बात है।
और सुधीर की पहली फिल्म, ये वो मंज़िल तो नहीं (1986), भी उसी के हिस्से के रूप में दिखाई जा रही थी।
भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में भारतीय परिदृश्य का। और राम
एनएसडी में पढ़ा रहे गोपाल बजाज ने पूरी कक्षा को अपने साथ ले लिया।

फिल्म की स्क्रीनिंग के लिए गर्मियों में दिल्ली के उपहार सिनेमा में जाना।
मैं 27 साल का लड़का था, और एक युवा फिल्म निर्माता के लिए यह बहुत सम्मान की बात थी।
सुधीर कहते हैं, 'पूरी एनएसडी क्लास को स्क्रीनिंग के लिए बुलाओ।' वह आगे कहते हैं कि
बाद में उन्होंने इरफान को एनएसडी प्रोडक्शन में अभिनय करते देखा। इरफान के मुंबई चले जाने के बाद।
वह संघर्षरत अभिनेताओं और फिल्म निर्माताओं के समूह का हिस्सा बन गया जो अक्सर साथ-साथ समय बिताते थे।
सुधीर के दफ्तर में। 'वे काम या विचारों की तलाश में आते थे या फिर वे वहाँ पहुँच जाते थे।'
'सिर्फ एक कप चाय के लिए,' वे कहते हैं। 'मेरा दफ्तर ही एकमात्र ऐसा दफ्तर था जहाँ वे आ सकते थे।
निर्देशक थिएटर से थे, इसलिए कुछ संदर्भ बिंदु थे।
और वे बातचीत में शामिल हो सकते थे।'
इरफान के सुधीर मिश्रा की फिल्म में काम करने की चर्चा थी, लेकिन ऐसा होना संभव नहीं था।
निर्देशक की दसवीं फिल्म, ये साली जिंदगी (2011) के आने तक ऐसा नहीं हुआ था।
long after his iconic films Is Raat Ki Subah Nahi (1996), Hazaaron Khwaishein Aisi (2003) and Khoya Khoya Chand (2007). By 2011, Irrfan had
भारत में पहले ही एक प्रमुख अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बना चुके थे। लेकिन वे तैयार थे
अरुणोदय सिंह जैसे कम प्रसिद्ध अभिनेताओं के साथ छोटी परियोजनाओं पर काम करें।

चित्रांगदा सिंह और उनके मित्र आदित्य भट्टाचार्य, जिन्होंने उन्हें निर्देशित किया था
दुबई रिटर्न में और फिर इन ट्रीटमेंट की शूटिंग के दौरान उन्हें सलाह दी।
कागज़ पर, ये साली जिंदगी एक मजेदार प्रोजेक्ट लग रहा था और फिर आखिरकार यह एक
इरफान को सुधीर मिश्रा के साथ काम करने का अवसर मिलेगा।
सुधीर के दृष्टिकोण से, इरफ़ान को अक्सर ऐसी भूमिकाओं में लिया जा रहा था जो
लेकिन ये साली जिंदगी एक हल्की-फुल्की फिल्म थी, हालांकि इसमें भी अपराधियों से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई थी। हालांकि, ये साली जिंदगी एक हल्की-फुल्की फिल्म थी, फिर भी इसमें अपराधियों से संबंधित मुद्दों को उठाया गया था।
गुंडों के साथ। फिल्म में कई मज़ेदार पल हैं, जैसे कि एक दृश्य। जहां आदित्य का रोजर एक खुले ताबूत में मृत पड़ा है और प्रीति (चित्रांगदा)
अरुण (इरफान) मृतक के अंगूठे को पकड़ने के लिए ताबूत के पास जाते हैं।
पावर ऑफ अटॉर्नी पेपर पर एक छाप। अरुण प्रीति को बार-बार रोने के लिए याद दिलाता रहता है।
वे शव के अंगूठे को सीधा करने के लिए संघर्ष करते हुए उसे काटते हैं। सुधीर का इरफान के साथ सबसे पसंदीदा दृश्य शुरुआती सीक्वेंस है, जो कि...
अंत में वही दृश्य दोहराया जाता है, जब एक गोली छिटककर अचानक इरफान को लग जाती है।
कुछ क्षणों के लिए उसे एहसास नहीं होता कि उसे चोट लगी है और फिर अचानक उसे इसका एहसास होता है।

उसके जूते पर खून लगा है। सुधीर का कहना है कि यह दृश्य स्क्रिप्ट में लिखा हुआ था, लेकिन
इरफ़ान की प्रतिक्रिया, उनके चेहरे पर अविश्वास का भाव कि अब उनके लिए सब कुछ खत्म हो गया है, पूरी तरह से उनका अपना था।
कर रहा है।
सुधीर कहते हैं, 'इरफान की सबसे अच्छी बात यह है कि वह आत्मविश्वासी हैं और जानते हैं कि वह एक अच्छे अभिनेता हैं।' 'वह अपने साथियों से चर्चा करने के बाद यह बात अच्छी तरह से जान चुके हैं।'
निर्देशक, वह दृश्य कैसे करेगा। लेकिन जिस चीज़ में उसकी सबसे अधिक रुचि है, वह यह है कि कैसे
वह दृश्य और उस दृश्य में उनकी भूमिका पूरी फिल्म पर गहरा प्रभाव डालती है। वह बहुत ही प्रभावशाली हैं।
वह सह-कलाकारों के साथ पूरे दृश्य को प्रभावी बनाने में रुचि रखता है।
समझता है कि किसी दृश्य को सफल बनाने में साझा करने का कार्य शामिल होता है, और यह नहीं है
एक कुश्ती का मुकाबला।
सुधीर को इरफान का तरीका याद आता है। शूटिंग के दौरान इरफान बात करते थे।
निर्देशक और सह-कलाकार स्क्रिप्ट पढ़ते हैं और फिर निर्देशक को चौंका देते हैं।
उसका अभिनय। सुधीर कहते हैं, 'कभी-कभी यह आपके लिए एक रहस्योद्घाटन होता है। लेकिन वह जो कुछ भी करता है...'
अगर वह ऐसा करता है, तो यह हमेशा स्क्रिप्ट की सीमाओं के भीतर ही होता है।' इसके अलावा, सेट पर, इरफान
सुधीर आगे कहते हैं कि इसका उद्देश्य कभी भी व्यक्तिगत प्रसिद्धि और प्रशंसा प्राप्त करना नहीं होता।

पूरी फिल्म देखने के बाद ही लोगों को एहसास होता है कि उसने यह भार उठाया है।
कहानी का बोझ उसके कंधों पर है।
सुधीर ने कई महान अभिनेताओं के साथ काम किया है—जिनमें से कई ने अपने करियर की शुरुआत की थी।
1970 के दशक में श्याम बेनेगल जैसे निर्देशकों के साथ, उन्होंने उनका अनुसरण किया है।
साथ ही नई प्रतिभाओं को भी।
सुधीर इरफान के बारे में कहते हैं, 'वह एक उत्कृष्ट अभिनेता हैं। वह शीर्ष अभिनेताओं में से एक हैं।'
सर्वश्रेष्ठ। ये अलग समय, अलग पटकथाएँ और अलग निर्देशक हैं। लेकिन वह उनके समकक्ष है।
नसीर, ओम, शबाना, स्मिता, पंकज। अगर कोई अभिनेता इस समूह से संबंधित है, तो वह है...
इरफ़ान।

एक रॉ एजेंट की भूमिका निभाना

इस दौर में इरफान खान के सबसे दमदार प्रदर्शनों में से एक उस फिल्म में था जो
बहुत कम लोगों ने निर्देशक निखिल आडवाणी की फिल्म डी-डे (2013) देखी, जिसकी कहानी
अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा (आरएडब्ल्यू) के एजेंटों और उनके प्रयासों के बारे में

दाऊद इब्राहिम जैसे एक किरदार (शानदार ऋषि कपूर द्वारा अभिनीत) का अपहरण करके उसे लाना।
पाकिस्तान से बाहर। सबसे बेहतरीन संपादित दृश्यों में से एक (14 मिनट का) के साथ शुरू होता है।
हाल की हिंदी फिल्मों में, डी-डे में भी ऐसा ही एक दृश्य देखने को मिला है (जिस दृश्य को संपादित करने में चार महीने लगे थे)
इसमें अर्जुन रामपाल और हुमा कुरैशी ने अभिनय किया था। लेकिन जब निखिल और उनके सह-लेखक ने इसे रिलीज़ किया, तो
रितेश शाह ने इरफान को फिल्म का प्रस्ताव रखा, लेकिन अभिनेता अनिच्छुक थे।
तब तक निखिल आडवाणी को करण जौहर की हिट फिल्म के लिए ही जाना जाता था। इरफ़ान को यकीन नहीं था कि एक भावपूर्ण रोमांटिक फिल्म का निर्देशक एक गहन थ्रिलर फिल्म बना सकता है।
निखिल को इरफान को मनाने के लिए एक और कदम उठाना पड़ा। एक मुलाकात का आयोजन किया गया।
अनुराग कश्यप के साथ उनके कार्यालय में। अनुराग, जो उस समय तलाक के बाद की तैयारियों में व्यस्त थे।
गैंग्स ऑफ वासेपुर के प्रोडक्शन ने डी-डे की स्क्रिप्ट पढ़ी थी। निखिल आडवाणी की प्रतिष्ठा 1996 से ही बनी हुई थी जब उन्होंने सह-written the tight script for the Sudhir Mishra film, Is Raat Ki Subah Nahi.
हालांकि उन्होंने इरफान के साथ कभी किसी फिल्म में काम नहीं किया था (एक संक्षिप्त प्रोजेक्ट था)
टेलीविजन के लिए (डर नामक एक श्रृंखला), अनुराग की बात और एक अभिनेता के रूप में उनका कद
भारत के इंडी फिल्म आंदोलन में एक प्रमुख हस्ती होने मात्र से ही इरफ़ान को यकीन हो गया था।
वली खान की भूमिका स्वीकार करने के लिए।

इरफ़ान द्वारा अभिनीत वली खान एक रॉ एजेंट है जिसे पाकिस्तान में एक गुप्त ऑपरेशन चलाने के लिए भेजा जाता है।
वह ऑपरेशन जिसके परिणामस्वरूप अंततः दाऊद, जिसे इस संदर्भ में गोल्डमैन कहा जाता है, को पकड़ा गया।
फिल्म के बाद, वली भारत लौट आए। वली कुछ वर्षों से पाकिस्तान में रह रहे हैं, और उन्होंने
उन्होंने वहां अपना ठिकाना बना लिया है, जिसमें उनकी पत्नी और बच्चा भी शामिल हैं, जिन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।
उनकी उत्पत्ति और उनका मिशन।
निखिल आडवाणी के अनुसार, डी-डे, अपने प्रभावशाली एक्शन दृश्यों के बावजूद, एक
यह कोई जासूसी थ्रिलर नहीं है। 'मेरे लिए, डी-डे एक आदमी (वली खान) की कहानी है।'
जिसने अपनी पत्नी और बच्चे से झूठ बोला है। यह एक पिता और पुत्र की कहानी है। और यह एक
यह कहानी अर्जुन (रुद्र प्रताप) के किरदार की है, जो एक प्रशिक्षित हत्यारा है और उसे
जब वह जिस वेश्या से प्यार करने लगता है उसकी मृत्यु हो जाती है तो वह भावुक हो जाता है और कहानी में पूरी तरह डूब जाता है।
श्रुति हासन उस वेश्या का किरदार निभाती हैं जिसका कोई नाम नहीं है, हालांकि एक
उनके किरदार में बहुत गर्माहट और भावनात्मक लहजा है। और फिल्म का सबसे अच्छा गाना भी।
फिल्म ‘अलविदा’ में श्रुति को भांजा द्वारा बेरहमी से मारे जाने के दृश्य को फिल्माया गया है।
(चंदन रॉय सान्याल)।
वली की शादी और पाकिस्तान में उनके दोहरे जीवन को दर्शाने के लिए

असल में, इरफान ने जोर देकर कहा कि निखिल को अपनी भूमिका के लिए एक अनजान अभिनेत्री को लेना चाहिए।
पत्नी। उन्हें लगा कि तब्बू या रानी मुखर्जी जैसी अभिनेत्री (दोनों पर विचार किया गया था) इस भूमिका के लिए उपयुक्त होंगी।
यह भूमिका वली खान के गुप्त जीवन को अवास्तविक बना देगी। और इसलिए फिल्म का...
कास्टिंग एजेंट मुकेश छाबड़ा और उनकी टीम को एक अपेक्षाकृत अनजान व्यक्ति मिला।
लखनऊ की अभिनेत्री श्रीस्वरा, नफीजा का किरदार निभाएंगी, जिसे वली खान ने शुरू किया था।
प्यार। उसकी जान को खतरा होने के डर से, वह उसके लिए व्यवस्था भी करता है।
देश छोड़ दो।
डी-डे की शूटिंग का पहला दिन अहमदाबाद के मुस्लिम बहुल इलाके में आयोजित किया गया था।
पड़ोस, जुहापुरा। यह एक नाजुक दृश्य था जब इरफान सुबह उठा।
सुबह उसने अपनी पत्नी की ओर देखा। निखिल द्वारा घटना का विवरण देने के बाद।
अभिनेता इरफान ने जाकर छायांकन निर्देशक तुषार कांति से बात की। रे. इरफान ने कहा कि वह एक अभिनेता के रूप में तुषार से अपेक्षित चीजों को समझ चुके हैं, लेकिन उन्होंने तुषार को चेतावनी दी कि वह अप्रत्याशित काम करने में सक्षम हैं। कैमरा
इरफ़ान द्वारा किए जाने वाले किसी भी तात्कालिक बदलाव के लिए तैयार रहना चाहिए। और इसलिए
निखिल आडवाणी के लिए यह सबसे अच्छे कामकाजी संबंधों में से एक बन गया, जहाँ उन्होंने
इरफान और तुषार एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर काम कर रहे थे।

निखिल कहते हैं, 'इरफान को कोई निर्देशित नहीं कर सकता। वह मेरी बात सुनते थे, मेरे विचारों को समझते थे।' '
अभिनेता के ग्राफ का, लेकिन वह हर टेक के साथ बदलता भी रहता था। वह चाहता है
ताकि आपको हर टेक में पर्याप्त सामग्री मिल सके जिसका आप उपयोग कर सकें।
फिल्म 'डी-डे' में कई खास पल हैं जहां इरफान खान अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।
अभिनय कौशल, जैसे कि जब वह नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद के अंदर कदम रखता है; या
फिल्म की शुरुआत में वली और उसकी पत्नी नफीजा के बीच का मोहक दृश्य; या उसका
भारत में एक रॉ एजेंट से बात करते समय वह गुस्से में भड़क उठा, जो एक अधिकारी को फोन करना चाहता था।
उस मिशन का अंत जिसमें वली ने कई वर्षों की योजना बनाई थी।
एक ऐसा क्षण आता है जब वली अपनी पत्नी और बेटे को हवाई अड्डे पर लेकर आता है।
यह जानते हुए कि वह उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएगा, वह लड़के को पुकारता है, उसका नाम लेकर।
‘कबीर’, और बच्चा हाथ हिलाकर जवाब देता है, ‘अब्बू, अल्लाह हाफ़िज़।’ वली
वह हवाई अड्डे के प्रवेश द्वार पर खड़ा है। उसके मन में बहुत कुछ चल रहा है।
इसमें यह तथ्य भी शामिल है कि वह एक जटिल मिशन में शामिल होने वाला है।
इरफ़ान दीवार के सहारे झुक जाता है और अपने हाथ से अपना मुंह पोंछता है। बाद में
इरफ़ान अपने बेटे से बात करते समय भी उतने ही शानदार हैं, जो अब...

narration and then he spoke in private with Nikkhil. ‘He said to me, “Bahut
achee script hai (The script is very good),” Nikkhil recalls. “Lekin kya hai ki

aapko budget nahi milegi agar main act karoonga toh (But if I act in it you

Musafir Hun Yaaron

एक ऐसी रचना जिसे शायद वह पूर्णता से प्रस्तुत नहीं कर पाईं, उनकी सुज़ाना अन्ना-मैरी
जोहान्स गोवा की एक युवती है जो अपने छह पतियों की हत्या कर देती है। पुलिस का ध्यान आकर्षित करने में हमेशा से ही काफी समय लगा। विशाल ने इस फिल्म को एक लघु कहानी पर आधारित किया है।
रस्किन बॉन्ड की कहानी, सुज़ाना के सात पति (उनका दूसरा सहयोगात्मक कार्य)
द ब्लू अम्ब्रेला (2005) के बाद लेखक के साथ।
इरफ़ान खान ने सुज़ाना के तीसरे पति, कश्मीरी कवि वसीउल्लाह की भूमिका निभाई है।
खान उर्फ मुसाफिर, लंबी काली शेरवानी और कश्मीरी टोपी पहने हुए था, और
हमें सबसे पहले गुलज़ार की उर्दू कविता, 'एक बार तो यूं' का पाठ करते हुए उनका परिचय कराया जाता है।
hoga, thoda sa sukoon hoga/Na dil mein kasaq hogi, na sar mein junoon
होगा (एक दिन ऐसा होगा, थोड़ी शांति का क्षण आएगा)
न तो बार-बार दर्द होगा और न ही मेरे दिमाग में पागलपन आएगा। वसीउल्लाह को प्रसन्न करने के लिए सुज़ाना इस्लाम धर्म अपना लेती है और अपना नाम बदल लेती है।
सुल्ताना वसीउल्लाह खान। फिल्म में कुछ प्यारे और कोमल पल हैं। दोनों के बीच के दृश्य—जब वे फव्वारों वाले बगीचों से होकर गुजरते हैं
श्रीनगर में डल झील पर शिकारा की सवारी करें, मस्जिदों का दौरा करें या गलियारों में घूमें।
और उस विश्वविद्यालय के कक्षाओं में जहाँ वसीउल्लाह पढ़ाते हैं, वहीं विशाल

भारद्वाज ने गुलज़ार के लिखे गीतों पर आधारित गीत ‘बेकरान’ गाया है।
लेकिन विशाल ने भी...
यह फिल्म दंपति के बीच के क्षणों को अशांति और विरोध प्रदर्शनों की छवियों के साथ जोड़ती है।
कश्मीर में।
इरफ़ान इतने कोमल हैं—उनके हाव-भाव लगभग स्त्रीत्वपूर्ण हैं, और मुस्लिम पोशाक में वे इतने शाही दिखते हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि किसी अन्य फिल्म निर्माता ने उन्हें यह भूमिका क्यों नहीं दी।
एक कवयित्री की भूमिका। प्रियंका भी रंगीन दुपट्टों में बेहद खूबसूरत लग रही हैं।
उसने अपना सिर ढक लिया।
लेकिन फिर वसीउल्लाह का रंग अचानक बदल जाता है। एक सौम्य कवि से, वह जब दोनों यौन संबंध बनाते हैं तो वह एक हिंसक, पत्नी को पीटने वाला दरिंदा बन जाता है। यह एक
यह एक कठिन दृश्य था, जिसमें विशाल को केवल इस बात की चिंता थी कि प्रियंका कैसी रहेंगी।
उस दृश्य को निभाओ। 'इरफान थिएटर से आते हैं, वह एक
विशाल कहते हैं, 'वह एक राक्षस जैसी थी, लेकिन प्रियंका का थिएटर से कोई संबंध नहीं था।' 'वह बहुत ही...
मुझे डर था कि शारीरिक शोषण पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। मैंने उससे कहा, पहले सब कुछ छोड़ दो।
अपनी झिझक को दूर करो। एक माहिर की तरह सोचो। इसके अलावा कुछ और मत सोचो। मैंने उससे यही कहा।
उसे इरफान की मौजूदगी में खुद को मेरिल स्ट्रीप जैसी उस्ताद समझना चाहिए।'
विशाल ने इरफान से कहा था कि वसीउल्लाह को 'नरम' होना पड़ेगा, कि वह ऐसा नहीं कर सकता।

‘क्या तुमने कभी किसी फूल को चोट पहुंचाई है?’78 लेकिन फिर इरफान ने भी अपने अंदर बदलाव पाया।
किरदार भ्रामक था, और उनके लिए उस भूमिका को निभाना मुश्किल था।
एक दुर्व्यवहार करने वाला व्यक्ति प्रियंका के किरदार को पीटता और थप्पड़ मारता है, जबकि वे किसी काम में व्यस्त होते हैं।
प्रेम प्रसंग। इरफान ने बताया, ‘मैं विशाल से बार-बार पूछता रहा, इसमें क्या है?’
फोर्ब्स इंडिया 79 ने एक इंटरव्यू में यह बात कही। फिर ठीक उस दृश्य के घटित होने से पहले।
शूटिंग के दौरान, इरफान ने आबिदा परवीन की एक ग़ज़ल सुनी और इससे उन्हें 'सही राह खोजने' में मदद मिली।
वसीउल्लाह खान में विरोधाभास, जटिलताएं और विवशताएं हैं।
ग़ज़ल और किरदार के बीच कोई संबंध नहीं था। यह बस एक
उन्होंने आगे कहा, 'ट्रिगर।'
इरफ़ान के अभिनय ने उन्हें खूब प्रशंसा दिलाई; सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि
गुलज़ार ने खुद कहा, 'मुझे लगता है कि फिल्म में इरफान का अभिनय शानदार है।'
उन्होंने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, अपने किरदार में पूरी तरह ढल गए हैं।

जादूगर

2014 में विशाल भारद्वाज अपनी तीसरी शेक्सपियरियन त्रासदी के साथ वापस आए।

हैदर, जो कश्मीर संघर्ष के बीच स्थापित हेमलेट पर आधारित उनकी रचना है। पहले दो
फ़िल्में थीं मकबूल (मैकबेथ) और ओमकारा (ओथेलो)। और सही जानकारी पाने के लिए
क्षेत्र की आवाज, विशाल ने कश्मीरी पत्रकार बशारत पीर को नियुक्त किया।
(कर्फ्यूड नाइट्स पुस्तक के लेखक) को फिल्म की पटकथा लिखने के लिए कहा गया। मामूली बदलावों के साथ।
कश्मीर की राजनीति में बदलाव लाने के उद्देश्य से बनाई गई, खूबसूरती से फिल्माई गई फिल्म 'हैदर' मूल रूप से एक युवा कश्मीरी व्यक्ति की कहानी है, जिसमें शाहिद कपूर ने मुख्य भूमिका निभाई है।
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का एक छात्र, जिसे अपने चाचा खुर्रम के बारे में पता चलता है।
धोखाधड़ी और अपने पिता हिलाल की हत्या के लिए सरकारी बलों का साथ देने के आरोप में।
वह डॉक्टर जिसने आतंकवादियों का इलाज किया है।
हैदर को अपने पिता की मृत्यु और मृतक के नाम के बारे में जानकारी मिलती है।
इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति एक रहस्यमय शख्स रूहदार (शानदार इरफान खान) है।
खान), जिसने जेल और यातना कक्षों में हिलाल के साथ समय बिताया था। विशाल की फिल्म में रूहदार की एंट्री सबसे अद्भुत चीजों में से एक है। वह एक रहस्यमय किरदार है।
एक आकृति जो लंगड़ाते हुए आगे बढ़ती है—पहले धुंधली सी, और फिर धीरे-धीरे दिखाई देती है
हमारे ठीक सामने, एक बड़ा सफेद फिरन पहने हुए, एक विशाल बेज रंग का शॉल, काले चश्मे और एक काली कश्मीरी टोपी। और इसके साथ एक बैकग्राउंड स्कोर—लगभग रूहदार की थीम जैसा।

नाटक के विपरीत, रूहदार वास्तव में हैदर के पिता का भूत नहीं है। लेकिन एक अहम दृश्य में जब अर्शिया (श्रद्धा कपूर, जो ओफेलिया का किरदार निभा रही हैं)
जब रूहदार से पूछा जाता है कि क्या वह डॉक्टर है, तो रहस्यमय व्यक्ति जवाब देता है,
‘मैं डॉक्टर की रूह हूँ (मैं डॉक्टर की आत्मा हूँ)।’ जेल में, रूहदार is often tied up and tortured next to Hilal. ‘Aap jism hain, aur main rooh
(तुम शरीर हो और मैं आत्मा हूं),’ रूहदार एक मौके पर कहता है। डॉक्टर। और फिर रूहदार अक्सर दोहराए जाने वाले संवादों में से एक कहता है।
film: ‘Darya bhi main, darakht bhi main. Jhelum bhi main, chinar bhi main.
Dair bhi hoon, haram bhi hoon. Shia bhi hoon, Sunni bhi hoon. Main hoon
pandit. Main tha, main hoon aur main hi rahoonga (I am the river and the
वृक्ष। मैं झेलम हूँ और मैं चिनार हूँ। मैं मंदिर हूँ, मैं पाप हूँ। मैं शिया हूँ, मैं
मैं सुन्नी हूँ, मैं पंडित हूँ। मैं वहाँ था, मैं यहाँ हूँ और मैं वहाँ रहूँगा।
एक साक्षात्कार में विशाल ने फिल्म की शूटिंग की एक सर्दी की रात को याद किया।
जब इरफान का किरदार रूहदार यातना कक्ष में जागता रहने वाला था, अन्य कैदी उसके आसपास सो रहे थे। तापमान -14°C था, और जैसे ही रोशनी और
कैमरे लगाए जा रहे थे, इरफान चुपचाप गए और एक कैमरे के सामने खड़े हो गए।

कमरे के एक हिस्से में। विशाल ने अभी तक यह तय नहीं किया था कि इरफान कहाँ बैठेगा, लेकिन वह
उन्होंने अभिनेता द्वारा चुने गए स्थान के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया। 'उसके कुछ मिनट बाद ही...'
जैसे ही हम वहां बस गए, यातना कक्ष में एक अजीब सी ऊर्जा छा गई,’ विशाल ने कहा। ‘हम
मुझे एहसास हुआ कि इरफान परफॉर्मेंस के बीच में हैं। धीरे-धीरे, सबने ध्यान दिया।
हमने उन्हें बिना परेशान किए उनकी जगहें ढूंढ लीं। हमने कैमरा चालू किया और
उसे इंजेक्शन लगा, और तभी वह उस बेहोशी जैसी अवस्था से बाहर आया। जैसा कि उम्मीद थी, फिल्म में इरफान की भूमिका छोटी है—हालांकि उनके पास कुछ न कुछ जरूर है।
शेक्सपियर के नाटक में भूत को दिए गए समय से भी अधिक स्क्रीन टाइम। 2014 तक,
इरफ़ान भारत और हॉलीवुड दोनों जगह एक अभिनेता के रूप में सहज थे, और अपने थिएटर प्रशिक्षण के अनुरूप, वे हमेशा मुख्य भूमिका निभाने को लेकर चिंतित नहीं रहते थे।
एक फिल्म में किरदार। विशाल भारद्वाज और इरफान खान लंबे समय से दोस्त थे।
एक दशक से भी अधिक समय तक। इरफ़ान को अभिनय का अवसर देने के लिए विशाल का बहुत आभार था।
मकबूल में। और इसलिए उन्होंने हैदर में रूहदार की भूमिका खुशी-खुशी निभाई।
दरअसल, उन्होंने अपने खास पलों का, एक विशाल भीड़ के बीच चमकने के अपने मौके का भरपूर आनंद लिया।
इस कलाकारों की टोली में तब्बू, के.के. मेनन, शाहिद कपूर और श्रद्धा शामिल थे।

कपूर।
विशाल के अनुसार, फिल्म के प्रति इरफान का दृष्टिकोण ही उन्हें दूसरों से अलग बनाता है।
अपने समकालीनों से अलग। 'उनकी खासियत यह है कि वे पूरी पटकथा को समझ पाते हैं।'
और सिर्फ उनका किरदार ही नहीं,’ विशाल ने 82 हफपोस्ट इंडिया को बताया। ‘मैंने ऐसे अभिनेताओं को देखा है जो शिकायत करते हैं। उनके स्क्रीन टाइम, संवादों की लंबाई आदि के बारे में। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। उनके लिए तो यह मायने ही नहीं रखता।
भाग कितना भी लंबा या छोटा हो। वह समग्र व्याकरण के अनुसार प्रतिक्रिया करता है।
पूरी फिल्म, न कि सिर्फ उसका एक हिस्सा।'
हालांकि, हिंदी फिल्म अभिनेताओं के सोचने और काम करने के तरीके की प्रकृति के अनुरूप,
खबरों के मुताबिक, इरफान ने विशाल भारद्वाज से कहा था कि उन्हें हैदर फिल्म में शामिल न किया जाए।
प्रमोशन। इंडिया टुडे ने अभिनेता के हवाले से कहा, 'मेरे पास एक मेहमान है।'
हैदर में मेरा एक रोल था। मैंने यह इसलिए किया क्योंकि मुझे विशाल का काम बहुत पसंद है। और मैं यह करना चाहता था।
'83 मकबूल' के बाद विशाल द्वारा किए जा रहे एक और शेक्सपियरियन रूपांतरण का हिस्सा बनें।
फिल्म हैदर में अतिथि भूमिका निभाने के लिए इरफान को आलोचकों से काफी सराहना मिली।
और अन्य। नसीरुद्दीन शाह—हिंदी फिल्म उद्योग के एक गहन पर्यवेक्षक, और खासकर इरफान के करियर के बारे में—उन्होंने अभिनेता के बारे में यह कहा: 'मुझे लगता है कि वह
(इरफान) और तब्बू 'हैदर' फिल्म की सबसे अच्छी बात थे।

एक किस्सा, इरफ़ान द्वारा सुनाया गया

जेनेवा स्थित फिल्म निर्माता अनुप सिंह की इरफान खान से पहली मुलाकात तब हुई जब वे
और उनकी पूर्व पत्नी मीता वशिष्ठ (एनएसडी में इरफान की सहपाठी) ने कुछ फिल्मों में काम किया।
टेलीविजन शो। लेकिन अनुप और इरफान ने वास्तव में कई साल बाद एक साथ काम किया, जब
निर्देशक ने अभिनेता को दो फिल्मों में कास्ट किया—किस्सा: एक अकेले भूत की कहानी
(2013) और फिर द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स (2017)।
पंजाबी भाषा में फिल्माई गई फिल्म 'किस्सा: द टेल ऑफ अ लोनली घोस्ट' विभाजन के बाद के दौर की कहानी है।
एक सिख शरणार्थी के दृष्टिकोण से बताई गई हानि और विस्थापन की कहानी। इरफान
फिल्म में उंबर सिंह का किरदार निभाया गया है, जिसने विभाजन के दौरान बहुत हिंसा देखी थी। अब नव स्वतंत्र भारत में एक नए घर में रह रहे उंबर...
वह बेटा पैदा करने के लिए जुनूनी है। लेकिन जब उसकी पत्नी मेहर (टिस्का चोपड़ा) उसे बच्चा देती है, तो
चौथी बेटी के जन्म पर, वह उसे, कंवर नाम से, बेटे की तरह पालने का फैसला करता है।
अंततः तिलोत्तमा शोम की शादी भी एक अन्य युवक से करवा दी गई।

फिल्म में मुख्य किरदार नीली (रसिका दुगल) है। फिल्म जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, इसका स्वरूप काफी गंभीर होता जाता है।
जब मैंने पहली बार यह फिल्म देखी, तो इरफान द्वारा अभिनीत अंबर सिंह मुझे एक साधारण व्यक्ति के रूप में दिखाई दिया।
एक कठिन और असंवेदनशील चरित्र। लेकिन बाद में देखने पर समझ में आया।
मुझे अनूप सिंह द्वारा रचित सभी पात्रों की गहरी पीड़ा का अनुभव होता है।
अकेले उंबर सिंह की छवि अब भी मुझे परेशान करती है, और इसके लिए काफी हद तक श्रेय उन्हें जाता है।
यह इरफान के प्रदर्शन की ओर जाता है। पगड़ी और लंबी दाढ़ी पहने इरफान का अभिनय...
उनकी प्रभावशाली प्रस्तुति, उनकी आवाज और उनकी तीक्ष्ण दृष्टि से और भी निखरती है।
उस व्यक्ति द्वारा झेली गई त्रासदियों के बारे में कई पुस्तकें लिखी गई हैं।
किस्सा: द टेल ऑफ ए में इरफान के साथ कई यादगार दृश्य हैं।
लोनली घोस्ट, खासकर वह क्षण जब वह समाधि की अवस्था में नृत्य करता है। एक रहस्यमय प्रभाव के साथ।
फ्रांसीसी संगीतकार बीट्रिस थिरिएट द्वारा रचित, किस्सा: एक अकेले की कहानी
घोस्ट फिल्म दर्शकों को एक शांत, सौम्य और फिर भी गुस्सैल इरफान से परिचित कराती है।
जिसका चरित्र इतना गलत है कि वह कई लोगों के जीवन को बर्बाद कर देता है। लेकिन
उसके द्वारा शुरू की गई घटना से पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है।
उसका भूत बेहद दुखद प्रतीत होता है।
और अकेला।

जब अनुप सिंह ने पहली बार इरफान से इस भूमिका के लिए संपर्क किया, तो अभिनेता काफी हिचकिचा रहे थे।
कहानी से प्रभावित तो हुआ, लेकिन फिर नौकरी स्वीकार करने में हिचकिचा रहा था। उसने कहा, 'यह...
यह भूमिका उनके जीवन के इस मोड़ पर उनके लिए बहुत ही गंभीर है और उन्होंने कहा कि
अनुप कहते हैं, 'मैं ऐसा नहीं करूंगा।' 'इसलिए, ज़ाहिर है, मैं पूरी तरह से टूट गया था, और मैं
'छोड़ दिया।' लेकिन अपनी बातचीत के बारे में बहुत सोचने के बाद, अनुप ने इरफान को फोन किया और
उसने उसे बताया कि अभिनेता का फैसला गलत था। इस तरह दोनों दोस्त दोबारा मिले।
मैंने कहा, “जिन गायकों को आप बहुत पसंद करते हैं उनमें से एक नुसरत फतेह अली हैं।”
अनुप याद करते हुए कहते हैं, “खान। जब आप उन्हें गाते हुए देखते हैं, तो आप देखते हैं कि उनका चेहरा कैसा दिखता है।”
चेहरे का आकार बिगड़ जाता है। कभी-कभी तो चेहरा भयानक हो जाता है, आँखें आसमान की ओर उठी होती हैं, दाँत
चमकती हुई, उसकी मांसपेशियां तन गईं। यह एक अंधकारमय क्षण प्रतीत होता है। हालाँकि,
उनकी आवाज सबसे खूबसूरत आवाज है जो हमने सुनी है।
उसके भीतर से जो निकल रहा है, वह वह प्रेम है जिसे वह अन्यथा व्यक्त नहीं कर सकता।
मैं 'किस्सा' में इस किरदार को कैसे देखता हूं।' इतना सुनकर इरफान खान आश्वस्त हो गए।
किस्सा: द टेल ऑफ अ लोनली घोस्ट में मुख्य भूमिका निभाने के बारे में।
फिल्म की दो प्रमुख अभिनेत्रियां, टिस्का चोपड़ा और रसिका दुगल, हैं

पंजाबी, लेकिन तिलोत्तमा शोम और उनके लिए पंजाबी एक आसान भाषा नहीं थी।
राजस्थान में जन्मे इरफान खान। तो तिलोत्तमा और इरफान दोनों ने ही यह सफर तय किया।
पंजाबी भाषा की गहन कक्षाएं, जो कुछ महीनों तक चलीं।
एक दिन, शूटिंग के दौरान, अनुप सिंह को एहसास हुआ कि इरफान धीरे से... वह गुनगुनाते और गाते हुए खुद से ही बातें कर रहा था। अनुप ने उससे पूछा कि वह क्या गा रहा है। "ओह मैं
अनुप बताते हैं, “उन्होंने मुझसे कहा, ‘मैं संवाद गा रहा हूँ।’ उन्होंने कहा, ‘जब मैं गाता हूँ...’
संवाद के माध्यम से, मैं न केवल संवाद की लय का पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ, बल्कि
कभी-कभी मुझे धुन मिल जाती है। मैं जो प्रस्तुत करना चाहता हूँ वह मेरे भीतर की दुनिया है।
मैं जो कहना चाह रहा हूँ। और जो मैं शब्दों में नहीं कह सकता, वह संगीत है।
संवाद, वे शब्द जो वह बात कह देंगे जो पात्र कह नहीं सकता।
इसी तरह उन्होंने पंजाबी सीखी और बोलना सीखा।
अनूप का मानना है कि फिल्म के नकारात्मक लहजे का कोई भावनात्मक प्रभाव नहीं पड़ा।
इरफ़ान पर। शायद इसका संबंध इस तथ्य से था कि इरफ़ान चारों ओर से घिरे हुए थे।
एक बड़ी फिल्म टीम थी। लेकिन तब भी अभिनेता को असहनीय पीठ दर्द का सामना करना पड़ा।
शूटिंग के दौरान। लेकिन उन्होंने अनुप से कभी शिकायत नहीं की।
निर्देशक ने केवल
जब उसने गोली लगने के बाद कुछ लोगों को इरफान को ले जाते हुए देखा तो उसे एहसास हुआ।

अनुप कहते हैं, 'हम बहुत ही सीमित बजट के साथ काम कर रहे थे।' 'लेकिन वह शूटिंग के दौरान उन्हें इतना दर्द हो रहा था, यह उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया। कभी-कभी मैं उन्हें ले जाता था।
एक इंजेक्शन के लिए, मैं उससे 20 मिनट तक खड़े रहने को कहता। और वह बस खड़ा रहता।
वहाँ खड़े रहो। निर्देशक के प्रति उनका समर्पण, उनका समर्थन वाकई सराहनीय है।
दिल को छू लेने वाला।
इसलिए अनुप के लिए अपनी अगली फिल्म 'द सॉन्ग' में इरफान को फिर से कास्ट करना स्वाभाविक था।
स्कॉर्पियन्स (2017) की। इस नई फिल्म में एक बेहतरीन कलाकार थे— ईरानी अभिनेत्री
गोल्शिफतेह फ़रहानी (जिन्होंने अपने हिंदी संवाद खुद बोले), इरफ़ान, वहीदा
रहमान, शशांक अरोरा और तिलोत्तमा शोम ने छोटी भूमिका निभाई है। इरफ़ान ने एक बार फिर आदम नाम के एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जो एक ऐसी सनक में फंसा हुआ था जो किसी चीज़ के प्रति बेहद जुनूनी थी। वह एक महिला का बलात्कार अपने दोस्त से करवाता है, ताकि वह खुद को एक एक दयालु व्यक्ति। टूटी हुई महिला, नूरान (गोल्शिफ्तेह), को अकेले ही अपना गुजारा करना पड़ता है।
वह गांव में खुद को अलग-थलग कर लेती है, फिर हताशा में आदम से शादी कर लेती है।
कुछ समय तक कहानी आगे बढ़ती है और बीच में एक खूबसूरत प्रेम प्रसंग का दृश्य भी है।
गोल्शिफ्तेह और इरफान।
यह ध्यान देने योग्य है कि 2017 तक इरफान भारत में अपने करियर के शिखर पर थे।

और हॉलीवुड में भी, इसलिए एक नकारात्मक किरदार निभाने से उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई।
उन्हें पूरा भरोसा था कि 'द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स' जैसी भूमिका उनके करियर पर कोई असर नहीं डालेगी।
छवि। 'वह केवल उन्हीं भूमिकाओं में रुचि रखता है जो उसे अपने व्यक्तित्व के पहलुओं को उजागर करने में मदद करें।'
अनुप कहते हैं, 'वह यह नहीं जानता। जैसा कि वह अक्सर कहता है, मैं ऐसा क्यों करूंगा?'
एक ही भूमिका बार-बार? इससे मैं अभिनेता कैसे बन जाता हूँ? इससे तो बस यही होता है कि...
मुझे रोबोट में बदल दो।
दुबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 'द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स' का प्रचार करते हुए
फेस्टिवल के दौरान, इरफान और अनुप ने वैरायटी से अपने कामकाजी रिश्ते के बारे में बात की। 'इरफान के साथ काम करना एक ऐसे व्यक्ति के साथ काम करने जैसा है जो कोई मुखौटा नहीं पहनता।'
जब काम की बात आती है,’ अनुप ने कहा।84 ‘ऐसा कोई क्षण नहीं होता जब आपको लगे कि
कि वह कुछ होने का दिखावा कर रहा है... हम बिना गपशप किए बातचीत करते हैं।
हम अपने काम के बारे में बात करते हैं और हमारे बीच अक्सर चुप्पी छाई रहती है। कभी-कभी
एक नज़र ही हमें एक निश्चित दिशा में ले जाने के लिए काफी है... हम अपनी कमजोरियों को हावी होने देते हैं
और कमजोरियों को सबके सामने उजागर करना होगा।'
इरफ़ान ने आगे कहा कि अनुप के काम करने का तरीका यह है कि वह अभिनेताओं को काम करने की जगह देते हैं।

अपनी खुद की कहानियाँ गढ़ने के लिए। 'काम करते समय, यह मुझे बहुत सारे अवसर प्रदान करता है।'
उन्होंने कहा, 'यह एक प्रयोग था। मैंने सेट पर जाने से पहले दृश्यों को न पढ़ने का विकल्प चुना।'
मैं देखना चाहता था कि तब और वहाँ क्या होता है… आप संरचित नहीं हैं। आप कर सकते हैं
मूर्ख या गैर जिम्मेदाराना व्यवहार।'
अनूप ने बाद में कहा कि इरफान निर्देशक पर इतना भरोसा करने लगे थे कि वह किसी भी दृश्य की तैयारी में ज्यादा समय नहीं लगाता था, सिवाय इसके कि...
संवादों को याद कर लो। अन्यथा वह अपना पूरा ध्यान इसी में लगा देगा। फिल्म निर्माता के साथ यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ेगी। द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स की पूरी शूटिंग थाई रेगिस्तान के बाहरी इलाकों में हुई थी।
राजस्थान का रेगिस्तान। लेकिन भीषण गर्मी के बावजूद, इरफान बाहर रहकर खुश थे।
कभी-कभी, शूटिंग के दौरान, क्रू को यह बात नज़र आती थी कि इरफ़ान लापता। लेकिन उन्हें बस आसमान की ओर देखना था। अगर कोई पतंग उड़ रही होती,
तो निश्चित रूप से इरफान ही पतंग की डोर पकड़े हुए था। अनूप का मानना है।
पतंग उड़ाना इरफान के अभिनय के लिए एक रूपक भी है।
अनुप कहते हैं, 'अभिनेता इरफान के लिए यह किरदार आसमान में उड़ती पतंग की तरह है।'
‘वह कमान संभाले हुए है, लेकिन वह इसे कितना नियंत्रित कर सकता है, क्योंकि आप कभी नहीं जान सकते’
हवाओं को जानो। आकाश में और भी पतंगें हैं। पेड़ हैं, बिजली के तार हैं।

तार। हवा का एक झोंका पतंग को तोड़ सकता है।
इसलिए वातावरण में होने वाला कोई भी मामूली बदलाव इरफान के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।
किसी भी दृश्य में। अनुप को याद है कि किस्सा: द टेल ऑफ़ अ के एक शॉट के दौरान
लोनली घोस्ट में, इरफान के कंधे पर एक पत्ता गिरा। 'उसने इसे देखा और वह रुक गया।'
अनूप कहते हैं, 'उनकी पूरी लय ही बदल गई।'

और अधिक चुनौतियों की तलाश में

जब अनुप सिंह इरफान खान के साथ 'द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियंस' पर काम कर रहे थे, तब उन्हें बांग्लादेशी फिल्म निर्माता मोस्तोफा सरवर फारूकी से एक ईमेल प्राप्त हुआ।
जो बंगाली होने के नाते इरफान खान से परिचय कराने के लिए किसी की तलाश कर रहा था।
फिल्म, नो बेड ऑफ रोजेस (बंगाली में डूब)। मोस्तोफा ने इस बारे में एक पटकथा लिखी थी।
एक अधेड़ उम्र के बांग्लादेशी फिल्म निर्माता, जो अपनी कई वर्षों की पत्नी को छोड़कर चले जाते हैं और
वह एक युवा अभिनेत्री के साथ रहने लगता है जो उसकी बेटी की बचपन की दोस्त है।
यह एक जटिल भूमिका थी, लेकिन पटकथा लिखते समय, मोस्तोफा केवल इतना ही कर पाए।

इरफ़ान की आँखों को देखो। 'इस किरदार की खूबसूरती यही है कि वह बहुत मजबूत है।'
'बाहर से तो वह सख्त दिखता है, लेकिन अगर आप गहराई से देखें तो वह बहुत ही नाजुक आत्मा है,' मोस्तोफा कहते हैं। 'मैं
ऐसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसकी आँखों में वे दो विपरीत भावनाएँ झलकती हों। यदि
जब दर्शकों ने गौर से देखा, और खासकर उसकी आँखों में, तो उन्हें पता चला कि
एक बलवान व्यक्ति के आवरण में छिपा एक कमजोर व्यक्ति।
कुछ अनहोनी और उस घटना सहित कई परेशानियों के बाद आखिरकार इरफान इस प्रोजेक्ट में शामिल हो गए।
जब मोस्तोफा ने पहली बार अनुप सिंह को पत्र लिखा, तो वह फिल्म की पटकथा संलग्न करना भूल गया था।
ईमेल का जवाब नहीं मिला। और वह हफ्तों तक यह सोचकर इंतजार करता रहा कि आखिर कोई जवाब क्यों नहीं आया।
प्रतिक्रिया। इरफ़ान ने स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद, मोस्तोफ़ा की कुछ फ़िल्में देखीं।
यूट्यूब पर निर्देशक की डार्क कॉमेडी फिल्मों के पायरेटेड वर्जन मौजूद हैं, बिना किसी अतिरिक्त जानकारी के।
सबटाइटल। और भले ही सुतापा सिकदर बंगाली हैं, इरफान ने उनकी फिल्में देखीं।
वह अकेले ही था। 'बाद में उसने मुझे बताया कि वह हंसते-हंसते बिस्तर से गिर रहा था,' मोस्तोफा ने कहा।
उन्होंने कहा, “उनकी पत्नी ने पूछा, ‘आप इस पर कैसे प्रतिक्रिया दे रहे हैं?’ और उन्होंने जवाब दिया कि…”
भाषा को समझने की जरूरत नहीं थी।
इरफ़ान को स्क्रिप्ट इतनी पसंद आई कि उन्होंने अपना नाम देने की भी सहमति दे दी।

फिल्म के निर्माता के रूप में इस उम्मीद के साथ कि इससे धन जुटाने में मदद मिलेगी।
प्रोडक्शन। मोस्तोफा आगे कहते हैं, 'वह वहां सह-निर्माता के रूप में अधिक मौजूद थे।' 'उन्होंने बनाया
मुझे पूरा यकीन था कि फिल्म बन जाएगी।
असली चुनौती इरफान को एकदम सटीक बंगाली बुलवाना था।
उच्चारण, और इसी वजह से मोस्तोफा ने अभिनेता के साथ स्काइप पर लंबी बातचीत की, जिसमें उन्होंने
पूरी स्क्रिप्ट बंगाली में पढ़ी गई, हालांकि वह अंग्रेजी में लिखी गई थी।
प्रोडक्शन टीम के पास सेट पर एक बंगाली कोच था, इरफान ज्यादातर बंगाली भाषा पर निर्भर रहते थे।
उसने मुस्तफा द्वारा बंगाली में लिपि पढ़ते हुए की रिकॉर्डिंग बनाई थी।
नो बेड ऑफ रोजेज (2017) एक दिल दहला देने वाली कहानी है और इसमें कोई भी किरदार इससे बच नहीं पाता।
इसमें विजेता। हालांकि इरफान का किरदार जावेद हसन खलनायक के रूप में दिखाई देता है—
कम से कम शुरुआत में—क्योंकि वह अपनी पत्नी और बेटी को एक छोटी उम्र की महिला के लिए छोड़ देता है।
महिला, मोस्तोफा के कुशल मार्गदर्शन में उठाया गया यह एक कदम सभी को पीछे छोड़ देता है।
जावेद की नई पत्नी समेत सभी लोग घबरा गए।
और जबकि हम जानते हैं कि जावेद अपने परिवार के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करता था, इरफान
वह किरदार में इतनी मानवीयता भर देता है कि आज भी हमारा दिल उसके लिए दुख से भर जाता है।

घर छोड़ने के बाद वह अपने बेटे और बेटी को जो फोन करता है, वह देखना दिल दहला देने वाला दृश्य है। लेकिन उससे भी ज्यादा भावुक कर देने वाला दृश्य तब होता है जब वह अपने पास खड़ा होता है।
इरफान अपने बेटे से कहता है कि वह अपने दोस्तों को बताए कि उसका पिता एक बुरा आदमी है। फिर
दिल टूट जाता है। यह इतना गहरा दुखद है, भले ही हमें फिल्म में जावेद पसंद न हो।
मैं हमेशा खुद को हारने वालों के साथ, उन लोगों के साथ जोड़कर देखता हूँ जो
निर्देशक कहते हैं, 'पराजित और पीड़ित। इसीलिए नो बेड ऑफ रोज़ेज़ में मैंने
जब दूसरी पत्नी को तकलीफ होने लगती है तो उसकी देखभाल करना भी शुरू कर देते हैं।
इरफ़ान ने फिल्म की शूटिंग के लिए ढाका में 35 दिन बिताए, लेकिन उन्होंने इसके अलावा भी समय निकाला।
शूटिंग के बीच में आराम करें। वह घर जहाँ जावेद जाने के बाद रहने जाएगा।
उनका परिवार एक बड़े खेत के बगल में रहता था, और अक्सर फिल्म की टीम के लोग वहाँ से गुजरने लगते थे।
क्रिकेट का एक अस्थायी खेल खेलें।
शूटिंग से जुड़ी मोस्तोफा की सबसे खास याद यही थी। इरफान इसमें मुख्य भूमिका निभाते थे।
वह एक ऑलराउंडर थे, लेकिन उन्हें हारना बिल्कुल पसंद नहीं था। निर्देशक ने कहा, 'वह एक बच्चे की तरह व्यवहार करते थे।'
हंसते हुए कहता है, 'और फिर उसने खेल में धोखा दिया। उसे बाहर रहना पसंद नहीं है।'
इसलिए वह हमेशा कोई न कोई बहाना बना लेता था, कहता था, "ओह नहीं, यह संभव नहीं है-"

गेंद।"'
नो बेड फॉर रोज़ेज़ बांग्लादेश की ओर से विदेशी मुद्रा संग्रह में आधिकारिक प्रविष्टि थी।
लैंग्वेज ऑस्कर।
नो बेड ऑफ रोजेज जैसी फिल्म इरफान खान के लिए ठीक वैसी ही चुनौती थी।
अभिनेता अपने जीवन में एक ऐसी फिल्म देखना चाहता था जो ऐसी भाषा में बनी हो जिसमें वह सहज न हो।
एक ऐसे किरदार के साथ जो उनके द्वारा निभाए गए किसी भी किरदार से बिल्कुल अलग था और अभिनय करने का मौका मिला।
एक और देश। यह बिल्कुल सही था, क्योंकि इरफान इसी तरह के और अवसर तलाश रहे थे।
भारत में भी कई चुनौतियां हैं, जिनमें रोमांटिक कॉमेडी फिल्मों में काम करना भी शामिल है।
वे लोग उस शैली की फिल्मों में भी काफी हद तक सफल हो जाते हैं।

विशाल भारद्वाज की 2011 की फिल्म 7 खून माफ से गुलजार की 74 उर्दू पंक्तियाँ (एक दिन ऐसा होगा, थोड़ी शांति का क्षण आएगा/ न तो बार-बार दर्द होगा, न ही मेरे दिमाग में पागलपन होगा)।
75‘कीपिंग इट रियल’, टाइम, 15 फरवरी 2010
76Kuch Bhi Ho Sakta Hai, Season 2, Episode 5, 30 August 2015, https://www.voot.com/shows/the-anupam-kher-show-s02/2/383623/the-warrior/383780
77‘पान सिंह तोमर बेहद प्रभावशाली हैं’, rediff.com, 2 मार्च 2012, https://www.rediff.com/movies/report/review-paan-singh-tomar-is-compelling/20120302.html
78'7 खून माफ ब्लॉग: वसीउल्लाह खान के रूप में इरफान खान', बॉलीवुडहंगामा। कॉम,
https://www.youtube.com/watch?v=q9e1tDtD-BY

79 ‘इरफान खान: परिभाषा को चुनौती देते हुए’, फोर्ब्स इंडिया, 24 दिसंबर 2013,
http://www.forbesindia.com/article/2013-celebrity-100/irrfan-khan-defying-definition/36739/1
80'7 खून माफ पर गुलज़ार', द टेलीग्राफ, 17 फरवरी 2011, https://www.telegraphindia.com/entertainment/gulzar-on-7-khoon-maaf/cid/425930
81 अंकुर पाठक, ‘इरफान खान का पुनरुत्थान’, हफपोस्ट इंडिया, 1 मई 2019,
https://www.huffingtonpost.in/entry/the-resurrection-of-irrfan-khan_in_5cc94721e4b0913d078a8f53
82 अंकुर पाठक, ‘इरफान खान का पुनरुत्थान’, हफपोस्ट इंडिया, 1 मई 2019,
https://www.huffingtonpost.in/entry/the-resurrection-of-irrfan-khan_in_5cc94721e4b0913d078a8f53
83 ‘मुझे हैदर के प्रमोशन से दूर रखो, इरफान ने विशाल भारद्वाज से कहा’, इंडिया टुडे, 5 अगस्त 2014 https://www.indiatoday.in/movies/bollywood/story/keep-me-out-of-haider-promotions-irrfan-tells-
vishal-bhardwaj-202930-2014-08-05
84‘इरफान खान और अनुप सिंह ने चर्चा की कि वे एक साथ अच्छा काम क्यों करते हैं’, वैरायटी,
https://variety.com/video/irrfan-khan-anup-singh-working-relationship/7

एक अभिनेता ने खुद को नए सिरे से गढ़ा

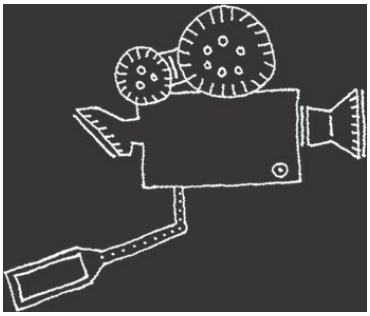

जिस दिन मैं पारंपरिक बन जाऊँगा, मेरे अंदर कुछ ऐसा होगा जो मुझे परेशान करेगा।
मरना.85

2015 तक, इरफ़ान खान के अभिनय ने भारतीय फिल्म उद्योग में धूम मचा दी थी। उन्होंने न केवल हिंदी फिल्म उद्योग और यहां तक कि हॉलीवुड में भी एक प्रमुख अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनाई थी, बल्कि कई अन्य क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ी थी।
काफी जोखिम उठा लिए थे। अब वह एक ऐसे क्षेत्र में जाने के लिए तैयार था जो अभी भी अनछुआ था।
उनके लिए यह एक बिल्कुल नया अनुभव था—एक रोमांटिक मुख्य किरदार निभाना। उन्होंने रोमांटिक पहलू को उजागर कर दिया था।
द नेम्सके (2006) से लेकर लाइफ इन ए... तक की फिल्मों में उन्होंने शानदार अभिनय किया है।
मेट्रो (2007) में भी माही गिल के साथ कुछ प्यारे पल थे।
पान सिंह तोमर (2012)। अब वह पूर्ण विकसित
इरफ़ान रोमांटिक कॉमेडी भूमिकाओं के लिए जाने जाते थे। लेकिन उनका इरादा अगला सुपरस्टार बनने का नहीं था।

शाहरुख खान। वो इसे अपनी शर्तों पर निभाएंगे, एक आम आदमी की तरह, इसमें अमोल पालेकर और फारूक शेख की झलक होगी, लेकिन ज्यादातर यह एक नई रचना होगी।
इरफान खान के अनुसार, वह एक तरह के रोमांटिक व्यक्ति थे।

पिकू और खूबसूरत जादू

सबसे पहले, इरफान को राणा के किरदार के लिए चुना गया, जो दक्षिण दिल्ली स्थित एक कैब कंपनी का मालिक है।
शूजीत सरकार की बेहद आकर्षक और मौलिक कॉमेडी-ड्रामा फिल्म में, पिक्कू (2015)। इस फिल्म में इरफान पहली बार दीपिका पादुकोण के साथ अभिनय करेंगे।
(मुख्य भूमिका निभाते हुए), जो उस समय की स्पष्ट रूप से नंबर एक हिंदी फिल्म अभिनेत्री थीं,
अमिताभ बच्चन के साथ (पिकू के पिता भास्कर बनर्जी की भूमिका निभाते हुए)।
एक सनकी बूढ़ा आदमी, जो अपनी मल त्याग की समस्या से ग्रस्त था।
इसी भूमिका के लिए इरफान ने रिडले में अभिनय करने का अवसर छोड़ दिया था।
स्कॉट की फिल्म द मार्टियन (2015)। और इरफ़ान को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्हें तीसरी फिल्म मिली।
फिल्म में उनका नाम था। उन्हें दीपिका के साथ अभिनय करने में ज्यादा दिलचस्पी थी।
Amitabh Bachchan.

कई अन्य फिल्म निर्माताओं की तरह, जिन्होंने इरफ़ान को अपनी फिल्मों में लिया था, इरफ़ान के साथ भी ऐसा ही हुआ था।
फिल्म्स के लिए, शूजीत और उनकी लेखिका जूही चतुर्वेदी ने भी पटकथा लिखी।
अभिनेता को ध्यान में रखते हुए, शूजीत ने इरफान से संपर्क किया जब स्क्रिप्ट पर अभी काम चल रहा था।
प्रगति। 'वह काफी उत्साहित था और इसलिए उसे पता था कि वह यह मैच खेलने वाला है।'
'भूमिका,' शूजित कहते हैं।
शूजीत को यह भी लगता था कि इरफान शायद अपनी पीढ़ी के इकलौते अभिनेता थे।
यह भूमिका कौन निभा सकता था, खासकर तब जब पटकथा में इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं लिखा था।
राणा के किरदार के बारे में। इरफान के लिए चुनौती थी कि वह
राणा के सूक्ष्म भाव और बारीकियां। 'मैंने इस तरह के किरदार देखे हैं...'
निर्देशक कहते हैं, 'दिल्ली। लेकिन कागज़ पर तो वह बस वहाँ समय बिता रहा था, कुछ नहीं।' 'लेकिन कागज़ पर तो वह बस ऐसे ही घूम रहा था, कुछ नहीं।'
वरना, हमें राणा के व्यक्तित्व को निखारने के लिए एक बुद्धिमान अभिनेता की जरूरत थी।'
राणा के व्यक्तित्व की विशेषताएं, और वह रोज़ाना जिन तनावों से गुज़रता है
काम पर, घर पर, जहाँ उसकी माँ और बहन उसे परेशान करती हैं—उसे पागल कर देती हैं
अन्य सामान्य लोगों से अलग नहीं। रोजमर्रा की जिंदगी किसी व्यक्ति को निराश कर सकती है।

कभी-कभी उन्हें ऐसे काम करने के लिए मजबूर कर देते हैं जो वह व्यक्ति करना नहीं चाहता। और वह
यही बात राणा को हाल के समय के सबसे प्यारे हिंदी फिल्म किरदारों में से एक बनाती है।
कई बार। शूजीत और जूही चतुर्वेदी इस तरह की वास्तविक रचना करने के लिए श्रेय के पात्र हैं।
और विश्वसनीय चरित्र। लेकिन निर्देशक उदार हैं, जैसा कि वे कहते हैं, 'इरफान
उन्होंने वह जादू जगा दिया जिसकी हमें तलाश थी। राणा उनकी बेहतरीन रचनाओं में से एक हैं।
भूमिकाएँ।'
इरफ़ान के साथ काम कर चुके अन्य निर्देशकों की तरह, शूजीत ने भी सराहना की।
अभिनेता का एक दुर्लभ गुण यह था कि वह अपने बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता था।
उसका चरित्र, उसकी पृष्ठभूमि और उसकी प्रेरणाएँ, वस्तुतः उसके चरित्र का डीएनए।
शूजीत बताते हैं कि कैसे वह कभी-कभी बात करते-करते थक जाते थे। इरफ़ान ने सीधे कहा, 'मेरे पास अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए और शब्द नहीं हैं। वह एक महान व्यक्तित्व हैं।'
एक दुर्लभ कलाकार। वह अपने भीतर सब कुछ समाहित कर लेता है, उसे आत्मसात कर लेता है और फिर एक अद्भुत रचना प्रस्तुत करता है।
खुद को अभिव्यक्त करने का उनका अनोखा तरीका।
अभिनय की बिल्कुल अलग-अलग शैलियों से आने वाले तीन दमदार अभिनेताओं का होना
इससे सेट पर कुछ हलचल मच सकती है। लेकिन कभी-कभी यह एक
आशीर्वाद। फिल्म के ठीक बीच में, अंतराल से ठीक पहले, राणा,

भास्कर और पीकू दिल्ली और के बीच एक राजमार्ग पर बहस करते हुए पाए जाते हैं।
कोलकाता में, वे मूल रूप से फंस गए हैं। भास्कर को कार की डिक्की में एक चाकू मिला है।
वह कार के बारे में बात कर रहा है और चाहता है कि राणा उसे फेंक दे, उसके बाद ही वे आगे गाड़ी चलाएंगे।
राणा इस बात पर अड़ा है कि वह चाकू नहीं फेंकेगा। पीकू बस...
उन दोनों आदमियों से निराश।
स्क्रिप्ट में वह दृश्य लिखा हुआ था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह ठीक से काम नहीं कर रहा है।
शूजीत जैसा चाहते थे, वैसा ही उन्होंने किया और अभिनेताओं से अभिनय में सुधार करने को कहा। तीनों ने पहले ही कुछ हफ्तों तक फिल्म की शूटिंग कर ली थी, और वे काफी सहज थे।
वे अपने किरदारों में सहज थे। इसके बाद एक अराजक स्थिति उत्पन्न हुई, लेकिन
उस पागलपन में भी एक तरीका छिपा था।
शूजित कहते हैं, 'वे तीनों अकेले थे। लेकिन वे इतने
यह उनके स्वभाव के अनुरूप ही था कि सब कुछ ठीक हो गया। वे तीन अलग-अलग जगहों पर थे।
कोनों में, अलग-अलग बैठे हुए, फिर भी यह इतना असली लग रहा था। एक आदमी (भास्कर) नहीं था
मैं जाना चाहता था; दूसरा लड़का (राणा) तंग आ चुका था और यह लड़की पूरी तरह से
उन दोनों से तंग आ चुकी थी, लेकिन उसे एक स्टैंड लेना ही पड़ा।
यह सबसे बेहतरीन दृश्यों में से एक है—इरफान, अमिताभ और दीपिका अपनी-अपनी भूमिकाओं में शानदार प्रदर्शन करते हैं।
वे अपने-अपने कलाकार हैं, और फिर भी, एक सामूहिक कलाकार समूह के रूप में, वे एक-दूसरे में सर्वश्रेष्ठ गुणों को सामने लाते हैं।

शूजित का दांव सफल रहा। बेहतरीन संपादन और फिल्मांकन के साथ, तीन शानदार कलाकार।
कलाकारों की बात करें तो, चाकू वाला दृश्य पिक्कू को रिलीज़ हुई अधिकांश अन्य फिल्मों से अलग करता है।
उसी वर्ष।
इरफ़ान द्वारा अभिनीत राणा अक्सर चिढ़ जाता है और यह उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
पिता और बेटी के साथ कोलकाता की लंबी कार यात्रा में फंस गए।
वे हर समय झगड़ते रहते हैं। वह उन्हें कोलकाता ले जाने के लिए सहमत हो गया है क्योंकि उनमें से कोई भी
उनकी कंपनी के ड्राइवर समय बिताने की चुनौती स्वीकार करने को तैयार हैं।
पिकू और उसके पिता के साथ, पिकू के गुस्से और मनोदशा में उतार-चढ़ाव को देखते हुए। लेकिन यह
राणा पहली बार पिता और बेटी को इतनी बारीकी से देख रहा है। वह अक्सर उसके चेहरे पर निराशा भरी मुस्कान है, मानो वह कह रहा हो, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं पकड़ा गया।'
'इन दोनों के बीच' या 'यह बातचीत आखिर किस ओर जा रही है?' वह अक्सर ऐसा कहता है।
वह अविश्वास भरी निगाहों से दीपिका को देखता है और एक बार तो वह उससे पूछती भी है, 'तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'
लुकिंग एट मी?'
'अक्सर मैं उसे कुछ चीजें करने के लिए कहता था, लेकिन वह एक शानदार अभिनेता है और इसमें से बहुत कुछ उसकी मर्जी पर निर्भर था।'
शूजीत हंसते हुए कहते हैं, 'यह सब उसकी अपनी गलती है। उसके चेहरे पर दिख रही झुंझलाहट से साफ पता चलता है।'
जब पिता और बेटी एनी बेसेंट को लेकर बहस करने लगते हैं, सरोजिनी नायडू

और न जाने क्या-क्या। वो तो इरफान की एक्टिंग थी।
फिल्म में मेरा एक पसंदीदा दृश्य वह है जब राणा कोलकाता में होता है।
बनर्जी परिवार के मुख्य आंगन में पानी को लेकर सब लोग आपस में बहस कर रहे हैं।
पानी की आपूर्ति बंद हो गई है। शौचालयों और खाना पकाने के लिए पानी नहीं है।
परिवार राणा से पानी का पंप ठीक करने को कहता है, लेकिन वह दिल्ली जाना चाहता है।
तुरंत। अंततः, वह शोर सहन नहीं कर पाता और चिल्लाता है, 'अरे चुप!' (चुप रहो!)’ जिससे परिवार चौंक जाता है। और फिर पूछता है कि पानी कहाँ है।
पंप है। वह पूरे माहौल को हिला देता है, लेकिन इरफान को कुछ सेकंड के लिए देखना मजेदार होता है।
उसके चिल्लाने से पहले। हो सकता है वह मानसिक रूप से उन पर चिल्लाने की तैयारी कर रहा हो, लेकिन कुछ नहीं।
उसके शारीरिक हावभाव से संकेत मिलता है कि विस्फोट होने ही वाला है। इरफान इतना
उस पल में अच्छा लगता है। भले ही अभिनेता को पता हो कि स्क्रिप्ट में आगे क्या होने वाला है, लेकिन राणा के किरदार का यह अचानक से प्रकट होना बिल्कुल बेतुका लगता है।
सहज और बिल्कुल अप्रत्याशित।
फिर, फिल्म के अंत में, एक प्यारा सा दृश्य है जहाँ पीकू और
राणा कोलकाता के गंगा घाट पर हैं और वह उनसे कहती है कि कुछ समय बाद वृद्ध माता-पिता को जीवित रखना आवश्यक है और यह जिम्मेदारी बन जाती है।
बच्चे। वह आगे कहती हैं कि इस जिम्मेदारी को देखते हुए, उन्हें अपने लिए बच्चे ढूंढना मुश्किल होगा।

एक जीवनसाथी। लेकिन फिर वह राणा की ओर मुड़कर पूछती है कि क्या वह उससे शादी करेगा, और
वह शरारती मुस्कान के साथ जवाब देता है, 'मेरा दिमाग खराब नहीं है (मैंने अपना दिमाग नहीं खोया है)'
दिमाग)।'
पिकू एक रोमांटिक फिल्म है। राणा और उनके बीच स्पष्ट आकर्षण है। पिकू, लेकिन उनका रोमांस—अगर इसे रोमांस कहा जा सकता है—किसी भी अन्य चीज़ से बिल्कुल अलग है।
जो किसी मुख्यधारा की हिंदी फिल्म में अब तक दिखाया गया है।
रसायन विज्ञान, पसंद और इतना तो स्पष्ट है—काफी हद तक तर्क देने के बाद
फिल्म के अंत में, पीकू और राणा एक दूसरे की परवाह करने लगते हैं।
फिल्म का अंत इस प्रकार होता है:
पीकू के चित्तरंजन पार्क स्थित घर के बाहर सड़क पर दो लोग बैडमिंटन खेल रहे हैं।
दिल्ली में।
हमने इरफान और दीपिका से कहा था कि हमें नहीं पता कि उनके बीच रोमांस चलेगा या नहीं।
चाहे ऐसा हो या न हो, ऐसे कई रिश्ते और दोस्ती हैं जो नहीं होते।
शूजीत कहते हैं, 'पूरी तरह से समझाया गया है। आपको नहीं पता कि वे साथ रहेंगे या नहीं।'
— क्या वे एक दूसरे से प्यार करेंगे? लेकिन वे साथी बन चुके हैं।
— कंधे पर सहारा देने वाले साथी (ऐसे साथी जो अपना कंधा दे सकें) एक दूसरे से)।'
उन्होंने आगे कहा, 'मैंने उन्हें बैडमिंटन खेलते हुए ही छोड़ दिया। उसे दिखाने की ज़रूरत नहीं है।'
प्यार करो और दोस्ती से आगे बढ़ो। और यह भी खूबसूरत हो सकता है।'

पीकू को भारत और विदेशों में आलोचकों ने खूब सराहा। (द न्यूयॉर्क टाइम्स)
समीक्षा में इरफान को फिल्म में 'गंभीर और शानदार' बताया गया।86 गार्जियन के समीक्षक ने भी इरफान की प्रशंसा करते हुए कहा, 'यह तो कमाल का खान है (लाइफ ऑफ पाई वाला)'।
जो इसे चुराता है, व्यंग्यात्मक भावों के साथ सूक्ष्म हास्यपूर्ण चमत्कार करता है।’87 और
Rediff.com ने इरफान खान को 'स्वभाविक रूप से त्रुटिहीन' बताया। समीक्षक ने आगे कहा, 'पिता और बेटी की तुलना में लेखक द्वारा समर्थित भूमिका कम होने के बावजूद,
इरफ़ान ने अपने किरदार में इतनी प्रामाणिकता भर दी है कि कई दर्शकों का दिल जीत लिया है।
दृश्य और कथा को उसकी निरंतरता प्रदान करें।’88

एआईबी और इरफान 2.0

2015 में, इरफान खान ने विभिन्न शैलियों के साथ प्रयोग करना शुरू किया।
फिल्म निर्माण में भी उन्होंने कदम रखा और यहां तक कि कॉमेडी के क्षेत्र में भी, जहां वे खुद थे।
मजाक। बेहद लोकप्रिय कॉमेडी मंडली, ऑल ने इरफान से संपर्क किया।
इंडिया बकचोद (एआईबी) एक गाने के वीडियो में नज़र आएंगे जो एक पैरोडी होगा।
बॉलीवुड क्लब पार्टी के दृश्य।
वीडियो और गाने का शीर्षक होगा "89 एवरी बॉलीवुड पार्टी सॉन्ग"।

लगभग सात मिनट का यह वीडियो एक ऑफिस मीटिंग से शुरू होता है जहां इरफान और
उनके मैनेजर (जिनकी भूमिका एआईबी के नियमित कॉमेडियन नवीन पॉलिशेट्टी ने निभाई है) का प्रयास
to impress the AIB team (Tanmay Bhat, Gursimran Khamba, Rohan Joshi
और आशीष शाक्य) ने बताया कि अभिनेता कितने शानदार हैं और उनकी पहुंच कितनी व्यापक है।
क्रिस्टोफर नोलन ऑस्कर में। एआईबी के चारों सदस्य उनके प्रति विस्मय जताने का नाटक करते हैं।
इरफ़ान, लेकिन जब उनसे पूछा जाता है कि वे किस तरह का वीडियो करना चाहते हैं, तो अभिनेता
responds, ‘Kya kar sakte hain? Kuch bhi kar sakte hain (What can I do? I can
कुछ भी करना है।’ और फिर वह अपना जवाब अंग्रेजी में दोहराता है। ‘मैं नहीं चाहता कि
मैं अपनी बड़ाई नहीं कर सकता। लेकिन मैं कुछ भी कर सकता हूँ (प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देते हुए)।
दूसरा वाक्य)।
इसके बाद वह वीडियो आता है जिसमें इरफान को एक जगह पर घूमते हुए दिखाया गया है।
बार में, उसके आसपास कई खूबसूरत लड़कियां हैं। बारटेंडर ड्रिंक्स मिलाते हैं और लोग
रंग-बिरंगी डिस्कोथेक की रोशनी उन पर पड़ रही है और वे नाच रहे हैं।
इरफान लिप सिंक कर रहे हैं।
यह गाना, हिंदी फिल्म उद्योग में उनके करियर के दौरान उनके द्वारा किए गए कुछ ही मौकों में से एक था।

इस गाने में उन सभी घिसे-पिटे गुणों का समावेश है जो अक्सर सुनने को मिलने वाले ऐसे कई गानों में पाए जाते हैं।
बॉलीवुड फिल्मों में दिखाया गया है। असल में यह वीडियो एक लंबा मजाक है।
यह चुटकुला खूब वायरल हुआ और इरफान अपने प्रयास में काफी हद तक सफल रहे।
अपनी छवि को एक गंभीर अभिनेता से बदलने के लिए, जो सावधानीपूर्वक परियोजनाओं का चयन करता था
इससे उनकी अभिनय प्रतिभा और भी निखरकर एक कूल लड़के के रूप में उभर कर सामने आएगी। यह वीडियो पोस्ट किया गया था।
अगस्त 2015। इसे यूट्यूब पर 12 मिलियन से अधिक बार देखा जा चुका है। एआईबी ने सबसे पहले इस गाने का प्रस्ताव अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा को दिया था। लेकिन कुछ दिक्कतें आ गईं।
स्टार की तरफ से कोई जवाब नहीं आया और फिर ठीक उसी समय तन्मय भट्ट, सह-
एआईबी के संस्थापक, फिल्म निर्माता वासन बाला (पेडलर्स, 2012 और मर्द को) से मिले
दर्द नहीं होता, 2018)। और तभी इरफान का नाम सामने आया। वासन
मैं इरफ़ान के मैनेजर को जानता था और मैंने फिल्म 'द' के हिंदी संवादों पर काम किया था।
लंचबॉक्स के दौरान, उन्हें उस अभिनेता के बारे में भी जानने का मौका मिला था।
‘शुरुआत में हमें इरफान के बारे में संदेह था, लेकिन फिर हमने पढ़ना शुरू किया…’
तन्मय भट्ट कहते हैं, 'उनके बारे में सोचकर स्क्रिप्ट को फिर से लिखना। इन पंक्तियों की कल्पना करना।'

इरफ़ान के मुंह से निकली वो बात सुनकर हम सब हंस पड़े। वो दृश्य बहुत ही मजेदार था। हमने सोचा कि मजाक के लिए इरफ़ान इस रोल के लिए एकदम सही रहेंगे।
मैंने इरफ़ान को इस अवतार में पहले कभी नहीं देखा था। यह चुटकुला काफी हद तक इरफ़ान के इस रूप पर आधारित था।
वह अपने कंफर्ट जोन से पूरी तरह बाहर निकल गया।
जब इरफान से संपर्क किया गया, तो उन्होंने ऑडिशन देने के विचार को तुरंत स्वीकार कर लिया।
कुछ नया। 'मुझे पता था कि उनके अलग-अलग दृष्टिकोण हैं और वह वास्तव में कुछ नया चाहते थे।'
वासन बाला कहते हैं, 'लोगों तक पहुंचना और अलग-अलग बातें कहना।' और वह आगे कहते हैं कि
जिस समय इरफान ने पीकू में भूमिका स्वीकार की, उसी समय के आसपास उनके दृष्टिकोण में बदलाव आया।
काम में बदलाव आने लगा था। वासन कहते हैं, 'उन्होंने सुरक्षित रास्ता अपनाना बंद करने का फैसला किया।'
'हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जब हम उनसे मिले तो उनका उत्साह देखकर हमें बहुत खुशी हुई।'
तन्मय कहते हैं, 'जब उन्होंने स्क्रिप्ट सुनी, तो उन्होंने कुछ जगहों पर ताली बजाई।' 'मैं कहता हूँ
यह प्यार से कहा गया है, लेकिन इरफान बहुत ही बकचोद (एक ऐसा व्यक्ति जो निरर्थक कामों में लिप्त रहता है) है।
आप उसके साथ घंटों बैठ सकते हैं और बस बातें कर सकते हैं, बातें कर सकते हैं और मजाक कर सकते हैं। वह
इससे कमरे में मौजूद हर कोई बहुत सहज महसूस करता है।'
इरफ़ान को एआईबी टीम की कॉमेडी शैली भी बहुत पसंद आई।
विकास हो रहा है। 'जब वह मिले, तो उन्होंने रोस्ट के बारे में बात की (जहां एआईबी सदस्य

उन्होंने रणवीर सिंह और अर्जुन कपूर, दो हिंदी फिल्म सितारों की जमकर खिंचाई की और प्रत्येक
तन्मय कहते हैं, 'उन्होंने हमें क्रांतिकारी कहा,' और उन्होंने हमें क्रांतिकारी भी कहा।
और इसलिए उन्होंने टीम को तीन दिन का समय दिया, वो भी व्यस्त समय के बीच में।
वह पिकू के लिए प्रचार कार्य कर रहा था। वह दो दिनों के लिए भी उपस्थित हुआ था।
डांस रिहर्सल। दरअसल, उन्होंने एआईबी समूह को एक अभिनेता से भी ज्यादा समय दिया।
उनका कद ही काफी होता। 'उन्होंने इसे एक रचनाकार के आनंद के साथ किया, न कि किसी और भावना के साथ।'
तन्मय आगे कहते हैं, 'एक अभिनेता होने का आनंद।'
डांस और लिप सिंकिंग असल में उतने आसान नहीं हैं जितना कि अनुभवी हिंदी फिल्म कलाकारों को लगता है।
अभिनेता दर्शकों को यकीन दिला देते हैं। कुछ अभिनेता दर्शकों को आकर्षित करने की प्रतिभा के साथ पैदा होते हैं।
एक लय, लेकिन ज्यादातर लोग इसे पाने के लिए बहुत मेहनत करते हैं।
'इरफान लोगों को चौंकाने के लिए जाने जाते हैं।
वासन कहते हैं, 'उनकी लय और अभिनय के साथ। लेकिन चुनौती यह थी कि...' कोई ऐसा व्यक्ति जिसे नृत्य सीखने के दौरान ताल बिगाड़ने की इतनी आदत हो।
उसे एक विशिष्ट लय का पालन करते हुए कदम उठाने पड़ते थे और फिर भी अपने अद्वितीय अंदाज में प्रदर्शन करना होता था।
शैली।'
इरफ़ान को सबसे ज़्यादा युवाओं के साथ समय बिताना पसंद था।
हास्य कलाकारों और लेखकों को सुनना और उनसे बातचीत करना।

वासन कहते हैं, 'मुझे वीडियो के परिणाम की परवाह नहीं थी। लेकिन प्रक्रिया महत्वपूर्ण थी।'
यही बात उसे उत्साहित करती थी। मुझे लगता है कि यही उसका मकसद था।' अपने फिल्मी करियर की शुरुआत में और यहां तक कि फिल्म की शूटिंग से कुछ साल पहले भी।
एआईबी के वीडियो में, इरफान अपने करियर के विकास को लेकर बहुत सतर्क थे।
शायद इसका संबंध पिक्कू में भूमिका स्वीकार करने के उनके द्वारा उठाए गए जोखिम से था, लेकिन
जब तक एआईबी की टीम ने उनसे संपर्क किया, इरफान में एक शांत और सौम्य स्वभाव विकसित हो चुका था। वासन याद करते हुए कहते हैं, 'उनके आसपास एक खुशी का माहौल रहता था।' 'यह बहुत ही अद्भुत था।
स्पष्ट था। उसे अपनी छवि की कोई परवाह नहीं थी। वह लगभग एक बच्चे जैसा था।
वह कहता, "ठीक है, मुझ पर चीजें फेंको।" और वास्तव में, वह केवल एक ही बार ऐसा करता।
वह तब अधीर हो जाता था जब लोग उस पर चीजें नहीं फेंकते थे।
इरफान ने एआईबी टीम के साथ जो संबंध विकसित किए, उनके परिणामस्वरूप एक बड़ा लाभ हुआ।
यह प्रोजेक्ट—एक वेब सीरीज़—अमेज़न प्राइम के लिए एक राजनीतिक व्यंग्य पर आधारित था। शो
इसका नाम गोरमिंट था और इसे जनवरी 2019 में प्रीमियर किया जाना था। दुर्भाग्यवश, इरफ़ान को कैंसर होने के कारण शो से बाहर होना पड़ा। 2018 के अधिकांश समय लंदन में उपचार। नवंबर 2018 में अमेज़न
शो रनर गुरसिमरन खंबा को प्रोजेक्ट से हटा दिया गया क्योंकि उन्होंने
#MeToo अभियान के दौरान यौन दुर्व्यवहार के आरोप लगे हैं। शो इसका प्रसारण अभी बाकी है।

इरफ़ान और तन्मय के बीच विकसित हुए संबंध के कारण एक
बहुमूल्य मित्रता। 'दरअसल, आज तक, अगर कोई मीम या बहुत मजेदार चुटकुला होता है,
मुझे पता है कि उसे यह पसंद आएगा, फिर भी मैं इसे उसके साथ साझा करता हूँ। मैं उसे कभी-कभी मैसेज भी कर देता हूँ।
हर दो महीने में कहें और कहें, "हाय सर, बहुत याद आ रही है। (मुझे आपकी याद आती है)
(बहुत कुछ)। आप कैसे हैं?)' पिछली बार जब वे मिले थे, तब एआईबी एक शो कर रहा था।
लंदन में इरफान का इलाज चल रहा था। इरफान उनके शो में शामिल हुए और फिर समूह रात के खाने के लिए बाहर चला गया।
इरफ़ान के एआईबी वीडियो में नज़र आने के कुछ साल बाद, उस बचकाने व्यक्ति ने
उनके अंदर जो गुण दिखने लगे थे, वे दो रोमांटिक कॉमेडी फिल्मों में देखने को मिलेंगे।
— हिंदी मीडियम और करीब करीब सिंगल (दोनों फिल्में 2017 में रिलीज हुईं)।

कॉमेडी की ओर बढ़ें

पिक्कू में इरफान द्वारा निभाए गए राणा के किरदार ने उन्हें कई प्रशंसक दिलाए, जिनमें शामिल हैं:
निर्देशक/लेखक साकेत चौधरी और सह-लेखिका ज़ीनत लखानी, जो थे
जिस समय पिक्कू रिलीज़ हुई, उसी समय हिंदी मीडियम (2017) की स्क्रिप्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा था।

हालांकि इरफान के अलावा उनके मन में अन्य अभिनेता भी रहे होंगे, लेकिन एक बार
पिकू के खुलने के बाद, हिंदी माध्यम के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल गया। पति-पत्नी
टीम ने इरफान को पटकथा सुनाई और परियोजना में उनकी रुचि को देखते हुए, उन्होंने
उन्होंने किसी अन्य अभिनेता से संपर्क नहीं किया।
शूटिंग की शुरुआत से ही साकेत को इरफान के बारे में जो बात सबसे ज्यादा प्रभावित करती थी, वह यह थी कि वह कभी भी फिल्म निर्माण टीम को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करते थे, कभी भी
ऐसा आभास होता था कि वह कड़ी मेहनत कर रहा है। 'उसकी नौकरी की ज़िम्मेदारी यह थी कि वह...'
वह कहते हैं, 'प्रदर्शन तो करें लेकिन उपकरणों का खुलासा न करें। कई बार अभिनेता ऐसा करना चाहते हैं।'
वे अपने प्रदर्शन के बजाय अपनी तैयारियों से आपको प्रभावित करेंगे। लेकिन इरफान को किरदार में ढलने में शूटिंग के दौरान कुछ दिन लग गए। राज बत्रा, एक मुखर पंजाबी व्यक्ति, जो साड़ी की दुकान, बत्रा फैशन स्टूडियो के मालिक हैं,
और पुरानी दिल्ली में रहने वाला एक व्यक्ति, जो अपनी बेटी का अस्पताल में इलाज करवाना चाहता है।
अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में दाखिला लेना। इसका काफी हद तक कारण दबाव है।
उनकी पत्नी मीता (पाकिस्तानी अभिनेत्री सबा कमर) जो सामाजिक स्तर में 'ऊपर उठना' चाहती हैं
दिल्ली के उच्च समाज में। लेकिन पहले इरफान को राज बनना था और फिल्म में प्रवेश करना था।
हास्यपूर्ण लय।

ज़ीनत लखानी ने कहा, 'शूटिंग के शुरुआती कुछ दिनों में वह बहुत उदास थे।'
वह कहते हैं, “जब हम किसी दृश्य के बारे में बात करते थे, तो वह कहते थे, ‘मुझे सुर नहीं’।”
मुझे किरदार की लय समझ नहीं आ रही है।’ ज़ीनत को यह एहसास हुआ।
वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि अपने किरदार को कैसे पेश किया जाए, क्योंकि राज ऐसा कर सकता था।
आसानी से अतिरंजित हो सकते थे, और यह इरफान की अभिनय शैली नहीं थी। इसलिए ज़ीनत को इरफ़ान से यह पूछने की आदत पड़ गई, ‘क्या सुर मिल गया (क्या आपको मिल गया)’
आपके चरित्र की लय)?
ज़ीनत आगे कहती हैं, 'वह एक बेहद सहज और सूक्ष्म अभिनेता हैं।' 'वह कोशिश कर रहे थे कि...'
यह पता लगाएं कि हास्य कहाँ काम करेगा, और साथ ही वह
विश्वसनीय।'
अभिनेता आखिरकार फिल्म के माहौल में ढल गया, लेकिन कम से कम कुछ कमियां तो थीं ही।
निर्देशक साकेत को दो बार इरफान को उनकी अपेक्षाओं से परे कुछ करने के लिए मनाना पड़ा।
आरामदायक क्षेत्र। दोनों दृश्य फिल्म की शुरुआत में दिखाई देते हैं।
पहले दृश्य में इरफान लाल घाघरा पहने और सिर पर दुपट्टा डाले सामान बेचने के लिए निकलते हैं।
एक युवा होने वाली दुल्हन (जिसे मल्लिका दुआ ने अपने हमेशा के हास्यपूर्ण अंदाज में निभाया है) के लिए
उसकी दुकान। यह एक हास्यास्पद क्षण है जहां इरफान का राज, कई पुरुषों की तरह,

जो लोग साड़ियां और अन्य परिधान बेचते हैं, वे अपनी महिला ग्राहकों को प्रभावित करने के लिए खुद भी उन परिधानों को पहनते हैं।
ग्राहकों। अपने चेहरे पर एक शरारती मुस्कान लिए, इरफान ने अपना चेहरा लाल रंग से ढक लिया।
शर्मीली दुल्हन का लुक देने के लिए दुपट्टा।
लेकिन इरफान से वह दृश्य करवाना एक चुनौती थी। 'यह बहुत मुश्किल था। साकेत कहते हैं, 'उन्हें मनाना मुश्किल था। और वह बार-बार पूछते रहे, "आप ऐसा क्यों करते हैं?"
क्या आपको इसकी ज़रूरत है?’ इरफ़ान का मानना था कि उनसे महिला के कपड़े पहनने और...
उस स्थिति में हास्य ढूंढें। 'हमारे लिए यह एक अच्छा विक्रेता होने के बारे में था,'
साकेत आगे कहते हैं, ‘और आप बिक्री करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।’ वे आगे कहते हैं कि अंततः
ज़ीनत को उसे मनाना पड़ा। 'वह संशय में था, लेकिन जब उसने ऐसा करना शुरू किया तो...'
उसे सच में इसमें मजा आने लगा।
एक अन्य दृश्य में, राज और मीता अब एक बड़े घर में रहने लगे हैं। दिल्ली के पॉश इलाके में वे अपनी जवान बेटी की सहेलियों के लिए पार्टी देते हैं।
और उनके माता-पिता। राज पहले ही खुद को मूर्ख साबित कर चुका है जब उसने एक सवाल पूछा था।
वेटर कैवियार के बजाय पिज्जा और बर्गर परोसने लगा। अचानक डीजे बजने लगा।
play Sukhbir’s song ‘Oh ho ho ho’ and Raj breaks into a typical Punjabi
वह अपनी बेटी के साथ शादी की शैली में नृत्य कर रहा है, जबकि मीता और अन्य मेहमान खड़े हैं।

वह इधर-उधर घूम रहा था और काफी असहज दिख रहा था।
इस दृश्य में इरफान को नृत्य करना था, और एक बार फिर एनएसडी से प्रशिक्षित अभिनेता ने नृत्य किया।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या करने को कहा जा रहा है। 'वह यह करना नहीं चाहता था,' साकेत ने कहा।
वह कहता है, 'दिल्ली में, वह गाना हर पार्टी में बजता है। कोई भी स्वाभिमानी पंजाबी इसे सुनेगा।'
वो गाना बजाओ। इसलिए हमें उसे यकीन दिलाना पड़ा कि उसका किरदार पंजाबी है।
और आखिर में वो नाचने लगेगा।’ बेशक, एक बार इरफान ने नाचना शुरू किया तो उसने ऐसा किया...
अच्छा हुआ कि ऐसा लग रहा था मानो वह हमेशा से ही नाचता रहा हो— स्क्रीन पर भी और स्क्रीन के बाहर भी।
हिंदी मीडियम में कलाकारों की एक शानदार टोली है और इसमें इरफान खान के कुछ बेहतरीन दृश्य शामिल हैं।
फिल्म के सहायक कलाकारों के साथ हैं। एक दृश्य में, बेहद गुस्से में राज जबरदस्ती घुस आता है।
एक सलाहकार (टिलोत्तमा शोम) के कार्यालय में, जिसे यह काम सौंपा गया था।
उनकी बेटी का दाखिला एक अच्छे स्कूल में हुआ। इरफान और तिलोत्तमा पहले से ही एक-दूसरे से मिल चुके थे।
उन्होंने किस्सा: द टेल ऑफ ए लोनली घोस्ट (2013) में अभिनय किया, और यह स्पष्ट है कि
कलाकार एक-दूसरे के साथ सहज हैं, खासकर जब दृश्य में एक
काफी टकराव हुआ। वे ऑफिस बिल्डिंग की लॉबी में बात कर रहे थे।
और बातचीत कुछ इस तरह होती है:
Consultant: Aap araam sey baat nahi kar sakte (Can’t you talk softly)?

Raj: Aji, araam se kaise baat kar lenge? Hamari raaton ki neend haram
हुई पड़ी है (आप हमसे धीरे बोलने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? हम तो धीरे-धीरे बात कर रहे हैं)
निंद्राहीन रातें)।
राज इसलिए चिढ़ गया है क्योंकि उसकी साड़ी की दुकान में काम करने वाली कर्मचारी के बेटे ने
एक अच्छे स्कूल में दाखिला मिल गया। कुछ सेकंड बाद तिलोत्तमा कहती है...
व्यंग्यात्मक लहजे में, 'कृपया अपनी आवाज़ धीमी रखें।' जब वह समझाती है कि
कर्मचारी के बच्चे का स्कूल में दाखिला किसी कारणवश हुआ होगा। वंचितों के लिए आरक्षण प्रणाली को लेकर, हैरान राज चिल्लाता है, 'हमारा'
कोई हक नहीं है (क्या हमें कोई अधिकार नहीं है)?’ ‘धीमी आवाज़ में बात करें...धीमी आवाज़ में, श्रीमान।’
बत्रा,’ तिलोत्तमा लगभग फुसफुसाते हुए कहती है, लेकिन अपनी आवाज़ को नियंत्रित रखते हुए।
उसके लहजे में व्यंग्य था।
तिलोत्तमा शोम कहती हैं, 'यह दृश्य काफी हद तक तात्कालिक था। साकेत ने मुझे अनुमति दी।'
और इरफ़ान ने हर इम्प्रोवाइज़ेशन पर इतनी खुशी और उत्साह के साथ प्रतिक्रिया दी।
'खेलने की इच्छा,' वह आगे कहती हैं। यह साफ पता चलता है कि दोनों कलाकार सचमुच आनंद ले रहे हैं।
दोनों एक साथ इस दृश्य में अभिनय कर रहे हैं। और यह इरफान की उदारता है कि वह तिलोत्तमा से दृश्य छीनने की कोशिश नहीं करते, बल्कि उन्हें चमकने देते हैं।

बाद में, जब बत्रा परिवार कम आय वाले आवासों की कॉलोनी में रहने के लिए चले जाते हैं, तो वे अपना गुजारा चलाने लगते हैं।
गरीब होने का दिखावा करते हुए, इरफान के किरदार राज ने एक मजेदार दृश्य में उनका साथ दिया।
अपने पड़ोसी श्याम प्रकाश (दीपक डोबरियाल) के साथ। श्याम एक को मार देता है
उसके कमरे की दीवार पर एक मच्छर बैठा था, जिसके बारे में उसका दावा है कि वह डेंगू फैला रहा था।
वायरस, और फिर धीमी भिनभिनाहट की आवाज़ करने लगता है। मादा इसी तरह व्यवहार करती है।
राज और उनकी पत्नी का कहना है कि मच्छर अपने नर साथियों को आकर्षित करते हैं।
चारपाई के कोने में दुबक जाओ। इरफ़ान खासकर तब बहुत मज़ेदार लगते हैं जब वह पहली बार
जब दीपक उसे मरा हुआ मच्छर दिखाता है तो वह चौंक जाता है, और फिर जब वह चिल्लाता है,
‘Arre par idhar kyon bula rahe ho, bhai (Why are you calling the mosquito
यहाँ)?'
कथानक में इस दृश्य का कोई खास महत्व नहीं है, लेकिन सभी कलाकार सबा कमर और दो छोटे बच्चे भी इसमें शामिल होकर खेलते हैं, जो एक सचमुच हास्यप्रद क्षण। 'हमने दृश्य का अधिकांश भाग नहीं लिखा था, सिवाय एक के।'
साकेत कहते हैं, 'डेंगू का जिक्र होते ही,' और आगे बताते हैं कि सभी कलाकारों ने अपने अभिनय में सुधार किया।
संवाद और अभिनय। 'यह कोई बड़ा क्षण नहीं था। लेकिन दीपक
इसे पूरी तरह से बनाया और इसे एक पूरा मजाक बना दिया।

हिंदी मीडियम एक बहुत बड़ी सफलता थी, जिसने 340 करोड़ से अधिक की कमाई की। यह फिल्म बन गई
इरफ़ान की अब तक की सबसे बड़ी हिट फिल्म, जिसने उन्हें बॉक्स ऑफिस पर एक विशेष मुकाम पर पहुँचा दिया।
यह क्लब अब तक तीन खानों और कुछ अन्य अभिनेताओं के लिए ही आरक्षित था।
जयपुर का एक युवक जो दिल्ली के एनएसडी में इस सपने के साथ आया था कि... फिल्म स्टार बनने का उनका सपना आखिरकार 50 साल की उम्र में पूरा हुआ।
हालांकि, सबसे बड़ा आश्चर्य यह था कि फिल्म ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया।
चीन और जापान जैसे देश। साकेत कहते हैं, 'हमने इसकी उम्मीद नहीं की थी।'
हमें पता था कि हमारे पास एक अच्छी कहानी है। लेकिन हमने यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह इतनी असरदार होगी।
दूर और विस्तृत।'

एक नया रास्ता: निर्माता के रूप में इरफान

इसी दौरान इरफान खान ने फिल्मों का निर्माण शुरू किया था।
दरअसल उन्होंने दो परियोजनाओं को अपना समर्थन दिया, जो मूलतः इसका निर्माण उनकी पत्नी सुतापा सिकदर और उनकी एक सहेली ने किया था, जो उनकी स्टार बेस्टसेलर किताब से हैं।
दिन-शैलजा केजरीवाल. तनुजा चंद्रा (दुश्मन, 1998 और संघर्ष, 1999) द्वारा निर्देशित कॉमेडी, करीब करीब सिंगल, दो में से एक थी

प्रोजेक्ट्स। करीब करीब सिंगल कामना चंद्र की एक कहानी पर आधारित है।
तनुजा की मां और निर्देशक ने सबसे चर्चित अभिनेत्रियों में से एक के साथ मिलकर पटकथा लिखी।
हिंदी फिल्म उद्योग की प्रतिभाओं में ग़ज़ल धालीवाल (लिपस्टिक अंडर माई) शामिल हैं।
बुर्का, 2016)।
एक बार फिर, तनुजा और ग़ज़ल द्वारा लिखित पटकथा में इरफ़ान मुख्य पात्र थे।
तनुजा ने लिखा, 'वह शायद थोड़े अजीब थे, लेकिन इस भूमिका के लिए एकदम सही विकल्प थे।'
स्क्रिप्ट इरफान और सुतापा के घर पहुंच गई, लेकिन अभिनेता काफी व्यस्त थे।
और उनके पास भेजी जा रही सारी सामग्री को पढ़ने के लिए ज्यादा समय नहीं था। इसलिए
सुतापा ने पटकथा पढ़ी और शैलजा को भेज दी, जिससे पता चलता है कि वह इसमें रुचि रखती थी।
परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए। जब शैलजा ने पटकथा पढ़ी, तो उसे यह पसंद आई।
‘हल्का-फुल्का मनोरंजन’। लेकिन इरफ़ान जब नई सामग्री की तलाश कर रहे थे जो
बस उसे चुनौती दें, और उसे एक के रूप में अपनी छवि को फिर से परिभाषित करने का अवसर दें।
गंभीर अभिनेता, जब शैलजा और सुतापा ने करीब करीब की पटकथा पेश की। सिंगल के लिए, वह शुरू में अनिच्छुक था। 'यह उसके लिए थोड़ा अटपटा है,' शैलजा कहती हैं, अंततः वह सनकी रोमांटिक मुख्य किरदार योगी की भूमिका निभाने के लिए सहमत हो गए।

एक महत्वाकांक्षी कवि। और उसने इस परियोजना को हरी झंडी दे दी क्योंकि सुतापा और शैलजा ने फैसला किया था कि...
इसका उत्पादन करो।
यह तनुजा द्वारा निर्देशित पहली रोमांटिक कॉमेडी फिल्म थी, और स्वाभाविक रूप से, उन्होंने इसे देखा।
इरफ़ान के अंदर छिपे रोमांटिक अभिनेता। 'इरफ़ान एक बेहतरीन कलाकार हैं, हम सभी
तनुजा कहती हैं, 'यह तो सबको पता है। हालांकि, मुझे यह भी लगा कि वह बेहद मजाकिया हैं और निश्चित रूप से।' 'हालांकि, मुझे यह भी लगा कि वह बहुत ही मजाकिया हैं।'
इसमें रोमांटिक हीरो बनने की क्षमता है; वास्तव में, यह अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक जटिल है।
रोमांटिक मुख्य किरदार, क्योंकि वह पूरी तरह से विश्वसनीय और वास्तविक होगा। इसके अलावा, दोहे
किसी महत्वाकांक्षी शायर द्वारा लिखी गई कविता भी इरफान की जुबान से इतनी सहजता से निकल जाती थी!
करीब करीब सिंगल एक आदमी, योगेन्द्र 'योगी' कुमार की कहानी है देवेन्द्र नाथ प्रजापति (इरफान खान), और जया शशिधरन (पार्वती), ए
एक युवा विधवा। दोनों की मुलाकात एक ऑनलाइन डेटिंग साइट के माध्यम से होती है। शुरुआत में कोई आपसी संबंध नहीं होता।
आकर्षण। दरअसल, जया योगी के बात करने के भद्दे तरीके से काफी चिढ़ जाती है। लेकिन
अंततः, परिस्थितियों के चलते, दोनों एक साथ यात्रा पर निकल पड़े, योगी की तीन पूर्व प्रेमिकाओं से मिलें, जहाँ उनके बीच भावनात्मक जुड़ाव का एक बड़ा हिस्सा देखने को मिलेगा।
उनकी परीक्षा होगी। इस यात्रा के दौरान उनमें एक-दूसरे के लिए स्नेह जागृत होगा।

जया का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री के चयन में काफी सोच-विचार किया गया। अंततः
टीम ने मलयालम अभिनेत्री पार्वती को चुना, जो उस समय 29 वर्ष की थीं। करीब करीब सिंगल की रिलीज के अवसर पर, पार्वती एक सफल अभिनेत्री हैं। उन्होंने मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में काम किया था, लेकिन यह उनकी पहली हिंदी फिल्म भूमिका थी।
शैलजा कहती हैं, 'हम सभी रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। हम वैवाहिक बंधन नहीं चाहते थे।'
हमें एक आदर्श अभिनेत्री चाहिए थी। जरूरी नहीं कि वह खूबसूरत, गोरी या लंबी हो। हमें बस एक ऐसी वास्तविक महिला चाहिए थी, जिसे हर कोई पसंद करे।
जिससे मैं जुड़ाव महसूस कर सकूँ, जिसे अपने बिखरे बालों से कोई आपत्ति नहीं थी, जिसने इसके लिए अनुरोध नहीं किया था
डिजाइनर कपड़े।'
और यह तथ्य कि इरफान और पार्वती के बीच उम्र का काफी अंतर था।
यह कोई मुद्दा नहीं था। 'हम वास्तव में इस बात पर ध्यान नहीं देते कि कौन किस उम्र का है, क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते।'
शैलजा आगे कहती हैं, 'वह अपनी उम्र को सच में छुपाना नहीं चाहता। आधुनिक शहरी रिश्तों में आप ऐसा नहीं करते।'
उन्हें उम्र संबंधी मुद्दों की परवाह है। और वे एक डेटिंग साइट के माध्यम से मिलते हैं। तो ऐसा था।
ठीक है।'
शूटिंग के दौरान इरफान और तनुजा के बीच एक अहम बात पर असहमति थी। योगी की भूमिका कैसे निभाई जानी चाहिए। इरफान, अपनी आदत के अनुसार, और अपने प्रारंभिक प्रशिक्षण को देखते हुए...
थिएटर में योगी के किरदार को कम करके दिखाना चाहते थे। आमतौर पर उन्हें अपने किरदारों को इस तरह से पेश करना पसंद नहीं होता।

तनुजा के अनुसार, अत्यधिक नाटकीय या अभिव्यंजक होना ठीक नहीं था।
लेकिन उन्हें लगा कि योगी,
अपने सहज और बेफिक्र व्यक्तित्व के बावजूद, वह अंदर से परेशान था। जिन लोगों ने गहन भावनाओं से भरा जीवन जिया है, उनमें एक प्रकार की चिंता होती है।
तनुजा कहती हैं, 'इसलिए योगी को उस तरह के आराम से बोलने की ज़रूरत नहीं थी।'
इरफान जिस गति से बोलना पसंद करते हैं, अगर योगी भी उसी गति से बोलते तो और भी मजेदार होता।
कभी-कभी घबराया हुआ, अपने व्यवहार में थोड़ा और जोशीला।’ उसे उम्मीद थी कि वह एक
अन्य फिल्मों की तुलना में थोड़ा अलग इरफ़ान। लेकिन अभिनेता बहुत ही खास थे।
अपने चरित्र में यथार्थवाद लाने के बारे में। असहमति के कारण निर्देशक और अभिनेता के बीच का विवाद कभी पूरी तरह से सुलझ नहीं पाया। 'कभी-कभी वह सहमत हो जाते थे, और
तनुजा आगे कहती हैं, 'अक्सर नहीं।'
करीब करीब सिंगल में कुछ मजेदार पल हैं, लेकिन वो इतने मजेदार नहीं कि आप जोर से हंस पड़ें।
कॉमेडी की एक अलग शैली। इस लिहाज से, फिल्म का लहजा पिक्कू से मिलता- जुलता है और उससे कम मिलता-जुलता है।
हिंदी मीडियम, जिसमें कुछ बेहद मजेदार पल थे। लेकिन यहाँ
इरफ़ान ने अपने व्यक्तित्व का एक ऐसा पहलू भी दिखाया जो हमने उनकी किसी भी फिल्म में शायद ही कभी देखा हो।
फिल्मों में एक टूटे दिल वाले आदमी की कहानी दिखाई गई है।
फिल्म के अंत में, योगी और जया सिक्किम में हैं, और वह जाती है अपने एक प्रशंसक से मिलने के लिए—जो कई साल पहले का दोस्त था।
इरफ़ान शुरू करता है...

उस पर नज़र रखते हुए, उसके उदास चेहरे पर बेबसी और थोड़ी सी ईर्ष्या के भाव झलक रहे थे।
as Atif Aslam sings in his melodious voice, ‘Woh jo tha khwaab saa, kya
kahein jaane dein’ (उस सपने के बारे में क्या कहूँ, सिवाय इसके कि उसे जाने दो)…’
आमतौर पर बेहद उत्साही योगी को इस तरह देखना वाकई दुखद है—जिस हद तक वे हो सकते हैं
परेशान करने वाला—अचानक एक ऐसे व्यक्ति की तरह दिखना जो प्यार में डूबा हो और गहरे दर्द से गुजर रहा हो। इरफान
जब मकबूल को पता चलता है कि निम्मी (तबू)
अब्बाजी (पंकज कपूर) के साथ सो रही है। वह बेहद निराश दिख रही है। जब उनके बेटे गोगोल (कल पेन) को उपहार में मिली कोई चीज देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती, तो उनका नाम भी उसी के नाम पर रखा जाता है। निकोलाई गोगोल की कृति 'द ओवरकोट' की नकल। लेकिन 'करीब करीब सिंगल' में योगी को ठुकराया हुआ देखना बेहद दुखद है। बेशक, हम एक ऐसी फिल्म देख रहे हैं जो...
कुल मिलाकर यह एक खुशनुमा हिंदी फिल्म है, इसलिए अंतिम परिणाम अलग होगा।
तनुजा ने फिल्म के अंतिम दृश्यों की शूटिंग सिक्किम में करने का फैसला किया था, आंशिक रूप से
राज्य और उसके पहाड़ों की यात्रा से जुड़ी अपनी बचपन की यादों को फिर से ताजा करने के लिए।
इरफ़ान ने उसे रोकने की कोशिश की। वह गंगटोक की लंबी यात्रा से बचना चाहता था।
पहले हवाई जहाज से, फिर पहाड़ों पर लंबी ड्राइव करके। हालाँकि, जिस क्षण वह

तनुजा कहती हैं, 'जब उन्होंने शानदार तीस्ता नदी देखी, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे वे किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गए हों।' उन्होंने कहा कि... यह उनके जीवन में देखी गई सबसे खूबसूरत और मनमोहक नदियों में से एक थी, और
उनका मिजाज तुरंत बदल गया। उसके बाद, उन्हें गंगटोक और वहां के लोग बहुत पसंद आने लगे।
इरफ़ान शहर में प्रशंसकों के शांतिपूर्ण रवैये को देखकर आश्चर्यचकित रह गए, जो कि अन्य परिस्थितियों के विपरीत था।
भारत के अन्य हिस्सों में जिन उपद्रवी भीड़ का सामना उन्होंने किया था, उनसे अलग। 'वे खड़े थे
लगभग चुपचाप, आगे न बढ़ते हुए, अनुशासित ढंग से खड़े होकर, बस
तनुजा आगे कहती हैं, 'उन पर मुस्कुराते हुए।' सिक्किम उनकी पहली यात्रा के लिए एक सुखद अनुभव साबित हुआ।
इरफान के लिए यह एक शानदार अनुभव रहा।

इरफ़ान द्वारा समर्थित अन्य परियोजना में सुतापा और शैलजा केजरीवाल भी शामिल थीं।
निर्माताओं में निशिकांत द्वारा निर्देशित क्राइम थ्रिलर फिल्म मदारी (2016) भी शामिल थी।
Kamat (Mumbai Meri Jaan, 2008 and Drishyam, 2015). In Madaari, Irrfan
यह फिल्म निर्मल कुमार नाम के एक आम आदमी का किरदार निभाती है, जो एक राजनेता के बेटे का अपहरण कर लेता है।
सरकार के भ्रष्टाचार पर ध्यान केंद्रित करना जिसके परिणामस्वरूप उनके परिवार को नुकसान हुआ है

मौत।
निर्देशक नीरज पांडे की फिल्म 'ए वेडनेसडे' की तरह ही यह फिल्म भी उसी राह पर चल रही है।
(2008) में प्रकाशित फिल्म 'मदारी' शैलजा केजरीवाल द्वारा लिखित एक कहानी पर आधारित थी।
यह कहानी कुछ हद तक भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन से प्रेरित थी।
अन्ना हजारे और अरविंद केजरीवाल द्वारा। शैलजा ने यह कहानी इरफान के साथ साझा की।
उन्होंने फिल्म में अभिनय करने और फिल्म को अपना नाम देने पर सहमति जताई ताकि इससे दर्शकों को आकर्षित करने में मदद मिल सके।
आर्थिक स्थिति। कई सालों से, अभिनेता शैलजा को कुछ नए और
उसके लिए अलग सामग्री थी, इसलिए उसका उससे संपर्क करना स्वाभाविक था। 'हमारे पास था
उन्होंने कहा, 'इरफान ने कभी कोई पूर्ण-लंबी फीचर फिल्म नहीं बनाई।' 'इरफान का यह कदम वाकई बहुत अच्छा था।'
हमारा पूरी तरह से समर्थन करें।
मदारी में इरफान का अभिनय दमदार था—एक परेशान आदमी का किरदार निभाने वाले व्यक्ति का अभिनय।
उसने एक आपराधिक कृत्य किया और जिस बच्चे के प्रति वह कोमलता दिखाता है,
अपहरण कर लिया गया है। फिल्म एक सुखद लेकिन अनुमानित अंदाज में समाप्त होती है, जिसमें बच्चा अपने अपहरणकर्ता को गले लगाने के लिए दौड़ता है, जिससे उसके राजनेता को काफी निराशा होती है।
पिता। लेकिन एक फिल्म के तौर पर, मदारी उलझी हुई थी, और यह फिल्म के इतिहास में कोई खास उपलब्धि नहीं थी।
इस फिल्म ने अभिनेता के करियर को प्रभावित किया। साथ ही, यह बॉक्स ऑफिस पर भी फ्लॉप रही।

एक सनसनीखेज हत्या की खबर

इरफ़ान खान के लंबे और उल्लेखनीय करियर की एक और महत्वपूर्ण फिल्म है।
अब तक, जो इस लेख में चर्चा की गई फिल्मों के लगभग उसी समय रिलीज़ हुई थी।
अध्याय। निर्देशक मेघना गुलजार ने एक कसी हुई और दिलचस्प पटकथा पर काम किया है।
विशाल भारद्वाज द्वारा लिखित, इस पुस्तक में नोएडा में हुए दोहरे हत्याकांड के 13 लोगों की फिर से जांच की गई है।
25 वर्षीय लड़की आरुषि तलवार और 45 वर्षीय पुरुष हेमराज बंजाडे, जो उनके साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रहते हैं।
उसके परिवार द्वारा नियुक्त घरेलू सहायिका। फिल्म तलवार (2015), द्वारा निर्मित।
विशाल और जंगली पिक्चर्स की यह फिल्म इरफान की आखिरी शानदार परफॉर्मेंस होगी।
उनकी बीमारी के बारे में, जो उनके बीमार पड़ने से तीन साल पहले ही जारी की गई थी।
इस फिल्म में कोंकणा सेन शर्मा और नीरज काबी ने भी अभिनय किया था। मृत किशोरी के माता-पिता, नूतन और रमेश टंडन। परिवार का नाम तलवार से बदलकर टंडन कर दिया गया, साथ ही साथ लोगों के पहले नाम भी बदल दिए गए।
किरदार। लेकिन फिल्म मुख्य रूप से उस मामले पर केंद्रित है जिसने भारत को झकझोर दिया, या यूं कहें कि एक

फिल्म की शुरुआत में किरदार कहता है, 'गरीब मध्यमवर्गीय समाज...'
se hil gayee hai. Ek baap apni beti ka murder kaise kar sakta hai (The entire
मध्यमवर्गीय समाज अपनी जड़ों से हिल गया है। एक पिता अपने ही बेटे की हत्या कैसे कर सकता है?
बेटी)?’ और इससे संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों को दर्शाते हुए
हत्याओं के संदर्भ में, विशाल भारद्वाज की पटकथा और मेघना गुलजार की फिल्म एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करती है।
सफलता का एक दुर्लभ तत्व। फिल्म निर्माता किसी का पक्ष नहीं लेते और न ही किसी को कोई राय देते हैं।
‘आरुशी और हेमराज की हत्या किसने की?’ इस सवाल का कोई अंतिम जवाब नहीं मिल पाया है।
तलवार दर्शकों को विचलित, अनिश्चित और व्याकुल छोड़ देती है। और यही कारण है कि यह
यह एक बेहतरीन फिल्म है—समझदारी भरी, तीक्ष्ण बुद्धि वाली और आम फिल्मों से कहीं अधिक सशक्त।
मुख्यधारा की हिंदी भाषा की थ्रिलर फिल्में।
यह इरफान और अश्विन द्वारा निभाई जाने वाली सबसे जटिल भूमिकाओं में से एक होगी।
दोहरे हत्याकांड की जांच कर रहे जांच अधिकारी कुमार नाराज हो गए। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के अनियमित व्यवहार और मांगों पर, और उनकी गड़बड़ियों पर
मामले से जुड़े सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने वाले कनिष्ठ पुलिसकर्मियों और परेशानी पैदा करने वाले
उनकी निजी जिंदगी, खासकर उनकी शादी (जिसमें खूबसूरत तब्बू ने अतिथि भूमिका में उनकी पत्नी का किरदार निभाया है) खत्म हो रही है। स्लमडॉग मिलियनेयर में अपने किरदार की तरह, वह

वह पुलिस हिरासत में संदिग्धों को पीटता और यातना देता है, लेकिन यहाँ उसे भी प्रताड़ित किया जाता है।
और दुविधा में। केवल विशाल भारद्वाज, जो इरफान को अच्छी तरह जानते थे, ही ऐसा कर सकते थे।
उन्होंने इतने सटीक ढंग से लिखा गया, सूक्ष्म चरित्र बनाया, और फिल्म देखने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि
यह स्पष्ट है कि अभिनेता को इस भूमिका को निभाने की चुनौती बहुत पसंद आई।
मेघना का इरफान से पहला संपर्क तब हुआ जब उन्होंने एक फिल्म में अभिनय किया था।
उनके पिता गुलजार द्वारा निर्देशित टीवी शो 'किरदार' के एपिसोड। और फिर
उन्हें विशाल भारद्वाज की फिल्म की शूटिंग के दौरान इरफान को देखने की बात भी याद है।
हैदर। तलवार की लेखन प्रक्रिया के माध्यम से विशाल और मेघना को मुझे पूरा यकीन था कि इरफ़ान ही हिंदी फिल्म उद्योग के एकमात्र ऐसे अभिनेता थे जो ऐसा कर सकते थे।
अश्विन कुमार की भूमिका निभाने के लिए, शोध करते समय इरफान हमेशा उनके दिमाग में थे।
चरित्र को परिभाषित करते हुए, हमने उसे छोटी-छोटी आदतें, बारीकियां और उसके व्यक्तिगत जीवन पथ के बारे में बताया।
‘जब भी हम अश्विन कुमार के किरदार के इर्द-गिर्द घूमते थे, तो बस यही होता था।
मेघना कहती हैं, 'हम जानते थे कि हम इरफान सर का जिक्र कर रहे हैं।' विशाल द्वारा इरफान को तलवार की पटकथा भेजने के बाद, मेघना उनसे मिलने गई।
और उसी क्षण से, अभिनेत्री ने निर्देशक से अपने बारे में सवाल करना शुरू कर दिया।

दोहरे हत्याकांड, संभावित हत्यारे/हत्यारों और उनके बारे में दृष्टिकोण और राय
अपराध का मकसद। जैसा कि मेघना कहती हैं, इरफान के अश्विन कुमार के पास एक
अपराध के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण। दर्शकों के मन में कोई संदेह नहीं था कि क्या हुआ था।
वह कहती हैं, 'इस जांचकर्ता को वास्तव में विश्वास था। लेकिन कैमरे के पीछे इरफान की स्थिति अलग थी।' '
वह लगातार अपने किरदार की प्रेरणाओं पर सवाल उठाता रहता था। उसे ऐसा करने की ज़रूरत थी।
उन्हें पूरा यकीन था कि फिल्म में एक किरदार के रूप में वह जिस राह पर चल रहे थे, उसकी अपनी सीमाएँ थीं।
मेघना कहती हैं, 'गुण-दोष। क्योंकि यह एक पेचीदा विषय है। लेकिन मैं यह भी चाहूंगी कि...'
मुझे विश्वास था कि वह मेरे ज्ञान की परीक्षा ले रहा था।
मेघना का मानना है कि एक बार जब इरफान ने अश्विन कुमार को पूरी तरह से समझ लिया, तो
उन्होंने चरित्र को निखारा, उसे अपना बनाया, उसमें आयाम और बारीकियां जोड़ीं।
जो विशाल और मेघना द्वारा अश्विन कुमार को देखने के तरीके से परे थे।
फिल्म की शुरुआत में जब अश्विन से हमारा परिचय कराया जाता है, तो हम उसे विचलित अवस्था में देखते हैं।
एक आदमी अपने पुराने मॉडल के नोकिया फोन पर वीडियो गेम खेल रहा था।
लेकिन इरफान ने उसे देखा।
जीवन के प्रति उसकी अरुचि अगले स्तर तक पहुँच जाती है। उदाहरण के लिए, जब वह जाँच करता है...
मृत लड़की के पिता, रमेश टंडन (नीरज काबी), जो स्पष्ट रूप से सदमे में हैं, वह जाने देते हैं

उनके कनिष्ठ, वेदांत चौधरी (सोहम शाह), प्रारंभिक दौर पूरा करते हैं।
पूछताछ के दौरान, अश्विन गवाह की मौजूदगी में भी अपना खेल जारी रखता है।
वीडियो गेम—यह बात रमेश को ज़रूर परेशान करती होगी। वह इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचता।
जब तक बिलकुल जरूरी न हो, रमेश की आंखों का इस्तेमाल न करें।
वह मेरे प्रति यह तिरस्कार, यह उपेक्षा विकसित करता है कि "मैं भी एक निर्मम व्यक्ति हूँ।"
मेघना कहती हैं, "एक जांचकर्ता आपसे बस यही सवाल पूछ रहा है।" इरफ़ान के अश्विन कुमार द्वारा प्रदर्शित हिंसा, जिस क्रोध के साथ वो लोगों को पीटता है, वाकई डरावना है। अश्विन के कई परिचित हैं। फिल्म के दौरान कई पुलिस अधिकारियों की पिटाई होती है, जिनमें इंस्पेक्टर भी शामिल है।
धनीराम का किरदार शानदार अभिनेता गजराज राव ने निभाया है। जब अश्विन नौकरी से निलंबित होने के बाद, वह अपने जूनियर वेदांत चौधरी पर हमला करता है, जिसे
उस पर जासूसी कर रहे थे और एक वरिष्ठ अधिकारी को रिपोर्ट कर रहे थे। और फिर दो लोग हैं।
वह गवाहों से पूछताछ करता है, पहले उन्हें अपनी बातों से प्रभावित करता है, फिर उन पर चिल्लाता है और फिर
अंत में उन्हें थप्पड़ भी मार दिया। दरअसल, एक की शूटिंग के दौरान जांच के दृश्य में, इरफान उस क्षण में इतना मग्न हो गया कि उसे एहसास ही नहीं हुआ।
उसने दूसरे अभिनेता को बहुत जोर से मारा था।
इरफ़ान लगातार माफ़ी मांगते रहे और पूछते रहे, “ज़ोर से तो नहीं लगी ना (मुझे उम्मीद है कि मैं
मेघना याद करती हैं, "क्या इससे आपको ज्यादा चोट नहीं लगी?" जबकि दूसरा अभिनेता लगातार कह रहा था,

“Sir aap chinta mat kariye. Aap aur maariye (Sir, do not worry. You can hit
मुझे और अधिक)।
कई बार अश्विन कुमार को किसी को पीटने या चिल्लाने की जरूरत नहीं पड़ती।
उस व्यक्ति को डरा दो। उसे बस उनसे तीखे व्यंग्यपूर्ण लहजे में बात करनी है।
जब उसे पता चलता है कि हत्यारे के हाथ के निशान कभी भी सुरक्षित नहीं किए गए थे
उन्होंने बताया कि नोएडा के निचले स्तर के पुलिस अधिकारियों ने न तो फोरेंसिक विशेषज्ञों को बुलाया और न ही कार्रवाई की।
to them as if they are five-year-old kids: ‘Koi baat nahi. Agli baar aisa koi
murder hota hai naa, koi haath chodta hai khoon ka bhara hua, to dhyan
रखना। हम्म? बहुत अच्छा (कोई बात नहीं। लेकिन अगर अगली बार इस तरह की हत्या हुई तो)
अगर ऐसा होता है और कोई खून से सने हाथ का निशान छोड़ जाता है, तो बस ध्यान रखना। ठीक है?’ उसके बगल में खड़ा वेदांत खुद को रोकने की पूरी कोशिश कर रहा है।
हँसना।
फिल्म में इरफान को एक छोटा सा नाजुक दृश्य निभाने का अवसर भी दिया गया है।
वह देर रात नशे में धुत और बुरी हालत में अपनी पूर्व पत्नी रीमा कुमार के घर पहुंचता है।
और वह कहता है कि वह अपने कार्यस्थल पर वापस नहीं जा सकता। तब्बू उसके बगल में खड़ी है और
वह धीरे-धीरे उसके बालों की मालिश करता है।

तलवार में इरफान के अभिनय की खूब तारीफ हुई। राहेल साल्ट्ज़ न्यूयॉर्क टाइम्स के एक पत्रकार ने लिखा, 'श्री खान इस फिल्म का सबसे बड़ा हथियार हैं।'
एक परिचित किरदार, दुनिया से ऊबे हुए जासूस की भूमिका निभाते हुए, वह एक
प्रदर्शन, छोटी-छोटी, चालाक बारीकियों से भरा हुआ, जो बिल्कुल भी परिचित नहीं लगता।
न्यूज़18.कॉम में राजीव मसंद ने इरफान के बारे में यह लिखा:

इस फिल्म को बांधे रखने वाला मुख्य तत्व निश्चित रूप से इरफान खान ही हैं।
साथ मिलकर। अभिनेता अपने किरदार को धीरे-धीरे गढ़ता है, एक
एक जटिल, सूक्ष्म प्रदर्शन जिसमें त्रुटि निकालना मुश्किल है। जूनियर पुलिसवालों द्वारा दोषारोपण का खेल खेलने पर व्यंग्यात्मक ढंग से, लगभग न देखते हुए
रमेश टंडन रो रहे थे तभी उन्होंने अपना फोन उठाया और गेम खेलने में मग्न हो गए।
अपनी गवाही के दौरान वह लगातार बेकाबू रहे, यह सर्वोच्च स्तर का अभिनय है।
आदेश.91

‘Chhota Sa Fasana’92

इरफ़ान की आखिरी तीन फिल्में 2018 में रिलीज़ हुईं। इनमें से एक अमेरिकी इंडी फिल्म पज़ल थी।

इस पर पहले चर्चा हो चुकी है। बाकी दो हल्की-फुल्की कॉमेडी फिल्में इस श्रेणी में आती हैं।
उन्होंने जिस नई शैली की फिल्मों पर काम करना शुरू किया था। लेकिन वे दो फिल्में,
ब्लैकमेल और कारवां जैसी फिल्में मामूली रूप से ही सफल रहीं।
अभिनय देव द्वारा निर्देशित फिल्म ब्लैकमेल (दिल्ली बेली, 2011) में इरफान खान की भूमिका है।
देव कौशल नाम का किरदार अपनी पत्नी रीना (कृति कुल्हारी) को बिस्तर पर किसी और के साथ पाता है।
देव का प्रेमी रंजीत अरोरा (अरुणोदय सिंह) है। देव एक अजीबोगरीब योजना लेकर आता है।
बदला लेने के विचार से, वह रंजीत को बेनकाब करने की धमकी देकर उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर देता है।
अपनी पत्नी डॉली (एक मज़ेदार दिव्या दत्ता) के लिए। कहानी खिंचती चली जाती है और
कहानी उलझी हुई है, चुटकुले फीके पड़ जाते हैं, और फिल्म की ऊर्जा धीरे-धीरे कम होने लगती है।
इरफ़ान की भूमिका उनके लिए पर्याप्त चुनौतीपूर्ण नहीं थी। वास्तव में, कई बार ऐसा लगा जैसे वह
वह यह भूमिका सिर्फ इसलिए निभा रहा था क्योंकि उसे निभानी ही थी। अप्रैल 2019 में रिलीज़ हुई, ब्लैकमेल
अंततः यह निराशाजनक साबित हुआ।
Karwaan, directed by Akarsh Khurana and written by Bijoy Nambiar, is
एक रोड मूवी। हालाँकि इसमें पिक्कू जैसी रोड मूवी का आकर्षण नहीं है।
इरफ़ान ने लिटिल मिस सनशाइन (एक बेहद हास्यप्रद फिल्म) में अभिनय किया है और उसमें उस फिल्म की झलक भी मिलती है।

2006 की अमेरिकी इंडी फिल्म, कारवां, देखने में बेहद खूबसूरत है।
इसका अधिकांश हिस्सा यहीं फिल्माया गया है।
केरल के धुंध भरे पहाड़ों में फिल्माया गया यह दृश्य बेहद प्रतिभाशाली फोटोग्राफर द्वारा शूट किया गया है।
छायाकार अविनाश अरुण हैं। यह फिल्म इरफान को उनके साथ अभिनय करने का मौका देती है।
दो युवा अभिनेता—मलयालम फिल्म के आकर्षक सितारे दुलकर सलमान सिनेमा जगत में पदार्पण कर रहे इस अभिनेता और अभिनेत्री मिथिला पालकर के साथ हिंदी फिल्म में अभिनय कर रहे हैं।
यह फिल्म अपने किरदारों को बैंगलोर से कोच्चि तक की सड़क यात्रा पर ले जाती है।
दुलकर के अविनाश राजपुरोहित को अपने पिता की संपत्ति लेने के लिए यात्रा करनी पड़ती है।
एक शव, जिसे गलती से दूसरे परिवार को भेज दिया गया है। अविनाश एक वाहन से यात्रा करता है।
उनके दोस्त शौकत (इरफान) द्वारा चलाई जा रही वैन में वे तान्या को बिठा लेते हैं। रास्ते में वे तान्या को भी साथ ले लेते हैं।
(मिथिला) जिसकी दादी का भी देहांत हो गया है। और तान्या की दादी का शव गलती से अविनाश के शव से बदल गया है।
पिता।
इरफ़ान के शौकत ने कुछ बेहद दिलचस्प संवाद बोले हैं, जिनमें से एक में वह
वह कहता है, 'रोती हुई औरत और दूधवाले पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए।' वह पागल है।
नियमों के अनुसार, उदाहरण के लिए, जो महिला अपने पैरों को नहीं ढकती वह यात्रा नहीं कर सकती।
अपनी वैन में। लेकिन शौकत चिड़चिड़ाने लगता है। दरअसल, उसका किरदार एक

वह थोड़ा नस्लवादी है क्योंकि वह नासमझ गोरे पर्यटकों को हिंदी में बेतुके भाषण देता है।
रास्ते में उसे जिन लोगों से सामना होता है। दर्शकों में से कुछ लोगों को यह बात समझ में आ गई होगी।
शौकत की बातों में हास्य का पुट तो है, लेकिन सच कहें तो उनके बयान हास्यास्पद नहीं हैं।
शौकत को दिए गए संवाद उसे उतना पसंद करने लायक नहीं बनाते।

इरफ़ान द्वारा यह घोषणा करने के बाद कि वह ब्लैकमेल, कारवां और पज़ल रिलीज़ हो गईं, ये फ़िल्में रिलीज़ हुईं...
वह न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर से पीड़ित थे। फिल्म प्रचार और अन्य सभी कामों में उनकी भागीदारी बाधित रही।
अभिनेता को लगभग 10 महीने तक काम मिलने के कारण परियोजनाओं को रोकना पड़ा।
लंदन में इलाज। इस बिंदु तक, इरफान ने अपने जीवन की योजना बना रखी थी, चाहे कुछ भी हो।
एनएसडी में शामिल होने से लेकर बॉम्बे जाने और अभिनय करने तक, सब कुछ उनके नियंत्रण में था।
वह नाखुश होने पर भी टेलीविजन शो देखते थे। उन्होंने कुछ फिल्मों में भी अभिनय किया।
क्योंकि उसे जीविका कमाने के लिए काम करना पड़ता था, लेकिन इसी दौरान फिल्म
भारत और हॉलीवुड के फिल्म उद्योग जगत ने उनकी प्रतिभा को पहचानना शुरू कर दिया था। एक समय ऐसा भी आया जब

उनकी मांग इतनी अधिक थी कि कभी-कभी उन्हें कठिन निर्णय लेने पड़ते थे।
बड़ी, अच्छी तनख्वाह वाली परियोजनाओं को छोड़कर किसी छोटी, लेकिन उतनी ही फायदेमंद परियोजना को चुनने के बारे में।
महत्वपूर्ण। फिर, व्यावहारिक रूप से अपने जीवन में पहली बार, एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई।
जहां वह अपने भाग्य को नियंत्रित नहीं कर सकता था, सिवाय लंदन जाने के।
चिकित्सा उपचार।

85. अंचिता परना, ‘इरफान खान: एक विलक्षण व्यक्तित्व की झलक’, एनएपीएस, बीआईटी मेसरा, 5 फरवरी
2019, https://bitmesra.ac.in/naps/irrfankhan/
86 ‘फिल्म “पिकू” में अमिताभ बच्चन दीपिका पादुकोण के पिता की भूमिका निभाते हैं’, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 7 मई
2015, https://www.nytimes.com/2015/05/08/movies/review-in-piku-amitabh-bachchan-plays-a-dad-to-
deepika-padukone.html
87‘पिकू रिव्यू: अमिताभ बच्चन कब्ज पर आधारित कॉमेडी में खुलकर अपनी भड़ास निकालते हैं’, माइक मैकहिल, द
गार्जियन, 18 मई 2015,
https://www.theguardian.com/film/2015/may/18/piku-review-amitabh-बच्चन ने कब्ज पर आधारित कॉमेडी में सब कुछ कह दिया
88'पीकू 2015 की सबसे बेहतरीन हिंदी फिल्म हो सकती है', rediff.com, 8 मई 2015,
https://www.rediff.com/movies/report/review-piku-may-be-the-finest-hindi-film-of-
2015/20150508.htm

89‘□□□□□: □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□’, □□ □□□□□□ □□□□□, 2 □□□□□ 2015, https://www.youtube.com/watch?v=r3nhttUMhrI&t=55s

90 □□□□□ □□□□□□□□, ‘□□□□□□ □□□ □□□□□□ “□□□□□” □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□’, □ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□, 4 □□□□□□□ 2015, https://www.nytimes.com/2015/10/05/movies/review-talvar-with-irrfan-khan-depicts-a-double-murders-muddied-waters.html

91 □□□□□ □□□□□, '□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□', news18.com, 3 □□□□□□□ 2015, https://www.news18.com/news/movies/talvar-review-film-exposes-flawed-legal-system-judgmental-society-and-impatient-media-1131236.html

□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ 92A, □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ '□□ □□□□ □□ □□□□□□'□

सुनाने के लिए कहानियों का सागर

एक उपसंहार

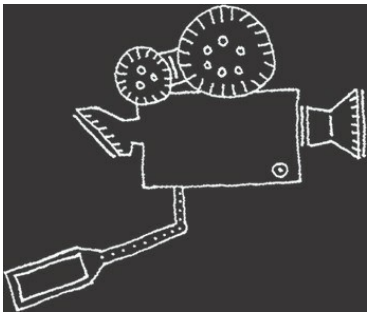

मानो मैं जीवन का पहली बार स्वाद चख रहा था, जीवन के जादुई पहलू का। इसे. 93

फिल्म सितारे दूर रहने वाले दोस्तों की तरह होते हैं, फिर भी हमें लगता है कि हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। हम उनसे संपर्क में रहना पसंद करते हैं—कम से कम फिल्म सितारों के मामले में सोशल मीडिया के माध्यम से—लेकिन अगर हमें उनसे कोई खबर नहीं मिलती है तो...
उनसे नियमित रूप से मिलने वाली जानकारी के आधार पर, हम यही मान लेते हैं कि सब ठीक है।
वर्ष 2016, 2017 से लेकर 2018 के शुरुआती दिनों तक, मुझे इस बात की जानकारी थी कि
इरफ़ान खान का काम। मैंने उनकी कुछ नई फिल्में देखीं—मदारी, हिंदी मीडियम,
नो बेड ऑफ रोज़ेज़ और द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स। आखिरी दो पर तो मैंने विचार भी किया था।

मकाऊ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और पुरस्कार समारोह के लिए कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं। लेकिन
दो फिल्में फाइनल लिस्ट में शामिल नहीं हो पाईं। उनके काम के जरिए ही मुझे पता चला कि इरफान
वह वहाँ काम कर रहा था, और मुझे यकीन था कि वह देर-सवेर हमें चौंका देगा।
एक और महत्वपूर्ण फिल्म।
मैंने इरफ़ान खान को आखिरी बार अक्टूबर 2016 में मुंबई फिल्म फेस्टिवल में देखा था।
शहर के फोर सीजन्स होटल में फेस्टिवल पार्टी। पार्टी छत पर आयोजित की गई थी।
तेज संगीत के बीच, फिल्म निर्माता, अभिनेता और पत्रकार एक-दूसरे से बातचीत कर रहे थे।
मैं एक पत्रकार मित्र के साथ बैठा था और मैंने देखा कि इरफान एक मैं एक महिला से बात कर रहा था। मैंने उसे परेशान नहीं किया, लेकिन कुछ मिनट बाद उसने
वह मेरी ओर आया और हमने हाथ मिलाया। अपने प्रियजनों द्वारा पहचाना जाना अच्छा लगा।
भीड़ भरी पार्टी में मेरा पसंदीदा अभिनेता। हमारी थोड़ी देर बात हुई, हालाँकि मुझे याद नहीं है।
हमने इस बारे में बात की। फिर हम अपने-अपने कामों में वापस लग गए। बात चिट।
चूंकि मैं अपना समय नई दिल्ली और न्यूयॉर्क के बीच बिताता हूँ, इसलिए अक्सर ऐसा नहीं होता
हिंदी फिल्म उद्योग के लोगों से मिलें। हालाँकि, जिस तरह से यह प्रचलित है
सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, और हम अक्सर मशहूर हस्तियों से इसी के माध्यम से संपर्क करते हैं।

ट्विटर के माध्यम से। तो, जनवरी 2018 की शुरुआत में, अकादमी के मध्य में।
पुरस्कारों के लिए मतदान प्रक्रिया के दौरान, मैंने यह ट्वीट भेजा, जो आंशिक रूप से एक हानिरहित मजाक था: 'मैं
wonder if @BeingSalmanKhan @aamir_khan @deepikapadukone @ सीनियरबच्चन @priyankachopra ने छुट्टियों का मौसम सब देखते हुए बिताया है
क्या उन्हें ऑस्कर-योग्य स्क्रीनिंग सामग्री भेजी गई है? @soonitara @irrfank @rasulp
क्या आप लोग फिल्में देख रहे हैं? एकेडमी के लिए वोटिंग 5 जनवरी से शुरू हो रही है!
मैंने जिन हिंदी फिल्म जगत की हस्तियों को टैग किया था, वे सभी मतदान करने वाले सदस्य हैं।
मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज अकादमी। मुझे कुछ प्रतिक्रियाएँ मिलीं—
एक पत्र सूनी तारापोरेवाला की ओर से और दूसरा उस समय इरफान के मैनेजर की ओर से।
मनप्रीत बच्छर, जिन्होंने लिखा था कि इरफान नियमित रूप से यह फिल्म देख रहे थे...
व्यस्त शूटिंग शेड्यूल के बावजूद भी स्क्रीनिंग करने वाले मौजूद थे।
ठीक दो महीने बाद, 5 मार्च 2018 को आधी रात को एक ट्वीट भेजा गया। इरफान खान के ट्विटर हैंडल से एक ट्वीट आया है। इस ट्वीट में एक नए उत्पाद के लॉन्च की घोषणा की गई है।
इरफ़ान की जल्द ही रिलीज़ होने वाली फिल्म 'ब्लैकमेल' का नया गाना।
‘पटोला’ गाना पंजाबी गायक गुरु रंधावा ने गाया है। ट्वीट में यह जानकारी शामिल थी।

गाने का यूट्यूब लिंक दिया गया था और उसमें गायक की एक रंगीन तस्वीर थी। गुरु
रणधावा के चेहरे के साथ-साथ दो अन्य तस्वीरें भी थीं—इरफान खान और उनकी सह-कलाकार कीर्ति कुल्हारी, दोनों ने क्रमशः दूल्हा और दुल्हन का वेश धारण किया था।
साढ़े चार घंटे बाद, सुबह 4:36 बजे, एक और ट्वीट भेजा गया।
इरफ़ान के अकाउंट से। दूसरे ट्वीट में, जिसका लहजा बिल्कुल अलग था, अभिनेता ने एक पोस्ट साझा की।
अपने प्रशंसकों के लिए एक दिल दहला देने वाला व्यक्तिगत संदेश।
इसमें लिखा था: 'कभी-कभी आप जागते हैं
जीवन में एक झटके के साथ, सब कुछ हिल गया है। पिछले 15 दिनों से मेरा जीवन अस्त-व्यस्त है।
एक रहस्यमयी कहानी। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि दुर्लभ कहानियों की मेरी खोज मुझे इस मुकाम तक ले जाएगी।
मुझे एक दुर्लभ बीमारी का पता लगाना है...'
इरफ़ान ने आगे कहा कि वह परिवार और दोस्तों से घिरे हुए थे और उन्होंने अनुरोध किया
उन्होंने अपने प्रशंसकों से अटकलें न लगाने को कहा और सात से दस दिनों के भीतर वापस आने का वादा किया।
कुछ दिन ऐसे थे जब उन्हें निर्णायक परिणाम मिले। और फिर सन्नाटा छा गया।
यह खबर अचानक आई। इरफान अपने गाने खुद लिखने के लिए जाने जाते थे।
उनके ट्वीट्स से उनकी व्यक्तिगत शैली का पता चलता था।
एक बयान आधिकारिक बयान की तरह लग रहा था, लेकिन फिर भी उसमें इरफान की छाप थी।
कुछ हफ़्ते पहले, इरफ़ान ने एनी लीबोविट्ज़ से प्रेरित एक ट्वीट को रीट्वीट किया था।

फिल्मफेयर पत्रिका के कवर पर उस वर्ष के पुरस्कार विजेताओं की तस्वीरें छपी थीं—जिनमें शामिल थे...
Vidya Balan, Konkona Sen Sharma, Rajkummar Rao, Bappi Lahiri, two निर्देशक और लेखक अमित मसुरकर और नीरज इस क्षेत्र में नए हैं। घायवान—और खुद इरफान। उन्होंने हिंदी फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता था।
मध्यम आकार। तस्वीर में इरफान एकदम बाएं कोने पर खड़े हैं।
उसने सफेद धारियों वाली एक अजीबोगरीब डिजाइन की ग्रे जैकेट पहनी हुई है। वह दिखता है
गंभीर, और राजकुमार भी, जो उसके बगल में फर्श पर बैठा है।
यह स्पष्ट नहीं है कि तस्वीर कब ली गई थी, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात इरफान हैं।
इरफ़ान आत्मविश्वास से भरे, सतर्क और स्वस्थ दिख रहे हैं। तो इरफ़ान के बारे में हमें बस इतना ही पता था।
उस दुर्लभ बीमारी के बारे में खबर देकर हमें चौंकाने से पहले उन्होंने राज्य की स्थिति बता दी थी।
ग्यारह दिन बाद, वादे के मुताबिक, इरफान ने फिर से ट्वीट किया। उन्होंने ट्वीट शुरू किया।
मार्गरेट मिशेल (अमेरिकी महाकाव्य 'गॉन विद द विंड' की लेखिका) के एक उद्धरण के साथ—'जीवन हमें वह देने के लिए बाध्य नहीं है जिसकी हम अपेक्षा करते हैं।'
उनके अधिकांश प्रशंसकों को पहली बार किसी प्रकार के कैंसर के बारे में पता चला था।
जिसे न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर कहा जाता है। उन्होंने मस्तिष्क संबंधी अफवाहों पर मजाक किया।
ट्यूमर। जहां तक फैलाई गई अफवाहों का सवाल है, "न्यूरो" का मतलब हमेशा ट्यूमर नहीं होता।

'दिमाग।' और उन्होंने आगे कहा कि सभी के लिए गूगल पर सर्च करना मददगार होगा।
बीमारी। उनके ट्वीट से यह स्पष्ट था कि उनमें अभी भी हास्यबोध बरकरार था।
उन्होंने आगे कहा कि वह इलाज के लिए देश छोड़ रहे हैं और वह
संपर्क में रहें और 'बताने के लिए और भी कहानियां हों तो' हमें बताएं। यह कहना मुश्किल है कि इरफान कब बीमार पड़े। तिग्मांशु धूलिया ने मुझे बताया था कि उन्हें
अचानक उनका वजन घटने लगा और इससे चिंता पैदा हो गई। 'उन्हें खाना बहुत पसंद है।'
बहुत कुछ, लेकिन वह अपने वजन और खान-पान को लेकर बहुत सावधान रहता है,’ तिशु ने कहा।
इरफान द्वारा उस भयावह घोषणा के कुछ महीनों बाद।
'खासकर अब जब वह स्टार बन गया है, तो वह अपने खान-पान का ध्यान रखता है। वह
growing his own organic vegetables. Pata nahi usko yeh saala cancer kaise
हो गया (मुझे नहीं पता उसे यह जानलेवा कैंसर कैसे हो गया)।
इरफान के जयपुर के दिनों के दोस्त वरुण गौतम ने मुझे बताया कि पिछले कुछ वर्षों में अभिनेता अपने काम में बहुत व्यस्त हो गए थे और उनके लिए समय निकालना मुश्किल हो गया था।
उससे जुड़ें और उसके साथ समय बिताएं। 'मेरा इरफान पिछले कुछ समय से जंगल में खोया हुआ था।'
कुछ साल,’ वह आँखों में आँसू भरते हुए कहता है। ‘मेरा इरफ़ान
बदल गया था। (मेरा इरफान बदल गया था।) वह वह इरफान नहीं था जिसे मैं जानता था।
इरफ़ान की असली खुशी पतंग उड़ाने और सोचने में, अपने साथ समय बिताने में है।

नासिक में फार्महाउस में बैठकर अच्छी फिल्म देखना और गाना सुनना। वरुण कहते हैं, 'वह न सिर्फ व्यस्त थे बल्कि खुद को खो रहे थे। काम में इसमें उनका अधिक समय, अधिक यात्रा, कम नींद लगती थी, फिर भी वे सफलता प्राप्त कर रहे थे।
और ज़्यादा पैसे। उसने हाल ही में मुझे बताया कि वह भूल गया था कि वह यहाँ नहीं आया था।
पैसा कमाने के लिए।
वरुण को इरफान की बीमारी के बारे में तब पता चला जब एक दिन उसे फोन आया।
सुतापा का फोन आया था। यह इरफान द्वारा आधिकारिक तौर पर अपने निधन की घोषणा करने से कुछ समय पहले की बात है।
बीमारी। 'उसने कहा कि डॉक्टरों को उसके अंदर कुछ धब्बे मिले हैं,' वह याद करते हैं। 'फिर
उसने कहा, “तुमने हमेशा उसके भविष्य में अच्छी बातें देखी हैं। मुझे उम्मीद है कि कुछ भी बुरा नहीं होगा।”
घातक घटना घटित होगी। इसलिए मैंने उसे आश्वस्त किया कि वह ठीक रहेगा। 'भले ही
डॉक्टरों को चिंता है, लेकिन वह अभी भी जीवित रहेगा। उसकी मृत्यु नहीं होगी।
मुझे पूरा भरोसा था कि वह ठीक हो जाएगा।
इरफ़ान के इलाज के लिए जाने के बाद कुछ महीनों तक लगभग
उनकी ओर से सन्नाटा पसरा रहा। फिर उन्होंने कुछ पत्रकारों से बात की।
साक्षात्कार उनके जीवन के इस नए चरण पर केंद्रित थे। वे आत्मचिंतन कर रहे थे।
अपने जीवन में मिले सभी अच्छे अनुभवों पर गर्व करते हुए, वे भविष्य में आने वाली हर चुनौती को स्वीकार करते हुए प्रतीत हो रहे थे।
टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ भी उन्होंने काम किया।

उन्होंने दर्द, इलाज और अपने अस्पताल के बारे में जानकर हुए आश्चर्य के बारे में बात की।
यह लंदन के क्रिकेट मैदान लॉर्ड्स के ठीक बगल में था, जिसका स्वामित्व उसी के पास था।
मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब।
मैं एक तेज रफ्तार ट्रेन में सफर कर रहा था, मेरे सपने थे, योजनाएं थीं, आकांक्षाएं थीं।
'अपने लक्ष्यों में पूरी तरह से लीन था,' उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए एक साक्षात्कार में कहा।
भारत। ‘और अचानक किसी ने मेरे कंधे पर थपथपाया और मैंने मुड़कर देखा। यह तो...’
टीसी: “आपकी मंज़िल बस आने ही वाली है। कृपया नीचे उतर जाइए।”
और फिर उन्होंने आगे कहा, 'एकमात्र निश्चित चीज अनिश्चितता थी...'
इस अहसास ने मुझे परिणाम की परवाह किए बिना समर्पण, आत्मसमर्पण और विश्वास करने के लिए प्रेरित किया।
इससे मुझे जो भी परिणाम मिले...
पज़ल की रिलीज़ से पहले शायद उन्होंने जो एकमात्र इंटरव्यू दिया था, उसमें उन्होंने कहा था कि...
अगस्त 2018 में, उन्होंने एसोसिएटेड प्रेस से बात करते हुए बताया कि शुरुआत में उन्हें कितना गुस्सा आया था।
डरा हुआ और बेहद असुरक्षित। लेकिन अब उसने अपना सारा भरोसा प्रकृति पर रख दिया था।
यह मेरे हाथ में नहीं है। प्रकृति तो वही करती है जो उसे करना होता है...
जो भी परिणाम हो, वह अच्छा ही होगा और सर्वोत्तम ही होगा।
मैंने इरफ़ान के उन दोस्तों का इंटरव्यू लिया, जो उनसे लंदन में मिले थे, सभी

इससे यह पता चलता है कि वह जीवन के प्रति सामान्य रूप से कितने सकारात्मक थे। शैलजा केजरीवाल
मुझे बताया गया कि इलाज के बीच-बीच में इरफान और सुतापा कभी-कभी जाया करते थे।
लंदन के कैफे में जाते हैं और कभी-कभी नाटक देखने भी जाते हैं।
हम बिल्कुल अकेले थे, हमारे आसपास न तो फिल्में थीं और न ही लोग। सुतापा सिकदर ने 96 हफपोस्ट इंडिया को बताया, 'उद्योग से। हम तो ऐसा करते भी नहीं।'
पता है कि कौन सी फिल्म किस शुक्रवार को रिलीज हो रही है।' इस जोड़े के लिए, यह बदलाव
गति और स्थान ने उन्हें करीब ला दिया होगा। 'यह एक नई खोज करने जैसा था।'
'जीवन साथ-साथ,' उन्होंने आगे कहा।
2018 की गर्मियों में लंदन की यात्रा के दौरान, विपिन शर्मा ने अपना काफी समय बिताया।
लंदन में इरफान के साथ लगभग छह घंटे बिताए, खाना खाया, बातें कीं और हँसे।
उन्होंने एक टेलीविजन शो के बारे में एक कहानी सुनाई जिसमें उन्होंने अभिनय किया था, और उस दौरान...
शूटिंग के दौरान, सेट पर एक असली बाघ लाया गया था, और अभिनेता उससे कितना डर रहे थे।
जानवर के पास खड़े हो जाओ। जब विपिन जा रहा था, इरफान ने कहा, 'यार, कुछ मेरे दिन बहुत खराब गुजरते हैं,’ यह कहते हुए उन्होंने संकेत दिया कि वह विपिन को हर दिन नहीं देख पाते थे।
फिर उन्होंने कहा, 'मुझे फोन करना।'
और फिर विपिन ने इरफान के बारे में अपने दो सपने सुनाए। पहला, विपिन माना जाता है कि इसका बौद्ध धर्म से संबंध था। सपने में इरफान सूपी खा रहा था।

उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कटोरे से व्यंजन निकाला और विपिन को उसे चखने के लिए कहा।
विपिन ने इरफान से चम्मच उधार लेकर खाना चखा और उसे खाना पसंद आया। उन्होंने कहा, 'मुझे बहुत खुशी हुई कि उसे कुछ ऐसा मिल गया जिससे उसे खुशी मिली।'
दूसरे सपने में इरफान विपिन के करीब खड़ा था और वह देख रहा था शारीरिक रूप से कमजोर। दरअसल, विपिन को याद आया कि इरफान से एक अजीब सी गंध आती थी जिसे सुनकर लोग
बुखार होने पर वे ये गंध छोड़ते हैं। विपिन उस गंध को महसूस कर सकता था, लेकिन यह भी कि
धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। और अचानक सपने में विपिन ने इरफान को गले लगा लिया। 'मैं
उन्हें अपनी सांस और बदबू की कोई परवाह नहीं थी,’ उन्होंने कहा। तिग्मांशु धूलिया ने मुझे बताया कि इरफान इस इलाज पर अच्छी प्रतिक्रिया दे रहे थे।
इलाज के बाद उनका वजन कम होना नियंत्रण में आ गया था। लेकिन शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि
इरफान के बारे में अच्छी खबर मुझे सुधीर मिश्रा से मिली। देर रात अगस्त 2018 में, मैं सुधीर से इस किताब के बारे में बात करने के लिए दिल्ली में मिला। उन्होंने कहा कि वह
मैंने सुना था कि इरफान को हाल ही में हिंदी मीडियम 2 की कहानी सुनाने का काम सौंपा गया है।
(जिसे अब अंग्रेज़ी मीडियम के नाम से जाना जाता है और जिसका निर्देशन होमी अदजानिया ने किया है)।
यह पहला स्पष्ट संकेत था कि इरफान की सेहत में सुधार हो रहा था और वह फिल्मों में वापसी की योजना बना रहे हैं। अंग्रेज़ी मीडियम रिलीज़ होने वाली है।
2020 की शुरुआत में।

इरफान और सुतापा 2019 की शुरुआत में भारत लौट आए, जिससे काफी राहत मिली।
उनके प्रशंसक और हिंदी फिल्म उद्योग में लगभग हर कोई। जब वह लौटे लंदन से, ऐसी अटकलें थीं कि उन्हें अभी भी कुछ समय लगेगा।
ठीक होने के लिए। लेकिन इरफान की काम पर वापस लौटने की इच्छा और, ज़ाहिर है, फिल्म की...
कार्यक्रम के चलते उन्हें उदयपुर ले जाया गया, जहां उन्होंने 'अंग्रेजी मीडियम' की शूटिंग की, जो उनके बाद उनकी पहली परियोजना थी। लगभग एक साल हो गया। उनका कैंसर का इलाज पूरा हो चुका था और रिपोर्टों से पता चला कि वे ठीक हो गए थे।
उनके डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह स्वस्थ घोषित कर दिया है। लेकिन उनके इलाज के दौरान अतिरिक्त सावधानी बरती गई।
सेट पर—ऊर्जा पुनः प्राप्त करने के लिए उन्हें जो ब्रेक लेने पड़ते थे, उनसे लेकर शांत वातावरण तक—
आवासीय प्रवास, पाँच सितारा होटलों से दूर, जिन्हें वह शोरगुल भरा और विशेष पाता था।
उनके लिए मुंबई से जैविक खाद्य पदार्थ मंगवाए गए।
अंग्रेज़ी मीडियम के लंदन शेड्यूल के बाद, इरफ़ान ने कुछ समय बिताया।
वह अपने परिवार के साथ शहर में थे। खबरों के मुताबिक, वह निजी छुट्टी पर थे। बाद में
सितंबर में पैपराज़ी ने मुंबई हवाई अड्डे पर इरफान का पीछा किया। उन्हें व्हीलचेयर में धकेला गया, जबकि उन्होंने अपना चेहरा ढक रखा था। एक प्रवक्ता ने बताया कि
इरफ़ान ने यह बयान जारी किया, ‘सर्जरी के बाद इरफ़ान की सर्जरी सफल रही।’
लंदन में अंग्रेज़ी मीडियम की शूटिंग चल रही है। उन्हें घर की याद आ रही थी और वे यहाँ आए हैं।

मुंबई को कुछ दिनों के लिए आराम करने का समय दिया गया है। हम मीडिया से अनुरोध करते हैं कि वे अटकलें न लगाएं।
और निरंतर समर्थन के लिए सभी को एक बार फिर धन्यवाद।

एक अलग तरह का योद्धा

इरफ़ान को सामान्य जीवन में लौटने में थोड़ा समय लगेगा। लेकिन एक अभिनेता के रूप में इरफ़ान का जादू अभी भी बरकरार है।
पर्दे पर कलाकार हमारे देखने और सराहना करने के लिए मौजूद है। वह पहले ही
उन्होंने हमें प्रदर्शनों का ऐसा खजाना दिया है जिसे समय-समय पर फिर से देखना चाहिए।
और फिर से। यहां तक कि जब हमें पता होता है कि उनकी कोई पुरानी फिल्म कैसी बनेगी, तब भी
इस व्यक्ति के व्यवहार को देखना और समझना, वह कैसे लगातार काम करता रहता है, यह अपने आप में एक परम आनंद है।
अपने निर्देशकों, सह-कलाकारों और निश्चित रूप से दर्शकों को आश्चर्यचकित करना।
उनके मित्र और निर्देशक अनुप सिंह इरफान के उन रहस्यों का जिक्र करते हैं जिन्हें वो अपने साथ छिपाए हुए हैं।
उसके साथ जो कुछ वह कैमरे के सामने अभिनय करते हुए धीरे-धीरे प्रकट करता है। उदाहरण के लिए,
एक ऐसा दृश्य जिसमें दूसरे पात्र के साथ क्रोध और टकराव की आवश्यकता होती है, अधिकांशतः
अभिनेता अपने दुश्मन को एक ही वार में खत्म कर देते थे। वे अपना गुस्सा जाहिर करते थे।

चिल्लाकर या कोई बड़ा इशारा करके अपना काम खत्म कर देते हैं। लेकिन इरफान
अनूप के अनुसार, वह एक अलग तरह का योद्धा है, जिसे वास्तव में मारने में आनंद आता है।
अनुप आगे कहते हैं, 'हो सकता है कि आपको उसका पहला वार महसूस ही न हो। फिर आपको एहसास होगा।' '
आपको खून बह रहा है, और वह खून बहने वाली जगह, घाव की जांच करेगा, आगे बढ़ें
और गहरा, और गहरा। और फिर अंत में वह तुम्हारा दिल निकाल लेगा।' इसलिए इरफान की एक अभिनेता के रूप में सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह कभी भी अपने सारे राज़ नहीं खोलते।
वह एक साथ सारे कार्ड नहीं देता, बल्कि धीरे-धीरे आपको अपने पूरे प्रोजेक्ट की झलकियाँ दिखाता है।
प्रदर्शन कैसा होगा? इरफान के किरदार के बारे में कोई पहले से बनी धारणा नहीं है।
जो हमें प्रकट होता है। इसके बजाय, उसके हावभाव, उसकी नज़र, उसकी मुद्रा, उसकी हर साँस...
वह किरदार का निर्माण करता है और यह सब हमारी आंखों के सामने होता है। जब तक वह
जैसे ही वह अपने पहले कुछ शब्द बोलता है, आपको प्रदर्शन की लय का एहसास होने लगता है।
यही इरफान अभिनेता की खूबसूरती है। वे अपने अभिनय में एक खास तरह की संगीतमयता लाते हैं।
प्रदर्शन।
बेहतरीन लेखन और सशक्त निर्देशन की बदौलत, यह फिल्म उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों में से एक है।
यह कहना कभी आसान नहीं होता कि वह किस तरह का चरित्र है। किसी को भी एक ही श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

इरफ़ान जैसे अभिनेता। किस्सा: द टेल ऑफ़ अ लोनली घोस्ट, नो बेड ऑफ़ जैसी फिल्मों में।
रोज़ेज़, मकबूल या यहाँ तक कि द लंचबॉक्स, जहाँ उसका साजन इला (निम्रत) का दिल तोड़ देता है
कौर से तय तारीख पर न मिलने से उनके दिल को ठेस पहुँचने के बारे में, इरफ़ान हमें सूचित करते हैं कि
मुझे उनके पात्र नापसंद हैं, लेकिन उनकी परिस्थितियों, उनकी सीमाओं को समझने के लिए ऐसा करना ज़रूरी है।
और उनके कार्यों के पीछे के कारणों को। इसके बजाय, वह हमेशा सामने लाता है
उनके पात्रों की मानवता। हम उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं, भले ही, सतही तौर पर, उनके कार्य अच्छे नहीं हो सकते हैं।
अभिनेता के रूप में इरफान खान का यही गुण—जो हमारे पास मौजूद सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में से एक हैं—उन्हें खास बनाता है। उन्हें अपने साथियों से अलग खड़ा करता है। यह एक ऐसा गुण है जिसे हमें संजोना चाहिए और
जश्न मनाना।

जब विपिन शर्मा पहली बार लंदन में इरफान के अस्पताल के कमरे में गए थे, तब
अभिनेता और उनकी पत्नी वहां मौजूद नहीं थे। रिसेप्शनिस्ट ने उन्हें बताया कि इरफान
और सुतापा कॉफी लेने बाहर गई थी। 'बिस्तर पर मुझे रूमी की एक किताब मिली।'
उल्टा पड़ा हुआ। मैं उस दृश्य को कभी नहीं भूल पाऊंगा। काश मैंने उसकी तस्वीर ले ली होती।

उसकी तस्वीर। मुझे बहुत अच्छा लगा। रूमी की किताब उल्टी पड़ी थी और मैं
मुझे एहसास हुआ, ये तो इरफान है।
यह 'रूमी' वाली मानसिकता ही है जिसने इरफान को सबसे कठिन परिस्थितियों से उबारने में मदद की है।
और उनके जीवन का सबसे अनिश्चित दौर, और शायद ये शब्द,
तेरहवीं शताब्दी के फारसी कवि की कविता 'जीवन और मृत्यु' विशेष महत्व रखती है।
महत्व:

इन सबके बारे में बात क्यों करें?
ज्ञात और अज्ञात
देखें कि कैसे अज्ञात ज्ञात में विलीन हो जाता है
अलग-अलग क्यों सोचें?
इस जीवन और अगले जीवन के
जब कोई अंतिम से जन्म लेता है

93‘मैं पहली बार जीवन का स्वाद चख रहा था, इसके जादुई पहलू का’, rediff.com, 19 जून 2018, https://www.rediff.com/movies/report/i-was-tasting-life-for-the-first-time-the-magical-side-of-
it/20180619.htm
94 अंशुल चतुर्वेदी, ‘कैंसर से जूझते हुए इरफान खान: मुझे भरोसा है, मैंने खुद को समर्पित कर दिया है, परिणाम चाहे जो भी हो’, द टाइम्स ऑफ इंडिया, 19 जून 2018,
https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/irrfan-on-battling-cancer-i-

trust-ive-surrendered-irrespective-of-the-outcome/articleshow/64635045.cms
95‘कैंसर के इलाज के बीच इरफान खान को मिला नया नजरिया’, बिजनेस स्टैंडर्ड, 2 अगस्त 2018, https://www.apnews.com/d3d274993b5645e0b5c3dc7df9a9d988
96 अंकुर पाठक, ‘इरफान खान का पुनरुत्थान’, हफिंगटन पोस्ट, 1 मई 2019, https://www.huffingtonpost.in/entry/the-resurrection-of-irrfan-khan_in_5cc94721e4b0913d078a8f53
97 ‘सफल सर्जरी के बाद इरफान खान मुंबई लौटे, कुछ दिनों के लिए घर पर रहेंगे’
हिंदुस्तान टाइम्स, 14 सितंबर 2019, https://www.hindustantimes.com/bollywood/irrfan-khan-hides-his-face-as-he-returns-to-mumbai-see-pics/story-lsgQIYSDCYGub33zMLdgAK.html

आभार

2018 की गर्मियों में, जब इरफान खान लंदन में थे, तब मैंने उनसे संपर्क किया।
न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर का इलाज करवा रहे हैं। हमारी उनसे एक बार फोन पर बातचीत हुई थी।
जब उसकी हालत बेहतर हो जाएगी तो दोबारा संपर्क करने का वादा किया गया था। कुछ लोग थे।
व्हाट्सएप पर संदेशों का आदान-प्रदान हुआ, लेकिन अफसोस, पूरा साक्षात्कार कभी नहीं हो पाया।
मैंने पहले भी इरफान का इंटरव्यू लिया था, लेकिन मैं उनसे गहराई से बात करना चाहता था।
उनका जीवन और उनका काम। मैंने कोशिश की, लेकिन यह सफल नहीं हुआ।
अंततः मैंने फैसला किया कि...
उनकी निजता का सम्मान करें।
मुझे निराशा हुई, लेकिन कई लोग मुझसे बात करने में बेहद खुश थे।
मुझे इरफान के बारे में, उनके दोस्त, अभिनेता और स्टार के बारे में।
मेरे द्वारा लिए गए साक्षात्कारों के बिना यह पुस्तक संभव नहीं होती।
मैंने लिखने का कार्य शुरू करने से कुछ समय पहले निम्नलिखित लोगों के साथ यह बैठक की थी।
this book: Nikkhil Advani, Avinash Arun, Ram Gopal Bajaj, Manoj Bajpai,
Vasan Bala, Ritesh Batra, Tanmay Bhat, Mahesh Bhatt, Pooja Bhatt, Aditya
भट्टाचार्य, साकेत चौधरी, तिग्मांशु धूलिया, मोस्तोफा सरवर फारूकी,

Varun Gautam, Meghna Gulzar, Barry John, Asif Kapadia, Shailja Kejriwal,
जय खन्ना, अमित कुमार, अश्विन कुमार, जीनत लखानी, एंग ली, दिवंगत Antony Minghella, Suketu Mehta, Sudhir Mishra, Mira Nair, Govind निहलानी, कोंकणा सेन शर्मा, नसीरुद्दीन शाह, रत्ना पाठक शाह, Bharat Sharma, Vipin Sharma, Anup Singh, Shoojit Sircar, Tillotama Shome,
सूनी तारापोरवाला, सुपर्ण वर्मा और मीता वशिष्ठ।
मैं उन सभी लोगों का भी आभारी हूं जिन्होंने कई तरह से मेरी मदद की। उन्होंने मुंबई में मेरे ठहरने की व्यवस्था की, मुझे सलाह दी और शोध सामग्री भेजी।
किताब लिखने के दौरान, इरफ़ान की तस्वीरें साझा कीं और उनसे संपर्क किया।
मुझे जिन लोगों का इंटरव्यू लेना था, उनके लिए जानकारी मिल गई। इसलिए मनप्रीत, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।
Bachchar, Aseem Bajaj, Vibha and Vishal Bakshi, Rohit Batra, Sahil Bhalla,
Viresh Chhabra, Anindita Ghosh, Adil Hussain, Tushar Jain, Satish Kaushik,
राजीव मसंद, वसंती मीरचंदानी, सोमेन मिश्रा, सुनीता मिश्रा, गुनीत मोंगा, गीतेश पंड्या, विवेक रंगाचारी, सोनी राजदान, राजा सेन, अरुण शिवदासानी, लवलीन टंडन और विजय वर्मा।
रूपा पब्लिकेशन्स की टीम को उनके धैर्य के लिए विशेष धन्यवाद, क्योंकि मैंने उनसे अनुरोध किया था।
इस पुस्तक में कुछ विस्तार करने और उनके बहुमूल्य संपादकीय सुझावों के लिए धन्यवाद।
2016 के पतझड़ में मैंने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने मेरे जीवन को बदल दिया—अधिक समय बिताने का।

मैं अपनी बीमार माँ की देखभाल के लिए भारत में हूँ। मैं पिछले साढ़े तीन साल से यहीं रह रही थी।
अमेरिका में दशकों का इतिहास। पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा शोध, लेखन और इसका संपादन 2018 और 2019 के दौरान किया गया, जब मैं नोएडा में रह रहा था। मैं आभारी हूँ।
मेरे चाचा और चाची इंदर और उषा पोपली, और मेरे चचेरे भाई-बहन राकेश और सोनल पोपली।
मुझे इतना सहयोग देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरी भतीजी और भतीजे को भी विशेष धन्यवाद।
दीया और अवि पोपली, उनके साथ रहने और खाने-पीने और चॉकलेट के प्रति मेरे प्यार को साझा करने के लिए धन्यवाद।
और ब्राउनी। और मेरे चचेरे भाई-बहनों राधिका और राजीव दुग्गल को भी धन्यवाद, जो अक्सर
मुझसे पूछ रहे थे कि किताब का काम कैसा चल रहा है।
मेरे न्यूयॉर्क स्थित दोस्तों को विशेष धन्यवाद, जो कई मायनों में मेरे अधिक करीब हैं।
मैं अपने परिवार से भी ज्यादा खुद को अहमियत देता हूं। सक्रिय दिनों के दौरान मैं उनमें से कई लोगों से मिला था।
दक्षिण एशियाई पत्रकार संघ के सदस्य, लेकिन यह बंधन बन गया
पिछले कुछ वर्षों में और भी मजबूत हुए हैं, खासकर तब जब वे सभी मेरे पीछे-पीछे आए और मेरे साथ चले गए।
क्वींस, न्यूयॉर्क। एस. मित्रा कलिता और नितिन मुकुल को धन्यवाद।
मुझे हफ्तों तक अपने घर में रहने दो और मुझे खाना खिलाओ। और जैक्सन के बाकी लोग भी।
हाइट्स ग्रुप में अरुण वेणुगोपाल, मीरा नायर, विकास बजाज और मौली जो भी शामिल हैं।
Felde, Hari Sreenivasan, Sucheta Sachdev, and Manu and Sree Bhagwan for

प्यार, खाना, ढेरों गिलास वाइन, लंबी गपशप और बातचीत
किताबों, फिल्मों और डोनाल्ड ट्रम्प के युग में कैसे जीवित रहना है, इस बारे में। धन्यवाद।
मैनहट्टन में मेरे कई दोस्त, जिनमें श्री श्रीनिवासन और रूपा शामिल हैं।
इन सभी वर्षों में मेरा साथ देने के लिए उन्नीकृष्णन को; मल्लिका दत्त को धन्यवाद।
मुझे लगातार याद दिलाती रहती हैं कि मुझे किताबें लिखनी चाहिए; ज़ेटे एमन्स को धन्यवाद।
उनकी गर्मजोशी भरी पार्टियाँ, भोजन और बातचीत; गीतांजलि मिश्रा को, मेरी टेलुराइड
एक दशक से अधिक समय तक फिल्म फेस्टिवल की साथी, जिसने अक्सर मुझे मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकाला।
दिल्ली और नोएडा में मेरी बोरियत दूर हुई और मैंने कई गिलास पीकर अपना मनोबल ऊंचा बनाए रखा।
शराब का।
ईशान छाबड़ा को प्यार, बॉलीवुड पर बातचीत, राजनीतिक बहस और
आधी रात को व्हाट्सएप संदेश और मेघा भौरस्कर को भेजे गए संदेश उसकी दोस्ती और फिल्मों और फिल्म सितारों के प्रति उसके प्यार को मेरे साथ साझा करना।
मैं अपने दोस्तों, गिरिमोहन कोनेटी और कृति सुबा का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे ऐसा करने दिया।
जब मैं न्यूयॉर्क घूमने गया था, तब मैं कई हफ्तों तक ब्रुकलिन स्थित उनके अपार्टमेंट में रुका था।
और मैं इस किताब पर काम कर रहा था। गिरी, मुझे न्यू यॉर्क में घर देने के लिए धन्यवाद।
यॉर्क। देव बेनेगल का धन्यवाद जिन्होंने मुझे यॉर्क के बारे में नवीनतम जानकारी से अवगत कराया।

मुंबई का फिल्म उद्योग, और हां, मेरे चुटकुलों पर हंसना।
साथ ही, भारत और अन्य जगहों पर फिल्म पत्रकारों और फिल्म जगत से जुड़े मेरे नए परिवार के दोस्तों को भी धन्यवाद: चार दोस्त जो मुझसे मिले...
नम्रता ने बताया कि हम 2018 के टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में मिले थे और तब से हमारे बीच घनिष्ठ संबंध बने हुए हैं। Joshi, Shubhra Gupta, Suparna Sharma and Anu Rangachar; two film friends
टोरंटो में, अपरिता भंडारी और बैसाखी रॉय, जो ख़बरदार की मेजबानी करती हैं
पॉडकास्ट; मधु सरीन उन भोजन और बातचीत के लिए जो अक्सर बदल जाती थीं नि:शुल्क चिकित्सा सत्रों में; रितु सारिन और तेनजिंग सोनम, जो इन सत्रों की मेजबानी करते हैं।
धर्मशाला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव मेरे जीवन का सबसे मजेदार और खुशी भरा समय था।
हर साल; और मेरे अद्भुत पड़ोसी यासर उस्मान और नाज़िया एरम के लिए इससे मुझे यह एहसास हुआ कि नोएडा एक गर्मजोशी भरा और देखभाल करने वाला स्थान हो सकता है।
डस्ट जैकेट की तस्वीर और उनके योगदान के लिए अशोक विश को विशेष धन्यवाद।
दोस्ती।
और इरफान खान, मेरे अंदर के प्रशंसक का मनोरंजन करने और मुझे खुशी देने के लिए आपका धन्यवाद।
और आंसू, और आपके द्वारा निभाए गए कई अद्भुत पात्रों के माध्यम से मुझे मंत्रमुग्ध बनाए रखना।
स्क्रीन पर खेला गया। मुझे अपने जीवन के लगभग दो साल बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
आपकी फिल्में देखना, आपके बारे में पढ़ना, सोचना और लिखना।

□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ '□□□□ □□□□□□□' □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ '□□□□□' □□□ □□□□□ (□□□□) □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ 1986 □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□: □□□ □□□□□ □□□□

□□□□ □□□□ □□ □□□□□ '□□□□ □□□□□□' (1988) □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ (□□□□)□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□:
□□□□ □□□□□□□□□□□□□

निर्देशक आदित्य भट्टाचार्य की फिल्म 'दुबई रिटर्न' में इरफान खान ने आफताब अंग्रेज का किरदार निभाया है, जिसे प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सरगना को खत्म करने का काम सौंपा जाता है। काम पूरा होने के बाद आफताब को दुबई में छिपने के लिए भेज दिया जाता है। (सौजन्य: सौरभ कांति दत्ता)

आदित्य भट्टाचार्य की फिल्म 'दुबई रिटर्न' में इरफान खान एक स्वप्नदृष्टा की भूमिका में हैं, यह एक कॉमेडी फिल्म है जो मुंबई के अंडरवर्ल्ड में घटित होती है, जहां छोटे-मोटे अपराधी अपने दायरे में सामाजिक सीढ़ी चढ़ने की उम्मीद में ध्यान और बदनामी बटोरने की कोशिश करते हैं।
सौजन्य: सौरभ कांति दत्ता

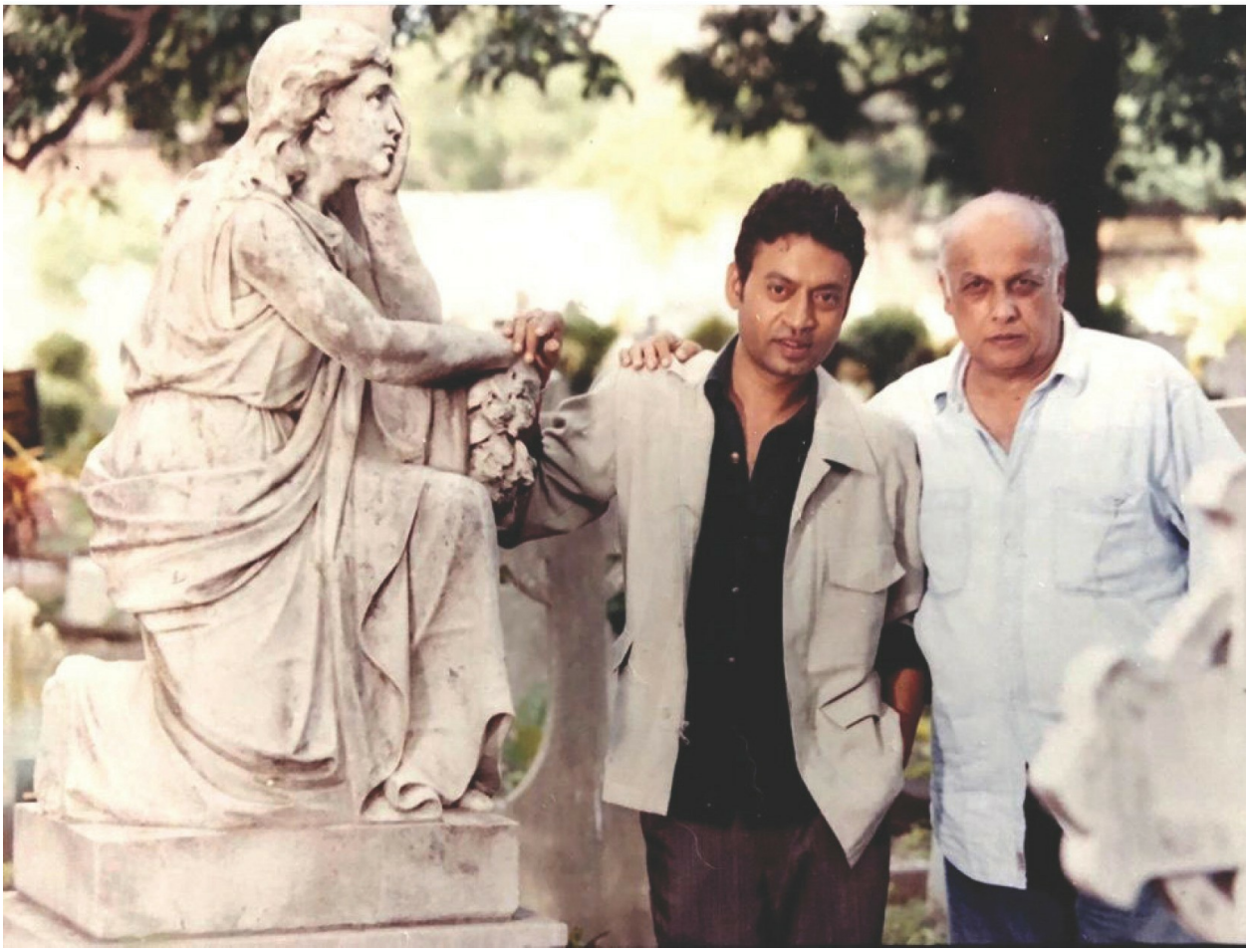

अपने करियर के शुरुआती वर्षों में, इरफ़ान खान की लेखक, निर्देशक और निर्माता महेश भट्ट से गहरी दोस्ती हो गई थी। यह तस्वीर फिल्म 'रोग' (2005) की शूटिंग के दौरान ली गई थी। महेश भट्ट ने फिल्म की पटकथा लिखी थी और उनकी बेटी पूजा भट्ट ने इसका निर्माण किया था।
सौजन्य: पूजा भट्ट

□□□□ □□□□ □□ □ □□□□□□ (2006) □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□: □□□□ □□□□□□□□□□□□

मीरा नायर की फिल्म 'द नेम्सके' (2006) में अशोक और आशिमा गांगुली (इरफान और तब्बू) कोलकाता में शादी के बाद न्यूयॉर्क के लिए रवाना होते हुए। साभार: सूनी तारापोरेवाला

निर्देशक रितेश बत्रा की फिल्म 'द लंचबॉक्स' में इरफान खान ने साजन फर्नांडिस का किरदार निभाया है, जो एक अकेले विधुर हैं। लेकिन जैसा कि रितेश बताते हैं, 'यह किसी बूढ़े आदमी की कहानी नहीं थी। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी थी जिसे खुद को बूढ़ा महसूस होता था।' (सौजन्य: गुनीत मोंगा)

एक दिन, निर्देशक रितेश बत्रा 'द लंचबॉक्स' के सेट पर पहुँचे और उन्होंने देखा कि फिल्म के प्रोडक्शन डिज़ाइनर ने साजन फर्नांडीस के लिविंग रूम में एक रेडियो रख दिया है। रितेश ने अचानक अपनी स्क्रिप्ट में बदलाव किया। रितेश ने इरफ़ान से पूछा, 'क्यों न आप बैठकर रेडियो सुनें?' (सौजन्य: गुनीत मोंगा)

दिल को छू लेने वाली रोमांटिक फिल्म 'द लंचबॉक्स' में, मुंबई में रहने वाले एक अधेड़ उम्र के ऑफिस क्लर्क साजन फर्नांडिस (इरफान) को गलती से किसी और के लिए बना लंचबॉक्स मिल जाता है। (सौजन्य: गुनीत मोंगा)

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ '□ □□□□□□□□' □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ (□□□□□) □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ (□□□□□□□□□□ □□□□□□□□) □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□

Courtesy: Guneet Monga

'द लंचबॉक्स' बड़े शहरों में अकेले और तन्हा होने की उदासी को दर्शाती है और इरफान अपने दिल दहला देने वाले अभिनय से इस शहरी पीड़ा को जीवंत कर देते हैं।
Courtesy: Guneet Monga

निखिल आडवाणी की फिल्म 'डी-डे' (2013) में इरफान खान ने वली खान का किरदार निभाया है, जो एक रॉ एजेंट है जिसे दाऊद इब्राहिम जैसे चरित्र वाले व्यक्ति को पकड़ने के लिए पाकिस्तान भेजा जाता है।

Courtesy: Vivek Rangachari

निखिल आडवाणी की फिल्म 'डी-डे' (2013) में हुमा कुरैशी (जोया), इरफान खान (वाली खान) और अर्जुन रामपाल (रुद्र प्रताप) तीन रॉ एजेंटों की भूमिका निभा रहे हैं, जो दाऊद इब्राहिम जैसे किरदार गोल्डमैन (ऋषि कपूर) का अपहरण करने की साजिश रचते हैं।
Courtesy: Vivek Rangachari

□□□□□ □□□□□□ □□ □□-□□ (2013) □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□

Courtesy: Vivek Rangachari

□□□□□ □□□□□□ □□ □□-□□ (2013) □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□: □□□□□ □□□□□□□□

मेघना गुलजार की तनावपूर्ण फिल्म 'तलवार' की शूटिंग के दौरान एक हल्का-फुल्का पल, जहां इरफान खान सहायक अभिनेता प्रकाश बेलावड़ी (बाएं) के साथ मजाक साझा कर रहे हैं।
सौजन्य: जंगली पिक्चर्स

□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ '□□□□□' □□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ (□□□□ □□□□), □□ □□□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□ □□□ (□□□□□□ □□□□□) □□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□□: □□□□□ □□□□□□□□

□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ '□□□□□' □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□ (□□□□□ □□□) □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□

□□□□□□: □□□□□ □□□□□□□□

तलवार की शूटिंग के दौरान मेघना गुलजार इरफान खान को निर्देशित करती हुई। साभार: जंगली पिक्चर्स

निर्देशक अनुप सिंह की फिल्म 'किस्सा: द टेल ऑफ अ लोनली घोस्ट' में इरफान ने उंबर सिंह का किरदार निभाया है, जो अपने अतीत से परेशान एक व्यक्ति है।
सौजन्य: हीमैटफिल्म

किस्सा: द टेल ऑफ़ अ लोनली घोस्ट में, उंबर सिंह (इरफ़ान खान) की पुत्र प्राप्ति की तीव्र इच्छा उन्हें कुछ अनुचित निर्णय लेने पर मजबूर कर देती है। उंबर की पत्नी मेहर का किरदार निभाने वाली टिस्का चोपड़ा पीछे दाईं ओर बैठी हैं।

सौजन्य: हीमैटफिल्म

निर्देशक अनुप सिंह की फिल्म 'द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियन्स' में इरफान खान ने आदम नाम के एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जो एक महिला के प्रति इतना जुनूनी होता है कि वह अपने दोस्त से उसका बलात्कार करवाता है, ताकि वह खुद को एक दयालु व्यक्ति के रूप में पेश कर सके। सौजन्य: फेदर लाइट फिल्म्स

□□□□□ '□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□' □□□ □□□□□ (□□□□□□□□□□ □□□□□□□) □□ □□□□□ □□□ (□□□□□ □□□) □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ (□□□□□ □□□□□) □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□
□□□□□□: □□□□ □□□□ □□□□□□□

फिल्म 'द सॉन्ग ऑफ स्कॉर्पियंस' के प्रमोशन के दौरान इरफान खान ने कहा, 'मैंने सेट पर जाने से पहले सीन नहीं पढ़े। मैं देखना चाहता था कि वहां जाकर क्या होता है।'
सौजन्य: फेदर लाइट फिल्म्स

□□□□□□□□□□□□ □□□□□ '□□ □□□ □□ □□□□□' □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□: □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□

□□□□□□□□□□□□ □□□□□ '□□ □□□ □□ □□□□□' □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□: □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

****

sjeet